Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

सर्वमंगला

सर्वमंगला अर्थात् सबका मंगल करने वाली

43
S
1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

168011

श्री गुरुदत्त की चुनी हुई रचनाएं

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दास्ता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के अधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, परित्राणाय साधूनाम् (महाभारत पर)।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पृष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), खण्डहर बोल रहे हैं। (औरंगजेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुंठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, जिन्दगी, अमानत, एक मुँह दो हाथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8 दिसम्बर, 1894 को लाहौर (अब पाकिस्तान) में जन्मे श्री गुरुदत्त हिन्दी साहित्य के एक देदीप्यमान नक्षत्र थे। वह उपन्यास-जगत् के बेताज बादशाह थे। अपनी अनूठी साधना के बल पर उन्होंने लगभग दो सौ से अधिक उपन्यासों की रचना की और भारतीय संस्कृति का सरल एवं बोधगम्य भाषा में विवेचन किया। साहित्य के माध्यम से वेद-ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का उनका प्रयास निस्सन्देह सराहनीय रहा है।

श्री गुरुदत्त के साहित्य को पढ़कर भारत की कोटि-कोटि जनता ने सम्मान का जीवन जीना सीखा है।

उनके सभी उपन्यासों के कथानक अत्यन्त रोचक, भाषा अत्यन्त सरल और उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं, अपितु जन-शिक्षा भी है। राष्ट्रसंघ के साहित्य-संस्कृति संगठन 'यूनेस्को' के अनुसार श्री गुरुदत्त हिन्दी भाषा के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले लेखक थे।

प्रस्तुत उपन्यास उनकी एक महत्त्वपूर्ण कृति है, जिसमें उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि भौतिक पदार्थ मंगलदायी नहीं हो सकते। वास्तव में, मंगलदायिनी है—व्यक्ति की आस्तिक बुद्धि।

प्रस्तुत है, उनकी प्रतिनिध रचना 'सर्वमंगला' का शुद्ध एवं प्रामाणिक संस्करण, जिसे अधिकारी सम्पादकों के कुशल निर्देशन में तैयार किया गया है।

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वमंगला

-: लेखक :-

गुरुदत्त

081
168011

Central Library
168011
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
www.hindisahityasadan.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-S

© ईशान दत्त

पुस्तक मूल्य	250 रुपये
प्रकाशक	**हिन्दी साहित्य सदन**
	2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड,
	करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप)
	नई दिल्ली–110005
वैबसाईट	**www.hindisahityasadan.com**
ई-मेल	hindisahityasadan@gmail.com
	indiabooks@rediffmail.com
दूरभाष	23553624, 23551344, 09213527666
संस्करण	2015
पुस्तक	सर्वमंगला
लेखक	*गुरुदत्त*
मुद्रक	संस्कृती प्रेस, दिल्ली

SARVAMANGLA
By. GURU DATT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:1:

नयी दिल्ली में बारह खम्भा रोड की एक विशाल कोठी के सुसज्जित ड्राइंगरूम में लाला जुगलकिशोर और उनके सुपुत्र बदरीप्रसाद में वार्तालाप चल रहा था।

जुगलकिशोर सरकारी ठेकेदार था और युद्ध-कार्यों में सरकार को सहयोग देते हुए लाखों की आय कर रहा था। पुत्र बदरीप्रसाद 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में बन्दी बनाया जाकर दो वर्ष का कठोर दण्ड भोगकर लौटा था।

'भारत छोड़ो' आन्दोलन उस विशाल स्वराज्य आन्दोलन का एक भाग ही था, जो गांधीजी के नाम से हिन्दुस्तान में सन् 1918 से चलाया जा रहा था। यह आन्दोलन अगस्त 1942 में आरम्भ किया गया था। सभी आन्दोलनों की भांति इस आन्दोलन के भी दो अंग थे। एक था नारेबाज़ी व जलसे-जुलूस का और दूसरा था, तोड़-फोड़ का।

नारेबाज़ी वाला अंग तो एक सप्ताह में ठण्डा कर दिया गया, परन्तु तोड़-फोड़ वाला अंग अधिक समय तक उग्र रहा। पूरे देश में, यहां तक कि देहातों में भी तोड़-फोड़ चली और एक-दो स्थानों पर तो अंगरेज सरकार की समानान्तर सरकार भी स्थापित करने का यत्न किया गया।

लाला जुगलकिशोर का लड़का बदरीप्रसाद आन्दोलन के इस दूसरे अंग का कार्यकर्ता था। सितम्बर मास में एक दिन डाक के डब्बे में फ़ासफ़ोरस की टुकड़ी डालते हुए वह पकड़ा गया और 'डिफ़ेंस आफ़ इण्डिया रूल्ज़' के अन्तर्गत उसे दो वर्ष का कठोर दण्ड दिया गया। उस समय वह बी.ए. प्रथम वर्ष का विद्यार्थी था।

बदरीप्रसाद जेल से जून, सन् 1944 में छूटा। जेल से तांगा करके वह सीधा घर पहुंचा, तो उस समय उसका पिता कोठी के बरामदे में खड़ा निर्माण-कार्य के जमादारों और मुंशियों से कारोबार सम्बन्धी बातचीत कर रहा था।

पिता ने पुत्र को तांगे से उतरते देखा, तो हर्ष अथवा शोक प्रकट किये बिना उसकी ओर मुंह करके पूछने लगा, "आ गये बरखुरदार।"

"हां, पिताजी।"

"अच्छा, चलो भीतर। मैं अभी आता हूं।"

एक सप्ताह-भर पुत्र को आराम करने का अवसर देकर एक दिन पिता ने पुत्र को ड्राइंगरूम में बुलाकर उसके भावी कार्य के विषय में पूछना आरम्भ कर दिया। पिता ने पूछा, "अब बताओ बदरी, क्या करने का विचार है ?"

"पिताजी ! मैं बी.ए. में प्रवेश लेने का विचार कर रहा हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और फिर ?"

"बी. ए. के बाद मैं विलायत जाऊंगा और बैरिस्टर बनूंगा।"

"इससे क्या होगा ?"

"मेरा जीवन-कार्य सुचारु रूप से चल सकेगा।"

इस पर पिता ने कह दिया, "देखो बदरी, पढ़ाई-लिखाई बहुत हो चुकी। अब कुछ काम-धन्धा करने की सोचो।"

पुत्र ने मुसकराते हुए कहा, "पिताजी, अब तक जो पढ़ाई की है और पिछले दो वर्षों से जो मैं कर रहा हूं, क्या वह काम नहीं था ?"

पिता हंस पड़ा। हंसकर बोला, "मेरा अभिप्राय है, वह तुम्हारे जीवन का कार्य नहीं है। मैं समझता हूं कि तुम्हारे जीवन के दो वर्ष व्यर्थ निकल गये।"

पिता ने अपनी बात की व्याख्या करते हुए कहा, "यदि वह कार्य था भी, तो मंगलकारी नहीं था। मैं तुम्हें ऐसे कार्य में लगाना चाहता हूं, जो सर्वमंगला हो।"

"सर्वमंगला ? पिताजी, मैं सब के मंगल की कामना नहीं कर सकता। मैं तो अंगरेज सरकार का भारत से उन्मूलन करने में लगा हुआ हूं।"

"परन्तु बेटा ! तुम नहीं समझते। वह भी एक प्रकार से मंगल कार्य ही था। ये मूर्ख शासक नहीं जानते कि वास्तव में तुम उनका मंगल ही कर रहे थे।"

"नहीं पिताजी ! इससे उनका कोई मंगल नहीं होने वाला है। मैं तो उनके सर्वनाश की योजना बना रहा हूं।"

"पर उनका कल्याण हो रहा है। भविष्य में आने वाले कोटि-कोटि जन अंगरेजी राज्य की महिमा का गान करते रहेंगे। बिना कुछ भी ख़ून-ख़राबा किये, वे चुपचाप भारत-जैसे विशाल देश को छोड़कर जा रहे हैं। यह इतिहास में अंगरेजों के नाम को रौशन करता रहेगा।"

"और हम स्वराज्य प्राप्त करने वालों का नाम रौशन नहीं होगा ?"

"यह विवादास्पद है कि स्वराज्य तुम लोगों की करनी से आ रहा है। वस्तुस्थिति यह है कि अंगरेज हिन्दुस्तान से जा रहा है।"

पुत्र युक्ति में पराजित नहीं हुआ था। उसने कह दिया," पिताजी ! अंगरेज तो एक भीरु क़ौम है। हम लोगों के ज़रा-से घूर देने से ही भाग खड़ी हुई है।"

"बदरी ! ऐसा नहीं है। अंगरेज भीरु नहीं है। भीरु होता, तो जर्मनी-जैसे शक्तिशाली राज्य के साथ पांच वर्ष तक घोर युद्ध न कर सकता। इस युद्ध में अंगरेजों ने महान् शौर्य और उत्कृष्ट बुद्धि का परिचय दिया है। उनके भारत छोड़कर जाने के कारण अन्य हैं और उनके कारण ही उनकी बुद्धिमत्ता, धैर्य तथा सज्जनता के गुणगान किये जायेंगे।

पुत्र पिता की बात को समझ नहीं सका। वह पिता को अनभिज्ञ जान,बात बदलकर पूछने लगा, "तो आप मुझे क्या करने को कहते हैं ?"

"कल से मेरे कार्यालय के कार्य को संभालो। घर में एक तुम ही तो हो, जो मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य को संभालने का अधिकार रखते हो।''

''पिताजी!'' पुत्र का निश्चयात्मक कथन था, ''मैं ठेकेदारी नहीं करूंगा। मैं बैरिस्टर बनकर देश की राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहता हूं। मैं समझ गया हूं कि बिना क़ानून पढ़े राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति नहीं की जा सकती। साथ ही हिन्दुस्तान में पढ़े-लिखों की वह मान-प्रतिष्ठा नहीं है, जो विलायत के पढ़े-लिखों की होती है। इसलिए मैं विलायत पढ़ने अवश्य जाऊंगा।''

''वहां पढ़ने से क्या होगा?''

''मैं नेता बन सकूंगा। मैं देख रहा हूं कि प्राय: सब-के-सब नेता विलायत के ही पढ़े-लिखे हैं। महात्माजी भी बैरिस्टर बन गये हैं। मैं भी बैरिस्टर बनूंगा।''

पिता ने समझा कि लड़का जेल के साथियों से सीखी बात कर रहा है। इसे जेल के बाहर का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं। अभी कुछ दिन और बाहर का ज्ञान प्राप्त कर ले, तब ही यह वस्तुस्थिति को समझ सकेगा।

पिता का विचार था कि धन सब-कुछ कर सकता है। यह चोर, डाकू और प्रत्येक प्रकार के पापकर्म करने वाले को भी नेता और महापुरुष बना सकता है। लक्ष्मी सब का हित करने वाली है। वह अनुभव से जानता था कि इसके बिना न तो कोई धर्म-कर्म चल सकता है और न ही कोई बुरा कर्म। इसीलिए लक्ष्मी को सर्वमंगला कहते हैं।

पुत्र के मस्तिष्क में राजनीति भर रही थी और वह समझता था कि राजनीति से करोड़पति भिखमंगे बनाये जा सकते हैं और भिखारी राजगद्दी पा जाते हैं। बदरीप्रसाद की एक बहिन भी थी—शकुन्तला। वह उससे भिन्न स्वभाव वाली थी। उस दिन जब पिता ने पुत्र को अपने व्यवसाय में सम्मिलित होने का आह्वान किया था, तो मां ने भी पुत्र से पूछा था कि वह अब क्या करना चाहता है।

पुत्र का कहना था, ''मां! मैं बी. ए. में प्रवेश लूंगा और बी. ए. के बाद मैं विलायत जाकर बैरिस्टरी पढ़ूंगा।''

शकुन्तला के मुख से अनायास ही निकल गया, ''भैया वहीं विवाह कर एक गोरी भाभी लायेंगे।''

''तो विलायत में लोग विवाह करने ही जाते हैं?'' मां ने पूछा।

''सुना है, वहां लड़कियां अधिक हैं। इसलिए वे वहां आने-जाने वालों के गले पड़ जाती हैं।''

''पर मैं तो यहीं पर विवाह करने का निश्चय कर चुका हूं।'' बदरीप्रसाद ने कहा।

''सच! भैया, कौन है वह? क्या वह भी जेल गयी थी?''

शकुन्तला कॉलेज की किसी लड़की की कल्पना करने लगी थी, जो 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में तिरंगा हाथ में लिये हुए जेल गयी हो।

बदरीप्रसाद मुसकरा रहा था। उसने कोई उत्तर न दिया। मां भी उत्सुकता से पुत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मुंह देख रही थी। उसने जब पुत्र को मौन देखा, तो पूछ लिया, ''क्यों विलायत की लड़कियों में किसी प्रकार का दोष दिखाई दिया है ?''

बदरीप्रसाद ने आंखें मूंदकर एक-दो क्षण तक विचार किया और फिर गम्भीर भाव बनाकर कह दिया,''मां! वहां की किसी लड़की को मैंने नहीं देखा। इसलिए उनके गुण-दोष की बात तो नहीं कह सकता। हां, यहां एक लड़की के गुणों को देख चुका हूं। मैं तो उससे ही विवाह करूंगा।''

''कौन है वह ?''

''यहीं है, परन्तु फिर बताऊंगा।'' मां ने समझा कि बहिन के सामने भाई बताना नहीं चाहता, परन्तु बहिन के विचार से बदरीप्रसाद बताने में संकोच नहीं कर रहा था। उसका संकोच शकुन्तला के पास बैठी एक अन्य लड़की के कारण था। वह उसके सम्मुख अपने मन की बात नहीं कहना चाहता था।

यह घर की सेविका सुखिया की लड़की थी। नाम था मंगला। उसकी मां लालाजी के घर में तब आयी थी, जब मंगला छह मास की बच्ची थी। उस समय सुखिया की आयु उन्नीस-बीस वर्ष की थी। इस बात को बारह वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

मंगला सेठजी के घर में पली होने के कारण शकुन्तला की छोटी बहिन की भांति समझी जाती थी। वह शकुन्तला से पढ़ती थी और उसके तथा सदारानी के आगे-पीछे घूमती हुई कवार-गदल की भांति बिना किसी के देखभाल के बड़ी होती जा रही थी।

मंगला की मां अवध के गांव के तिवारी परिवार की लड़की थी। उसका विवाह प्रतापगढ़ के रामनिवास पाण्डे से हुआ और एक वर्ष के भीतर ही वह एक लड़की की मां बन गयी। लड़की उत्पन्न होने के कारण कुछ दिन बाद सुखिया का पति बीमार हुआ और स्वर्ग सिधार गया। सुखिया के ससुरालवालों ने लड़की को अपशकुन मानकर, पहले तो सुखिया यह को सम्मति दी कि वह उसे अफ़ीम चटाकर बाप के पास भेज दे और जब सुखिया यह कुकृत्य करने के लिए तैयार नहीं हुई, तो सुखिया को उसके मायके भेज दिया और फिर उसे ससुराल में घुसने नहीं दिया।

लड़की छह मास की हो गयी थी, तो जब वह अपने पति की अस्थियां प्रवाह करने प्रयागराज जा पहुंची, वहां घटनावश उसकी भेंट सदारानी से हो गयी। सदारानी उसे अपने साथ दिल्ली ले आयी।

कोठी के पिछवाड़े में एक 'आउट हाउस ' में ऊपर की मंज़िल पर सुखिया को रहने के लिए स्थान मिल गया। दिन-भर मां-बेटी कोठी में रहती थीं और रात को अपने कमरे में जा सोती थीं।

शकुन्तला को मंगला में प्रस्फुटित होते गुणों का भास होने लगा, तो वह उसे मन लगाकर पढ़ाने लगी और अपने ही हाथ से भोजन-चाय इत्यादि लेने का आग्रह करने लगी। मंगला भी सदा शकुन्तला के आगे-पीछे घूमने लगी।

आज जब बदरीप्रसाद ने कहा कि उसकी चुनी हुई लड़की यहां है, तो मंगला को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसी सूझी। उसने कह दिया, ''मैं जान गयी हूं कि भैया किससे विवाह करना चाहते हैं।''

''किससे ?'' सदारानी ने मंगला की ओर देखकर पूछ लिया।

मंगला ने बदरीप्रसाद का वाक्य ज्यों-का-त्यों बोल दिया, ''फिर बताऊंगी।''

इस पर तीनों हंसने लगे।

:2 :

इसके कई दिन बाद की बात है। लाला जुगलकिशोर ने पुत्र से पुन: जीवन-कार्य पर वार्तालाप किया और उसमें विवाह की बात भी हो गयी। बदरीप्रसाद ने पिता को कह दिया, ''मैं जिससे विवाह करना चाहता हूं, वह अभी विवाह की आयु से छोटी है। वह छह वर्ष में विवाह योग्य होने वाली है। तब तक मैं पढ़ाई करूंगा और उसके साथ ही मैं व्यावसायिक जीवन में प्रवेश करूंगा।''

पिता ने पूछ लिया, ''और वह कौन है, जिसकी प्रतीक्षा में अपना और मेरा जीवन-कार्य छह वर्ष के लिए अवरुद्ध करना चाहते हो ?''

''पिताजी ! यहीं घर में ही है। आप और माताजी उसे जानते हैं और मैं समझता हूं कि जो कुछ भी वह इस समय है, उतने मात्र से भी वह घर की बहू बनने के योग्य मानी जा सकती है।''

जुगलकिशोर के मन में विद्युत् की चमक की भांति प्रकाश हुआ और वह समझ गया। उसने कह दिया, ''मंगला की बात कह रहे हो ?''

बदरीप्रसाद मुसकराता हुआ पिता का मुंह देखता रहा। जुगलकिशोर को यह बात पसन्द नहीं आयी। उसने सोफ़ासेट के साथ लगी घण्टी का बटन दबाया, तो सुखिया आ गयी।

लालाजी और उनका लड़का ड्राइंगरूम में बैठे वार्तालाप कर रहे थे। रात के आठ बजे थे और चपरासी छुट्टी कर गया था। सुखिया आयी, तो लालाजी ने एक क्षण तक उसका मुंह देखा और विचार किया कि मां-बेटी दोनों को घर से उसी समय निकाल दे, परन्तु मन में छिपी किसी स्मृति से प्रभावित होने के कारण वह उसे निकल जाने की आज्ञा न दे सका। उसने कह दिया, ''बदरी की मां को बुलाओ।'' उसने विचार किया कि अपनी पत्नी से इस समस्या का सुझाव पूछे।

सदारानी आयी, तो लालाजी ने उसे अपने सामने स्टूल पर बिठाकर कहा, ''रानी ! यदि घर में कोई गन्दी वस्तु आ गिरे अथवा वह पड़ी-पड़ी मैली हो जाये, तो उसे बुहारकर घर से बाहर कर देना चाहिए न ?''

''तो इसी के लिए मुझे एक अत्यावश्यक काम से हटाकर बुलाया है ?'' सदारानी ने कहा, ''सुखिया को कह देते, तो वह उसे बाहर उठाकर फेंक देती।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या अत्यावश्यक काम कर रही थीं रानी ?"

"यह आप को बताने का नहीं है।"

"तो मत बताओ, परन्तु तुम्हें बुलाकर यह बात कहने की आवश्यकता इस कारण हुई कि वह मैली वस्तु तुम्हारे कमरे में है। उसकी सफ़ाई तुम्हें ही करनी होगी।"

"मुझे तो वहां कुछ ऐसी वस्तु दिखाई नहीं दे रही। आप बताइये न, क्या बात है ?"

"मैं बताता हूं। यह सुखिया है, जो तुम्हारी सेवा के लिए रखी गयी थी, परन्तु अब वह और उसकी लड़की बदबू देने लगी हैं।"

"सच ? मैं तो उनमें बदबू अनुभव नहीं करती।"

"देखो रानी ! उसमें एक अवगुण आ गया है। उसकी लड़की...क्या नाम है उसका ?"

"मंगला, क्या हुआ है उसे ?"

"उसने तुम्हारे इकलौते पुत्र को रोगग्रस्त कर दिया है। यह साहबज़ादा उसके मोहजाल में फंस रहा प्रतीत होता है।"

"क्यों बदरी ! क्या कहते हो उसके विषय में ?"

अब पुत्र ने मन की बात कह दी। उसने कहा, "मां ! पिताजी मुझसे किसी बड़े अफ़सर की लड़की से विवाह करने की बात कर रहे हैं और मैं उससे विवाह करना नहीं चाहता।"

"पर इसमें सुखिया और मंगला कहां से आ गयीं ? मैंने बालेश्वरप्रसाद की लड़की सन्तोष को देखा है। उसने इसी वर्ष बी.ए. की परीक्षा दी है। लड़की अच्छी है। उसका सबसे बड़ा गुण यह है कि वह केन्द्रीय सरकार के निर्माण विभाग के एक सेक्रेटरी की लड़की है। आजकल वह बेकार है। तुम्हारे पिताजी उसे काम पर लगा देना चाहते हैं।"

"परन्तु मां ! विवाह तो मैं मंगला से ही करूंगा।"

"पर वह तो कुछ पढ़ी-लिखी नहीं है।" जुगलकिशोर ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा।

"हां। वह बी.ए. में उत्तीर्ण नहीं है।" बदरीप्रसाद का कहना था।

"और बदरी ! वह भारत सरकार के निर्माण विभाग के सेक्रेटरी की बेटी भी नहीं है।"

"यह युक्ति व्यर्थ है।" सदारानी ने कह दिया।

"परन्तु वह मेरे ठेकेदारी के काम में मेरा भारी सहायक है।" जुगलकिशोर ने कहा।

"मैं समझती हूं कि जिस कारण से वह आपकी सहायता करता रहा है, वही कारण उसे भविष्य में सहायता करने की प्रेरणा देता रहेगा। मंगलमय लक्ष्मी सबको अनुकूल कर देती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम भी यही समझती हो कि छोकरी मंगला को घर की बहूरानी बना लूं ?"

"मैंने यह नहीं कहा। मैं बालेश्वर गुप्ता की लड़की को ना-पसन्द कर आयी हूं, यही मेरा अभिप्राय है।"

"परन्तु यह साहबज़ादे तो मंगला को यहां की बहूरानी बनाना चाहते हैं।"

"देखिये जी ! लड़की अच्छी, सुन्दर और समझदार है। अभी ग्यारह-बारह वर्ष की है। उसका विवाह शीघ्रातिशीघ्र भी हुआ, तो सात-आठ वर्ष से पूर्व नहीं हो सकता। क्या बदरी का विचार तब तक अविवाहित रहने का है ?"

"मां ! मैं अगले महीने बी.ए. में प्रवेश लूंगा।" बदरीप्रसाद ने कहा, "उसके बाद मैं एम.ए. करूंगा। तब बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैण्ड जाऊंगा। इस सबमें छह वर्ष लग जायेंगे। तब तक वह विवाह के योग्य हो जायेगी और तब तुम्हारे घर की शोभा बन सकेगी।"

"परन्तु वह तब तक इस घर में नहीं रह सकती। साथ ही तुमको मैं अभी से गिरवी नहीं रख सकता। वह भी बिना दाम लिये।" जुगलकिशोर ने निर्णयात्मक बात कह दी।

सदारानी ने भी पति को अपना निश्चयात्मक उत्तर दे दिया, "मैं सुखिया को नौकरी से निकाल देने का कोई कारण नहीं समझती। उसने तथा उसकी लड़की ने कुछ भी ख़राबी नहीं की। यदि किसी ने कुछ अनुचित विचार किया है, तो वह आपके सुपुत्र ने किया है। इसे घर से बाहर कर देना चाहिए।"

"ओह !...।"

परन्तु सदारानी ने अपने पति के विस्मय की ओर ध्यान न देते हुए कहा, "बदरी को आप किसी अन्य नगर में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेज सकते हैं। यदि इस पर आपका विश्वास नहीं, तो इसे दण्ड देना चाहिए, न कि एक ग़रीब, निर्दोष ब्राह्मणी और उसकी लड़की को।"

"परन्तु यह मेरा लड़का है। अभी दो वर्ष के बिछड़ने के उपरान्त घर आया है और तुम चाहती हो कि इसे पुनः देश-निकाला दे दूं।"

"तो मत दीजिये। इस पर विश्वास कीजिये और भगवान् से प्रार्थना कीजिये कि वह इसको सुमति दे। मैं सुखिया बेचारी को अकारण घर से नहीं निकाल सकती। शकुन्तला मंगला को पढ़ाती है। वह स्वर सहित रामायण पढ़ने लगी है। शकुन्तला उसे प्रारम्भिक गणित भी सिखा रही है। लड़की सुन्दर तो है ही, समझदार भी है। उसके मन का विकास द्रुतगति से हो रहा है।

सदारानी की बात पर जुगलकिशोर अवाक् बैठा रह गया। बदरीप्रसाद तो मन-ही-मन अति प्रसन्न था। यद्यपि मां ने विवाह के विषय में उसकी इच्छा पूरी करने का आश्वासन नहीं दिया था, तथापि उसका विरोध न करना और मंगला के गुणों का वर्णन करना उसके लिए उत्साहवर्धक ही था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदारानी ने एक मिनट तक पिता-पुत्र को मौन बैठे देखकर पूछ लिया, ''तो अब मैं जाऊं ?''

''जाओगी नहीं, तो और क्या करोगी ? तुमने तो मेरी पूरी योजना पर ही पानी फेर दिया है।''

''परन्तु देवता-स्वरूप ! यह योजना आपकी नहीं है। यदि आपकी होती, तो आप बालेश्वर की लड़की को इस घर में आने का निमन्त्रण दे चुके होते। घर का प्रबन्ध करना मेरा काम है। मैं इस विषय में अभी विचार करने का कोई कारण नहीं समझती।''

इतना कहकर वह उठी और अपने कमरे की ओर चल दी । उसे जाते देख जुगलकिशोर के मुख से निकल गया, ''आज तो यह हिटलर बन रही प्रतीत होती है।''

''पिताजी ! मां ठीक कह रही हैं। घर की बहू उनके ही चुनाव की होगी।''

''और उसका चुनाव है सुखिया की लड़की। अभी कल उसे नाक साफ़ करने की भी तमीज़ नहीं थी।''

बदरीप्रसाद समझ रहा था कि पिताजी अयुक्तिसगंत बात कर रहे हैं, परन्तु वह अपने को उनका शिक्षक नहीं मानता था। इसलिए वह भी पूछने लगा, ''तो अब मैं भी जाऊं ?''

''कहां जा रहे हो इस समय ?''

''एक सभा है। दिल्ली की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग है।''

''ओह ! अब इससे क्या होगा ?''

''युद्ध समाप्त हो रहा है। हम भावी कार्यक्रम के विषय में विचार करना चाहते हैं।''

'अर्थात् जो कुछ तुम पहले करते रहे हो, क्या वह विचारपूर्वक ही करते रहे हो ?''

''मैं उस समय विचार-विनिमय करने वालों में नहीं था। इस पर भी देश के बड़े-बड़े नेताओं ने वर्धा में और फिर बम्बई में विचार तो किया ही था।''

''मैं तो यह समझ रहा हूं कि गांधीजी किसी विषय में विचार करने से अधिक नारेबाज़ी करते रहते हैं, परन्तु छोड़ो इस बात को। यह मेरा काम नहीं कि लीडरों के कथन पर विचार किया करूं। मैं लक्ष्मी का उपासक हूं और इसी के प्रताप का विस्तार करता रहता हूं। तुम भी विचार कर लो। नारेबाज़ी करना जीवन का उद्देश्य बनाना चाहते हो अथवा किसी प्रकार का ठोस कार्य करना चाहते हो।''

''पिताजी ! अब तो मैं जा रहा हूं। वास्तव में, हम पुराने नारों पर ही विचार करना चाहते हैं।''

''तो जाओ ! तुम भी जल मथने में ही लग जाओ।''

''परन्तु पिताजी ! मथने से मक्खन तो निकल रहा है। इससे यह सिद्ध होता है कि जो कुछ हम मथ रहे हैं, जल नहीं, वरन दूध है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु मुझे तो मक्खन कहीं दिखाई नहीं दिया। कदाचित तुम मिल रहे स्वराज्य की बात कह रहे हो। देखो बेटा ! जो कुछ तुमने दो वर्ष पहले किया था और जो कुछ कांग्रेस गांधीजी के नेतृत्व में पिछले सत्ताईस-अट्ठाईस वर्षों से कर रही है, वह देश में स्वराज्य लाने का आन्दोलन नहीं था। स्वराज्य का तो केवल नारा था। उस नारे के पीछे बम्बई, कलकत्ता के उद्योगपतियों का धन था, जैसे बच्चों का भोंपू होता है। देखा है न, वह किस प्रकार बजता है। ज़ोर से फूंक दो, तो वह 'भैं-भैं' कर बजने लगता है। इन्हीं कपड़ा मिल के मालिकों ने और कलकत्ता के कुछ व्यापारियों ने धन की फूंक दी और वह भोंपू 'गांधीजी की जय' तथा 'भारत माता की जय' के नारे लगाने लगा।

"परन्तु मैं बताता हूं। उस दिन डॉक्टर अम्बेडकर कह रहे थे कि ये कांग्रेसी नेता राजनीति तथा अर्थनीति का 'अ-आ-इ-ई' भी नहीं जानते। ये वर्किंग कमेटी में यही विचार किया करते हैं कि देश में कौन-सा नारा लगायें, जिससे ब्रिटिश सरकार दस-बीस की हत्या कर दे और दस-बीस हज़ार को जेल में डालने पर विवश हो जाये, और फिर उन्हें नया नारा लगाने का अवसर मिल जाये।

"भला बताओ, तुम किसलिए स्वराज्य चाहते हो ?"

"पिताजी ! केन्द्रीय सरकार में मन्त्री बनने के लिए।"

"तब तो ठीक है, परन्तु मैं तुम्हें यह बता देता हूं कि तुम मन्त्री बनकर राज्य नहीं करोगे, वरन् वह कोई दूसरा होगा, जो राज्य करेगा।"

"वाह पिताजी ! मन्त्री मैं बंनूगा और राज्य कोई दूसरा करेगा, ऐसा क्यों ?"

"यह इसलिए कि तुम अज्ञानी हो। तुम्हें राज-विद्या का कुछ भी ज्ञान नहीं। इसलिए राज-विद्या के जानने वाले तुमको अंगुलियों पर नचायेंगे। देखो, मैं बताता हूं। गांधीजी नारेबाज़ी ही जानते हैं। वह एक भले, शुद्ध और पवित्र विचार के व्यक्ति तो हैं और मैं उनके महात्मापन पर भी सन्देह नहीं करता,परन्तु मैं उनकी राजनीति में योग्यता की बात कर रहा हूं। वह उनमें नहीं है। वह नारे लगाते हैं और नारे लगवाते हैं देश के धनी-मानी लोग, और गांधीजी पर शासन कर रहे हैं चालाक यार लोग। पहले उन पर मौलानाओं का शासन रहा, तदनन्तर शासन रहा मोतीलाल नेहरू का, और अब शासन है पण्डित जवाहरलाल का। जवाहरलाल कूटनीतिज्ञ हैं। वह निर्धनों की निर्धनता का लाभ उठाकर अपने को उनका संरक्षक प्रकट कर गांधीजी पर शासन करते हैं और गांधीजी हिन्दुओं की धार्मिक और राष्ट्रीय भावनाओं के सहारे जनता पर शासन करते हैं। परन्तु बदरी ! मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि ये स्वराज्य नहीं ला रहे। तुम्हें जो मक्खन दिखाई दे रहा है, वह यूरोप की और विशेष रूप में कुछ इंग्लैण्ड की और कुछ रूस की धूल-धक्कड़ है, जिसे यहां लाने का यत्न किया जा रहा है।"

"परन्तु पिताजी ! आपको यह सब किसने बताया है ?"

"यह सब सर्वमंगला का प्रताप है, जो मुझे राज्य के बड़े-बड़े विद्वानों के सम्पर्क में ले आयी है और उनसे कुछ बुद्धि मैं भी सीख गया हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो पिताजी! आप मैदान में निकल आइये। आपको किसने मना किया है?"

इस पर जुगलकिशोर मुंह देखता रह गया। एक बात वह समझता था कि वह भी तो इस दिशा में कुछ कर रहा है। निश्चय ही यह उसका परिणाम है कि बदरीप्रसाद अभी अल्पायु और हीन अनुभव वाला होते हुए भी दिल्ली की राजनीति में कइयों के ऊपर से कूदकर आगे आ गया है।

बदरीप्रसाद पिता को मौन देखकर यह समझा कि वह अपने व्यवसाय के लोभ में कुसंगत में पड़े हुए उलट-पुलट बातें कर रहे हैं। उसने घड़ी में समय देखा और उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, "पिताजी! अभी तो मेरी मीटिंग का समय हो गया है, शेष बात, जब आप को अवकाश होगा, तब करूंगा।"

:3:

सदारानी रात्रि-भोजन से पूर्व एक घण्टा-भर रामायण पढ़ा करती थी। उस दिन भी वह पढ़ने ही लगी थी कि सुखिया उसके पति का सन्देश लेकर आ गयी। अब वह अपने कमरे में आकर रामायण पढ़ना चाहती थी, परन्तु सुखिया वहां खड़ी थी।

सदारानी ने उसे वहां खड़े देखा, तो प्रश्न-भरी दृष्टि उस पर फेंकी।

सुखिया ने पूछ लिया, "बहिनजी! क्या बात थी?"

"कुछ तो थी, परन्तु तुम क्या समझकर पूछ रही हो?"

"घण्टी बजने पर मैं वहां गयी, तो लालाजी के मुख पर रोष प्रकट हो रहा था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ था कि वह मुझे दो-चार जली-कटी सुनाने वाले हैं, परन्तु जब उन्होंने आपको बुलाया, तो मुझे लगा, मानो वह आप पर रुष्ट हैं। इसी कारण पूछ रही हूं।"

सदारानी अनिश्चित मन थी कि वह अपने लड़के के उसकी लड़की मंगला के प्रति मोह की बात बताये या नहीं।

एकाएक उसने पूछ लिया, "मंगला इस समय कहां है?"

"शकुन्तला बहिन के कमरे में अपना पाठ ले रही है।"

"ठीक है, जाओ।"

परन्तु सुखिया नहीं गयी। उसने कहा, "क्या मंगला के विषय में कुछ बात हुई है?"

सदारानी ने एक क्षण तक पुन: विचार किया और बोली, "हां, उसके विवाह के विषय में बात हुई है।"

"बाबू बदरीप्रसाद से?"

"तो तुम यह जानती हो?"

"कुछ अनुमान से कह रही हूं। जब से बाबू जेल से छूटकर आये हैं, वह मुझसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने दिन में एक-आध बार आते ही हैं और मंगला की पढ़ाई तथा सुख-सुविधा के विषय में पूछ जाया करते हैं। मुझे बाबू की आंखों में लड़की के लिए मोह प्रतीत होता है, परन्तु लड़की से तो आप सब स्नेह रखते हैं। मैं बाबू के व्यवहार से भी यही समझी थी, परन्तु लालाजी की आंखों में क्रोध देखकर मुझे बाबू के व्यवहार में कुछ सन्देह होने लगा है। सेठजी मुझे डांट-डपट करने वाले थे, परन्तु उन्होंने आपको बुला लिया। इसीलिए ठीक-ठीक बात जानने के लिए मैं यहां खड़ी थी।

"सुखिया! तुम ठीक ही समझी हो। बदरी के पिता तुम्हें घर से निकाल देने की बात कह रहे थे, परन्तु मैंने स्वीकार नहीं किया। उनके रोष का कारण भी तुम ठीक ही समझ रही हो, परन्तु मैं तुम्हें निकाल देने में इसे कोई कारण नहीं मानती। रही बदरी की बात, तो मैं उसे मना कर दूंगी कि वह लड़की के मन में मोह उत्पन्न करने का यत्न न करे। वह नहीं माना, तो उसे घर से निकालने का प्रबन्ध कर दूंगी।"

"परन्तु आप ऐसा क्यों करेंगी? मैं स्वयं ही यहां से किसी अज्ञात स्थान पर चली जाऊंगी।"

इस पर सदारानी सुखिया का मुंह देखने लग गयी। वह उन सब परिस्थितियों पर विचार करने लगी थी, जिनमें वह उसे और उसकी लड़की को अपने घर लेकर आयी थी।

सन 1932 के दिन थे। मकर संक्रान्ति के अवसर पर सदारानी प्रयागराज 'संगम' पर स्नान करने गयी हुई थी। जब वह 'संगम' पर स्नान करने लिए पहुंची, तो घाट पर पण्डे के पास सुखिया बैठी मिली थी। उसकी छह-सात मास की लड़की उसकी गोद में थी और किसी की अस्थियां संगम में प्रवाह करने के लिए सामने रखी थीं। सुखिया अस्थियों को देख-देखकर अविरल आंसू बहा रही थी।

सदारानी ने इसे एक सामान्य बात समझा। वह विचार कर रही थी कि इसी स्त्री के किसी प्रियजन की अस्थियां हैं, सम्भवत: इसके पति की होंगी और इसका उसके लिए आंसू बहाना स्वाभाविक ही है। वह स्नान के योग्य वस्त्र पहनती हुई सहानुभूति-भरी दृष्टि से उसकी ओर देख रही थी।

पण्डे ने सदारानी की दृष्टि में सहानुभूति देखी, तो कह दिया, "माताजी! इस भली स्त्री की कुछ सहायता कर दीजिये।"

सदारानी ने इस रो रही स्त्री की ओर देखा। वह पण्डे की ओर पीठ किये भूमि पर बैठी थी।

सदारानी ने पण्डे से ही पूछा, "यह क्या चाहती है?"

पण्डे ने स्वयं कुछ बताने के स्थान पर उस स्त्री को ही आवाज़ दे दी, "ए माई! देखो, इन सेठानी से कहो, तुम क्या चाहती हो।"

सुखिया ने दयनीय दृष्टि से सदारानी की ओर देखा और साड़ी के आंचल से आंखें पोंछते हुए कहा, "बहिनजी! मैं बहुत दुविधा में हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या दुविधा है ?"

"दुविधा इस लड़की की है।" उसने गोद में सो रही बच्ची की ओर देखते हुए कहा ।

"इसकी क्या दुविधा है ?" अब सदारानी ने उसके समीप ही बैठते हुए पूछा।

"मैं इन अस्थियों के साथ ही गंगा-प्रवाह लेना चाहती हूं। विचार था कि इसे किसी को दे जाऊंगी। उसे इसके पालन-पोषण के लिए कुछ धन भी दे जाऊंगी, परन्तु घाट पर आते हुए मेरे रुपये चोरी हो गये हैं ।"

"तो क्या रुपयों के सहारे इसका जीवन बरबाद करने का विचार कर रही थीं ?"

"इस पण्डे ने पांच सौ मांगा था और कह रहा था कि वह रुपया इसके विवाह पर व्यय करेगा। मेरे पास यही कुछ पूंजी थी और उसे लेकर यहां आयी थी, परन्तु रुपया चोरी हो गया है और मैंने अपनी कठिनाई इस पण्डे को बतायी है।"

सदारानी को इस कहानी की सचाई पर सन्देह हो गया, परन्तु कोई भी काम हड़बड़ी में न करने का अभ्यास रखने के कारण उसने उसे झूठी कहने के स्थान पर पूछ लिया, "परन्तु तुम जल-प्रवाह क्यों लेना चाहती हो ?"

"मैं अपने पति के पास जाना चाहती हूं।" इतना कहकर उसने अस्थियों की ओर संकेत कर दिया।

"ओह! सदारानी ने आश्चर्य में पड़कर पूछ लिया, "तो इसको भी साथ क्यों नहीं ले जातीं ?"

"बहिनजी! इसकी हत्या क्यों करूं ? अपने कर्मों की मैं उत्तरदायी हूं और फिर पति-पत्नी की तुलना पिता-पुत्री से नहीं हो सकती।"

"परन्तु एक बात तो तुम कर सकती हो कि जब तक तुम्हारे पति की यह धरोहर अपना साथी नहीं पा जाती, तब तक तुम पति के पास जाना स्थगित कर दो।"

"पर अब तो यह भी सम्भव नहीं है। पण्डा तर्पण पढ़ने के लिए कम-से कम सवा रुपया मांगता है और मेरे पास... ।" उसने अपनी कुर्ती की जेब में हाथ डालकर कटी हुई जेब दिखा दी। जेब में डाला हाथ कटी जेब से बाहर निकल आया था।

"सवा रुपया तो दिया जा सकता है, परन्तु उस अवस्था में, जब तुम लड़की के सयानी होने तक जीने का वचन दो।" सदारानी ने कह दिया ।

उस स्त्री ने लालसा-भरी दृष्टि से अस्थियों की ओर देखा और कहा, "तो यह कर दीजिये।"

सदारानी विचार कर रही थी कि इस कथा पर विश्वास करे या नहीं, परन्तु सवा रुपया वह दे सकती थी ।

वह उठी और उसने अपने पर्स से सवा रुपया निकाला। वह जब उस स्त्री को देने लगी, तो उसने कहा, "तर्पण पढ़ने वाला पण्डित अभी आ रहा है। ये उसे ही दे दीजियेगा।"

"कहां की रहने वाली हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जिला प्रतापगढ़ के पाण्डेपुर गांव की।"

"यहां अकेली आयी हो?"

"जी। घर पर कोई नहीं है। इसलिए अकेली ही हूं।"

"लड़की के पिता का देहान्त कब हुआ था?"

"एक मास के लगभग हुआ है। हमारी जमा-पूंजी यही थी, जो आज चोरी हो गयी है। यह विचार तो मैं पहले ही कर रही थी कि यदि इस लड़की का कोई प्रबन्ध हो जाये, तो इन अस्थियों के साथ ही प्रवाह ले लूं।"

"लड़की का प्रबन्ध तो मैं कर दूंगी, परन्तु यह उसी सूरत में हो सकेगा, जब तुम्हारा भी प्रबन्ध हो जाये।"

"तब तो आप पर बहुत बोझ हो जायेगा।"

"नहीं, तुम्हारे बिना लड़की का बोझ बहुत अधिक होगा।" इस पर वह सदारानी का मुंह देखने लगी। वह समझ नहीं सकी थी कि इस सहानुभूति प्रकट करने वाली स्त्री का क्या अभिप्राय है।

"क्यों पण्डाजी!" सदारानी ने उस व्यक्ति से पूछ लिया, जिसके पास उसने कपड़े और दूसरा सामान रखा था, "पांच सौ रुपये के साथ लड़की को लेने वाले थे?"

"माताजी!" पण्डे ने मुसकराते हुए कह दिया, "लड़की धन ही ऐसा है, जिसे कोई भी ले लेगा। हां, अभी कुछ वर्ष तो इसके पालन का प्रबन्ध करना होगा। उसी के लिए पांच सौ रुपये मांगता था। कुछ वर्षों में तो यह धन कमाने का स्रोत हो जायेगी।"

सदारानी को पण्डे की बात इस प्रकार समझ आ गयी कि लड़की के सयानी होने पर वह उसे बेच देगा। इस पर वह गम्भीर विचार में मग्न हो गयी। इसी समय अस्थियां प्रवाह करने वाला पण्डा आ गया और सदारानी ने उसे सवा रुपया दे दिया, तो वह उस स्त्री को साथ लेकर नदी में कमर तक जल में चला गया और कुछ मन्त्र पढ़ने लगा। वह स्त्री लड़की को गोद में लिये तैयार होकर आयी थी। वह भी पण्डे के समीप जा खड़ी हुई। पण्डे ने अस्थि-प्रवाह का कार्य पांच मिनट में ही समाप्त कर दिया। तदनन्तर, अस्थियों को गंगा की भेंट कर, वह नदी से बाहर निकल गया। सदारानी ने कहा, "यह तो हुआ, अब बताओ! सुना है, पण्डे ने क्या कहा है?"

"क्या कहा है? मैं समझी नहीं।"

"वह कह रहा था कि कुछ वर्ष तक पालन-पोषण के लिए पांच सौ रुपया मांगा है। बाद में तो लड़की स्वयं धन कमाने का स्रोत हो जायेगी, अर्थात् वह इस लड़की से वेश्यावृत्ति करायेगा अथवा इसे किसी वेश्यावृत्ति कराने वाले के पास बेच देगा।"

"बहुत बदमाश है वह।"

"देखो, बच्ची को मुझे दो और फिर स्नान कर तुम बच्ची को पकड़ना और मैं स्नान करूंगी, परन्तु यह स्मरण रखो कि यदि इस लड़की से वह पापकर्म नहीं कराना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, तो अभी जीओ ।"

"कैसे जी सकूंगी ?"

"यह स्नान करने के उपरान्त बताऊंगी ।"

वह स्त्री सदारानी का मुंह देखती रह गयी। सदारानी ने कहा," अब भगवान् का धन्यवाद करो कि धन की चोरी हो गयी है और तुम लड़की को उस बुर्दाफ़रोश को नहीं दे सकीं।

उस स्त्री का मस्तिष्क पति की मृत्यु और लम्बे वैधव्य के जीवन के विचार से काम करना छोड़ बैठा था। पति के देहान्त के उपरान्त वह नदी के प्रवाह में बहती सूखी लकड़ी के समान हो चुकी थी। वह अब भी वैसे ही अर्धचेतना की अवस्था में अपने को अनुभव कर रही थी। लड़की से वेश्यावृत्ति कराने की बात सुनकर वह एक बार तो कांपी, परन्तु पुन: सूखी लकड़ी की भांति बहती अनुभव करने लगी।

: 4 :

सुखिया को सदारानी अपने साथ ही दिल्ली ले आयी थी। यह सन् 1932 की बात है। उसे अब बारह वर्ष व्यतीत हो चुके थे और मां-बेटी सदारानी के घर में ही रहती थीं। सदारानी बहुत कम पढ़ी-लिखी स्त्री थी। वह तीसरी-चौथी श्रेणी तक ही पढ़ी थी, परन्तु सुखिया स्वरसहित रामायण पढ़ती थी और उसी ने सदारानी को रामायण पढ़ायी और उसके अर्थ समझाये थे।

जब सुखिया लाला जुगलकिशोर के घर में आयी थी, तब वह ठेकेदारी का कार्य करने दिल्ली आया ही था। जुगलकिशोर आठवीं-नौवीं श्रेणी तक ही पढ़ा था और रोहतक में छोटे-मोटे ठेके लिया करता था। वह दिल्ली में सन् 1932 के आरम्भ में ही आया था।

उस समय सरकार पर जनमत का दबाव पड़ रहा था कि सरकार का ग्रीष्म ऋतु में शिमला जाना रद्द कर किया जाये। सिद्धान्त के रूप में सरकार इसे मान चुकी थी और दिल्ली में सरकारी कार्य विस्तार पा रहा था। नया निर्माण-कार्य बढ़ रहा था, परिणामस्वरूप, ठेकेदारी के काम के लिए दिल्ली में अवसर बढ़ रहे थे। जुगलकिशोर उन्नति-पथ पर चल पड़ा।

इन बारह वर्षों में जुगलकिशोर लखपति हो गया। उसकी उन्नति में द्वितीय विश्व-युद्ध बहुत सहायक हुआ, परन्तु सदारानी के मन पर यह बात जम-सी गयी थी कि सुखिया धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री है और उसके ही राम-महिमा-गान ने घर में सम्पदा की लहर-बहर कर दी है।

जुगलकिशोर नगर के धनी-मानी लोगों से मेल-जोल रखता था, साथ ही वह सरकारी अधिकारियों की मुट्ठी गरम करने में भी सिद्धहस्त था और दोनों कारणों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां उसका व्यवसाय प्रशस्त हो रहा था, वहां उसके ज्ञान में भी वृद्धि हुई थी।

सन् 1944 में बदरीप्रसाद छूटकर घर आया, तो जुगलकिशोर ने लड़के को राजनीति के जंगल से बाहर कर पारिवारिक व्यवसाय में लगाने की योजना बना ली। इसके साथ ही केन्द्रीय सरकार के निर्माण विभाग के सचिव बालेश्वरप्रसाद गुप्त ने बदरीप्रसाद के लिए अपनी लड़की का सम्बन्ध उपस्थित कर दिया।

जुगलकिशोर की पत्नी सदारानी इस निमित्त सचिव महोदय के घर गयी और लड़की को ना-पसन्द कर आयी। जुगलकिशोर चाहता था कि इस विषय में बदरीप्रसाद स्वयं ही निश्चय करे, तो ठीक रहेगा। इसी निमित्त उसने लड़के से बात की थी।

बदरीप्रसाद के जेल से लौटने पर ही यह सब विचार हुआ था। बदरीप्रसाद इस समय बीस वर्ष का था। वह इण्टर की परीक्षा पास कर चुका था और धनी बाप का बेटा होने के कारण जेल में 'ए' क्लास में रखा गया था। वहां उसकी संगत में दिल्ली के कुछ नेतागण थे। परिणामस्वरूप, दो वर्ष का जेल-निवास उसकी बुद्धि के विकास में एक महान् कारण बन गया। दिल्ली के एक नेता गुप्ताजी थे। वह जेल में बदरीप्रसाद की सेवा-शुश्रूषा से प्रसन्न होकर उसके सलाहकार बन गये। यह उसकी ही सम्मति थी कि बदरीप्रसाद एम. ए. पास कर बैरिस्टर बनने के लिए विलायत जाये। उसका दृढ़ विश्वास था कि स्वराज्य काल में इंग्लैण्ड में पढ़े-लिखों की प्रतिष्ठा होगी।

जेल से लौटने के उपरान्त बदरीप्रसाद एक दिन गुप्ता साहब से मिलने गया, तो गुप्ता साहब ने उसे बताया, "जुलाई में कॉलेजों के खुलने पर प्रवेश प्राप्त कर और एम. ए. पास कर एक वर्ष के लिए विलायत जाने का कार्यक्रम बना लो और वहां से बैरिस्टर बनकर आओ। तब तुम्हें एक बड़ा नेता बनने में बहुत सहायता मिलेगी।"

"परन्तु गुप्ताजी!" बदरीप्रसाद ने पूछ लिया, "क्या स्वराज्य प्राप्त कर लेने के बाद भी इंग्लैण्ड की महिमा बनी रहेगी?"

"हां, मेरा अनुमान इस बात से बना है कि इस समय देश में सबसे प्रमुख राजनीतिक दल कांग्रेस है और कांग्रेस में इसके आरम्भ से ही इंग्लैण्ड के पढ़े-लिखों का बोलबाला है। मैं यहां क़ानून पढ़ा हूं। मैं अपने-आपको अपने प्रतिद्वन्द्वी अली साहब से कहीं अधिक योग्य मानता हूं, परन्तु उसकी प्रतिष्ठा मुझसे अधिक है। मैं धन और जन, दोनों से कांग्रेस की सहायता करता रहता हूं, परन्तु कांग्रेस की आल इण्डिया वर्किंग कमेटी में उसे ही लिया जाता है और मुझे कोई पूछता तक नहीं। वह बैरिस्टर है और मैं वकील हूं। वह धाराप्रवाह अंगरेजी बोलता और लिखता है। मैं हिन्दी में व्याख्यान देता हूं और लिखता हूं। वह मुसलमान है और मैं आर्यसमाजी हिन्दू हूं।"

"परन्तु गांधीजी तो अपने-आपको एक हिन्दू और देशभक्त मानते हैं। क्या वह कांग्रेस की इस रुचि में परिवर्तन नहीं कर सकते?"

"बदरीप्रसाद! ऊंची दुकान और फीका पकवान। उनकी दृष्टि में भी पण्डित नेहरू अधिक योग्य और श्रेष्ठ हैं और बाबू राजेन्द्रप्रसाद और श्री पटेल अयोग्य हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदरीप्रसाद की अपने पिता से विवाह सम्बन्धी चर्चा के दो-तीन दिन पहले यह वार्तालाप हुआ था। इसका प्रभाव बदरीप्रसाद के मस्तिष्क पर था और वह अपने पिता से कह रहा था कि वह विलायत पढ़ने जायेगा, परन्तु जब वार्तालाप विवाह के विषय पर हुआ, तो बदरीप्रसाद के मन में छिपी भावना फूट पड़ी और वह मंगला के विषय में कह बैठा। इस बात ने जुगलकिशोर के मन में मंगला की मां सुखिया के प्रति रोष भर दिया, परन्तु उसके भावों का बदरीप्रसाद की मां सदारानी ने विरोध किया।

बदरीप्रसाद के नगर की ओर चले जाने पर, तो वह सोफ़े पर ही बैठा-बैठा 'इलस्ट्रेटेड वीकली' देखने लगा। उसे देखते-देखते और बदरीप्रसाद के विषय में विचार करते हुए उसे नींद आ गयी और वह वहीं सोफ़े की पीठ का सहारा लेकर ऊंघने लगा।

वैसे तो जून मास में दिल्ली में बाहर लू चल रही थी और अत्यन्त गरमी थी, परन्तु ड्राइंगरूम में ठण्डक थी। भारी परदे और खसखस की टट्टियां लगी थीं। भीतर बिजली के पंखे थे। इसलिए भीतर बाहर से अधिक सुखप्रद था।

जुगलकिशोर अभी ऊंघ ही रहा था कि सदारानी वहां आ गयी और लालाजी के समीप सोफ़े पर बैठकर और उनके कन्धे पर हाथ रखकर उन्हें जगाने लगी।

जुगलकिशोर जागा, तो विस्मय से पूछने लगा, "यहां कब से बैठी हो ?"

"अभी-अभी आयी हूं। भोजन के लिए चलना चाहिए।"

"नहीं, अभी नहीं।" जुगलकिशोर ने ड्राइंगरूम में लगे 'क्लॉक' में समय देखकर कहा, "अभी साढ़े आठ बजे हैं। मैं भोजन साढ़े नौ बजे लूंगा।"

"मैं यह जानने के लिए आयी हूं कि बदरी के विवाह की बात कैसे हुई थी ? मैंने तो आपसे कहा था कि बालेश्वरप्रसाद की लड़की रूप-रेखा से भद्दी, बुद्धि की मोटी और काम-काज करने में अकुशल ही प्रतीत हुई है। साथ ही वह व्यापारी-वर्ग को समाज का पिस्सू मानती है। तब भी आपने लड़के से उसकी बात की है। मैं यही जानना चाहती हूं कि बात किस प्रकार हुई ?"

"बात यह है कि मैं बदरी को अपने व्यवसाय में सहायक बनाना चाहता हूं, परन्तु उसको राजनीति की चटक लग रही है। मैं समझा था कि मनुष्य को किसी कार्य में तल्लीन करने के लिए दो ही महान् आकर्षण होते हैं। एक धन और दूसरा स्त्री। मैं इन दोनों को ही मंगलमय मानता हूं और दोनों के विषय में ही मैंने उसे कहा था।"

"तो अब आपको पता चल गया होगा कि इस संसार में एक अन्य आकर्षण भी है और वह है—राजनीति। इसमें भी एक नशा है, जो कदाचित् स्त्री और धन-सम्पदा से भी अधिक मीठा और गहरा है।"

"मैं यही यत्न कर रहा था कि लड़का राजनीति के मोह-जाल में फंसकर कहीं स्वाभाविक प्रलोभनों को न भूल जाये, परन्तु वह तो राजनीति के कीचड़ में फंस गया है। परन्तु रानी ! यह मंगला बीच में कैसे आ गयी है ? मैं यह नहीं समझ सका कि मंगला कैसे इतनी चोंचलेबाज़ हो गयी है कि चलते-फिरते युवकों पर अपना जादू चलाने लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
GUR-S

है।"

"ऐसी कोई बात नहीं है। लड़की बहुत ही सरल और नेक व्यवहार है। वह अभी बारह वर्ष की हुई है। उसमें इस प्रकार के भाव अभी उत्पन्न ही नहीं हुए। वह शकुन्तला से अंगरेजी और गणित पढ़ा करती है। हिन्दी तो वह अपनी मां से ही पढ़ गयी थी। शकुन्तला का कहना है कि लड़की सुघड़ और अत्यन्त शील-स्वभाव की है।"

"तो तुम उसे घर की बहू बनाने के लिए तैयार हो ?"

"वह घर की लड़की तो है ही। आज से पांच वर्ष पूर्व ही मैंने शकुन्तला से कहा था कि इसे पढ़ाया करो। मैं तब से ही उसे घर की लड़की मानने लगी हूं और अब लड़के ने एक नया विचार मन में उत्पन्न कर दिया है। इसलिए इस दृष्टि से भी देखने और निश्चय करने का विचार करूंगी, परन्तु इससे पूर्व आपकी इच्छा का भी तो विचार करना है।"

"मेरे विषय में क्या विचार करना है ?"

"यही कि आप उसके श्वसुर बनना चाहेंगे अथवा नहीं ?"

"और यह नहीं कि वह मेरी पतोहू बनना चाहेगी अथवा नहीं ?"

"वह अभी अल्पायु है। इसलिए मैं समझती हूं कि जैसे संस्कार उसके मन पर डालूंगी, वह वैसी ही बन जायेगी। कठिनाई तो मेरी और आपकी है। हम बूढ़े हो रहे हैं और हमारे विचार तथा संस्कार स्थिर हो चुके हैं। इसलिए यह हमें देखना है कि हम इस सम्बन्ध को कैसा समझते हैं।"

"मैं यह चाहता हूं कि लड़का बैरिस्टर बनना चाहता है, तो उसे विलायत हो आने दूं। क्या जाने, वह वहां से ही कोई बहू लाना पसन्द करे ?"

"परन्तु अब तो स्वराज्य आ रहा है। शकुन्तला कह रही थी कि युद्ध समाप्त हो गया है और लोग इंग्लैण्ड में नये चुनावों की चर्चा करने लगे हैं। यदि उन चुनावों में लेबर दल राज्यारूढ़ हो सका, तो स्वराज्य एक वर्ष में प्रायः निश्चित ही है।"

"इतनी जल्दी नहीं रानी! हिन्दुस्तान में अंगरेज अफ़सर सब-के-सब कन्ज़र्वेटिव पार्टी के प्रतिनिधि हैं और वे इस देश को स्वतन्त्र नहीं देखना चाहते, अतः होम गवर्नमेंट के अनुकूल होने पर भी वह स्वराज्य में अड़चन डालेंगे। वे तो अभी से बाधक हो रहे हैं।

"वाइसराय की कौंसिल के एक सदस्य हैं। मैंने उनकी बहुत सेवा की है। पूना में ढाई लाख रुपये लागत की कोठी बनाकर उनको दी है। इससे वह बहुत दयालु हो रहे हैं और कभी-कभी अपनी मेज़ पर बिठाकर खाना भी खिलाते हैं। उनका कहना है कि स्वराज्य सन् 1955 से पहले नहीं मिल सकता।"

"यह क्यों ?" सदारानी ने पूछ लिया।

"उनका कहना है कि यहां की नौकरशाही में भले लोगों को लाने और पुराने विचार के लोगों को विलायत वापस भेजने में दस वर्ष आसानी से लग जायेंगे। तब

Central Library
168011
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंग्लैण्ड में कौन-सा दल सत्तारूढ़ होगा, कहना कठिन है।''

''तो बदरी विलायत में पढ़ने जायेगा?''

''हां। यदि उसने मंगला का विचार नहीं छोड़ा, तो उसे पढ़ने के लिए विलायत भेजना ही होगा।''

''तो उसे अभी भेज दीजिये।''

''क्यों?''

''इसलिए कि आपको उसे विलायत भेजने का प्रयोजन सिद्ध होने में अधिक अवसर मिल सकेगा।''

''तो तुम भी यह योजना ठीक समझती हो ?''

''देखिये जी! अभी तक तो एक लड़का ही मंगला से मोह करता है। लड़की तथा उसकी मां लड़के पर लट्टू नहीं हो रहीं। आपका विचार है कि वह विलायत से कोई गोरी लड़की विवाह कर ला सकता है। यह हमारे और लड़के के विचार करने की बात है। लड़की और उसकी मां की नहीं।''

लालाजी को यह योजना पसन्द आयी।

:5:

दो-तीन दिन के उपरान्त रात के भोजन के समय जुगलकिशोर ने बदरीप्रसाद से कह दिया,''यदि तुम पढ़ने के लिए विलायत जाना चाहते हो, तो बी. ए. करने भी वहीं क्यों नहीं चले जाते?''

''यह इसलिए कि बी.ए. की श्रेणी में प्रवेश अधिक कठिन होगा और क़ानून के कॉलेज में प्रवेश सुगमता से मिल जायेगा।''

''यदि मिल जाये, तो ठीक नहीं है?''

''हां, पिताजी! मैं तो कल ही जाने को तैयार हूं।''

जुगलकिशोर ने कह दिया, ''मैं तुम्हारे लिए 'ऑक्सफ़ोर्ड' में प्रवेश का प्रबन्ध करता हूं।''

इस पर प्रवेश मिलते-मिलते छह मास लग गये और इस दौरान बदरी दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज में पढ़ने लग गया। तब तक सदारानी और सुखिया में यह निश्चय हो गया कि मंगला और बदरीप्रसाद में मेल-जोल नहीं बढ़ने देना चाहिए और मंगला को बदरीप्रसाद के विचार का ज्ञान होने नहीं देना चाहिए। विवाह के विषय में विचार बदरी के विलायत से लौटने पर किया जायेगा।

सदारानी ने बदरीप्रसाद से कह दिया, ''देखो बदरी ! तुम दोनों अभी क़ानून के अनुसार अल्पायु हो। इसलिए तुम दोनों को अभी यह अधिकार प्राप्त नहीं है कि तुम विवाह के विषय में परस्पर वार्तालाप करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''इसलिए तुम अब सुखिया और मंगला के कमरे में मत जाया करो। न ही हम यह उचित समझते हैं कि तुम इस विषय पर बात करो। मैंने तुम्हारी इच्छा मंगला की मां को बता दी है। यद्यपि वह तुम्हारे विचार का विरोध नहीं करती, तथापि वह चाहती है कि तुम उससे उनके कमरे में मत मिला करो।''

''परन्तु मां! मैं चाहता था कि विलायत जाने से पूर्व मैं मंगला को अपने विचार बता सकूं।''

''यह जब तुम विलायत चले जाओगे, तो उसे किसी प्रकार बता दिया जायेगा। तुम्हारे यहां रहते नहीं।''

''पर मां! वह मुझे भैया कहकर सम्बोधित करती है। इससे तो उसके मन में विपरीत संस्कार बैठ जायेंगे।''

''तुम्हारे पिताजी कहते हैं कि तुम्हें इसी वर्ष नवम्बर में विलायत में प्रवेश मिल जायेगा और उसके विषय में तुम्हारे विचार उसे बाद में बता दिये जायेंगे और उसकी प्रतिक्रिया उसके मन पर देखकर ही उसे तुमसे विवाह के लिए तैयार किया जायेगा।''

बदरीप्रसाद के सलाहकार कांग्रेस के नेता गुप्ताजी थे। विलायत से जब सूचना आयी कि अगले सत्र में उसे 'ऑक्सफ़ोर्ड' में प्रवेश मिल जायेगा, तो वह गुप्ताजी से बातचीत करने उनकी कोठी पर जा पहुंचा। गुप्ताजी ने कह दिया, ''तुम्हें वहां की लड़कियों से बचकर रहना चाहिए। आजकल वहां विधवा स्त्रियों और कुंवारी लड़कियों की संख्या बहुत अधिक है। युद्ध में अपार हत्याएं होने के कारण वहां लड़कियां बहुत सस्ती हो गयी हैं और ख़ाविन्द बनने योग्य लड़कों की क़ीमत बढ़ गयी है।''

''परन्तु गुप्ताजी! आप यह पसन्द नहीं करते कि मैं वहां विवाह कर लूं?''

''एक तो विद्यार्थी-जीवन में विवाह ठीक नहीं होगा और दूसरे, पतियों की महंगाई के काल में कहीं सस्ते में ही न झपट लिये जाओ।''

बदरीप्रसाद ने मुसकराते हुए कह दिया, ''मुझे हिन्दुस्तानी रंग अधिक पसन्द है।''

''परन्तु हिन्दुस्तान में भी तो अनेक रंग हैं। हबशियों के-से काले रंग से लेकर कश्मीरियों के-से गोरे रंग तक कई आभा की लड़कियां हैं।''

''मेरा अभिप्राय यह है कि हिन्दुस्तान की नागरिक लड़की ही पसन्द होगी।''

''परन्तु जो कोई भी तुम्हारी पत्नी बनना स्वीकार करेगी, हिन्दुस्तानी नागरिक स्वतः ही हो जायेगी।''

''तब तो मुझे आपत्ति नहीं हो सकती। परन्तु.... ।'' वह मंगला के विषय में अपने मन के विचार बताना चाहता था, परन्तु यह न जानते हुए कि गुप्ताजी इसे कैसा समझेंगे, वह चुप रहा।

इस पर गुप्ताजी ने उसे जाने से पहले मिलने के लिए कहा और यह भी कहा कि वह उसे कुछ परिचय-पत्र भी दे देंगे, जिससे वह एक सम्मानित व्यक्ति समझा जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगेगा।

जब बदरीप्रसाद का इंग्लैण्ड जाना निश्चित हो गया, तो वह यह संकल्प कर बैठा कि वह अपने मन की भावना मंगला के कान में पहुंचा देगा, परन्तु सुखिया और सदारानी का परदा उन दोनों के बीच में इतना अपारदर्शक था कि वे एकान्त में मिल नहीं सके।

जिस दिन बदरीप्रसाद को लन्दन के लिए हवाईजहाज़ पकड़ना था, वह दिन-भर विचार करता रहा कि मंगला से दो मिनट भी एकान्त में मिलने का अवसर पा जाये, तो वह अपने मन की बात उससे कह सकेगा। हवाईजहाज़ रात के बारह बजे दिल्ली से चलता था और जब मध्याह्नोत्तर तीन बजे तक भी वह मंगला को नमस्ते कहने का अवसर नहीं पा सका, तो उसने उसे पत्र लिखने की योजना बना ली। तीन बजे वह अपने कमरे में भीतर से द्वार बन्द कर पत्र लिखने बैठ गया।

उसने लिखा—'प्रिय मंगलमयी!'

उसने जान-बूझकर ही 'प्रिय' शब्द लिखा। इस शब्द में उसके मन की झलक थी और मंगलमयी नाम उसे ठीक प्रतीत हुआ था।

उसने आगे लिखा—

'तुम मुझे भैया कहकर पुकारती हो, परन्तु अब तुम बड़ी हो रही हो और जानती हो कि प्रत्येक पुरुष की पत्नी भी होती है। इसलिए तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि पढ़ाई समाप्त कर इंग्लैण्ड से लौटने पर, मैं तुमसे वैसा ही सम्बन्ध बनाना चाहूंगा।

'तुम मेरी प्रिय पत्नी बनोगी। ऐसी मेरी इच्छा है और मैंने इसकी सूचना अपने माता-पिता को दे दी है। मैं समझता हूं कि मेरी माताजी ने यह बात तुम्हारी माताजी से भी कही होगी और उनकी ओर से किसी प्रकार की आपत्ति नहीं की गयी होगी।

'अतः आज दिल्ली से पांच वर्ष के लिए जाने से पूर्व मैं तुम्हें अपने मन की भावना बताकर जा रहा हूं।

'मेरे हृदय की रानी मंगलमयी! मैं तब तक के लिए तुम्हें नमस्ते कहता हूं और विश्वास है कि तुम्हारे लिए बहुत-सी वस्तुएं वहां से लेकर आऊंगा।

'तब तक के लिए नमस्ते।

—तुम्हारा अपना
बदरी।'

पत्र लिख लेने के उपरान्त वह पत्र को उसके लक्ष्य-स्थान तक पहुंचाने के लिए बेचैनी से कोठी के भिन्न-भिन्न कमरों में घूमने लगा। मंगला कोठी में नहीं मिली, परन्तु पत्र पहुंचाने का एक अवसर मिल गया। शकुन्तला कॉलेज गयी हुई थी। उसके कमरे में मंगला की अंगरेजी कम्पोज़ीशन की कापी पड़ी हुई थी। शायद उसमें किसी लिखे को ठीक करने के लिए वह शकुन्तला की मेज़ पर रख गयी थी।

बिजली की भांति बदरीप्रसाद को यह सुअवसर समझ में आ गया। वह शकुन्तला के कमरे से अपने कमरे में आया और लिखे हुए पत्र को उस कापी में रखकर अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में लौट आया।

इसके उपरान्त इतनी व्यस्तता रही कि मंगला के विषय में किसी को विचार करने का अवसर ही नहीं मिला। पिता अपने पुत्र के लिए लन्दन के किसी बैंक में धन भेजने का प्रबन्ध करता हुआ साढ़े-तीन बजे के लगभग घर आया और अपने कारोबार सम्बन्धी कार्य में लीन हो गया। सदारानी भी अपनी सहेलियों से मिलने में लगी हुई थी। जिन-जिन परिचित स्त्रियों को पता चला था कि सदारानी का इकलौता पुत्र पांच वर्ष के लिए विलायत जा रहा है, वे अपनी-अपनी शुभकामना प्रकट करने आ रही थीं।

इनमें कुछ ऐसी भी थीं, जो अपनी लड़की के लिए बदरीप्रसाद पर दृष्टि रखती थीं, परन्तु जब से उन्हें उसके पढ़ने के लिए जाने की बात पता चली, तो वे अपनी इच्छा प्रकट करने में संकोच करने लगीं। इस पर भी दृष्टि तो थी ही और इसीलिए वे सदारानी से अपने सम्बन्ध बनाये रखने के लिए आयी थीं।

बदरीप्रसाद के मित्र और राजनीतिक कार्य में सहयोगी भी उसे कोठी पर ही 'सैण्ड ऑफ़' करने आने लगे थे।

यह कार्यक्रम रात के नौ बजे तक चलता रहा। इसके बाद परिवार खाने के लिए एकत्रित हो गया। खाने के कमरे में जुगलकिशोर, सदारानी, शकुन्तला, बदरीप्रसाद और उसका एक मामा ब्रजभूषण तथा उसकी पत्नी साधना भी उपस्थित थे। हवाई-पत्तन पर सब बदरीप्रसाद को छोड़ने जाने वाले थे और वहां से लौटकर रात लालाजी के घर पर ही रहने वाले थे। वैसे वे रोहतक के रहने वाले थे और वहां उनका अन्न का व्यापार चलता था।

भोजनोपरान्त एक घण्टा-भर सबने आराम किया और फिर जाने की तैयारी होने लगी। दो मोटरगाड़ियां हवाईपत्तन पर जाने के लिए तैयार खड़ी थीं। संक्षिप्त-सा सामान था। एक सूटकेस और एक बॉस्केट में फल तथा मिठाई थी। मार्ग में इनकी आवश्यकता नहीं थी, परन्तु बदरीप्रसाद की मामी लायी थी, तो वह उनको साथ ले जाने के लिए तैयार हो गया।

जब मोटर पर सवार होने के लिए बदरीप्रसाद अपने कमरे से निकला, तो सामने से मंगला आती मिली। यह अप्रत्याशित था। एकाएक उसके मुख से निकल गया, "मंगलमयी!"

"जी नहीं, मंगला। मुझे आपका पत्र अपनी कापी में रखा मिला है और मैंने वह पत्र अपनी माताजी को दे दिया है।"

"ओह! तो फिर ?"

मंगला कुछ कहने वाली थी कि बाहर से पिताजी की आवाज़ आयी, "बदरी! शीघ्र करो। समय हो रहा है।" इसलिए उत्तर सुने बिना ही बदरीप्रसाद चल दिया। मंगला मालकिन के कमरे की ओर जा रही थी। वहां उसकी मां सुखिया पहले ही पहुंची हुई थी। उन दोनों ने भी लालाजी की आवाज़ सुनी थी। इसलिए सदारानी सुखिया के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ कोठी की ड्योढ़ी में मोटर की ओर चल दी। मंगला दोनों के साथ ही थी। जब ये मोटर के पास पहुंचीं, तो बदरीप्रसाद पहले से ही ड्राइवर के पास जा बैठा था। जुगलकिशोर, सदारानी और शकुन्तला मोटरगाड़ी में पिछली सीट पर बैठ गये। दूसरी गाड़ी में ब्रजभूषण और साधना बैठे थे। उनके साथ एक नौकर था। वह उनकी गाड़ी में अगली सीट पर बैठा था।

सुखिया और मंगला सेठ जुगलकिशोर वाली गाड़ी के पास खड़े थे। सदारानी के बैठते ही मोटर स्टार्ट हो गयी और दोनों मां-बेटी ने हाथ जोड़कर नमस्ते कह दी।

बदरीप्रसाद ने देखा कि कोठी के बरामदे में लगे लैम्प के प्रकाश में मंगला का चेहरा देदीप्यमान हो रहा था। इसका अभिप्राय उसे यह समझ में आया कि मंगला उसके प्रस्ताव पर बहुत प्रसन्न है।

:6 :

उसी दिन मध्याह्नोत्तर जब लालाजी, उनकी पत्नी और बदरीप्रसाद अपने-अपने परिचितों से मिल रहे थे और सुखिया मिलने के लिए आने वालों से चाय-पानी पूछ रही थी, मंगला शकुन्तला के कमरे में गयी और जब वह अपनी कापी लेकर शकुन्तला के संशोधन देखने लगी, तो उसमें रखे पत्र को देखकर विस्मित रह गयी।

पत्र पढ़कर वह आश्चर्यचकित रह गयी। पत्र के एक वाक्य पर उसकी दृष्टि विशेष रूप से टिक गयी। वह वाक्य था—'मेरे हृदय की रानी मंगलमयी! मैं तब तक के लिए तुम्हें नमस्ते कहता हूं।'

'हृदय की रानी मंगलमयी' उसे बहुत ही प्रिय प्रतीत हुआ था। वह इतना तो समझती थी कि उसका भी विवाह होगा, जैसे अन्य लड़कियों का होता है और वह भी बढ़िया वस्त्र और आभूषण पहनेगी, परन्तु लालाजी के लड़के से विवाह होगा, यह तो उसे खुशी से पागल कर देने वाली बात है। इस पर भी वह नहीं जानती थी कि इस प्रसन्नता को कैसे प्रकट करे? घण्टा-भर तक वह अपने मन के स्वप्नों में विलीन अपनी कुरसी पर बैठी रही। उसका ध्यान तब भंग हुआ, जब उसकी मां अपने कमरे में आयी। आते ही उसने पूछा, "मंगला! चाय पी चुकी हो?"

"चाय? नहीं मां, अभी तो बनायी ही नहीं।"

"अब तो पांच बज गये हैं। जल्दी करो। मैं जा रही हूं।"

"कहां?"

"आज मिलने वाली बहुत-सी स्त्रियां आ रही हैं। उनको चाय पिलाते हुए बहिनजी ने कहा कि मैं भी पी लूं, तो मुझे तुम्हारी याद आ गयी।"

इस पर मंगला को पत्र का ध्यान आया। उसने मां से कहा, "मां! यह देखो। यह इस कापी में पड़ा था।" मंगला का विचार था कि उसकी मां को भी इस समाचार से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसी ही प्रसन्नता होगी, जैसी उसे हुई है।

मां ने पत्र पढ़ा। पढ़कर उसने लड़की से पूछा, "यह इस कापी में कैसे आया?"

सुखिया का विचार था कि मां की आज्ञा का उल्लंघन कर बदरीप्रसाद इस कमरे में आया है, परन्तु मंगला ने बता दिया, "यह कापी ठीक करने के लिए मैं शकुन्तला बहिन के पास छोड़ आयी थी। मैं चार बजे के लगभग बहिनजी से कापी लेने गयी और बहिनजी ने बन्द कापी अपनी मेज़ से उठाकर मुझे दे दी। मैंने यहां आकर पढ़ा है, तो तुम्हें दिखाने के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही थी।"

"देखो बेटी! अभी वह पांच वर्ष के लिए विलायत जा रहा है और उस देश की लड़कियां जादूगरनियां होती हैं। इसलिए मैं समझती हूं कि तुम्हारा विवाह लालाजी के लड़के से नहीं होगा।"

"पर मां! यह उसने लिखा है।"

"वह इतने वर्षों में अपने लिखे को भूल जायेगा।"

इस पर भी मंगला बच्चों की भांति मिलने वाली मिठाई की आशा पर प्रसन्न थी। वह अवसर ढूंढ़ रही थी कि उसे भी बदरीप्रसाद को नमस्ते कहने का अवसर मिले और जब रात प्रस्थान से पूर्व उसे यह अवसर मिला, तो अनायास उसने बदरीप्रसाद को पत्र मिलने का समाचार दे दिया।

परन्तु इस समाचार की प्रतिक्रिया वह नहीं बता सकी। एक तो वह जानती नहीं थी कि किन शब्दों में अपनी प्रसन्नता प्रकट करे और दूसरे, समय नहीं था। बदरीप्रसाद बाहर खड़ी गाड़ी में सवार होने जा रहा था।

जब मोटरगाड़ियां कोठी से बाहर निकलीं, तो सुखिया और उसकी लड़की कोठी के अन्य नौकरों के साथ अपने कमरे की ओर चल पड़ीं। सुखिया ने अपने कमरे की ओर जाते हुए अपनी लड़की से कहा, "मुझे कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि छोटे बाबू विलायत से मेम को पत्नी बनाकर ही लौटेंगे।"

"पर मां!" मंगला कहना चाहती थी कि उसने पत्र में उसे अपनी पत्नी माना है। सुखिया ने लड़की को कुछ भी कहने का अवसर दिये बिना ही कह दिया, "बेटी! सब पुरुष एक-समान होते हैं। जब अकिंचन होते हैं, तो लक्ष्मी की पूजा करते हैं और जब लक्ष्मी प्रसन्न होकर उन्हें धन-सम्पदायुक्त कर देती है, तो आंखें बदल लेते हैं और स्वार्थ तथा सुख-भोग के पीछे लग जाते हैं।"

लड़की इसका कुछ-कुछ ही अर्थ समझती थी। वह इतना ही समझी थी कि मां को बदरीप्रसाद के लिखने पर विश्वास नहीं है। इसलिए वह कुछ कह नहीं सकी, चुप कर गयी।

मां ने सोने से पहले लड़की को कह दिया, " देखो मंगला! चित्त लगाकर पढ़ती जाओ। जब तुम ज्ञानवान् हो जाओगी, तो कोई देवता तुम पर अपनी कृपा का छत्र तान देगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगला विचार करती थी कि क्या बदरीप्रसाद देवता नहीं है ? वह तो उसे ही देवता समझ रही थी।

मंगला के मन में विवाह की लालसा और सम्भावना इकट्ठी ही उत्पन्न हुई थी और मन की वह स्थिति इतनी मधुर थी कि विरोध में कही बात वह मानने को तैयार नहीं हुई। रात-भर वह इस मधुर आशा में सो नहीं सकी। यद्यपि वह नहीं जानती थी कि पति से क्या-क्या सुख प्राप्त हो सकते हैं, तथापि वह देख रही थी कि सब पुरुष पत्नियों की ख़ुशामद में लीन रहते हैं।

प्रात: वह मां से पहले अपनी चारपाई से उठी। वास्तव में, वह रात-भर सो ही नहीं सकी थी। इसलिए उसे मां के जागने से आधा घण्टा पूर्व बिस्तर से निकलना सुगम प्रतीत हुआ।

उसने कमरे का लैम्प जलाया, तो मां ने आंखें खोलीं और लड़की को बिस्तर से निकल कमरे के बीचो-बीच खड़ी देखकर पूछने लगी, "आज तुम पहले जाग गयी हो ?"

"हां मां। पढ़ाई करूंगी।"

"ठीक है, पढ़ो। मैं तो अभी एक घण्टा और सोऊंगी। रात देर से सोयी थी।"

मां ने करवट बदली और सो गयी। लड़की 'बाथरूम' में गयी। मुंह धोकर सुस्ती उतारकर अपनी मेज़ पर आ बैठी और हिन्दी और अंगरेजी की ठीक की हुई कापियां देखने लगी।

सुखिया की नींद सात बजे खुली। चिमनी पर रखे टाइमपीस में समय देखकर वह उठी और कोठी में अपने काम पर जाने के लिए तैयार होने लगी।

सदारानी हवाईपत्तन से रात पौन बजे लौटी थी और एक बजे सो गयी थी। अत: वह अभी तक जागी नहीं थी।

सुखिया उसके पलंग के समीप खड़ी विचार कर ही रही थी कि उसको उठाये अथवा नहीं।

लालाजी ने सुखिया को खड़े देखा, तो कह दिया, "इसे सोने दो, रात बहुत देर से सोयी है। अच्छा सुखिया ! यह बताओ, ब्रजभूषण के लड़के को देखा है ?"

"जो पिछले वर्ष अपनी माताजी के साथ यहां आया था।"

"हां, वही। उसका नाम कमलकिशोर है। अब वह पिता के साथ कारोबार में लग गया है। उसकी मां कहती है कि उसे मंगला बहुत प्यारी लड़की प्रतीत होती है।"

"बहिनजी भी यही कहती हैं।"

"कौन बहिनजी ?"

"मैं भैया बदरीप्रसाद की मां के विषय में कह रही हूं। वह लड़की से बहुत स्नेह रखती हैं।"

"ओह ! हां, मंगला है ही ऐसी कि जो कोई उसे देखता है, उससे प्यार करने लगता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। मुझे भी वह बहुत ही अच्छी लड़की लगती है, परन्तु मैं उसके विवाह की बात कर रहा हूं। क्या आयु हो गयी है मंगला की ?''

''आज वह बारह वर्ष, दो महीने और दस दिन की हुई है।''

''तो तुमने दिन भी स्मरण कर रखा है ?''

''हां, मैं प्रतिदिन इसे गिनती रहती हूं। वह मेरे पास किसी की धरोहर है। उसको उचित स्थान पर और उचित ढंग से स्थापित करने का भार किसी ने मुझ पर डाल रखा है। इस कर्तव्य-पालन करने की अवधि को नित्य गिनती रहती हूं।''

''और घण्टे नहीं गिना करतीं ?''

''वह भी।'' कमरे में बातों की आवाज़ से सदारानी की आंख खुल गयी । वह पति तथा सुखिया को कमरे के बीचो-बीच खड़े बातें करते देख उठकर पलंग पर बैठ गयी और प्रश्न-भरी दृष्टि से दोनों की ओर देखने लगी।

सदारानी को जाग गया देख, लालाजी और सुखिया में बातें समाप्त हो गयीं। लालाजी ने कहा, ''तो श्रीमतीजी जाग पड़ी हैं। मैं तो सुखिया से कह रहा था कि तुम्हें सोने दे। अभी न जगाये।''

''परन्तु आप दोनों ने मुझे जगाने का पुण्य-लाभ तो ले ही लिया है।'' सदारानी ने मुसकराते हुए कहा, ''अच्छा, सुखिया ! चाय ले आओ।''

सुखिया कमरे से निकल गयी। वास्तव में, वह चाय समय पर न लाने के लिए क्षमा मांगने आयी थी। अत: वह 'किचन' में चाय बनाने के लिए चली गयी।

लालाजी ने कहा, ''मैं समझ रहा था कि तुम अभी गहरी नींद में सो रही हो।''

''परन्तु सुखिया से तो कुछ उसकी लड़की के विषय में बात हो रही थी। आप क्या कह रहे थे उसके विषय में ?''

''मैं उसे साधना की बात बता रहा था, जो उसने कल मध्याह्न के समय कही थी। अभी बात हो नहीं सकी थी कि तुम जाग पड़ीं।''

''मैं स्वयं उससे आज किसी समय बात करने वाली थी।''

''मुझे साधना ने अभी पुन: इस विषय पर बात करने के लिए कहा है। वह कह रही थी कि यदि निश्चय हो जाये, तो लड़के और लड़की दोनों के लिए ठीक होगा। दोनों एक-दूसरे के विषय में मन में संकल्प-विकल्प बना लेंगे और उस संकल्प-विकल्प की प्रतिक्रिया चार-पांच वर्ष में स्पष्ट रूप में दिखाई देने लगेगी। तब विवाह कर देंगे।

''वह कहती थी कि कामता के विषय में उन्होंने यही किया हुआ है। दोनों को तीन वर्ष से विदित है कि उनका विवाह होगा और वे दोनों परस्पर एक-दूसरे को तोल रहे हैं। कभी-कभी उनको परस्पर देखने और बातचीत करने का अवसर भी देते रहते हैं। यह ठीक है कि कामता के ससुरालवालों का खिलाने-पिलाने में व्यय होता रहता है। इस पर भी ब्रजभूषण का विचार कुछ ठीक ही प्रतीत होता है कि व्यय किये धन से जीवन-भर की सहिष्णुता अधिक मूल्यवान् है। वह अपने और साधना के विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही कहते हैं। उनकी सगाई भी विवाह से चार वर्ष पूर्व कर दी गयी थी और इन चार वर्षों में वह कई बार परस्पर बातचीत कर चुके थे। इससे उनके मन में एक-दूसरे के लिए प्रेम और आदर ही बना था।

"साधना बता रही थी कि कमल के लिए कामता के ससुरालवालों की एक लड़की का सम्बन्ध आया है और उसका ज़िक्र कामता की सास ने किया, तो ब्रजभूषण ने कहा। इस पर उसने कहा है कि यदि सगाई करनी है, तो सुखिया की मंगला से ही कर दी जाये। वह उसे एक अच्छी लड़की प्रतीत हुई है।

"साधना चाहती थी कि यदि सुखिया उनके जाने से पहले यह वचन दे दे, तो कमल को बहुत प्रसन्नता होगी। ब्रजभूषण और साधना को भी प्रसन्नता होगी।"

सदारानी ने कह दिया, "मैं तो यही विचार कर रही हूं कि यदि साधना भाभी इस आशा से सगाई कर रही हैं कि जितना कुछ वह कामता की ससुरालवालों को दे रही हैं, उसका कुछ भाग यहां से मिल सकेगा, तो हम चाहे कितना भी करें, फिर भी उतना कुछ नहीं कर सकते, जितना हम शकुन्तला के विषय में करने वाले हैं।"

"मैंने उसे समझाया है। इस पर उसने कहा कि यदि सुखिया को यह सम्बन्ध स्वीकार हो, तो वह चाहेगी कि लड़की को किसी स्कूल में भरती करवा दें और उसे शिक्षा-दीक्षा से सम्पन्न कर दें। वह अभी से लड़की के लिए वज़ीफा नियत कर देगी, जिससे वह सभ्य जीवन व्यतीत करने का स्वभाव बना सके।"

सदारानी मुसकरायी और कुछ कहने वाली थी कि सुखिया चाय लेकर आ पहुंची।

सदारानी अभी तक पलंग पर बैठी थी और चाय की प्रतीक्षा कर रही थी। उसने चाय के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा, "सुखिया! वह स्टूल लेकर बैठ जाओ। लालाजी तुमसे एक बात करना चाहते हैं और उसका उत्तर अभी चाहते हैं।"

जुगलकिशोर सदारानी के पलंग पर बैठ गया था।

सुखिया मालकिन की 'ड्रेसिंगटेबल' के सामने रखे स्टूल को पलंग के समीप रखकर उस पर बैठ गयी, तो जुगलकिशोर ने वार्तालाप का क्रम, जो सदारानी के जाग पड़ने से टूट गया था, पुन: आरम्भ कर दिया।

उसने कहा, "सुखिया! मैं कह रहा था कि ब्रजभूषण की पत्नी अपने लड़के के लिए मंगला को मांग रही है।"

"लालाजी!" सुखिया ने कह दिया, "मैं साधना बहिन का प्रस्ताव लड़की को बता दूंगी और वह इस प्रस्ताव को भी मन में रखेगी। कुछ समय के बाद, मैं इस प्रस्ताव पर लड़की की प्रतिक्रिया देखूंगी और तब तक हो सका, तो बात पक्की हो जायेगी। उनको भी चाहिए कि कमलकिशोर को यह विचार बताकर देखें कि वह क्या चाहता है। साथ ही उनको स्वयं यह समझ लेना चाहिए कि मैं तो सर्वथा अकिंचन ही हूं। उनको कुछ भी दे नहीं सकूंगी।"

"साधना इसे जानती है। तुम्हारा पूर्ण इतिहास उसको पता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर भी यह बात उनको पता होनी चाहिए कि मैं आपसे वेतन नहीं लेती। इसलिए मेरे पास लड़की को देने के लिए चांदी का छल्ला भी नहीं है।"

"ठीक है। साधना चाहती है कि सगाई की रीति अभी हो जाये।"

"नहीं,बहिनजी! अभी नहीं। एक अन्य विचार मंगला के समक्ष उपस्थित है और वह उस पर विचार कर रही है। यह दूसरा विचार मैं उपस्थित कर दूंगी। दोनों की प्रतिक्रिया का पता चलने पर ही सगाई हो सकेगी।"

"दूसरा विचार किसका है?" लालाजी ने पूछ लिया।

"वह तो आप जानते ही हैं। भैया बदरीप्रसाद का है। मैंने तो उसे भैया के मनोभावों को नहीं बताया था, परन्तु भैया बदरीप्रसाद ने किसी-न-किसी प्रकार मंगला को एक पत्र दे दिया है और उसमें अपने मनोभावों का वर्णन किया है।"

"साधना भाभी ने एक बात और कही है।" सदारानी ने बता दिया, "वह यह कि यदि सगाई हो जाये, तो वह लड़की को किसी स्कूल में भरती करवाना और पढ़ाना पसन्द करेंगे।"

"यह तो तब ही होगा, जब सगाई होगी। अभी कुछ मास तक तो इस विषय पर लड़की के मनोभावों को जानने के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए। वह भी कमलकिशोर को इस विषय पर विचार करने का अवसर दें, तो ठीक रहेगा।"

"यह लड़के का ही प्रस्ताव है।"

सुखिया मुसकरायी और बोली, "बहिनजी! मैंने 'गीज़र' चला दिया है। आपके स्नान के लिए जल गरम हो रहा है।"

इसका अर्थ यह था कि सुखिया ने बात समाप्त कर दी है। जुगलकिशोर उठ खड़ा हुआ और अपने कमरे में जाने के लिए तैयार हो गया। सदारानी भी पलंग से नीचे उतरी, तो सुखिया अपने कमरे को चल दी। वह स्वयं भी स्नानादि से निवृत्त होना चाहती थी।

:7 :

सुखिया अपने कमरे में पहुंची, तो मंगला कुरसी पर बैठी हुई मेज़ पर सिर रखे सो रही थी। मंगला को गहरी नींद सोये देख सुखिया समझ गयी कि लड़की रात को ठीक प्रकार से सो नहीं सकी, इसलिए प्रात: समय से पहले जाग पड़ी थी और अब नींद पूरी कर रही है। इतना विचार कर मां शौचादि के लिए ग़ुसलख़ाने में चली गयी।

जुगलकिशोर अपने ठेकेदारी के काम में लीन हो गया और भूल गया कि घर पर किसी प्रकार की समस्या है। उसे अपनी पत्नी पर विश्वास था कि वह स्वयं साधना को समझा-बुझा देगी।

ठीक नौ बजे परिवार अल्पाहार के लिए खाना खाने के कमरे में एकत्रित हुआ, तो ब्रजभूषण और साधना को अल्पाहार के लिए बुला लिया गया। शकुन्तला भी वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। साधना ने कहा, ''बहिनजी ! मैं जाने से पूर्व मंगला को अपनी भावना के उपलक्ष्य में कुछ देकर जाना चाहती हूं।''

''बहुत जल्दी है।'' सदारानी ने पूछ लिया।

''हां, शकुन्तला ने बताया है कि बदरीप्रसाद भी उस पर दृष्टि रखता है। यद्यपि शकुन्तला के पिता ने यह सम्बन्ध स्वीकार नहीं किया, तथापि भैया उससे कह गया है कि वह मंगला को उससे विवाह के लिए तैयार रखे।''

''क्यों शकुन्तला ! क्या कह गया है बदरीप्रसाद ?''

''भैया कल सायंकाल मुझे मिलने मेरे कमरे में आये थे और कहते थे कि मैं मंगला से विवाह करूंगा। तुम उसे कहकर मेरे अनुकूल बना रखना। साथ ही, वह यह भी कह रहे थे कि वह मंगला के पढ़ने के लिए पुस्तकें भी भेजा करेंगे। वह मेरे द्वारा आया करेंगी और मैं मंगला को दे दिया करूं।''

इस पर साधना ने पुन: कहा,''इसीलिए मैं कहती हूं कि उसे कमल के विषय में बता दिया जाये।''

अब सदारानी ने कहा,''ऐसा पता चला है कि जाने से पूर्व बदरी ने एक पत्र मंगला को दिया है और उसमें उससे विवाह करने का विचार बता दिया है।''

''तो दोनों भाई एक ही लड़की के पीछे पड़े हुए हैं ? यह तो वैमनस्य का कारण हो जायेगा।'' ब्रजभूषण का कहना था।

''पर मैं बदरी का विवाह मंगला से नहीं करना चाहता। मेरे मन में दूसरी योजना है।'' जुगलकिशोर ने अपने मन की बात बता दी।

''परन्तु जीजाजी !'' ब्रजभूषण ने कहा, ''बड़ी आयु तक बच्चों के विवाह रोक रखने का यही परिणाम होता है।''

''परन्तु मेरा विवाह भी तो बीस वर्ष का हो जाने पर हुआ था। सदारानी तब अठारह वर्ष की थी।''

''परन्तु आपकी सगाई तो पहले हो गयी थी। हमने बच्चों की सगाई उचित आयु में नहीं की।''

''सगाई के लिए क्या आयु होनी चाहिए ?'' सदारानी ने पूछ लिया।

इस पर ब्रजभूषण ने कह दिया, ''जब बहिन बारह वर्ष की थी, तो हमारे पिताजी कहते थे कि कुछ वर्ष तक सगाई रहने के उपरान्त ही विवाह होना चाहिए। यद्यपि मां का कहना था कि जितने दिन तक सगाई रहेगी, कुछ-न-कुछ उनको देना ही पड़ेगा। वह व्यर्थ भी जा सकता है। सगाई टूट भी सकती है। लेकिन पिताजी का कहना था कि कुछ दिया गया धन और मिठाई ही तो व्यर्थ जायेगी। लड़की का जीवन तो व्यर्थ नहीं जायेगा। हम भली-भांति अपने सम्बन्धियों को ठोक-बजाकर देख लेंगे। लड़का-लड़की भी एक-दूसरे के विषय में सोच-समझ लेंगे। माताजी को पिताजी की युक्ति माननी पड़ी। कारण यह था कि बहिन के ससुरालवालों को देने के लिए पिताजी को धन पैदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना पड़ता था और बहिन को पैदा करने वाली माताजी थीं। उनकी वस्तु की रक्षा के लिए ही पिताजी ऐसा कह रहे थे।''

इस पर सदारानी ने कह दिया, ''देखो भाभी! अब तो दोनों लड़कों के विषय में लड़की को बता दिया गया है। अब तो यह उसके विचार करने की बात रह गयी है कि वह दिल्ली में रहना चाहती है अथवा रोहतक में रहना पसन्द करेगी।''

शकुन्तला चुपचाप अपने माता-पिता तथा मामा-मामी की बातें सुनती रही थी। उसे अपनी एक सखी की बात याद आ गयी थी। कुछ महीने ही हुए थे कि उसकी एक सहपाठिन चञ्चल एक दिन कॉलेज में अपनी सहेली शकुन्तला से कहने लगी, ''मेरा पत्ता कॉलेज से कट गया है।''

''क्या मतलब?'' शकुन्तला ने चिन्ता के भाव में सहेली के मुंह पर देखते हुए पूछ लिया।

चञ्चल ने बताया, ''अब मेरा विवाह हो रहा है, मैं कल से कॉलेज नहीं आऊंगी।''

इस पर शकुन्तला ने पूछ था, ''कैसे हैं जीजाजी?''

चञ्चल ने हंसते हुए कहा था,''आशा करती हूं कि मनुष्य होंगे। मैंने अभी तक उनको देखा नहीं। कहते हैं कि उन्होंने मुझे देखा है और पसन्द भी किया है। कल मेरी होने वाली सास आयी थीं और मेरे गले में एक सोने की 'चेन' डालकर कह गयी थीं कि वह आगामी शनिवार सायंकाल बरात लेकर आयेंगी और रविवार को प्रात:काल डोली में बिठाकर मुझे ले जायेंगी।

''और आज शुक्रवार है?'' शकुन्तला ने विस्मय से पूछा।

''हां, मां तो आज भी कॉलेज जाने की स्वीकृति नहीं दे रही थीं, परन्तु मैंने कहा है कि मुझे अपनी कुछ सहेलियों को विवाह पर आमन्त्रित करना है। तब ही मुझे स्वीकृति मिली है।''

विवाह के बाद शकुन्तला चञ्चल की ससुराल उससे मिलने गयी थी। शकुन्तला ने पूछा था, ''कैसे लगे जीजाजी?''

''अभी तक तो उनका पशुपन ही दिखाई दिया है।''

चञ्चल के पत्र आते रहते थे। शकुन्तला के पुन: एक बार वही प्रश्न पूछने पर एक पत्र में उसने लिखा था— 'स्प्लेंडिड (अति उत्तम)।'

इसको स्मरण कर शकुन्तला को यह समझ आया कि उसके माता-पिता बच्चों की-सी बातें कर रहे हैं। जो भाग्य में बदा है, वह होगा ही। व्यर्थ में इतनी चिन्ता कर रहे हैं। उनको अपने विचार से लड़की का चयन कर लेना चाहिए। लड़कों को इसमें यत्न करते देख वह किसी शुभ की आशा नहीं करती थी, परन्तु वह मौन थी। उसके मन में एक विचार आया था कि उसके विवाह पर न तो उसके माता-पिता और न ही मामा-मामी विचार कर रहे हैं। उन्हें तो अपने लड़के की चिन्ता लग रही है।

वह अपने मन में यह विचार कर रही थी कि यदि वह भी किसी लड़के को पसन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर अपने माता-पिता से उसके साथ विवाह की बात करती, तो वे क्या करते?

शकुन्तला के मन में यह विचार था कि जहां परमात्मा ने निश्चय किया है, वहां विवाह हो जायेगा। विवाहित जीवन में सुख-दु:ख तो अपने भाग्य से प्राप्त होता है। जब यह है, तो उसके लिए चिन्ता और देख-रेख की क्या आवश्यकता है? इन विचारों के साथ वह अपनी पढ़ाई में लीन रहती थी।

अल्पाहार समाप्त हुआ और सब मेज़ से उठे, तो शकुन्तला ने अपनी मामी को हाथ जोड़कर नमस्ते करते हुए कहा, "मामी! मैं तो कॉलेज जा रही हूं और आप मेरे लौटने से पूर्व चली जायेंगी।"

साधना ने शकुन्तला की पीठ पर हाथ फेरकर प्यार देते हुए कहा, "मैं तुमसे एक बात पूछने तुम्हारे कमरे में चल रही हूं।"

शकुन्तला के साथ कमरे में जाते हुए साधना पूछने लगी, "मंगला में क्या गुण है कि तुम्हारे दोनों भाई उस पर मुग्ध हैं?"

शकुन्तला के मन की सर्वोपरि बात अनायास ही उसके मुंह से निकल गयी, "दोनों कुछ मूर्ख प्रतीत होते हैं, परन्तु मामी, क्या सब पुरुष ऐसे ही होते हैं?"

शकुन्तला की बात सुनकर साधना उसका मुंह देखती रह गयी। इस समय दोनों कमरे में पहुंच गयीं। वहां मंगला खड़ी थी। साधना ने ध्यानपूर्वक मंगला को देखा और उसको हाथ जोड़कर नमस्ते करते देख पूछ लिया, "मंगला, कैसी हो?"

"मामीजी! बहुत मज़े में हूं। बहिनजी से नमस्ते करने आयी थी।"

शकुन्तला ने अपनी नोटबुक पकड़ी और मंगला से कहा, "चलो मेरे साथ। तुम्हें मोटर की सैर करा दूं।"

मंगला शकुन्तला के साथ चल पड़ी। दोनों मोटर में सवार हुईं, तो मोटर दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर चल पड़ी। मार्ग में शकुन्तला ने पूछा, "मंगला! तुम्हारी अंगरेजी की 'कम्पोज़ीशन' की कापी में एक पत्र तुम्हारे नाम का रखा था। वह किसका था?"

"तो बहिनजी ने उसे देख लिया था?"

"हां, मैंने कॉलेज से आकर कापी देखी थी। पत्र बन्द था, परन्तु पता लिखने वाले का लेख भैया का प्रतीत होता था।"

"हां बहिनजी! मैं सायंकाल वह पत्र आपको दिखा दूंगी। वह पत्र मैंने अपनी माताजी को दिखा दिया है।"

"ओह! पर क्यों?"

"और वह आपको भी दिखाऊंगी। यह इसलिए कि आप दोनों मुझसे स्नेह रखती हैं।"

"ठीक है। तब तो पत्र देखकर ही बात करूंगी।"

"तो आप मुझसे कुछ बात करने के लिए ही मुझे अपने साथ लायी हैं?"

"हां। लायी तो इसी मतलब के लिए थी, परन्तु अब पत्र पढ़कर ही बात करूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी माताजी से भी उनको पत्र दिखाने के बाद ही बात हुई है। उन्होंने अभी आपके कमरे में आने से पूर्व कमल भैया के विषय में भी कुछ कहा है। मैं तो इस विषय में सायंकाल आपसे बात करना चाहती थी।"

"ठीक है।"

इस प्रकार बात समाप्त कर शकुन्तला उससे सुलेख लिखने का अभ्यास करने के विषय पर बात करने लगी। उसने कहा, "ख़ुशख़त लिखने वालों का चरित्र अति विचारवान बन जाता है। उनके हाथ नियन्त्रण में हो जाते हैं और हाथ ही तो कार्य करते हैं। सुलेख लिखने के अभ्यास से अन्य कार्यों में भी हाथ मन और बुद्धि के अधीन काम करना सीख जाते हैं। इससे मनुष्य को बहुत सुख मिलता है।"

"बहिनजी! मैं अब धीरे-धीरे सुन्दर और सुगमता से पढ़ा जाने वाला लेख लिखने का अभ्यास करूंगी।"

:8:

कॉलेज से लौटने पर शकुन्तला की मंगला से बातचीत हो गयी। शकुन्तला को पता चल गया कि उसका सगा भाई और ममेरा भाई दोनों ही मंगला से विवाह के लिए इच्छुक हैं। वह इसमें कारण भी समझती थी। मंगला देखने में सुन्दर थी। वह बिना शृंगार किये भी शकुन्तला से उज्ज्वल, नख-शिख में श्रेष्ठ और बुद्धि में प्रखर प्रतीत होती थी। पढ़ाई में तो वह आधा घण्टा नित्य पढ़ाने से ही तीन वर्ष में हिन्दी के समाचार-पत्र पढ़ने व समझने लगी थी और अंगरेजी की 'फ़िफ़्थ रीडर' पढ़ रही थी।

वैसे तो वह इसे उचित ही समझती थी कि निर्धन विधवा की लड़की को कोई धनी-मानी पति मिल जाये, परन्तु दोनों प्रत्याशी उसके शरीर के अतिरिक्त अन्य गुणों को नहीं जानते थे। इसलिए वह इन दोनों के प्रस्तावों से प्रसन्न नहीं थी।

मंगला ने बदरीप्रसाद का पत्र शकुन्तला को दिखाया और शकुन्तला ने पढ़कर पूछ लिया, "तो इसका क्या अर्थ समझी हो?"

"बहिनजी! आज प्रात: के अल्पाहार के समय मेरी माताजी ने कमल भैया के विषय में बताया है कि उनकी माताजी भी मुझे अपने घर ले जाने के लिए कह रही हैं।"

"और तुम क्या विचार कर रही हो?"

"मैं यह विचार करती हूं कि क्या हम लड़कियां निर्जीव लकड़ी का एक लट्ठा-मात्र हैं कि जिधर की लहर आ गयी, उधर बह जायें?"

शकुन्तला मुसकराती हुई मंगला का मुंह देखती रह गयी। मंगला इसका अर्थ नहीं समझ सकी। इसलिए वह उसके कुछ कहने की प्रतीक्षा करती रही। कुछ देर विचार कर शकुन्तला ने कहा, "देखो मंगला! यह लड़कियों के साथ ही नहीं होता। यह इस मनुष्य-लोक में सबके साथ हो रहा है। अन्तर इतना है कि तुम अपनी परवशता का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभव कर रही हो और कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं, जो इसे अनुभव भी नहीं करते। कुछ और भी महामूर्ख होते हैं,जो काल के इस बहाव में बहते हुए भी यह समझते हैं कि वह अपने प्रयास से ही सब कुछ कर रहे हैं। तुम अनुभव तो करती हो कि यह क्या हो रहा है। यह बहुत अच्छे लक्षण हैं, परन्तु मैं तुम्हें बताती हूं कि बुद्धिमान् व्यक्ति यह अनुभव करते हुए भी कि काल की गति उन्हें बहाये लिये जा रही है, अपने स्वत्व को अपने अधीन रखकर इस बहती नदी के पार जाने का यत्न करते रहते हैं।''

''तो बहिनजी! बताइये, मैं यह कैसे कर सकूंगी?''

''तुम नदी के बहाव का विचार छोड़कर अपने पहुंचने वाले किनारे का विचार करो।

''देखो, मैं बताती हूं। समय एक नदी है, जो निरन्तर बह रही है। हम भाग्य से इसमें आ गिरे हैं। नदी के दो किनारे हैं। हम यह नहीं जान सकते कि नदी के किस किनारे से इसमें आये हैं। हम स्वर्गलोक से भी इस मनुष्य जीवन में आये हो सकते हैं। हमें विचार करना चाहिए कि हम जहां जाना चाहते हैं वह किनारा किधर है। क्या हम पुनः कीट-पतंग की योनि में जाना चाहते हैं अथवा स्वर्ग में जाना चाहते हैं? मंगला! यह जानना और फिर बहाव में बहते हुए उस किनारे पर पहुंचने का यत्न करना, इसी में मनुष्य की सफलता है।''

''बहिनजी! यही तो पूछ रही हूं कि स्वर्ग का मार्ग किधर है? भैया बदरीप्रसाद के घर को अथवा कमल भैया के घर को? मां ने कहा कि किसी एक को चित्त में निश्चित कर लो और दूसरे का विचार छोड़ दो।''

''इसे जानने के लिए अभी तुम्हें पढ़ाई करनी पड़ेगी। ज्ञान प्राप्त करके ही तुम यह जान सकोगी कि सही किनारा कौन-सा है और ज्ञान से ही तुम इस काल-रूपी नदी में से उस किनारे की ओर जाने का यत्न कर सकोगी।''

''और अधिक ज्ञान कहां से पाऊं?''

''तुम नदी के बहाव का विचार छोड़कर पढ़ने में चित्त लगाओ। अभी तुम्हारा ज्ञान बहुत कम है। तुम स्वयं यह जान नहीं सकतीं कि सही किनारा किधर है? और देखो, अब पढ़ो। समय व्यर्थ मत गंवाओ। माताजी से कह दो कि तुम्हारे पास अभी विवाह के विषय में विचार करने के लिए समय नहीं है और मन से विवाह के विचार को निकाल दो।''

मंगला के मन को यह बात सुगम प्रतीत हुई। इसके कुछ मास उपरान्त साधना का पत्र आने पर सदारानी ने सुखिया से पूछा, ''लड़की के मन की क्या प्रतिक्रिया है?''

सुखिया ने बताया, ''लड़की कहती है कि अभी उसमें इस विषय पर विचार करने की योग्यता नहीं है।''

''तो तुम उसके विषय में विचार कर निर्णय कर लो। इसमें भी लड़की का ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भला होगा। उसका जीवन सुलभ हो जायेगा। साधना बहिन उसकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध कर देंगी। उसे किसी कॉलेज और उसके होस्टल में भरती किया जा सकेगा। घर पर रहती हुई, तो उसके मन का विकास सीमित रहेगा।''

''बहिनजी! मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती। मैंने इस विषय पर शकुन्तला से सम्मति की है। उसकी सम्मति है कि स्कूल से अधिक अच्छी तरह वह घर में रहती हुई पढ़ सकेगी और होस्टल से अधिक श्रेष्ठ जीवन वह मां की देख-रेख में बना सकेगी। इसलिए मैंने अभी उसके विवाह का विचार मन से निकाल दिया है।''

इस पर सदारानी ने एक दिन शकुन्तला से मंगला के विषय में बातचीत की। उसने पूछ लिया, ''मंगला की पढ़ाई कैसी चल रही है?''

''बहुत अच्छी है मां। अब वह कोई भी पुस्तक लेकर शब्दकोश की सहायता से समझने योग्य हो गयी है। वह मेरी दसवीं श्रेणी की हिन्दी और अंगरेजी की पुस्तकें पढ़ सकती है। कहीं-कहीं साहित्यिक भावों को ही उसे बताने की आवश्यकता पड़ती है।

''मां! पहले वह विवाह के अर्थ बढ़िया खाना-पीना और वस्त्राभूषण ही समझती थी। अब वह इसके दूसरे अर्थ भी समझने लगी है।''

''और तुम क्या विचार करती हो?'' मां को समझ आया कि यह शकुन्तला ही है, जो उसे उलटी शिक्षा दे रही है। इससे भड़ककर ही उसने यह प्रश्न कर दिया था।

''मां!'' शकुन्तला का सतर्क उत्तर था, ''मैं यह समझती हूं कि मुझे एम. ए. पास करने के उपरान्त किसी जीवन-कार्य में लग जाना है।''

''किस जीवन-कार्य में?''

''परमात्मा ने तो मुझे सन्तानोत्पत्ति और फिर उसे शिक्षा देने के योग्य बनाया है, परन्तु मैं इससे कुछ अधिक करने की योग्यता सञ्चय कर रही हूं।''

''इससे अधिक तो यह भी हो सकता है कि अपने पति को अपने सद्गुणों से अपने वश में रख सको।''

''हां, मां! आज से दो-तीन वर्ष पूर्व मैं इसे एक श्रेष्ठ कार्य समझती थी, परन्तु अब इससे भी अधिक श्रेष्ठ अन्य कार्य समझ में आने लगे हैं। उदाहरण के रूप में, राजनीति में उन्नति करने से पति के अतिरिक्त अन्य लोगों को अपने वश में रख सकना एक अधिक भला कार्य प्रतीत होता है। एक अन्य कार्य भी है। व्यापार की शिक्षा प्राप्त कर और लखपति बनकर उस धन से परोपकार करते हुए लाखों-करोड़ों व्यक्तियों को अपने अधीन कर रखना। मां, और भी कई कार्य हैं।''

''परन्तु विवाह तो इन सब कार्यों के साथ-साथ भी किया जा सकता है।''

''यह मैं जानती हूं, परन्तु वह मेरे अन्य कार्यों में बाधक प्रतीत होने लगा है। इस पर भी मैंने अभी निश्चय नहीं किया कि विवाह करूं अथवा कोई अन्य कार्य करूं।''

''कब तक निश्चय कर लोगी?''

''अभी मैं बी. ए. फ़ाइनल में हूं। बी. ए. के बाद एम. ए. में दर्शनशास्त्र लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययन करूंगी। इसमें दो वर्ष लग जायेंगे। उसके बाद पी-एच. डी. और डी-लिट्. करने का यत्न करूंगी ।''

''तब ?''

''मां ! इसे करते हुए दस वर्ष लग जायेंगे। तब तक मैं बूढ़ी हो जाऊंगी और फिर विवाह के योग्य नहीं रह जाऊंगी। तब जो भी दूसरा कार्य कर रही हूंगी, उसी में जीवन लगा दूंगी ।''

''परन्तु सन्तान उत्पन्न कर उसका पालन-पोषण करना भी तो जीवन का एक उद्देश्य है। इसमें भी जीवन की सफलता है।''

''मां ! अभी मैं जीवन के चौराहे पर नहीं पहुंची। जब पहुंच जाऊंगी, तो इस मार्ग पर भी विचार कर लूंगी।''

लड़की की बातें सुनकर मां विस्मित रह गयी। मां को मौन-विचारमग्न देख शकुन्तला ने पूछ लिया, ''मां ! अब मैं जाऊं ? ''

''देखो बेटी !'' मां ने जाने की स्वीकृति देते हुए कह दिया, ''बम्बई के बहुत बड़े उद्योगपति के लड़के की मां का प्रस्ताव आया है। उसने तुम्हारा चित्र मंगवाया था और तुम्हारे पिता ने भेजा था। कल लड़के की मां का सन्देशा आया है कि यदि तुम चाहो, तो वह लड़के का चित्र भेज सकते हैं। तुम्हारे पिता ने लड़के को देखा है। यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो उसे यहां आने का निमन्त्रण भी दे सकती हो ।''

''मां ! अभी विवाह करने की इच्छा नहीं होती।''

''परन्तु सगाई तो हो सकती है। लड़के को रोक सकेंगे।''

''अर्थात् पुनः ऐसा गुणवान लड़का मिलना असम्भव भी हो सकता है ?''

मां मुसकरायी और बोली, ''लड़के तो मिल भी जायेंगे। पढ़े-लिखे भी, परन्तु ऐसे धनी का बेटा पुनः मिलना असम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य है।''

''मां !'' अब लड़की ने कुछ उद्विग्न होकर कहा, ''तो धनी के बेटे से मेरा विवाह आवश्यक समझा गया है। तब तो मां, उसे यहां मत बुलाओ। मैं इसे कोई गुण नहीं मानती।''

''परन्तु तुम्हारे पिता तो इसे एक महान् गुण मानते हैं। वह लक्ष्मी को सर्वमंगला कहा करते हैं। उनका विश्वास है कि लक्ष्मी से बढ़कर संसार में कुछ भी मंगलमयी नहीं है।''

''तो मां ! पिताजी का विवाह किसी अन्य धनी-मानी लड़की से कर दिया जाये, तो वह दुगुने मंगला के स्वामी हो जायेंगे।''

मां गम्भीर विचार में मग्न हो गयी। वह लड़की के मनोभावों को समझती थी। धन विवाह में कोई कारण नहीं। धन जीवन की अन्य सुख-सुविधाओं के लिए तो सहायक है, परन्तु विवाह के लिए धन का क्या सहयोग है ? वास्तव में, वह लड़की के समान युक्ति करने में दक्ष नहीं थी। इसलिए वह विचार करने लगी थी कि वह लड़के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अन्य गुणों का बखान करे, परन्तु वह अन्य गुण जानती नहीं थी। इस पर उसने कह दिया, ''मैं तुम्हारे पिता से कह रही हूं कि हम सब कुछ दिन के लिए बम्बई चलें। वहां तुम उस लड़के को भी देख सकोगी और यह सम्भव है कि तुम्हें उसके कोई अन्य गुण भी समझ में आ जायें।''

''मां! मुझे इसमें क्या अपत्ति हो सकती है? मैं तो बम्बई पहले भी कई बार गयी हूं और वहां कई लोगों से मिली हूं। फिर भी जाने को तैयार हूं।''

''परन्तु मंगला के विषय में क्या किया जाये?''

''यदि कमल भैया विवाह करने की जल्दी में हैं, तो मामीजी को लिख दो कि भारत में लड़कियों की संख्या अन्य देशों से कम नहीं है। वह यत्न करें, तो कमल भैया को अवश्य कोई पसन्द आ जायेगी। जहां तक मंगला का प्रश्न है, वह अभी इस विषय पर विचार करने के लिए तैयार नहीं। उसे उसके प्रस्ताव पर विचार के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।''

''और बदरी के विषय में क्या समझती हो?''

''भैया का जो भी पत्र मुझे आता है, उसमें एक संक्षिप्त-सा पत्र मंगला के लिए भी होता है। वह कभी उत्तर देती है और कभी नहीं देती। मैंने उसके पत्रों को पढ़ा नहीं है। यद्यपि वह अपना पत्र खुला ही मुझे भेजने के लिए दे जाती है, तथापि मैंने पढ़ने का कभी यत्न नहीं किया।''

''तो तुम मंगला से भी अधिक मूर्ख हो। वह कमल-जैसे लड़के को दुत्कार रही है। पत्र लिखने से प्रतीत होता है कि वह बदरी को वरीयता देती है, परन्तु उसके पिताजी इसे पसन्द नहीं करते।''

''उन्हें मंगला में क्या दोष दिखता है?''

''वह निर्धन की बेटी है। जन्म के कुछ ही समय पश्चात् उसके जन्मदाता का देहान्त हो गया था। वह अपशकुन का प्रतीक प्रतीत हो रही है।''

''परन्तु हमारे घर में तो उसका आना अपशकुन नहीं हुआ।''

''यह उसकी मां के कारण समझा जा रहा है।''

शकुन्तला ने मुसकराते हुए कहा, ''तब तो मंगला को घर में ही रखने का प्रबन्ध करना चाहिए, जिससे उसकी मां भी यहीं रहे।''

मां निरुत्तर हो चुप कर गयी। वास्तव में, वह मंगला को इतना बुरा नहीं मानती थी, जितना उसका पति मानता था। उसका पति तो उसका विवाह कमल के साथ भी पसन्द नहीं करता था। वह कमल के विषय में तटस्थ था।

: 9 :

सन् 1947 भारत में, विशेषतया उत्तरी भारत और बंगाल में मार-काट का वर्ष रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली में भी इसका प्रभाव हुआ। इस कारण बम्बई के सेठ सोमानी का लड़का विश्वमित्र दिल्ली नहीं आ सका और न ही सेठ जुगलकिशोर परिवार को लेकर बम्बई जा सका।

बदरीप्रसाद सन् 1944 जून में जेल से छूटकर आया था और सन् 1946 के आरम्भ में इंग्लैण्ड चला गया था। ब्रजभूषण और साधना सन् 1946 में पुनः दिल्ली आये थे और यह सूचना दे गये थे कि कमलकिशोर की सगाई भिवानी के एक लाला नारायणदास की लड़की से हो गयी है और उसी वर्ष में विवाह हो जायेगा।

इस सूचना पर, बदरी के अकेले प्रत्याशी रह जाने से जुगलकिशोर को चिन्ता लग गयी, परन्तु बदरी के पत्र अब मंगला को आने बन्द हो गये थे। यह बात शकुन्तला ने अपनी मां को बतायी थी।

शकुन्तला सन् 1947 में बी. ए. की परीक्षा में बहुत अच्छे अकों से उत्तीर्ण हुई, तो उसके विवाह की चर्चा होने लगी। मां का विचार और आगे पढ़ाने का नहीं था, परन्तु शकुन्तला अभी विवाह के लिए मान नहीं रही थी। जब कई बार शकुन्तला ने इनकार किया, तो सदारानी ने उद्विग्न होकर कहा, ''देखो बेटी ! जीवन में अच्छे अवसर सदा नहीं आते। एक बार गाड़ी छूट जाये, तो वह पुन: नहीं भी मिल सकती और उस डी-लक्स गाड़ी के स्थान पर ठेले पर सवारी करनी पड़ती है। कभी तो पैदल भी यात्रा करनी पड़ती है।''

''मां !'' लड़की ने मां की इस सीख पर भी कहा, ''जिसे तुम डी-लक्स कह रही हो, उसे मैं छकड़े से भी निकृष्ट सवारी समझ रही हूं। साथ ही मुझे उस यात्रा पर जाना ही नहीं, जिस पर यह कथित डी-लक्स गाड़ी जा रही है। यह मुझे अपने लिए अमंगलकारी समझ आ रही है।''

''तुमने मंगला की खोपड़ी में भी यही कूड़ा-करकट भर रखा प्रतीत होता है, जो तुमने अपने मस्तिष्क में भरा हुआ है। मंगला के लिए एक सम्बन्ध तुम्हारे पिताजी ने बताया था, पर सुखिया ने कहा है कि वह अभी विवाह करना नहीं चाहती।''

''मां ! अब वह मुझसे पढ़ने नहीं आती। मुझसे मेरे पुस्तकालय में से कभी कोई पुस्तक लेने आये, तो आये, अन्यथा हम परस्पर दिन में एक-आध बार ही मिलती हैं और हममें कुछ अधिक बातें भी नहीं होतीं।''

''तो वह क्या करती रहती है ?''

''उसकी मां से पता करना चाहिए। वह अंगरेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं को भली-भांति समझने लगी है।''

सुखिया कोठी के 'आउट हाउस' की ऊपर की मंज़िल पर रहती थी। वास्तव में, वहां मंगला रहती थी। वहां एक कमरा, रसोई और ग़ुसलख़ाना था। उस कमरे में सब सामान तो मंगला का ही था। सुखिया रात को सोने के लिए ही कमरे में आती थी और मां-बेटी दोनों भूमि पर ही सोती थीं। दिन के समय बिस्तर लपेटकर परछत्ती पर रख दिया जाता था। पुस्तकों के लिए कमरे में अलमारी थी, लिखने-पढ़ने के लिए मेज़-कुरसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी, एक कमरे में तानपुरा रखा था और दूसरे कमरे में सितार था।

उस दिन सदारानी को समझ नहीं आया कि ये दोनों लड़कियां हठ क्यों कर रही हैं। शकुन्तला उन्नीस वर्ष की हो चुकी थी और मंगला चौदहवें वर्ष में प्रवेश कर चुकी थी। मंगला की मां अभी इतनी जल्दी में नहीं थी, जितनी कि शकुन्तला की मां को समझ आ रही थी। उसकी अपनी शादी सत्रह वर्ष की आयु में हो गयी थी और उसे स्मरण था कि उस आयु में भी विवाह के लिए उसकी लालसा कितनी उग्र थी।

वास्तव में, जुगलकिशोर को शकुन्तला के विवाह की जल्दी थी। उसका कार्य दिन-दूना रात-चौगुना उन्नति कर रहा था और उसे एक सहायक की आवश्यकता थी। उसने लड़के को कारोबार में सम्मिलित करने का यत्न किया था, परन्तु लड़के को राजनीति की चटक लग चुकी थी। राजनीति में उन्नति करने के लिए लड़के ने उचित समझा कि वह पढ़ने इंग्लैण्ड जाये। विवाह का प्रश्न उपस्थित हुआ, तो उसने घर की नौकरानी की लड़की पर दृष्टि जमा दी।

जुगलकिशोर का विचार था कि शकुन्तला का विवाह हो जाये, तो दामाद को अपने कार्य में सम्मिलित कर ले, परन्तु जब शकुन्तला ने विवाह करने के स्थान पर अपनी पढ़ाई जारी रखने की इच्छा प्रकट की, तो पिता के सम्मुख समस्या उठ खड़ी हुई। इस पर उसने प्रस्ताव रख दिया कि दोनों बातें साथ-साथ चल सकती हैं, लेकिन शकुन्तला नहीं मानी।

बातचीत रात के समय भोजन करते हुए हो रही थी। शकुन्तला का कहना था, "पिताजी! यह इस कारण सम्भव नहीं है कि दोनों कार्यों की दिशाएं भिन्न-भिन्न हैं। एक दिशा पूर्व की है, तो दूसरी पश्चिम की है। यदि दोनों दिशाओं में खींचातानी हुई, तो रस्सी टूट जायेगी अथवा अधिक लुभायमान दिशा स्वीकार कर ली जायेगी।"

"तो इसमें हानि क्या है?"

"मेरा लक्ष्य पूरा नहीं होगा।"

"तुम्हारा लक्ष्य क्या है?"

"अधिक-से-अधिक ज्ञान प्राप्त करना।"

"तो क्या पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता?"

"हो सकता है, परन्तु कॉलेज में प्राध्यापक के नित्य सञ्चित हो रहे ज्ञान में भी डुबकी लगाने का अवसर मिलता रहता है। मैं उससे वञ्चित रहना नहीं चाहती। जितना मैं कई सप्ताह के प्रयत्न से प्राप्त कर सकती हूं, उतना उनसे एक पीरियड में प्राप्त हो जाता है।"

"परन्तु शकुन्तला! यह तो विवाह के उपरान्त भी हो सकता है।"

"और यदि सन्तान हो गयी, तो?"

"उसके लिए विज्ञान ने उपाय पैदा कर लिया है।"

"नहीं, पिताजी! यह नहीं होगा!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु यदि हम, मेरा अभिप्राय है कि मैं और तुम्हारी मां तुम्हारा विवाह रचा दें, तो ?"

"तो मैं आपका घर छोड़ दूंगी।"

" फिर कहां जाओगी ?"

"यह तब ही बता सकूंगी, जब आप इस प्रकार का अनर्थ करने लगेंगे।"

वार्तालाप को सीमा से बाहर जाते देखकर सदारानी ने कहा," श्रीमान् ! यह हकूमत अपने नौकर-चाकरों पर ही चलाइये। हम आपकी ज़र-ख़रीद ग़ुलाम नहीं हैं।"

"मैंने तुमसे कुछ नहीं कहा।" जुगलकिशोर ने अपनी सफ़ाई देते हुए कहा।

"परन्तु मेरी सन्तान भी तो मेरे शरीर का एक अंश ही है और सन्तान की आत्मा भी मुझे अपनी आत्मा का एक अंश प्रतीत होती है। यह मैं ही हूं। यह घर छोड़ेगी, तो मैं भी घर छोड़ने पर विवश हो जाऊंगी।"

इस पर वार्तालाप बन्द कर दिया गया। जुगलकिशोर को अपने पांव तले से मिट्टी खिसकती अनुभव हुई।

: 10 :

दूसरी ओर समस्या विलक्षण थी। सुखिया दिन-भर कोठी की मुख्य इमारत में काम करती रहती थी और मंगला अपने कमरे में बैठी पढ़ती थी, खाना बनाती थी, कपड़े मरम्मत करती थी और फिर अपने विचार से परमात्मा का चिन्तन भी करती थी।

भगवद्गीता के पढ़ने से उसे चिन्तन में रुचि उत्पन्न हुई थी और उसे वह नित्य पढ़ती थी। कभी-कभार जब किसी नयी पुस्तक के पढ़ने का विचार होता, तो वह शकुन्तला को मिलने चल पड़ती। वहां प्रायः पुस्तकों पर लिखे विषय पर चर्चा होती थी। अपने निजी विषयों पर बहुत कम वार्तालाप होता था।

जिस दिन सदारानी और शकुन्तला में विवाह-सम्बन्धी वार्तालाप हुआ था, उसके अगले दिन शकुन्तला मंगला से मिलने उसके कमरे में जा पहुंची। ग्रीष्म ऋतु के अवकाश के दिन थे। सुखिया कोठी में किसी काम में व्यस्त थी और मंगला मध्याह्न के उपरान्त घण्टा-भर सोकर जागी ही थी कि शकुन्तला ने बाहर से द्वार खटखटाया। मंगला ने पूछा, "कौन है ?" और वह द्वार के समीप आकर उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी। यह उसका स्वभाव था कि जब तक बाहर द्वार खटखटाने वाला उत्तर न दे, वह द्वार नहीं खोलती थी। जब शकुन्तला ने अपना नाम बताया, तो मंगला ने द्वार खोल दिया।

उसने हाथ जोड़कर नमस्ते करते हुए विस्मय में पूछ लिया, "बहिनजी ! क्या बात है, जो यहां आने का कष्ट किया है ?"

"मैं देखने आयी थी कि तुम दिन-भर क्या करती रहती हो ?"

"परसों मैं आपके कमरे में गयी थी और फिर भी कभी तो जाती ही। इस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूप और गरमी में यहां आने का कुछ विशेषे प्रयोजन होना चाहिए।''

शकुन्तला ने मुसकराते हुए कहा, ''हां, वह भी है। तुम भीतर से द्वार बन्द करके रखती हो ?''

''हां, इसके कई कारण हैं। मां ने कह रखा है कि द्वार तब तक नहीं खोलना, जब जक द्वार खटखटाने वाला अपना नाम न बताये, और किसी अपरिचित के लिए द्वार नहीं खोलना चाहिए, जब तक मां यहां न हो।''

''मैं समझती हूं कि आजकल कॉलेज नहीं जाना होता और मैं अपने कमरे में ही होती हूं। तुम वहां नित्य आ जाया करो।''

''मैं भी यही सेचती रहती हूं कि हम दोनों की आयु में, पढ़ाई में और ज्ञान में बहुत अन्तर है। कहीं ऐसा न हो कि आपके कमरे में मेरे जाने से आपकी प्रगति में विघ्न पड़ने लगे।''

''हां, अन्तर तो है, परन्तु मेरा कमरा तो इससे कई गुना बड़ा है। उसमें दो प्राणी सुगमता से अपने-अपने काम में लीन रहते हुए एक-दूसरे के कार्य में बाधक नहीं हो सकते। यहां तो गरमी है। क्या तुम दोपहर के समय यहां असुविधा अनुभव नहीं करतीं ? ऊपर की मंज़िल होने से छत भी ख़ूब तप रही है।''

कमरे में बिजली का पंखा लगा था, परन्तु शकुन्तला को उसकी हवा गरम लग रही थी। कमरे की छत नीची थी और मध्याह्न होने के कारण तपी हुई थी।

मंगला ने कह दिया, ''मनुष्य का हर परिस्थिति में रहने का स्वभाव बन जाता है। इसलिए मैं कह रही थी कि आप मां को कह देतीं, तो वह मुझे यहां से बुला ले जातीं।''

''यदि अब कोई विशेष काम नहीं, तो चलो। मैं तुम्हें अपने साथ ले चलती हूं।''

''विशेष काम तो कुछ नहीं। आइये, चलें। रात को मां के साथ ही लौट आऊंगी।''

''तो यहां से हमारी कोठी तक जाने के लिए भी किसी के साथ जाना होता है।''

''मां ने तो आज्ञा दे रखी है कि अकेली कमरे से बाहर नहीं निकलना और किसी अपरिचित के लिए द्वार नहीं खोलना।''

''तो यह बात है ?''

''मां समझती है कि नीचे रहने वाला रामलोक ड्राइवर अच्छा आदमी नहीं है। वह...।'' मंगला कुछ कहती-कहती रुक गयी।

शकुन्तला को रामलोक के व्यवहार पर सन्देह हुआ, तो वह गम्भीर विचार में मग्न मंगला का मुंह देखती रह गयी।

शकुन्तला को अपने मुंह पर देखते हुए पाकर मंगला ने कह दिया, ''बहिनजी ! चलिये, नीचे चलें।''

शकुन्तला बिना एक भी शब्द कहे उठ खड़ी हुई और दोनों कमरे से निकल आयीं। मंगला ने कमरे को ताला लगाया और शकुन्तला के साथ मुख्य कोठी में आ गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी दो-मंज़िली थी। ऊपर की मंज़िल पर सेठजी के कारोबार का कार्यालय था। ऊपर जाने की सीढ़ियां कोठी के बाहर भी बनी थीं और एक सीढ़ी कोठी के भीतर से भी थी। सेठजी भीतर की सीढ़ी का प्रयोग करते थे। कार्यालय के कर्मचारी बाहर की सीढ़ी से आते-जाते थे।

घर के प्राणी नीचे की मंज़िल पर रहते थे। शकुन्तला का कमरा वातानुकूलित था। मंगला को कमरे में प्रवेश करते ही सुख अनुभव हुआ। उसने मुसकराते हुए कहा, "बहिनजी! आपने हमारे कमरे में आकर भारी कष्ट किया था। आपको मुझे अपने यहां ही बुला लेना चाहिए था।"

"मुझे ज्ञात नहीं था कि वहां इतनी गरमी है और बात यह है कि...।"

वह रामलोक के विषय में कुछ कहने वाली थी, परन्तु कुछ विचार कर बात बदलकर बोली, "मैं मां से कहने वाली हूं कि आपको यहीं एक कमरा रहने के लिए दे दें।"

"मां ने एक बार ऐसा विचार किया था, परन्तु यहां हम भोजन कहां बनायेंगे? साथ ही शौच आदि का भी तो प्रबन्ध कठिन है।"

"कुछ भी कठिन नहीं है। अच्छा, मैं मां से बात करूंगी।"

"आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। मेरी मां कहती थीं कि स्वभाव बन जाये, तो मनुष्य जलती अग्नि में भी बैठ सकता है।"

"और जलकर भस्म हो सकता है। स्वभाव बनने से प्रकृति के नियम नहीं बदले जा सकते। देखो मंगला! मनुष्य सुख-दु:ख की अनुभूति को बदल सकता है। कुछ लोग कड़वे को मीठा समझ सकते हैं, परन्तु कड़वा मीठा नहीं हो सकता।"

कमरे में दोनों सुखपूर्वक बैठ गयीं, तो शकुन्तला ने मंगला से मिलने के लिए जाने का प्रयोजन बता दिया। उसने कहा, "तुमने सुना है न कि ख़ाली दिमाग़ शैतान का घर होता है। मैं देखना चाहती थी कि तुम्हारे मन में कहीं शैतान ने अपना निवास तो नहीं बना लिया।"

"तो क्या देखा आपने?"

"देखा है कि शैतान मन में घुसने का यत्न कर रहा है और तुम मन के कपाट बन्द किये, भीतर से कुण्डी लगाये बैठी रहती हो।"

"नहीं बहिनजी! मन के कपाट तो खुले रहते हैं। वह तो कमरे का द्वार बन्द किया हुआ था। मन तो कमरे की दीवारों को फांदकर बाहर भी भ्रमण कर आता है।"

शकुन्तला ने मुसकराते हुए पूछ लिया, "तो कभी यहां भी आने का कष्ट करता है?"

"हां, कुछ दिन हुए मां ने बताया था कि आपकी सगाई के लिए बम्बई से पत्र-पर-पत्र आ रहे हैं। तब से मेरा मन कई बार यहां आपके कमरे में आकर आपके दर्शन करता रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और उस दर्शन से क्या देखता और समझता है ?"

"यही कि आप बम्बई जाने के लिए न तो उत्सुक हैं और न ही वहां जाने का विरोध कर रही हैं।"

"यह तुम्हारे मन को किसने बताया है ?"

"माताजी ने मां को बताया होगा और मां ने मुझे बताया है।"

मंगला सदारानी को माताजी के नाम से सम्बोधित करती थी।

"तो यह बात है ? मैं समझती हूं कि माताजी ने मुझे ग़लत समझा है और उन्होंने तुम्हारी मां को भी ग़लत बताया है। सुनो, मैं बताती हूं। मैं बम्बई अथवा दिल्ली में कोई अन्तर नहीं समझती। विवाह तो कहीं भी हो सकता है। दिल्ली के कुछ लोग भी हैं, जो धनवान् पिता की पुत्री को घर ले जाना चाहते हैं। लेकिन मैं तो विवाह ही नहीं करना चाहती।"

"मैं भी विवाह नहीं करना चाहती, परन्तु मां ने एक अन्य समस्या मेरे सामने रख दी है। मां कहती हैं कि मेरे पिता की मैं एक ही सन्तान हूं और उनका वंश मुझे चलाना चाहिए। मैंने मां से पूछा था कि वंश क्यों चलाना चाहिए ? इस पर मां ने बताया कि सन्तान के पितरों के निमित्त तर्पण किये बिना पितर कष्ट में रहते हैं।"

शकुन्तला हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "तो तुम्हारी मां का विचार है कि तुम्हारे पिता इतने दुर्बल हैं कि बिना तुम्हारी छोटी-सी जान को कष्ट दिये उनका उद्धार नहीं हो सकता ?"

"मैं क्या जानूं ? मां कहती हैं। साथ ही यह भी कहती हैं कि अभी चार-पांच वर्ष के उपरान्त मेरा विवाह होगा।"

"और तब तक पितर क्या करेंगे ?"

"मैं मां से सवाल-जवाब नहीं कर सकती। एक बार मेरे बार-बार एक ही विषय पूछने पर वह बहुत नाराज़ हुई थीं। तब से मैं उनसे पूछती नहीं। जब उनको किसी विषय पर बताना होता है, तो वह स्वयं ही बता देती हैं।"

"किस विषय पर पूछने पर नाराज़ हुई थीं ?"

"मैंने यह पूछा था कि मैं कैसे बन गयी हूं ? उन्होंने बताया था कि उनका विवाह मेरे पिताजी से हुआ और पिताजी की सहायता से उन्होंने मुझे बनाया था। इससे मुझे सन्तोष नहीं हुआ। मैंने यह पूछा भी नहीं था कि उन्होंने किससे सहायता ली थी ? मैंने तो यह पूछा था कि किस प्रकार बनाया था ? बस, वह चिढ़ गयीं। मुझे डांटकर बोलीं, 'इस प्रश्न के पूछने का अभी समय नहीं है।'

"तब से मैंने उनसे प्रश्न पूछने छोड़ दिये हैं।"

"तो तुमको मुझसे पूछना चाहिए था। यह कब की बात है ?"

"एक वर्ष से ऊपर हो चुका है।"

"अच्छा ! मैं तुम्हें एक पुस्तक दूंगी। उसमें यह बताया गया है कि प्राणी कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनते हैं? सब प्राणियों के बनने का एक ही ढंग है।''

उस दिन मंगला सायंकाल तक वहां रही। मध्याह्नोत्तर की चाय के समय शकुन्तला मंगला को ड्राइंगरूम में ले गयी। वहां सदारानी और उसकी एक सहेली बैठी थी। सहेली पड़ोस की कोठी की गृहिणी थी। वह मंगला को जानती थी। सुखिया चाय बनाकर ट्रे में रखकर लायी, तो मंगला को वहां देखकर प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी। सुखिया का आशय था कि वह वहां किससे मिलने आयी है? मंगला मां के मुंह पर प्रश्न-सूचक मुद्रा देखकर समझ गयी और बताने वाली थी कि शकुन्तला बहिन के साथ आयी है, परन्तु शकुन्तला ने बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, ''मौसी! मैं मंगला से मिलने आपके कमरे में गयी थी और वहां कमरे में गरमी अनुभव कर इसे अपने कमरे में ले आयी थी।''

मंगला ने सफ़ाई दे दी, ''मैं कई दिन से बहिनजी से मिलने के लिए यहां आने का विचार कर रही थी, परन्तु अवकाश ही नहीं मिल रहा था।''

''हां, मौसी!'' शकुन्तला ने व्यंग्य के भाव में कह दिया, ''आज मैं देख आयी हूं कि यह वहां क्या करती रहती है।''

''इसे क्या करते हुए देख आयी हो?'' सदारानी ने पूछ लिया।

''मां! मक्खियां मार रही थी और मक्खियां मार-मारकर ढेर लगा रखा था।''

पड़ोसन मिसेज़ खुराना ने हंसते हुए कह दिया, ''तब तो कमेटी के कार्यालय में टेलीफ़ोन कर दो कि वहां से वह कूड़ा उठाने का ट्रक भेज दे, ताकि लाशों का ढेर उठाया जा सके।''

''हां, यह भी हो सकता है।'' सब हंसने लगीं। सुखिया ड्राइंगरूम के बाहर चली गयी। खुराना की पत्नी ने अपने लड़के वीरभद्र के विषय में बताना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, ''वीर आजकल रोहतक रोड वाले कारख़ाने की देख-रेख करता है। उसके पिता तो शाहदरा की आटे की चक्की का प्रबन्ध करने चले जाया करते हैं। वीरभद्र अपने कारख़ाने से एक सहस्र रुपया अपना वेतन निकाल लेता है। उसके पिता ने मुझे कई बार कहा है कि सदारानी बहिन से मिलकर बात करूं। आज शुभ दिन देखकर मैं चली आयी हूं।''

सदारानी ने कह दिया, ''बदरी तो वीर से दो वर्ष पढ़ाई में पीछे रह गया है। उसका पत्र आया है कि उसको एम.ए. में प्रवेश मिल गया है। वह एम. ए. के उपरान्त वहां क़ानून पढ़ेगा। वीर के पिता विलायत की पढ़ाई में कुछ तत्त्व नहीं समझते। कोई समय था कि यहां पढ़ाई का ठीक प्रबन्ध नहीं था, परन्तु अब तो शिक्षा में बहुत उन्नति हो गयी है।''

''इस पर भी सरकारी और ग़ैर सरकारी दोनों क्षेत्रों में विलायत के पढ़े-लिखों का मान अधिक है। यहां तक कि कांग्रेस के प्रायः सभी चोटी के नेता भी विलायत के पढ़े-लिखे हैं। दिल्ली के एक लीडर ने बदरी को बताया था कि वह दिल्ली से पढ़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील बना है और उससे आयु, अनुभव और योग्यता में कम बैरिस्टर को वरीयता देकर कांग्रेस कार्यकारिणी में लिया गया है और उससे पूछा तक नहीं जाता। उसी को अब अन्तरिम सरकार की कौंसिल में लिया गया है।''

''कांग्रेस में जब तक जवाहरलाल नेहरू हैं, तब तक तो अंगरेज और अंगरेजों की महिमा बनी रहेगी।''

''और गांधीजी भी तो बैरिस्टर हैं। वह भी तो विलायत से वकालत पास करके आये हुए हैं।''

'' हां, वह महात्मा हैं और अब तो कुरता भी नहीं पहनते। केवल चादर ही ओढ़े रहते हैं, परन्तु उनको भी तो जवाहरलाल नेहरू ही पसन्द आते हैं।''

''वीर के पिता पण्डित जवाहरलाल नेहरू के कौंसिल का प्रधान बनने की कहानी बता रहे थे। एक कांग्रेसी नेता ने उन्हें बताया था। गांधीजी ने कहकर पण्डितजी को कांग्रेस का प्रधान बनवाया था, जिससे कि वह अन्तरिम सरकार बना सकें। प्रधान होने के नाते यह उनका अधिकार हो गया है और वह अपने से कहीं योग्य साथियों को छोड़कर स्वयं प्रधानमन्त्री बन गये हैं।''

''हां।''सदारानी ने भी अपनी सूचना का परिचय दे दिया। उसने कहा,''शकुन्तला के पिता भी एक कौंसिल के सदस्य से यह जान आये हैं कि राजनीति में इसे योग्यता नहीं माना जाता कि जनता में कौन कितना प्रतिष्ठित है? राजनीति में यही योग्यता है कि लोगों में वह प्रिय और ख्याति-प्राप्त हो। इस समय पूरे देश में गांधी के बाद अन्य कोई नेता जवाहरलाल से अधिक ख्याति-प्राप्त नहीं है।''

''हां, यह तो है।''मिसेज़ खुराना ने कहा,''परन्तु जवाहरलाल नेहरू की ख्याति में भी गांधीजी का हाथ है। वह तीसरी बार कांग्रेस के प्रधान बने हैं और तीनों बार गांधीजी की सहायता से।''

''क्या वीर के पिता गांधीजी को पसन्द नहीं करते ?''

''वह तो कांग्रेस को ही पसन्द नहीं करते। उनका दिल तो हिन्दू महासभा में है। उनका कहना है कि मुसलमानों को सिर पर चढ़ाने का पूरा उत्तरदायित्व कांग्रेसियों पर ही है।''

शकुन्तला ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कह दिया,''समाचार आया है कि कलकत्ता की मार-काट में, जब तक हिन्दू पिटते रहे, कांग्रेस मौन बैठी रही। वहां के गवर्नर और अन्य सरकारी मशीनरी चुपचाप वहां का हत्याकाण्ड देखती रही, परन्तु जब कलकत्ता की मार-काट ने रूप बदला और मुसलमान मरने तथा कलकत्ता से भागने लगे, तो गवर्नर से लेकर छोटे-से-छोटे सरकारी कर्मचारी तक शान्ति स्थापित करने में लग गये और तब कांग्रेस भी सरकार को सहयोग देने लगी।

''लोग तो खुले आम कह रहे थे कि बंगाल के मुख्यमन्त्री ने कलकत्ता हिन्दुओं से ख़ाली करवाने के लिए यह फ़साद करवाया था और पुलिस मुसलमानों के इस काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उनकी सहायता करती थी, परन्तु जब हिन्दुओं के स्थान पर मुसलमान कलकत्ता से भागने लगे, तो सरकार शान्ति स्थापित करने का यत्न करने लगी और इसमें कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता सम्मिलित हो गये।

''बलवे की जांच तो केन्द्रीय सरकार को करनी चाहिए थी। वह जवाहरलाल जी को पसन्द नहीं करते और इस फ़साद में बंगाल सरकार की कारगुज़ारी प्रकट नहीं होगी। कांग्रेस मुसलमानों के दोष प्रकट होने नहीं देना चाहती।''

चाय समाप्त हो चुकी थी। जिस विषय पर बात करने श्रीमती खुराना आयी थी, वह नहीं हो रही थी। उसने अपने आने का आशय तो शकुन्तला के आने से पहले ही प्रकट कर दिया था, परन्तु सदारानी ने उस चर्चा को प्रोत्साहन नहीं दिया था।

अब श्रीमती खुराना ने कहा, ''अच्छा बहिनजी! मैं फिर किसी दिन अपनी बात का उत्तर लेने आऊंगी। अब तो बहुत देर हो चुकी है। वीर के पिताजी काम से लौट आये होंगे।''

:11 :

शकुन्तला समझ गयी थी कि श्रीमती खुराना किस विषय पर बात कर रही थीं और किस प्रश्न का उत्तर चाहती थीं। यह उसके विवाह के विषय में चर्चा थी, ऐसा शकुन्तला को विश्वास हो रहा था।

इसी कारण मां के उस विषय पर कुछ भी कहने से पूर्व शकुन्तला मंगला और सुखिया को उस 'आउट हाउस' से कोठी के किसी कमरे में लाने की बात कहने लगी।

मां ने पूछ लिया, ''और वहां क्या है?''

''मां! वहां बहुत गरमी है और साथ ही वह स्थान एक कुमारी के लिए सुरक्षित नहीं है।''

''क्या मतलब?'' सदारानी ने समझते हुए पूछ लिया।

''वहां नीचे के कमरे में जो ड्राइवर रामलोक रहता है, मौसी का विचार है कि वह अच्छा आदमी नहीं है।''

सदारानी मुंह देखती रह गयी। मंगला भी अभी वहां बैठी थी। उसने जितना कुछ बताया था, शकुन्तला उससे कुछ अधिक कह गयी थी, परन्तु वह बिना पूछे बातों में हस्तक्षेप करना ठीक नहीं समझती थी।

सदारानी ने भी अपनी कल्पना-शक्ति से काम लिया और बिना कुछ अधिक पूछे कह दिया, ''तो पिताजी से बात करना।''

''मैं मंगला को अपने कमरे में रहने का निमन्त्रण दे चुकी हूं।''

''क्या इसने स्वीकार कर लिया है?''

इस पर शकुन्तला मंगला का मुंह देखने लगी। वह कुछ ऐसा कहना नहीं चाहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थी, जिसका प्रतिवाद मंगला कर दे। इसलिए वह चाहती थी कि मंगला ही उत्तर दे।

मंगला ने कह दिया, "माताजी! बहिनजी कह रही थीं कि हमको यहां कोठी में कोई स्थान मिल जायेगा। इसमें मेरे मानने-न मानने का तो कोई प्रश्न ही नहीं है। हम यहां पर आपकी कृपा और दया का फल ही भोग रही हैं।"

इस पर सदारानी को सुखिया से इस विषय पर हुई बात स्मरण आ गयी। यह बात तब हुई थी, जब सदारानी सुखिया को प्रयागराज के घाट से साथ लेकर होटल में— जहां वह ठहरी हुई थीं— ले गयी थीं।

घाट पर तो सदारानी ने केवल यह कहा था, "मैं समझती हूं कि इन पण्डों के रूप में बैठे मगरमच्छों से लड़की को बचाना है, तो मेरे साथ चलो।"

"कहां?" सुखिया ने पूछा था।

"जहां मैं रहती हूं। वहां कम-से-कम तुम्हें अपने शरीर-पालन करने के लिए चिन्ता नहीं करनी होगी।"

जो जीवन का अन्त करने के लिए निश्चय कर आयी थी, कुछ समय के लिए जीवन चलाने का साधन मिलते ही, वह चुपचाप साथ चल दी।

होटल में पहुंचकर भोजन करते हुए सदारानी ने पूछा था, "यदि मैं तुम्हें अपने साथ दिल्ली ले चलूं, तो क्या वेतन लोगी?"

सुखिया का प्रश्न था, "तो आप मुझे नौकरी दे रही हैं?"

"बहिन बनना तो तुम्हारे अधीन है। मुझे इसमें आपत्ति नहीं होगी।"

"ठीक है। जब आप मुझे इस योग्य समझेंगी कि मैं बहिन बन सकती हूं, तो आप बना लीजियेगा। अभी नौकर ही सही।"

"तो क्या वेतन लोगी?"

"अपने और इस बच्ची के लिए भोजन, वस्त्र और पांव पसारने का स्थान।"

"और नक़द?"

"नक़द भी तो इसी काम के लिए चाहिए। इससे अधिक लेकर कहां और कैसे जा सकती हूं?"

सदारानी ने कुछ विचार किया और बोली, "ठीक है। हम रात की गाड़ी से दिल्ली जा रहे हैं।"

इस विषय पर पुनः वार्तालाप नहीं हुआ था। आज शकुन्तला के कहने पर कि मंगला उसके कमरे में रहेगी, उसे सुखिया की बात स्मरण आ गयी। उसे स्मरण आ गया कि उसने कहा था कि जब वह उसे बहिन बनने योग्य समझेगी, तो बना लेगी। अभी नौकर ही सही।

सदारानी को समझ आया कि क्या सुखिया बहिन बनने योग्य है? क्या इसने इस दिशा में अपनी योग्यता सिद्ध की है?

इस प्रकार विचार करते हुए सदारानी ने कहा, "तुम्हारे पिताजी से बात करके ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं कह सकती हूं।''

शकुन्तला ने पूछ लिया, ''तो अब हम जायें ?''

''हां। इस श्रीमती खुराना की बात सुनी और समझी है ?''

''हां, मेरा यही कहना है कि मेरी पढ़ाई समाप्त होने से पहले मुझे इस विषय पर विचार करने का अवकाश नहीं।''

शकुन्तला ने मंगला की ओर देखा और कहा, ''आओ, चलें।''

दोनों शकुन्तला के कमरे में चली गयीं। वहां सुखिया खड़ी थी। उसने लड़की से पूछा, ''चाय पी ली है ?''

''हां मां, पी ली है ?''

''मैं यही जानने के लिए आयी थी। मैं यह जानना चाहती थी कि तुम चाय अपने कमरे में लोगी अथवा ले चुकी हो ?''

''मां! मैंने ले ली है।''

''तो मैं भी यहीं ले लेती हूं।''

सुखिया जाने लगी, तो शकुन्तला ने कह दिया ''मौसी! आज से मंगला मेरे कमरे में ही रहा करेगी।''

''किसलिए ?''

''यह अब बड़ी श्रेणी की पढ़ाई करेगी।''

''शकुन्तला बेटी! यहां इस कमरे में कॉलेज खोल रही हो ?''

''हां, मौसी। मैंने मां से कहा है कि आपके लिए भी कोठी में ही कमरा खोल दें।''

''बेटी! इससे तुम्हारी माताजी को बहुत कष्ट होगा।''

''यह विचार वह कर लेंगी। यदि कष्ट होगा, तो मेरी बात नहीं मानेंगी, परन्तु मंगला तो अब यहीं रहेगी।''

सुखिया मुंह देखती रह गयी। वह विचार कर रही थी कि मालकिन यह स्वीकार नहीं करेंगी। लालाजी भी इसे ठीक नहीं समझेंगे। जब वह इलाहाबाद से आयी थी, तब लालाजी नगर के भीतर रहते थे। मकान बड़ा था। घर में एक नौकर था। इस पर भी मालिक ऊपर की मंज़िल पर रहते थे। नौकर नीचे एक कोठरी में। वहीं एक बैठक भी थी। सुखिया को ऊपर एक कमरे में स्थान मिला हुआ था। उन दिनों लालाजी ने सुखिया से अनुचित सम्बन्ध बनाने का यत्न किया था। इस पर लालाजी और सुखिया में भारी तकरार हुई थी। सुखिया घर छोड़कर कहीं अन्यत्र जाने का विचार बना बैठी थी। सदारानी को जब उसके घर छोड़ने की बात पता चली और इसके कारण का ज्ञान हुआ, तो उसने सुखिया को अभयदान का आश्वासन दिया, तभी वह रहने को तैयार हुई थी। बाद में जब बारह खम्भा रोड वाली कोठी बन गयी, तो उसे 'आउट हाउस' में स्थान मिल गया। तब से वह वहीं रहती थी। इस घटना के कारण सुखिया समझती थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकुन्तला की बात स्वीकार नहीं की जायेगी।

इस पर भी वह समझ रही थी कि रामलोक के विचारों का आभास शकुन्तला को भी हुआ है और इसीलिए वह मंगला को अपने कमरे में रखने का विचार बना बैठी है।

इसमें अपनी ओर से कुछ भी न करने का विचार कर वह मंगला से बोली, ''देखो मंगला ! तुम यहां रह सकती हो। यह शकुन्तला बहिन की अनुकम्पा से ही है। जब तक रह सको, रहो, परन्तु अपनी हैसियत का अनुमान लगाकर ही रहना।''

शकुन्तला किसी प्रकार का आश्वासन देना चाहती थी, परन्तु सुखिया कमरे से चली गयी।

जब सायंकाल लालाजी कोठी पर पहुंचे, तो वह एक सूचना देने पत्नी के कमरे में आये। इस समय उसके व्यवसाय के कर्मचारी उसकी प्रतीक्षा ऊपर की मंज़िल पर कार्यालय में कर रहे थे। यह प्रथा थी कि कर्मचारी दिन-भर के काम का ब्योरा लालाजी को दिये बिना घरों को नहीं जाते थे और जिस दिन लालाजी को देर हो जाये, तो वे उनकी प्रतीक्षा किया करते थे। आज भी ऐसा ही हुआ था।

लालाजी ने जल्दी-जल्दी यह समाचार सुनाया, ''कांग्रेस ने देश-विभाजन स्वीकार कर लिया है।''

''तो ?'' सदारानी ने पूछ लिया।

''तो यह कि यहां दिल्ली में पंजाब के लोग भारी संख्या में आयेंगे और यहां का जीवन अस्त-व्यस्त हो जायेगा।''

''मैं समझती हूं कि स्वेच्छा से आने वालों की संख्या बहुत कम होगी। हां, यदि वहां से मुसलमानों ने हिन्दुओं को निकालने का निश्चय कर लिया है, तो बात दूसरी है।''

''वह तो अब भी चल रहा है और मैं समझता हूं कि अब तो यह और अधिक वेग से चलेगा।''

''परन्तु पाकिस्तान बनने पर तो उनको शान्त हो जाना चाहिए।''

''यह नहीं होगा। यह मुसलमानों के रक्त में ही नहीं कि जिस देश में वे शासक बन जायें, वहां ग़ैर-मुसलमान सुख से रह सकें।''

''परन्तु मुसलमान रियासतों में तो हिन्दू रहते हैं और कई रियासतों में तो हिन्दुओं की संख्या मुसलमानों से अधिक है।''

''अब यह नहीं हो सकेगा। अब ज़माना बदल गया है।''

सदारानी शकुन्तला की बात बताना चाहती थी, परन्तु लालाजी जल्दी में थे। इसलिए बात हो नहीं सकी।

रात के खाने के समय मंगला खाने की मेज़ पर बैठी थी। लालाजी ने मंगला से पूछ लिया, ''आज तुम्हारे घर में खाना नहीं बना ?''

''नहीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लालाजी के प्रश्न का उत्तर शकुन्तला ने ही दिया। उसने कहा, ''पिताजी! अब यह रात में मेरे कमरे में ही रहा करेगी।''

''किसलिए?''

''यह अब ऊंचे दर्जे की पढ़ाई मेरे कमरे में ही रहकर किया करेगी।''

''इसकी क्या आवश्यकता है?''

''यह तो पढ़ने और पढ़ाने वाले को पता है।''

''उसी से तो पूछ रहा हूं।''

''बात यह है कि अधिक पढ़ाई के लिए वहां कमरे का वातावरण अनुकूल नहीं है। यह मैंने आज जाकर देखा है और इसलिए मैंने यह निश्चय किया है।''

''अपनी मां से बात की है?''

''मंगला मां के कमरे में नहीं, मेरे कमरे में रहेगी।''

''इस पर भी, शकुन्तला! मां से राय कर लेनी चाहिए थी। इसमें उसे भी कुछ असुविधा हो सकती है :''

''सच?'' शकुन्तला ने विस्मय में पूछा और प्रश्न-भरी दृष्टि से मां का मुंह देखने लगी। सदारानी चुप रही। इस पर शकुन्तला ने कहा, ''मैं अब भी यह नहीं समझ सकी कि मंगला के मेरे साथ रहने से मां को या आपको क्या असुविधा हो सकती है। आप मुझे बता दीजिये, तब मैं कुछ अन्य प्रबन्ध कर लूंगी।''

लाला जुगलकिशोर के कान खड़े हो गये, परन्तु उन्होंने उस समय बात आगे नहीं चलायी। बात बदलकर उन्होंने पत्नी से कहा, ''यह घोषणा हो गयी है कि स्वराज्य अगस्त, सन् 1948 के स्थान पर अगस्त, सन् 1947 में ही मिलेगा।''

शकुन्तला ने कहा, ''हां। आज वायसराय ने घोषणा की है और इंग्लैण्ड के प्राइम मिनिस्टर ने भी एक वक्तव्य वहां की पार्लियामेण्ट में दिया है।''

''इससे अपने देश में भारी परिवर्तन होने वाले हैं। उन परिवर्तनों का जन-जीवन पर भी भारी प्रभाव पड़ने वाला है। हमें उन परिवर्तनों की कल्पना कर अपने व्यवहार में भी परिवर्तन करना होगा।''

''क्या परिवर्तन हो सकते हैं?''

''पहली बात तो यह है कि राजनीतिक स्वराज्य के साथ हमारे जीवन के प्रत्येक अंश में भी स्वराज्य की भावना आयेगी।''

''यह एक स्वागत-योग्य स्थिति होगी।'' शकुन्तला ने कहा, ''हमारे विश्व-विद्यालय के वाइसचांसलर विद्यार्थियों की एक सभा में कह रहे थे कि स्वराज्य के उपरान्त उच्च शिक्षा में भारी परिवर्तनों की आवश्यकता होगी।''

''हां, यह भी हो सकता है, परन्तु मैं तो शारीरिक कठिनाइयों और सुविधाओं की बात कह रहा था।''

''मैं तो एक बात अनुभव कर रही हूं कि युद्ध समाप्त हुए दो वर्ष हो चले हैं, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुएं सस्ती हो रही प्रतीत नहीं होतीं।'' सदारानी ने कह दिया।

जुगलकिशोर ने कहा, ''वस्तुएं सस्ती नहीं हो सकतीं। इसका कारण यह है कि भारतीय सरकार खाने-पीने की वस्तुओं से नियन्त्रण नहीं उठा सकती। और जब तक नियन्त्रण रहेंगे, तब तक महंगाई बढ़ती ही चली जायेगी। इसके साथ ही देश में उद्योग-धन्धों में विकास द्रुत-गति से होगा। बड़े-बड़े नगर बनेंगे। नगरों में रहने वालों की संख्या में वृद्धि होगी। देहातों से लोग आने लगेंगे। इस कारण देहातों में काम करने वालों की संख्या कम हो जायेगी। इसका स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि वहां मशीनों से काम किया जायेगा। मशीनों से वस्तुएं सस्ती नहीं होतीं, कम महंगी होती हैं।''

''परन्तु,'' सदारानी ने पूछ लिया, ''मशीनों से उत्पादन में वृद्धि होने से वस्तुएं सस्ती होनी चाहिए।''

''हां। होनी तो चाहिए, परन्तु होतीं नहीं। इसका कारण यह है कि कल-कारख़ानों के लग जाने से वस्तुएं बहुत अधिक संख्या में बनने लगती हैं। तब उन वस्तुओं के लिए बाज़ार ढूंढ़ना पड़ता है और बाज़ार में आकर ख़रीद करने वालों की जेब में दाम भी होने चाहिए। अधिकांश जनता खेती-बाड़ी का काम करती है, इसलिए किसानों की जेब में अधिक धन लाने के लिए अनाज महंगा होना चाहिए। अनाज के महंगा होने से अन्य वस्तुएं भी महंगी होंगी और यह चक्रमान महंगाई का मार्ग बन जायेगा। दस्तकारी में उन्नति होगी। दस्तकारी की उपज की खपत के लिए ख़रीदार की जेब में पैसे होने चाहिए और जन-साधारण द्वारा पैदा किया जाने वाला अनाज महंगा होना चाहिए।

''इससे दस्तकारी की वस्तुएं और अधिक महंगी होंगी और उनके लिए ख़रीदारों की जेब में और अधिक धन होना चाहिए।''

''तो इसका अन्त कहां होगा?''शकुन्तला ने पूछ लिया।

''इसका अन्त होगा मनुष्य के पशु बन जाने में, और फिर घोर गृह-युद्ध में। माताएं पुत्र पैदा करती जायेंगी और वे बड़े होकर एक-दूसरे का गला काटने में ही अपना कल्याण मानेंगे।''

''तो यह सभ्यता का मंगल-कार्य होगा?''

''हां, उद्योगमयी सभ्यता का।''

: 12 :

सन् 1951 का अप्रैल मास था। बदरीप्रसाद बैरिस्टर बनकर इंग्लैण्ड से लौट रहा था। उसका पत्र पिता को मिला था कि मुझे 'बार-एट-लॉ' की उपाधि कल मिल गयी है और मैंने अब भारत लौट आने का निश्चय कर लिया है। मैं तेरह अप्रैल को बी. ओ. ए. सी. की फ़्लाइट से दिल्ली पहुंच रहा हूं।

यह जुगलकिशोर के परिवार में बहुत प्रसन्नता का कारण था। उसने अपने साले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजभूषण को भी यह समाचार तार द्वारा दे दिया था। उसका विचार था कि यदि यह सूचना न भेजी गयी, तो ब्रजभूषण की पत्नी बुरा मानेगी। साथ ही उसको दिल्ली आये हुए भी कई महीने हो चुके थे। वह उनसे मिलकर स्वास्थ्य-समाचार जानना चाहता था।

ब्रजभूषण के बड़े लड़के कमल का विवाह हुए पांच वर्ष हो चुके थे और उसके दो लड़के थे। वह एक बार पत्नीसहित दिल्ली आया था। तब सुखिया नौकरों के लिए बने 'आउट हाउस' में रहती थी और उसे मंगला के दर्शन नहीं हुए थे।

दो दिन तक नव-दम्पती अपनी बुआ के घर पर रहे थे। न तो कमल ने मंगला के विषय में पूछा और न ही वह उसे कोठी में दिखाई दी। वह उसकी चर्चा भी अपनी पत्नी के सामने करना नहीं चाहता था।

तेरह अप्रैल को,जब ब्रजभूषण और साधना बदरीप्रसाद के स्वागत के लिए हवाईपत्तन पर आने लगे, तो उनका लड़का कमल भी अपनी पत्नी शोभा के साथ तैयार हो गया। कमल विदेश-भ्रमण के लिए जाना चाहता था और वह बदरीप्रसाद से इस विषय में अधिक-से-अधिक सूचना प्राप्त करना चाहता था। यही कारण था कि वह भी माता-पिता के साथ बदरीप्रसाद से मिलने दिल्ली आ पहुंचा था। उसकी पत्नी शोभा तो केवल साथ देने के लिए चली आयी थी। जब सब लोग हवाईपत्तन पर जाने लगे, तो मंगला भी शकुन्तला के साथ वहां जाने के लिए तैयार हो गयी।

लालाजी को यह सब ठीक प्रतीत नहीं हुआ। वह नहीं चाहते थे कि मंगला का जादू, जो बदरीप्रसाद के मन से उतर चुका प्रतीत होता था, पुन: चढ़ना आरम्भ हो जाये। मंगला अब दिन-भर शकुन्तला के कमरे में रहती थी और उसकी मां सुखिया के लिए 'अटैच्ड बाथरूम' वाला एक कमरा कोठी के नीचे के भाग में खुलवा दिया गया था।

शकुन्तला के हठ और सदारानी के मन की भावना के कारण सुखिया को बहिन के पद पर आसीन करना ही है, लालाजी यह रिआयत देने पर राज़ी हो गये थे।

लालाजी मंगला को ले जाना नहीं चाहते थे। सदारानी उसके साथ जाने में कोई हानि नहीं समझती थी। इसलिए लालाजी कहीं मना न कर दें, उसने मंगला से कह दिया, ''आओ, तुम हमारी गाड़ी में बैठ जाओ।''

ब्रजभूषण, साधना, कमल इत्यादि लालाजी की दूसरी गाड़ी में बैठ चुके थे। सदारानी के मंगला को निमन्त्रण देने पर जुगलकिशोर चुप कर गया। शकुन्तला और मंगला गाड़ी में पिछली सीट पर बैठ गयीं। सदारानी आगे अपने पति के पास बैठ गयी। हवाईपत्तन पर पहुंचे, तो हवाईजहाज़ के पहुंचने में अभी पन्द्रह मिनट का समय था। कमल की दृष्टि शकुन्तला और मंगला पर चली गयी। मंगला अब एक आकर्षक युवती प्रतीत होने लगी थी। कमल लालसा-भरी दृष्टि से मंगला की ओर देखने लगा, जो सदारानी के पास ही खड़ी थी।

कमल ने कह दिया, ''अब बदरी भैया का विवाह हो जाना चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर शकुन्तला ने दिया, "हां। मामीजी से कहेंगे कि शोभा भाभी-जैसी कोई लड़की उसके लिए भी ढूंढ़ दें।"

"मैं तो विलायत का पढ़ा हुआ नहीं हूं। इसलिए जो मुझे मिली है, वैसी बदरी भैया को क्यों मिलेगी?"

"तो क्या उसमें कोई दोष दिखाई दिया है?" जुगलकिशोर ने मुसकराते हुए पूछ लिया।

"दोष की बात छोड़िये फूफाजी, सब दोष-ही-दोष तो है।"

"इस पर भी वह दो लड़कों की मां है।"

"बच्चों के साथ उसका मोह नहीं है।"

"क्यों, क्या वे लूले-लंगड़े हैं?"

"नहीं। सब तरह से पूर्णांग हैं। केवल रंग में अपनी जाति-बिरादरी के-से हैं।"

"और भाभी किस जाति-बिरादरी के रंग की है?" शकुन्तला का अभिप्राय यह था कि वह भी तो सांवले रंग की है।

कमल ने कुछ उत्तर नहीं दिया। बात बदलकर पूछने लगा, "मंगला अब क्या करती है?"

"अब वह शास्त्र पढ़ रही है।" शकुन्तला ने कहा, "आजकल कठोपनिषद् का अध्ययन कर रही है। वाल्मीकीय रामायण के बाद ईशावास्योपनिषद् और केन उपनिषद् वह पढ़ चुकी है।"

"और तुम क्या कर रही हो?"

"मैं एम. ए. पास कर मंगला की शिष्या बन गयी हूं।"

"मैं समझता हूं कि तुम दोनों को ज़बरदस्ती किसी के साथ नत्थी कर देना चाहिए।"

"जैसे कमल भैया को शोभा भाभी के साथ कर दिया है?"

इसी समय फ़्लाइट के पहुंचने की घोषणा कर दी गयी। सब लोग 'रेलिंग' के साथ जा खड़े हुए। जहाज़ उस स्थान से दूर खड़ा हुआ था और सब लोग अपने-अपने आने वाले सम्बन्धियों को देख रहे थे। बदरीप्रसाद उतरा, तो उसे किसी ने पहचाना नहीं। एक तो वह विलायती पोशाक पहने हुए था और दूसरे, सिर पर हैट रखे हुए था। इन छह वर्षों में वह बहुत बदल गया था। जब जहाज़ से उतरने वाले लोग कुछ समीप आ गये, तो सदारानी ने उसे सबसे पहले पहचाना। उसने लालाजी से कहा, "मुझे तो वह बदरी आता लग रहा है, जो एक बच्चे को गोद में लिये हुए है।"

"मुझे भी लग रहा है, परन्तु उसके साथ तो उसकी बांह-में-बांह डाले एक स्त्री भी आ रही है।"

अब शकुन्तला के मुख से निकल गया, "भैया भाभी को लिये आ रहा है।" अब तो बज्रभूषण ने भी पहचान लिया और कहा, "यह तो बहुत ही... ।" वह कहता-कहता रुक गया। साधना ने उसकी बांह पर हाथ रखकर कह दिया, "एक बच्चा भी तो है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब चुप कर गये। शकुन्तला की दृष्टि मंगला पर गयी। उसका मुंह विवर्ण हो गया था। शकुन्तला समझी कि वह बदरी भैया से विवाह की आशा कर रही थी।

अत: शकुन्तला ने मंगला की बांह-में-बांह डालकर उसे अपनी ओर खींचकर एक ओर कर लिया और कांन में पूछा, "यह ठीक नहीं हुआ न ?"

इस समय बदरीप्रसाद रेलिंग के इस ओर आ गया था, परन्तु शकुन्तला उसे मिलने न जाकर मंगला का मुंह देख रही थी। वह रक्तविहीन हो रहा था। मंगला ने साहस करके कहा, "बहिनजी ! यह तो अप्रत्याशित है।"

"साहस करो। मैं देख रही हूं कि वह अंगरेज स्त्री तुम्हारी तुलना में बीस प्रतिशत भी नहीं है।"

"मैं अधीर नहीं हूं। चलो, भैया का स्वागत कर लें।"

मंगला और शकुन्तला दोनों सब सम्बन्धियों के पास आ खड़ी हुईं। बदरीप्रसाद अपने साथ आयी स्त्री का परिचय करा रहा था। वह कह रहा था, "पिताजी ! यह है नोरा माहेश्वरी। आपकी बहू।"

नोरा ने हाथ जोड़कर मुसकराते हुए अभिवादन किया । सदारानी ने उसकी पीठ पर हाथ फेरकर प्यार दिया और कहा, "बदरी ! तुमने अपने विवाह की बात लिखी भी नहीं, अन्यथा मैं इसके स्वागत का विशेष प्रबन्ध करती।"

"मां ! वह घर चलकर कर देना।"

नोरा यह बोली समझ नहीं रही थी और मां-बेटे का मुंह देख रही थी।

ब्रजभूषण भी कुछ निराश था। उसने मात्र हाथ जोड़कर नमस्ते कही और उत्साहहीन होकर बाहर की ओर चल दिया।

सदारानी देख रही थी कि उसके भाई को बदरीप्रसाद की इस करतूत पर प्रसन्नता नहीं हुई है।

बदरीप्रसाद की पत्नी के साथ होने के कारण उसके साथ सामान कुछ अधिक था, इस पर भी सब गाड़ी में बैठ गये।

जुगलकिशोर गाड़ी चलाता हुआ मार्ग में विचार करता रहा कि यह अप्रत्याशित नहीं था। सदारानी ने इसकी सम्भावना का संकेत भी किया था। वह विचार कर रहा था कि मंगला की तुलना में रूप-रेखा में बहुत घटिया होने पर भी बदरी ने उस लड़की को वरीयता दी है। वह विस्मित था कि यह क्यों हुआ ? उसका मन कह रहा था कि लड़की अवश्य कोई चोंचलेबाज़ होगी।

यदि ऐसा है, तो ऐसी लड़की को घर में रखने से वातावरण बिगड़ सकता है। दो कुंवारी लड़कियां विवाह न करने का निश्चय किये हुए घर में रहती हैं।

जुगलकिशोर के व्यवसाय के एकाउण्टेण्ट का काम शकुन्तला करने लगी थी। वह नित्य छह घण्टे कोठी के ऊपर बैठी हुई आय-व्यय के आंकड़े लिखा करती थी। इस काम को करते हुए उसे एक वर्ष से अधिक हो चुका था। एम. ए. करने के उपरान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने हिसाब-किताब रखने की शिक्षा प्राप्त की थी। छह महीने तक एकाउण्टेंसी का काम सीखकर वह कार्यालय में काम करने लगी थी। इससे एक बात का पता उसे चल गया था कि लालाजी के कार्य में बहुत हेरा-फेरी होती है।

इस विषय में शकुन्तला ने अपने पिता से कहा भी था, ''पिताजी! यदि हेरा-फेरी न की जाये, तो व्यवसाय में बहुत कम आय होती है।''

जुगलकिशोर का कहना था, ''तब तो प्राय: हानि हीं हो सकती है। तुम्हारी किताबों में वो रक़में नहीं लिखी जातीं, जो अफ़सरों को काम पाने और पास कराने के लिए रिश्वत में देनी पड़ती हैं।

''उस दिन वित्तमन्त्री के घर गये थे। तुम और तुम्हारी माताजी भी साथ थीं। देखा नहीं था कि कोठी कितनी सजी हुई है? वह सब सामान मेरे-जैसे लोगों ने उनको भेंट में दिया हुआ था। उनके ड्राइंगरूम में गांधीजी की संगमरमर की जो आवक्ष मूर्ति लगी थी, वह दो वर्ष हुए मैंने उन्हें भेंट-स्वरूप दी थी। जानती हो, वह कितने की मोल ली थी? दो हज़ार रुपये में त्रिवेन्द्रम के एक शिल्पी से ली थी। वहां कुछ अन्य वस्तुएं भी मेरी दी हुई हैं। यदि मैं हेरा-फेरी न करूं, तो यह सब कहां से दूं? तुम्हें विदित है कि मेरी अमेरिकन गाड़ी प्राय: दिल्ली के चीफ़ इंजीनियर की सेवा में रहती है। चालीस हज़ार की गाड़ी अफ़सरों को प्रसन्न करने के लिए है और अपने लिए दस हज़ार की हिन्दुस्तानी लैण्ड-मास्टर। अमेरिकन गाड़ी पर एक हज़ार रुपया प्रति मास ऊपर से व्यय हो जाता है। यह हिसाब में नहीं जा सकता।''

शकुन्तला इस समस्या को सुनकर चुप रह गयी थी और दो प्रकार के हिसाब के रजिस्टर रख रही थी।

मोटरगाड़ी में हवाईपत्तन से आते हुए जुगलकिशोर यह भी विचार कर रहा था कि उसकी हराम की कमाई को व्यय करने वाले उसके घर में दो अन्य प्राणी आ रहे हैं।

घर पर पहुंचकर बदरीप्रसाद को दो नयी बातों का पता चला। एक तो यह कि शकुन्तला और मंगला दोनों एक ही कमरे में रहती हैं। उसके विलायत पढ़ने के लिए दिल्ली जाने के समय मंगला मां के साथ कोठी के 'आउट हाउस' में रहती थी। दूसरे, यह कि सुखिया कोठी में ही एक पृथक् कमरे में रहती थी।

वह इन मां-बेटी के परिवार में इस प्रकार सम्मिलित होने की बात के कारण पर विचार कर रहा था। उसकी अनुपस्थिति में ही भारत स्वतन्त्र हुआ था और पंजाब से विस्थापित हिन्दुओं के कारण दिल्ली का विस्तार द्रुतगति से होने लगा था।

एक-आध दिन तो कोठी में बदरीप्रसाद से मिलने वाले लोगों की भरमार रही, और वह भी अपने राजनीतिक क्षेत्र के साथियों से मिलने जाता रहा था। राजनीतिक क्षेत्र में उसके संरक्षक और पथ-प्रदर्शक गुप्ताजी का देहान्त हो चुका था और उसके स्थान पर एक चौधरी साहब विख्यात हो रहे थे। यह दिल्ली के एक गांव में रहने वाले जाट नेता थे। पहले दो दिन में ही बदरीप्रसाद तीन बार उनसे मिलने गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकुन्तला का मामा ब्रजभूषण पहले ही दिन पत्नी सहित वापस रोहतक चला गया था, लेकिन उसका लड़का कमल अपनी पत्नी शोभा के साथ दिल्ली में ही रह गया था।

शोभा दिल्ली की सैर करना चाहती थी और कमलकिशोर दिल्ली में ही कोई काम करने का विचार कर रहा था। इस विषय पर वह अपने फूफा जुगलकिशोर से वार्तालाप करना चाहता था।

इन्हीं दिनों शकुन्तला और शोभा में मेल-जोल बढ़ने लगा, तो दोनों में बातचीत होने लगी। शोभा ने शकुन्तला को अपने पिता के कार्यालय में काम करते देखकर पूछ लिया, "शकुन्तला बहिन! तुमने तो दर्शनशास्त्र में एम. ए. किया है। उसके पढ़ने पर भला यह दिन-भर आंकड़े लिखने में तुम्हारी क्या रुचि है?"

"भाभी!" शकुन्तला का कहना था, "यह कार्य जीवन में विलक्षणता लाकर रस पैदा करता है। वैसे मैं एक दूसरा कार्य भी कर रही हूं।"

"क्या?"

"मैं शंकर की विचारधारा पर एक बृहद् ग्रन्थ लिख रही हूं। उसके लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन करना पड़ा है। अब मैं इसमें एक सीमा तक सफल हुई हूं।"

"तो संस्कृत किससे पढ़ती हो?"

"मंगला से।"

शोभा खिलखिलाकर हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "मैं नहीं जानती थी कि एक फ़िलासफ़र भी हंसी-मज़ाक कर सकता है। भला, वह तुम्हें क्या पढ़ाती होगी? वह तुमसे आयु, शिक्षा और अनुभव में बहुत छोटी है।"

"कुछ बहुत छोटी नहीं है। केवल छह वर्ष ही छोटी है, परन्तु वह मुझसे ही पढ़कर अब मुझे इस मोटे ग्रन्थ के लिखने में मेरी गाइड का काम कर रही है।"

"पर तुम दोनों विवाह क्यों नहीं कर रहीं? बुआजी कल कह रही थीं कि शकुन्तला के विवाह के कई प्रस्ताव आ चुके हैं, परन्तु तुम्हारी रुचि ही नहीं हो रही। मैंने मंगला के विषय में भी पूछा था। बुआ कहने लगी कि एक समय बदरी भैया ने मंगला से विवाह करने में रुचि प्रकट की थी। शायद इसीलिए मंगला किसी अन्य स्थान पर विवाह करने से मना कर रही थी। अब बदरी भैया का विवाह हो जाने पर वह विवाह के लिए तैयार हो जायेगी।"

शकुन्तला जानती थी कि कमलकिशोर शोभा से प्रसन्न नहीं है। पालम हवाईपत्तन पर दो-तीन मिनट के वार्तालाप में ही वह इसे जान चुकी थी। इसलिए उसके मन में उत्सुकता उत्पन्न हो गयी कि उसके पति के विषय में शोभा के विचार भी जान ले। इसलिए उसने मंगला की बात छोड़कर पूछ लिया, "भाभी! यह बताओ, तुम अपने विवाहित जीवन से प्रसन्न हो?"

"देखो बहिन! मेरा विवाह मुझसे पूछकर नहीं किया गया था। मुझसे पूछने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता भी नहीं समझी गयी। अब विवाह हो गया है और जीवन एक लीक हो गया है। इसी लीक को पीटते हुए दो बच्चे भी हो गये हैं। वे भी उतने ही मूर्ख हैं, जितना उनका बाप है।''

शोभा के मनोद्गार सुनकर शकुन्तला उसका मुंह देखती रह गयी। एकाएक उसके मुंह से निकल गया, ''तब तो मैं ठीक ही कर रही हूं।''

''क्या ठीक कर रही हो ?''

''विवाह नहीं कर रही। मुझे भी कोई मूर्ख पति मिल जायेगा और मेरा जीवन भी एक लकीर पीटने के समान हो जायेगा।''

''परन्तु तुम लोग तो दिल्ली में रहते हो। साथ ही तुम एम. ए. तक पढ़ी हो । तुम्हारे लिए विस्तृत निर्वाचन क्षेत्र है और तुम चुनाव करने में मुझसे अधिक स्वतन्त्र हो सकती हो।''

शोभा के एक ही वाक्य से शकुन्तला समझ गयी कि यह विवाह असफल हुआ है। इसने इनके जीवन में वह मधुरता नहीं भरी, जो प्राय: अविवाहित इससे पाने की आशा करते रहते हैं। वह विचार कर रही थी कि क्या सबके साथ ऐसा ही होता है? उसने बात बदलकर कमलकिशोर के व्यवसाय के विषय में पूछ लिया। उसने पूछा, ''भाभी! कमल भैया दिल्ली में क्या करना चाहते हैं ?''

''वह अपने पिता से नाराज़ हैं। यह तो नहीं बताया कि मतभेद का विषय क्या है। इस पर भी दोनों में बनती नहीं है। अब छह मास से वह अपनी दुकान पर भी नहीं जाते। पिताजी अब अपना ध्यान कैलास भैया पर दे रहे हैं। वह उसे दुकान पर बिठाकर काम सिखा रहे हैं।''

दोनों ड्राइंगरूम में बैठी बातें कर रही थीं। जब मंगला वहां आ गयी, तो बातचीत बन्द हो गयी।

: 13 :

''आओ, मंगला! कहां थीं तुम ?'' शकुन्तला ने आते ही पूछ लिया।

उसने बताया, ''मैं अभी कमरे में गयी थी और तुम वहां नहीं थीं। माताजी से बातचीत हो रही थी। उन्होंने अपने कमरे में बुलाया था। वहां मां भी थीं।''

''किस विषय पर बातचीत हुई ?''

''मुझे घर से विदा करने की बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार आरम्भ हो गया है।''

''तो क्या विचार किया है ?''

''मैं अनिश्चित-मन हूं । आपके भाई के विवाह के बाद विलायत से लौटने पर घर के बड़ों में मेरे विषय में विचार होने लगा है। माताजी ने कहा है कि वह समझ रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं कि तुम्हारे भैया मुझसे विवाह करने की इच्छा प्रकट करेंगे, परन्तु अब यह सम्भावना न रहने से वह मेरे विषय में चिन्ता करने लगी हैं।''

शोभा ने पूछ लिया,''और तुम इससे चिन्तित नहीं हो ?''

''मुझे चिन्ता नहीं है। मेरे मन में अभी विवाह की चाह उत्पन्न नहीं हुई। बदरी भाईसाहब ने जाने से पूर्व और विलायत से भी पत्र लिखे थे और उनमें उन्होंने विवाह करने की इच्छा व्यक्त की थी। मैं माताजी के अपने और मां पर एहसान के नीचे दबे होने से इनकार नहीं कर सकती थी।

''परसों हवाईपत्तन पर भैया और भाभी को देखकर मुझे एक विचार से प्रसन्नता हुई थी। अब मैं स्वतन्त्र और चित्त में हलकापन अनुभव कर रही हूं।''

''परन्तु'' शोभा ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, ''शकुन्तला बहिन की चिन्ता क्यों नहीं हो रही ?''

''यह मैं कैसे बता सकती हूं। क्यों, बहिनजी ! क्या आपके भी विवाह की चर्चा होती है ?''

''मेरे विवाह की चर्चा तो पिछले तीन वर्षों से हो रही है। उस चर्चा में मुझे किसी मरी हुई चुहिया की बदबू समझ में आयी है। इसलिए मैं उत्तरोत्तर ज़ोरदार शब्दों में अस्वीकार कर रही हूं।''

''कैसी मरी हुई चुहिया दिखाई दी है ?'' शोभा ने पूछ लिया।

''जब भी किसी विवाह के प्रत्याशी की बात चलती है, तो पिताजी यह बताने लगते हैं कि लड़के के पिता की इतनी सम्पत्ति है। उसके नयी दिल्ली में इतने मकान हैं। वह उद्योगपति है और उसके इतने कारख़ाने चलते हैं अथवा वह इतने बड़े पद पर नौकर है और उसकी वेतन से अतिरिक्त इतनी आय है। ऐसी बातें सुनते-सुनते मेरे कान पक गये हैं और मैं विवाह न करने का पक्का विचार किये हुए हूं।''

''यही बातें, तो मेरे विवाह से पूर्व भी होती थीं।''

''तो यह सबके विवाह पर होती हैं ?'' मंगला ने पूछ लिया।

''तुम्हारे साथ यह बात नहीं हुई ?''

''मेरे विषय में विवाह का विचार करने वाली माताजी थीं। इसलिए वह लड़के की शिक्षा, उसके शील-स्वभाव और रूपरेखा की बात ही करती रही हैं।''

''अर्थात् तुम मन-ही-मन उसे स्वीकार कर आयी हो ?''

''यह तो नहीं, परन्तु मैं उसे 'रिजेक्ट' भी नहीं कर सकी। माताजी कहती थीं कि यदि मुझे विवाह करना है, तो वह लड़का सर्वथा उपयुक्त है।''

शोभा ने कह दिया, ''मंगला बहिन का पत्ता तो कटा।''

मंगला चुप रही। शकुन्तला ने कहा, ''मुझे बहुत हानि होगी। हमारा स्वाध्याय समाप्त हो जायेगा।''

''क्या मतलब ?'' शोभा ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम नित्य प्रात: चार बजे से छह बजे तक दो घण्टे उपनिषद् का पाठ और उस पर चर्चा किया करती हैं। वह विवाह के उपरान्त नहीं हो सकेगी।"

"क्या पढ़ा करती है उपनिषद् में?" शोभा ने विस्मय में पूछ लिया। उसका विचार था कि वह कोई बहुत बड़ा उपन्यास होगा।

उत्तर शकुन्तला ने ही दिया, "जीवन की सबसे महान् समस्या का उत्तर उसमें ढूंढ़ती रहती हैं।"

"वह समस्या क्या है?"

"यही कि हम क्या हैं और क्यों हैं? हमारे इस संसार में आने का क्या प्रयोजन है?"

शोभा हंस पड़ी और बोली, "तो अभी तक तुम दोनों भाड़ झोंकती रही हो। शकुन्तला, तुम्हारी आयु अब तेईस वर्ष की हो रही है और तुम यह भी नहीं समझीं कि तुम इस संसार में क्यों आयी हो?"

"भाभी! क्या तुम समझ गयी हो?"

"बिल्कुल। देखो, मैं बताती हूं। प्राणी-जगत् में प्राणियों की दो श्रेणियां हैं। एक है पुरुष-वर्ग और दूसरी है स्त्री-वर्ग। दोनों के कार्य भिन्न-भिन्न हैं। स्त्रियां सन्तान बनाने के लिए यहां आयी हैं और पुरुष पत्नी तथा सन्तान की सुख-सुविधा के लिए धन और साधन उपलब्ध करने के लिए। बाल्यकाल में यह कार्य पिता करते हैं और विवाह के उपरान्त पति करता है। यही कारण है कि बाल्यकाल समाप्त होने पर माता-पिता लड़की को पति के घर भेजकर अपना कार्य सम्पन्न हुआ मानने लगते हैं। यही अब आप दोनों के विषय में भी समझा जाने लगा है। मंगला की चिन्ता शकुन्तला बहिन से पहले हुई है और यह स्वाभाविक ही है।"

मंगला मौन थी। वह लालाजी तथा माताजी की चिन्ता का अर्थ समझकर मन-ही-मन गम्भीर विचार में पड़ गयी थी। शकुन्तला शोभा के कहने पर अपने विचार व्यक्त करने ही लगी थी कि कमलकिशोर आ गया और लड़कियों के तथा पत्नी के सामने बैठकर पूछने लगा, "किस विषय पर चर्चा हो रही है?"

शोभा ने कह दिया, "विषय पुरुषों को बताने का नहीं है।"

"पर शोभा, तुमने बता तो दिया है।"

"क्या बता दिया है?"

"लड़कियों की चर्चा का एक ही ऐसा विषय है, जो पुरुषों को बताने का नहीं होता। वह है विवाह। तुम तीन में से एक का तो विवाह हो चुका है। दो का शेष रहता है। एक के विवाह के विषय में मैं जानता हूं। शेष दूसरी की ही बात है।"

शोभा ने हंसते हुए कहा, "किसके विषय में जानते हैं और किसके विषय में नहीं जानते?"

"मैं शकुन्तला बहिन के विषय में जानता हूं। इसके विवाह का निश्चय लगभग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो चुका है। केवल तिथि और लेन-देन के विषय में बातचीत होनी शेष है।''

''और मंगला बहिन के विषय में निश्चय नहीं हो रहा ?'' शोभा ने पूछा, ''उसके विषय में क्या अड़चन है ?''

''यही कि उसकी मां के पास लड़की को विदा करने के लिए क्या कुछ है। तीन-चार स्थान पर बातचीत हुई है, परन्तु कोई उपयुक्त व्यक्ति—जो बिना किसी प्रकार के दान-दहेज के इसे अपने घर में ले जाये—नहीं मिला।''

''तब तो परमात्मा का धन्यवाद ही करना होगा।'' मंगला के मुख से अनायास ही निकल गया।

''किसलिए ?'' शोभा ने पूछ लिया।

''मेरा विवाह नहीं होगा, इसलिए।''

''मैं अभी-अभी फूफाजी के पास से आ रहा हूं। मैंने उन्हें एक लड़के का पता दिया है, जो बिना एक पैसा भी मांगे विवाह के लिए तैयार है।''

''और वह आप हैं ?'' शोभा ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कह दिया।

पति-पत्नी में तकरार की सम्भावना पर मंगला वहां से उठी और बिना एक भी शब्द बोले अपने कमरे की ओर चल दी।

तीनों उसे जाते हुए देखते रहे। जब वह दूर हो गयी, तो कमल ने कहा, ''शोभा ! तुम सदा मूर्खता करती रहती हो। भला, इस बात के कहने की क्या आवश्यकता थी ?''

''मेरे पिता ने आपको दहेज के अतिरिक्त व्यवसाय के लिए एक लाख रुपया दिया था। वह इसीलिए कि आप मेरे निष्ठावान् पति बने रह सकें, परन्तु आप तो सर्वथा कृतघ्न प्रतीत होते हैं, जो दिन-रात किसी दूसरी के विषय में विचार करते रहते हैं।''

''तुम घर पर होतीं, तो इस कृतघ्न कहने का मज़ा चखा देता।''

''इसीलिए तो मैंने अब रोहतक न जाने का निश्चय कर लिया है।''

''और कहां रहने का विचार किया है ?''

''यह विचार भी अब करना होगा।''

''भैया !'' शकुन्तला ने कह दिया, ''इस विषय पर चर्चा अपने कमरे में जाकर की जाये, तो ठीक नहीं होगा ?''

''यह भी एक कमरा ही है। मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि मुझे शोभा का कुछ भी पसन्द नहीं।''

''शोभा के पिता का एक लाख रुपया भी नहीं ?'' शोभा का प्रश्न था।

बात बढ़ती देख शकुन्तला ने उठते हुए कहा, ''तो ठीक है। भैया और भाभी यहां बैठकर अपने 'डोमैस्टिक' विषय पर चर्चा कर सकते हैं। मुझे इसमें रुचि नहीं है।'' इतना कहकर वह अपने कमरे की ओर चल दी।

जब शकुन्तला भी चली गयी, तो शोभा भी उठ खड़ी हुई और बोली, ''मैं इसी समय रोहतक लौट रही हूं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''कैसे जाओगी ?''

''बूआ से मोटर मांगने जा रही हूं। मिल गयी, तो मैं अभी चली जाऊंगी।''

''ठीक है। वह नहीं मिल सकेगी। मैं फूफाजी को मना करने जा रहा हूं।''

''देखती हूं, कौन सफल होता है ?''

शोभा बूआ के कमरे की ओर चल दी। उसे पता था कि फूफा और बूआ दोनों बूआ के कमरे में हैं।

मंगला जान-बूझकर शकुन्तला के कमरे में नहीं गयी थी। वह एकान्त में बैठकर अपने विषय में चिन्तन करना चाहती थी। उसका विचार था कि उसकी मां का कमरा ख़ाली होगा। वह अभी-अभी अपनी मां को लालाजी तथा माताजी से बातचीत करते छोड़ आयी थी, परन्तु उसे वहां भी एकान्त नहीं मिला। उसकी मां और बदरीप्रसाद दोनों ने मंगला को कमरे में आते देखा था, पर उसके लौटने पर उन्होंने उसे रोका नहीं।

वह अपने कमरे से निकली, तो पुनः ड्राइंगरूम में आ पहुंची। शकुन्तला और शोभा अब वहां नहीं थीं। कमरे के बीचो-बीच खड़ा कमलकिशोर उस ओर आ रहा था, जिधर शोभा गयी थी। वह विचार कर रहा था कि शोभा जाती है, तो जाये। उसे रोककर दिल्ली में रखने का कोई लाभ नहीं होगा।

एकाएक उसकी दृष्टि मंगला पर चली गयी। वह अनिश्चित मन ड्राइंगरूम के द्वार पर खड़ी थी। उसके मुख से निकल गया, ''मंगला ! शोभा अब चली गयी है। तुम यहां आ सकती हो।''

मंगला ने कहा, ''मैं भाभी से ही मिलने आयी थी।''

''पर मैंने तो उसे यहां से भगा दिया है।''

''किसलिए ?''

''तुमसे एक बात करने के लिए।''

मंगला भी कमल के समीप आकर खड़ी हो गयी। कमल ने खड़े-खड़े ही कहा, ''शोभा के साथ विवाह के पूर्व एक सन्देश तुम्हारी मां को भिजवाया था। मुझे विदित नहीं कि वह तुम्हें मिला था अथवा नहीं।''

मंगला को स्मरण था कि वह सन्देश क्या था। इसलिए उसने कह दिया, ''मां ने मुझे बताया था।''

''तब तुमने उस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था।''

''हां, भैया ! शुक्र है, तुम्हें याद है।''

''परन्तु अब परिस्थिति बदल गयी है। तब तुम आशा कर रही थीं कि बदरी भैया से तुम्हारा विवाह हो जायेगा। अब वह आशा नहीं रही।''

''देखो भैया ! मैं कुछ भी आशा नहीं करती थी, परन्तु माताजी के हम पर बहुत एहसान हैं। इसलिए मैं उनकी इच्छा की पूर्ति के लिए अपने को बांधे हुए थी। माताजी ने स्पष्ट तो नहीं कहा था कि उनके लड़के से मेरा विवाह होगा, परन्तु मैं जानती थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी कामना यही है। इसलिए मैं उनके पुत्र के विलायत से लौट आने की प्रतीक्षा में थी।''

''यही तो कह रहा हूं। अब वह प्रतीक्षा समाप्त हो गयी है। इसलिए मैं तुमसे अपना दूसरा विवाह करना चाहता हूं। मैं पिछले दो दिन से तुम्हारी मां को अपने दिल की बात बताना चाहता हूं, परन्तु अवसर नहीं मिला। अब मैं तुमसे कहता हूं। तुम माताजी से कह दो और मैं तो यह चाहूंगा कि तुम्हारी माताजी मानें, तो मैं आज ही विवाह कर कल तुम्हें यहां एक पृथक् मकान में ले जा सकता हूं।''

''और शोभा भाभी को?''

''वह तो अभी रोहतक लौट रही है।''

मंगला एक क्षण विचार कर बोली, ''मैं मां से कह दूंगी।''

''तो उत्तर कब मिलेगा?''

''यह तो मां ही बता सकती हैं। वह माताजी से भी सम्मति करेंगी। मैं समझती हूं कि आपको यदि जल्दी हो, तो आप सीधे मां से मिल लीजिये।''

इसी समय शोभा और सदारानी वहां आ गयीं। सदारानी ने आते ही कमल को डांट के भाव में कहा, ''कमल! शोभा से लड़ पड़े हो?''

''हां, बूआ।''

''क्यों? उसने क्या किया है?''

''बूआ! एक बदसूरत औरत को मेरे पल्ले बांध दिया है।''

''और तुम बहुत रूपवान् हो?''

''मैं धनी बाप का बेटा हूं।''

''तो क्या शोभा किसी कंगले की लड़की है?''

''नहीं, परन्तु अब वह कंगली है। विवाह होने के उपरान्त वह पिता की सम्पत्ति से पृथक् हो गयी है। अब वह कंगली है।''

सदारानी को क्रोध आ रहा था। उसने कहा, ''देखो, तुरन्त अपना सामान उठाओ और यहां से चल दो। नहीं जाओगे, तो मैं अभी नौकर को बुलाकर तुम्हारा सामान बाहर सड़क पर फिंकवा दूंगी।''

कमल भौंचक्का हो मुंह देखता रह गया। सदारानी ने ज़ोर से कहा, ''निकल यहां से। पाजी कहीं का!''

आख़िर कमल ने शोभा की ओर देखकर कहा, ''शोभा! चलो, तुम भी तो रोहतक जा रही हो।''

''मैं आपके साथ नहीं जा रही।''

''अभी अथवा सदा के लिए?''

''यह आपकी माताजी से बात करके बताऊंगी।''

कमल अपने कमरे में गया और पांच मिनट में अपना सामान सूटकेस में ठूंसकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व उसे उठाकर बाहर आ गया। वह सूटकेस लेकर सड़क के किनारे जा खड़ा हुआ।

:14 :

मंगला चुपचाप खड़ी कमल का कोठी से निकाला जाना देख रही थी। वह अपने मन में प्रसन्नता अनुभव कर रही थी। जब कमल चला गया, तो सदारानी ने शोभा से कहा, "तुम अपने कमरे को भीतर से बन्द कर लो। मैं अपनी मोटरगाड़ी में तुम्हें सायंकाल से पूर्व ही रोहतक भेजने का प्रबन्ध कर दूंगी।"

इसके बाद सदारानी ने मंगला से पूछ लिया," तो तुम भी रोहतक जाना चाहती हो ?"

"वहां क्या है, माताजी ?"

"तुम्हारे विवाह का निमन्त्रण।"

"निमन्त्रण तो अन्य स्थानों से भी आ रहा है, परन्तु कोई भी निमन्त्रण स्वीकार करने का चित्त नहीं कर रहा।"

"तो यहां खड़ी क्या कर रही थीं ?"

"मैं मां से बात करने उसके कमरे में गयी थी, परन्तु वहां बदरी भैया मां से बातचीत कर रहे हैं और मैं लौट आयी हूं।"

"ओह ! वह वहां क्या कर रहा है ?"

"मैंने दोनों में हो रहा वार्तालाप नहीं सुना। भैया को वहां देखकर मैं चली आयी हूं और यहां यह निमन्त्रण देने लगे थे।"

"शकुन्तला कहां है ?"

"वह अपने कमरे में चली गयी है।"

"तो तुम भी कमरे में जाओ।"

शोभा और सदारानी उस कमरे में चली गयीं, जिसमें शोभा और कमल ठहरे हुए थे।

मंगला शकुन्तला के कमरे में गयी, तो वह आरामकुरसी पर बैठी विचार कर रही थी। मंगला को देखकर उसने पूछ लिया, "कहां थीं तुम ?"

"मां से मिलने गयी थी।" मंगला एक कुरसी समीप खींचकर बैठते हुए कहने लगी, "शकुन्तला बहिन ! मुझे शोभा के कथन में बहुत कुछ सत्य प्रतीत होने लगा है। यदि कमल भैया की बात ठीक है कि तुम्हारे विषय में बिना तुमसे पूछे निर्णय कर लिया गया है, तो शोभा भाभी के कहने का समर्थन ही हुआ है।"

"मैं समझती हूं कि कमल झूठ बोल रहा है। कुछ दिन हुए एक प्रस्ताव था, जिस पर माताजी और पिताजी, दोनों सहमत होते प्रतीत होते थे। मैंने कहा था कि विचार करूंगी। अभी तक पुनः उस विषय पर बातचीत नहीं हुई। कल वहां की एक स्त्री,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्भवत: लड़के की मां आयी थी। कदाचित् कमल भैया ने उसकी बात सुन ली है।''

''कुछ भी हो।'' मंगला ने कहा ''यह तो मानना ही पड़ेगा कि माताजी तथा पिताजी को हमें शीघ्रातिशीघ्र घर से विदा करने की चिन्ता लग रही है।''

''परन्तु ऐसा हमारा बोझ न सह सकने के कारण नहीं हो सकता। अन्य कारण भी तो हो सकते हैं।''

मंगला को इस प्रकार शकुन्तला के आश्वासन से सुख अनुभव हो रहा था। वह कुछ कहने ही लगी थी कि कमरे के द्वार के समीप खड़ी सुखिया ने पूछ लिया, ''मंगला! क्या बात थी? तुम कुछ कहने आयी थीं।''

''हां, मां! मैं यह पूछने आयी थी कि क्या मुझे यहां से जाने की तैयारी करनी चाहिए?''

दोनों लड़कियां कुरसी पर बैठी थीं। सुखिया उसके समीप आ खड़ी हुई। एक कुरसी की ओर संकेत कर शकुन्तला ने कहा, ''मौसी, बैठो। हम दोनों इस विषय पर विचार कर रही थीं। मुझे भी तो यहां से कूच करने का नोटिस मिल रहा है।''

सुखिया ने कुरसी पर बैठते हुए कहा, ''मैं समझती हूं कि ऐसा कुछ नहीं है। यह नोटिस नहीं है। यह केवल प्रस्ताव मात्र है। स्वीकार करना अथवा न करना तुम्हारे अधिकार में है।''

''परन्तु मौसी! मंगला कह रही थी कि आप बड़ों का बार-बार इस विषय पर चर्चा करना यही प्रकट करता है कि हमें इस कोठी के कमरे ख़ाली करने का नोटिस है।''

''देखो, बेटी!'' सुखिया ने कहा, ''मैं अपने मन की भावना ही बता सकती हूं। मुझे ऐसी कोई बात समझ नहीं आयी, जैसी तुम कह रही हो। तुम्हारी माताजी ने हमें यहां रखा है। मुझे अभी तक ऐसा प्रतीत होता है कि वह मेरे यहां रहने से ऊबी नहीं हैं। फिर तुम तो उनकी लड़की हो। मैं उन्हें तुम्हारे विवाह की चिन्ता करते देखती हूं, परन्तु उसमें कारण यह है कि तुम स्वयं अपने लिए चिन्ता नहीं कर रहीं। कदाचित् कर भी नहीं सकतीं। यह संसार का नियम है कि भूमि स्थिर है। वह निर्जीव भी है। बीज बाहर से बटोर कर लाया जाता है। इसके लिए यत्न करना पड़ता है।

''अब देखो, तुम्हारे भाई बदरीप्रसाद की बात है। वह इंग्लैण्ड गया और अपनी पत्नी ढूंढ़ लाया। ऐसा तुम नहीं कर रहीं। मैं तो यह समझती हूं कि कर भी नहीं सकतीं। हमारे यहां प्रथा है कि माता-पिता लड़की के लिए वर ढूंढ़ते हैं। वैसे तो लड़कों के लिए भी पत्नियां वे ही ढूंढ़ते हैं। मैं समझती हूं कि तुम्हारे माता-पिता यही कर रहे हैं।

''मंगला के माता-पिता का स्थान भी वही ले रहे हैं। मैं इसमें उनका वात्सल्य अनुभव करती हूं। इस पर भी मैं समझती हूं कि मंगला की इच्छा के बिना वे कोई निश्चय नहीं करेंगे। आज जो बात हुई है, वह यह जानने के लिए है कि मंगला के मन में पति पाने की लालसा कितनी है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और क्या पता चला है?" शकुन्तला ने पूछ लिया।

"मैं यह नहीं बता सकती कि तुम्हारी माताजी क्या समझती हैं। हां, अपने मन की बात बता सकती हूं। वह यह कि मंगला के मन में अभी विवाह की इच्छा नहीं है।"

शकुन्तला ने मंगला की ओर देखा, तो उसके प्रसन्न चेहरे को देखकर समझ गयी कि उसकी मां का अनुमान ठीक है।

शकुन्तला को इस वार्तालाप से सन्तोष हो रहा था। इस पर भी उसने पूछ ही लिया, "और मेरे विषय में माताजी का क्या विचार है?"

"तुम्हारी माताजी ने मुझसे तुम्हारे विषय में कहा है कि शकुन्तला में किसी प्रकार का शारीरिक अभाव प्रतीत होता है, जो तेईस वर्ष की होने पर भी वह विवाह के लिए तैयार प्रतीत नहीं होती। एक बात तुम दानों के विषय में यह भी देखी जा रही है कि तुममें अन्य लड़कियों की भांति सिनेमा-थियेटर और खेल-तमाशे देखने की रुचि नहीं है। यह एक प्रकार से अभाव ही प्रतीत होता है।"

"मौसी!" शकुन्तला ने मुसकराते हुए कहा, "मुझे तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि मैं अपने पूर्वजन्म में इतने नाटक-तमाशे देख चुकी हूं कि इस जन्म में उस ओर रुचि ही नहीं होती। मुझे याद है कि जब मैं आठवीं अथवा नौवीं श्रेणी में पढ़ती थी, तो माताजी तथा भैया मुझे सिनेमा दिखाने ले गये थे,परन्तु मुझे उसमें रस नहीं आया था। उसके उपरान्त मैं स्वेच्छा से कोई पिक्चर देखने नहीं गयी। मुझे उनमें बहुत कुछ कृत्रिम प्रतीत होता है। वह प्राय: कहानी लिखने वाले अथवा डायरेक्टर के मनोभावों का निर्देशन होता है। यह संसार की वस्तुस्थिति नहीं होती। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक अथवा निर्देशक अपनी कल्पना के संसार का निर्माण करना चाहते हैं और मैं समझती हूं कि वह त्रुटिपूर्ण है।"

शकुन्तला की बातों से सुखिया सन्तोष अनुभव करने लगी थी। वह समझ रही थी कि लड़की के विचार स्वस्थ और युक्तिसंगत हैं। इस पर भी गहराई तक जाने के लिए उसने पूछ लिया, "परन्तु मैं देख रही हूं कि इस युग के बालकों के बनने में इन कहानी-लेखकों और सिनेमा-डायरेक्टरों का भारी हाथ है।"

"हां, सो तो है। वर्तमान युग की चाल देखकर मुझे यही समझ आ रहा है कि उनका प्रयास मिथ्या दिशा में ही है। साहित्य, कला और शास्त्र समाज को दिशा देते हैं और यदि आज समाज में कुछ ख़राबी है, तो दोष साहित्य और कला-विशारदों का ही है। मुझे कुछ ऐसा ही प्रतीत हो रहा है कि वर्तमान समाज यह भूल गया है कि मनुष्य का उद्देश्य क्या है। मौसी! देश के सबसे बड़े एवं सर्वप्रतिष्ठा-प्राप्त व्यक्ति से लेकर हमारी कोठी के भंगी तक यह समझ रहे हैं कि भोग ही जीवन का मुख्य ध्येय है। भोग तो शरीर, मन और बुद्धि को जीवित रखने के लिए है, न कि जीवन-भोग को प्राप्त करने के लिए है।"

सुखिया मन-ही-मन प्रसन्न थी। वह समझ रही थी कि दोनों लड़कियां अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय व्यर्थ नहीं गंवा रहीं। वह जीवन को कुछ तो समझ रही थीं।

शकुन्तला इस विवाद का अर्थ नहीं समझ रही थी। उसे सन्देह हो रहा था कि माताजी ने मौसी को उन्हें विवाह करने के लिए तैयार करने को भेजा है,परन्तु युक्ति की बात युक्ति से करने के स्वभाव के कारण शकुन्तला ने सुखिया की युक्ति का उत्तर दे दिया।

उसने कहा, ''मौसी! यह इस प्रकार है जैसे एक किसान खेत में अन्न पैदा करता है। वह अपने जीवन का विशिष्ट भाग अन्न पैदा करने में लगा देता है। तो क्या उसके जीवन का लक्ष्य अन्न पैदा करना ही है? वास्तव में, वह अन्न जीवन चलाने के लिए उत्पन्न करता है, न कि जीवन को अन्न उत्पन करने के लिए मानता है।

''इसीलिए भोग भी शरीर को चालू रखने के लिए है, न कि भोगों को प्राप्त करने के लिए। वर्तमान कलाकारों और शास्त्रियों ने तो जीवन और भोगों को उलट-पुलट कर रख दिया है। जो मुख्य है, उसे गौण कर दिया है और गौण व्यवहार को मुख्य माना जाता है।''

सुखिया ने बात बदल दी। उसने कहा, ''यदि तुम दोनों की विवाह की इच्छा हो, तो तुम उसकी पूर्ति के लिए अपने माता-पिता से राय कर लो। ऐसा इसलिए कि यह मार्ग कण्टकाकीर्ण है। यदि तुम किसी मुसीबत में फंस गयीं, तो हमें भी दु:ख होगा।''

मंगला को शोभा और कमल के झगड़े की बात स्मरण आ गयी। उसने कह दिया, ''हां, शोभा और कमल भैया में झगड़ा होने लगा है। यह झगड़ा यहां आकर ही उत्पन्न नहीं हुआ। इसका आरम्भ तो रोहतक में हुआ प्रतीत होता है।''

''मैं जानती हूं, परन्तु उन धनलोलुप जीवों की बात छोड़ो। तुम अपने विषय में विचार करो।''

इसी समय सदारानी भी वहां आ गयी। उसे विदित हो गया था कि सुखिया लड़कियों से बातचीत कर रही है।

:15:

''मैं भी तुम दोनों से एक बात कहने आयी हूं।'' सदारानी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

इस पर तीनों चुप होकर सदारानी का मुंह देखने लगीं। मंगला ने कुरसी से उठकर माताजी के लिए स्थान ख़ाली कर दिया। कमरे में दूसरी कुरसी नहीं थी। जब सदारानी उस ख़ाली की गयी कुर्सी पर बैठ गयी, तो वह बोली, ''मंगला! कमल क्या कह रहा था?''

''माताजी! भैया कह रहे थे कि वह दूसरा विवाह करना चाहते हैं और इस कार्य के लिए उन्होंने मुझे उपयुक्त समझा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुमने क्या कहा है ?"

"मैंने यह कहा कि उनको आपसे या मां से बात करनी चाहिए। इसी समय आप आ गयी थीं और वह इसका उत्तर नहीं दे सके।"

"मैं यह विवाह पसन्द नहीं करती। शोभा में कोई दोष नहीं है और मैं कमल को तुम्हारे योग्य नहीं समझती।"

"परन्तु माताजी ! मैं तो एक अन्य बात पर विचार कर रही हूं।"

"क्या ?"

"यही कि मैं विवाह न करूं, तो क्या करूं ? जीवन कैसे चलाऊंगी ?"

"परन्तु विवाह क्यों नहीं करोगी ?"

मंगला ने एक क्षण शकुन्तला के मुंह पर देखा और उसे मौन देखकर कह दिया, "मुझे इससे अधिक कल्याणकारी कार्य करने को दिखाई दे रहा है। मेरी उस ओर अत्यधिक रुचि है।"

"परन्तु तुम दोनों कार्यों में तुलना कैसे कर रही हो ? जब तक दोनों का अनुभव न हो, तब तक उसमें कौन-सा अच्छा और कौन-सा बुरा है, तुम कैसे जान सकती हो ?"

इस प्रश्न पर मंगला भौंचक रह गयी। एकाएक उसके मन में एक विचार आया और उसने कह दिया, "मुझे दोनों कार्यों का ज्ञान नहीं है। न तो विवाहित जीवन का और न ही उस जीवन का, जिसे मैं अधिक कल्याणमय समझ रही हूं। इस पर भी दोनों के विषय में दूसरों के अनुभवों को सुनकर और विचार कर कह रही हूं।"

"मैं तुम्हारी बात समझी नहीं।" सदारानी ने कह दिया।

मंगला ने साहस कर कह दिया, "माताजी ! एक मार्ग है त्याग, तपस्या और ज्ञान का तथा दूसरा मार्ग है भोग-विलास का। दोनों के बारे में पुस्तकों में लिखा पढ़ती हूं और उससे ही अपना मार्ग निर्माण कर रही हूं। मुझे ज्ञान का मार्ग अधिक हितकर समझ आ रहा है। ज्ञान का मार्ग ऋषियों ने बताया है। मैं शकुन्तला बहिन की सहायता से आजकल एक पुस्तक पढ़ रही हूं और उसमें लिखा है कि धन के मोह में फंसे हुए लोग अविचारशीलता का जीवन व्यतीत करते हुए पुनः-पुनः प्राणी-जीवन में प्रवेश करते हैं और ऊंची-नीची योनियों में सुख-दुःख भोगते रहते हैं। मैं इस चक्र से निकलना चाहती हूं।"

"तो तुम्हें धन का मोह नहीं है ?"

"धन तो सुख-भोग का प्रतीक है। अतः मैं इससे बचकर रहना चाहती हूं। विवाहित जीवन भी एक प्रकार से सुख का प्रतीक है। मैं इससे भी बचकर रहना चाहती हूं।"

"परन्तु तुम खाती-पीती तो हो।"

"इसके बिना तो जीवन ही समाप्त हो जायेगा। तब तो किसी मार्ग का अवलम्बन नहीं हो सकेगा। यह तो आगे बढ़ने का साधन है।"

"ठीक है, परन्तु मैं तो यह कह रही हूं कि विवाह भी उस आधार-भूत जीवन को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थित रखने के लिए आवश्यक है। यह यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने में एक साधन है। जब तक तुम्हें अच्छे या बुरे का ज्ञान प्राप्त न हो, तब तक ज्ञान को सम्पूर्ण कैसे कहा जा सकता है? इसीलिए तो सामान्य मनुष्य के लिए गृहस्थ-जीवन के उपरान्त ही संन्यास, अर्थात् त्याग के जीवन के लिए कहा गया है।''

''पर माताजी! मैं अपने को सामान्य प्राणियों से ऊपर समझती हूं। इसलिए मैं उनके मार्ग को छोड़कर 'शार्ट-कट', अर्थात् छोटे मार्ग को पकड़ रही हूं।''

''मैं समझती हूं कि तुम भूल कर रही हो। इस पर भी हम, मेरा मतलब है कि मैं, तुम्हारी मां और लालाजी तुम्हें विचार करने का समय देना चाहते हैं। यही मैं शकुन्तला को कहना चाहती हूं। लालाजी का कहना है कि यह धन, जो घटनावश हमको मिला है और तुम घटनावश जिसका भोग कर रही हो, उसका लाभ यही है कि तुम अच्छे से अच्छा वर प्राप्त कर सको। यही इसका मंगलमय प्रभाव है। इसी कारण वह इसे सर्वमंगला कहते हैं।''

इतना कहकर सदारानी उठ खड़ी हुई और बोली, ''मैं अब जा रही हूं। तुम विचारकर अपने विचार अपनी मां को बता देना। यदि तुम्हें हमारा प्रस्ताव स्वीकार हुआ, तो शेष कार्य हम कर देंगे।''

सदारानी गयी, तो शकुन्तला ने मंगला से पूछ लिया, ''तो तुम अपनी मां को अपने विचार बताने जा रही हो अथवा हम अपना ज्ञानवर्धन का कार्य आरम्भ करें?''

मंगला ने अपनी मां की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा, तो सुखिया उसका आशय समझती हुई बोली, ''तुम्हारे निश्चय करने के लिए अभी समय है। सूचना का समय निश्चय करना तुम्हारे अधीन है।''

इतना कहकर सुखिया भी उठकर चल दी। दोनों स्त्रियों के जाते ही दोनों लड़कियां परेशानी अनुभव करती हुई एक-दूसरे का मुंह देखने लगीं! शकुन्तला ने कुछ विचार कर पूछ लिया, ''क्या समझी हो मंगला?''

''मैं यहां आने से पूर्व माताजी से बात करने के लिए उनके कमरे में गयी थी। वहां भैया बदरीप्रसाद माताजी से वार्तालाप कर रहे थे। मैंने उन दोनों को देखकर वहां ठहरना उचित नहीं समझा। मैं चली आयी। उन दोनों ने मुझसे न तो वहां आने का प्रयोजन पूछा और न ही मुझे वापस आने से रोका। इसलिए मुझे सन्देह है कि भैया मां से मेरे विषय में ही कुछ बात कर रहे थे।''

इस पर शकुन्तला ने कहा, ''मुझे लगता है कि भैया की अपनी पत्नी नोरा से अनबन हो रही है।''

''परन्तु इसका मां से क्या सम्बन्ध हो सकता है?''

''मां की लड़की से तो हो सकता है। वही जो शोभा भाभी से नाराज़ होने पर, कमल भैया का है।''

''तो वह भी मुझसे विवाह करना चाहते हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे यही समझ में आया है। आज दिन-भर नोरा भाभी के दर्शन नहीं हुए। सम्भव है कि वह भी शोभा कि भांति नाराज़ होकर अपने कमरे में रूठी बैठी हों।"

"तो पता करना चाहिए।"

"मैं समझती हूं कि वहां जाकर पता करना ठीक नहीं होगा। रात को भोजन के समय पता करेंगे।"

रात के भोजन का समय हुआ, तो दोनों खाने के कमरे में जा बैठीं। जब से सुखिया कोठी के भीतर आकर रहने लगी थी, वह भोजन परोसने का कार्य किया करती थी। समय से पूर्व ही वह मेज़ पर प्लेटें लगा दिया करती थी। आज लड़कियां सबसे पहले आयीं और वहां बैठकर माताजी तथा घर के अन्य प्राणियों की प्रतीक्षा करने लगीं।

जुगलकिशोर और सदारानी पन्द्रह मिनट देर से आये। नोरा साथ में थी। बदरी साथ में नहीं आया था। शकुन्तला ने पूछ लिया, "माताजी! भैया नहीं आये?"

"आ रहे हैं।"

"और नोरा भाभी का मुंह उतरा हुआ क्यों है?"

"ठीक हो जायेगा। यह विवाहित जीवन के कटु फल खाने के कारण हैं।"

"इसीलिए तो मैं पूछ रही हूं कि हमें भी वही कटु फल खाने को क्यों कहा जाता है?"

"यह तुम्हारी भाभी तुम्हें बतायेगी।"

इस समय बदरीप्रसाद आया और लालाजी ने बात विवाह और पति-पत्नी विषय से बदलकर बदरीप्रसाद से पूछ लिया, "मैं जिस प्रयोजन से तुम्हें ढूंढ़ता हुआ तुम्हारे कमरे में पहुंचा था, वह हो ही नहीं सका और वहां दूसरा ही विवाद समझ में आया। मैं यह जानना चाहता था कि तुम मेरे व्यवसाय में सहायक बनना चाहते हो अथवा नहीं? तुम्हारी अनुपस्थिति में शकुन्तला मेरे कार्यालय की देख-रेख कर रही है। मैं ऐसा नहीं चाहता, परन्तु कार्यालय का काम मैं किसी विश्वस्त व्यक्ति के हाथ में ही देना चाहता हूं।"

"पिताजी!" बदरीप्रसाद ने तुरन्त उत्तर में कहा, "मैं विलायत पढ़ने और बैरिस्टर बनने के लिए गया था, न कि ठेकेदार बनने के लिए। मैं राजनीति में आगे बढ़कर भाग लेना चाहता हूं। मैं यत्न कर रहा हूं कि आगामी वर्ष निर्वाचनों में लोकसभा के लिए प्रत्याशी बनूं।"

"मैं समझता था कि तुम वहां रहकर इतना तो सीख आये होगे कि सक्रिय राजनीति से व्यापार अधिक ठीक होगा। संसद सदस्य बनने के लिए तुम्हें धन की आवश्यकता पड़ेगी। वह कहां से आयेगा?"

"आप देंगे।"

"मैंने तुम्हें पढ़ने के लिए धन दिया था। मैं आशा कर रहा था कि तुम बैरिस्टर बनकर मेरे व्यवसाय को चलाओगे और इसमें उन्नति करोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक बैरिस्टर को इसमें लगा देना, तो बैलगाड़ी के आगे घोड़े को लगा देने के समान है। बैलगाड़ी घोड़े के साथ नहीं भाग सकेगी।"

"लोकसभा तो अनपढ़ लोगों के लिए है। उसमें प्रत्याशी के लिए किसी प्रकार की योग्यता की शर्त नहीं है। मैं समझता हूं कि इसमें प्राय: कम शिक्षित लोग ही जाया करेंगे।"

"यदि मैं उन कम शिक्षितों में चला गया, तो मिनिस्टर बन जाऊंगा और तब पौ-बारह हैं। मेरा पढ़ा-लिखा काम आने लगेगा। साथ ही एक झटके में लखपति बन जाऊंगा।"

जुगलकिशोर मुंह देखता रह गया। शकुन्तला ने बात को समझते हुए पूछ लिया, "भैया! यही पढ़ाया जाता है 'लॉ' की श्रेणी में?"

"नहीं! वहां यह सब नहीं पढ़ाया जाता, परन्तु वहां पार्लियामेंट में नित्य यही कुछ होता है। वह देखकर मैं ज्ञानी हो आया हूं।"

"तो यहां भारत में भी यही बात होगी?"

"यह प्रजातन्त्र में आवश्यक है। इसके बिना प्रजातन्त्र चल ही नहीं सकता।"

सब बदरीप्रसाद का मुंह देखते रह गये। बदरीप्रसाद ने बात आगे चला दी। उसने कहा, "पिताजी! मैं चाहता हूं कि शकुन्तला का विवाह कर दिया जाये और इसके घरवाले को आप अपने व्यवसाय में सम्मिलित कर लें।"

"मैं तो तुम पर बहुत आशाएं लगाये बैठा था।"

"पिताजी! जाने से पहले ही मैंने आपको अपना विचार बता दिया था। मेरी रुचि राजनीति में है।"

इस पर सदारानी ने कह दिया, "शकुन्तला के घरवाले की प्रतीक्षा करने की क्या आवश्यकता है। नोरा को ही काम सिखा दीजिये। यह अधिक कुशल सिद्ध होगी।"

"क्यों नोरा?" जुगलकिशोर ने पूछ लिया, "तुम्हारा क्या विचार है?"

"मेरी रुचि व्यापार में नहीं है। इस पर भी, यदि आप कहेंगे, तो मैं कुछ दिन काम करके देखना चाहूंगी। यदि रुचि उत्पन्न हो गयी, तो मैं काम कर भी सकती हूं।"

"तब तो तुम शकुन्तला के साथ मिलकर काम करो। इस प्रकार जब शकुन्तला का विवाह होगा, तो तुम काम संभालने योग्य हो जाओगी।"

"मेरे बेबी के लिए कोई आया रखनी पड़ेगी।"

"ठीक है। उसका प्रबन्ध हो जायेगा।" जुगलकिशोर ने कह दिया।

एकाएक सेठजी ने बात पुन: व्यवसाय के विषय पर मोड़ दी। उन्होंने कहा, "मैं समझता हूं कि इस संसार में लक्ष्मी की सहायता के बिना कुछ भी काम हो नहीं सकता और लक्ष्मी हो, तो कोई भी काम ऐसा नहीं, जो न किया जा सके। इसीलिए मैं लक्ष्मी को सर्वमंगला कहता हूं।"

"मैं आपके इस कथन से सहमत नहीं हूं। शायद आप पुराने ज़माने की बात कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं, परन्तु आज इससे भी ऊपर एक बात का पता किया जा चुका है। वह है राजनीति। इससे तो निर्धन-से-निर्धन व्यक्ति भी धनवान् बनकर समस्त मंगलकार्य कर सकता है। आज यदि कुछ सर्वमंगला है, तो वह राजनीति ही है।''

''भैया का अभिप्राय है—राज्यसत्ता।'' शकुन्तला ने बदरीप्रसाद के कहने का अर्थ समझाते हुए कहा।

बदरीप्रसाद ने शकुन्तला की बात को स्वीकार करते हुए कहा,'' हां! है तो यही बात, परन्तु इसमें एक बात समझने की है। पुराने ज़माने में राज्यसत्ता बलवानों के हाथ में आ सकती थी, तदनन्तर राज्यसत्ता आनुवंशिक हो गयी। राजा का लड़का राजा होने लगा और अब पूर्वोक्त दोनों उपायों को रद्द कर दिया गया है और उसके स्थान पर राजनीति के ज्ञाता और इसमें कुशल व्यक्ति को राजगद्दी मिलने लगी है। यह कोई भी व्यक्ति सीख सकता है।''

''और भैया सीख आये हैं?''शकुन्तला ने ही बात की।

''हां। यद्यपि मैं अभी इस कला में धुरन्धर विद्वान् नहीं हुआ। इस पर भी आशा करता हूं कि अपने देश के बड़े-बड़े राजनीतिक अखाड़े के पहलवानों को मात दे सकूंगा और उनको क्षेत्र से बाहर कर सकूंगा।''

:16:

सेठ जुगलकिशोर और सदारानी बदरीप्रसाद के कमरे में उसको व्यवसाय में योगदान देने की प्रेरणा देने गये थे, परन्तु वहां पति-पत्नी का झगड़ा देखकर चकित रह गये।

बदरीप्रसाद पत्नी से कह रहा था,''यदि तुम इतनी ईर्ष्यालु प्रकृति की हो, तो तुम इस घर में नहीं रह सकोगी।''

''मैंने ईर्ष्यावश कुछ नहीं कहा।'' नोरा ने उत्तर दिया था,''मैं तो एक पत्नी के स्वाभाविक अधिकारों की बात कर रही थी। विवाह के समय हमने यह वचन दिया था कि हम मरते दम तक एक-दूसरे के प्रति निष्ठावान रहेंगे और आप भारत की भूमि पर क़दम रखते ही बदलने लगे हैं। आज आपने मुझसे कहा है कि लड़के के जन्म के उपरान्त मैं नितान्त बदसूरत हो गयी हूं।''

''मैंने एक वस्तुस्थिति का वर्णन किया है।''

''परन्तु इसमें भी तो कुछ उद्देश्य हो सकता है।''

जुगलकिशोर और सदारानी दोनों पुत्र और पुत्रवधू में हो रहे वार्तालाप को सुन रहे थे। वे जब आये, तो दोनों युक्ति-प्रतियुक्ति में लीन देख नहीं रहे थे कि उनके कमरे में कोई आया है। पहले बदरीप्रसाद की ही दृष्टि कमरे के द्वार की ओर गयी, तो उसने नोरा को कह दिया,''माताजी और पिताजी आये हैं।''

नोरा—जिसकी पीठ द्वार की ओर थी—घूमकर खड़ी हो गयी और प्रश्न-भरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टि से अपने सास-श्वसुर की ओर देखने लगी।

जुगलकिशोर ने कमरे के द्वार से आगे बढ़कर और दोनों के समीप आकर कहा, "क्या हो रहा है बदरी ?"

"पिताजी ! इसे तनिक भारतीय गतिविधि से अवगत करा रहा था।"

इस पर नोरा ने पति से कही जाने वाली भारतीय गतिविधि को बता दिया। उसने कहा, "आपके लड़के कह रहे हैं कि एक से अधिक विवाह करना भारतीय जीवन-विधि है। एक बात यह और बता रहे हैं कि यहां का रिवाज है कि पति कभी-कभी पत्नी की पिटाई भी करे। आज इन्होंने इस गतिविधि का अनुभव भी करा दिया है।"

जुगलकिशोर और सदारानी के आने के समय बदरीप्रसाद और नोरा खड़े हो गये थे और अभी तक चारों खड़े थे। समीप ही खटोले पर बेबी सो रहा था। सदारानी ने कुरसी को लालाजी के आगे खिसकाकर उन्हें बैठने का संकेत कर दिया और स्वयं एक अन्य कुरसी पर बैठ गयी। इस पर बदरीप्रसाद ने भी एक कुरसी ली और बैठते हुए कहा, "नोरा, बैठ जाओ।" उसने पलंग की ओर संकेत कर दिया।

नोरा पलंग पर बैठ गयी और बोली,"इन्होंने घर में रहने वाली एक लड़की से विवाह करने की इच्छा व्यक्त की, तो मैंने इनको मना किया और इन्होंने एक चपत मेरे मुंह पर लगाते हुए कहा है, यह हिन्दुस्तानी तरीक़ा है पत्नी से बात मनवाने का। मैं इसका अंगरेजी ढंग से उत्तर देना चाहती थी, परन्तु दे नहीं सकी। यह मुझसे अधिक बलवान् हैं। इसलिए मैं स्त्रियों के स्वभावानुसार इनको बातों से समझाने लगी थी। अभी यह समझाया ही जा रहा था कि आप आ गये हैं।"

"घर में दो लड़कियां हैं।" सेठजी ने सतर्क हो पूछ लिया, "तुम किसके विषय में कह रही हो ?"

"वही जिसका रंग गोरा है और आंखें भूरी हैं।"

"परन्तु उससे इसका विवाह मैंने स्वीकार नहीं किया था। वह एक अकिंचन की लड़की है।"

नोरा ने मुसकराते हुए कहा, "क्या यह सब इन्होंने बताया है ? यह तो कहते हैं कि अब वह सज्ञान है और जिससे चाहे विवाह कर सकती है। यह भी बता रहे थे कि इन्होंने लड़की की मां से भी बात कर ली है।"

इस पर लालाजी ने पूछ लिया, "तुम दोनों का विवाह इंग्लैण्ड में रजिस्टर्ड हुआ है अथवा नहीं ?"

उत्तर नोरा ने दिया, "हां। हमने मैजिस्ट्रेट के सामने विवाह रजिस्टर्ड कराया है।"

"पिताजी ! मैं उस समय होश-हवास में नहीं था।"

"क्या तुमने शराब पी हुई थी ?"

"उससे भी तीव्र नशे की वस्तु। पिताजी ! औरत का नशा बहुत तीव्र होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''स्वेच्छा से पी थी अथवा किसी ने बलपूर्वक पिलायी थी ?''

''यह तो स्मरण ही नहीं रहा कि उस समय क्या हुआ था। मैं अपने आपे में नहीं था।''

''और यह मदात्यय उतरा कब है ?''

''लड़का हो जाने के उपरान्त और पूरे तौर पर तो दिल्ली पहुंचने पर।''

''मैं समझता हूं कि मंगला को देखकर।''

''हां, पिताजी। मुझे भी कुछ ऐसा ही प्रतीत हो रहा है।''

''इसका अर्थ है कि पहली शराब का नशा समय व्यतीत होने के साथ उतर रहा था कि तुमने दूसरी शराब पीनी आरम्भ कर दी है।''

''नहीं, पिताजी! पीनी आरम्भ नहीं की। उसकी तो गन्ध से ही नशा आने लगा है।''

''जब उससे भी एक पुत्र उत्पन्न कर लोगे, तो उसका नशा भी उतर जायेगा। फिर किसी अन्य की खोज में चल पड़ोगे।''

''कह नहीं सकता। इस समय तो इतना ही कह सकता हूं कि कदाचित् यह नशा जीवन-भर चलेगा।''

सदारानी पिता-पुत्र के वार्तालाप सुन रही थी। अब उससे नहीं रहा गया। उसने कह दिया, ''ये सब अनर्गल बातें हैं। न तो औरत शराब है और न ही इसके प्रयोग अथवा देखने मात्र से लोग पागल हो जाते हैं। यह एक रोग है, जिसमें तुम फंस गये हो। इसकी चिकित्सा यह नहीं, जो तुम कर रहे हो। इसकी चिकित्सा तुम्हारे-जैसे एक रोगी की मैंने आज ही की है और उसी बीमारी के दूसरे रोगी की चिकित्सा भी मैं कर दूंगी।''

अब जुगलकिशोर ने पूछ लिया, ''किसकी क्या चिकित्सा की है ?''

''कमल की। इसी मद्य के दर्शन मात्र से कमल में भी मदात्यय रोग उत्पन्न हो रहा दिखाई दिया था। मैंने उसे घर से निकाल दिया है और उसे यहां आने से मना कर दिया है।''

''क्या वह इस रोग से निवृत्त हो गया है ?''

''ओषधि पिलायी है। लक्षण तो प्रतीत हो रहे हैं कि वह स्वस्थ-चित्त होकर ही घर पहुंचेगा, परन्तु उसकी परिचर्या करने वालों पर बहुत कुछ निर्भर करता है। परिचर्या और पथ्य-कुपथ्य एक पत्र में लिखकर उसकी देख-रेख करने वालों को भेज दिया है। यदि उन्होंने उस पत्र पर आचरण किया, तो बहुत आशा है कि ओषधि का उचित प्रभाव होगा।''

''और बदरी! यह भी समझ लो कि तुम्हारी अवस्था में तो चिकित्सक और परिचारक एक ही है। यहां पथ्य ही मिल सकेगा। इसलिए तुम्हारा रोग-मुक्त हो सकना अधिक सम्भव है।''

''तो मुझे भी घर से निकाल दिया जायेगा ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''और तुम्हारा पाकेट-ख़र्च भी बन्द कर दिया जायेगा।''

''इससे क्या होगा ?''

''होगा यह कि तुम्हारा राजनीति में प्रवेश असम्भव हो जायेगा। तब तुम दूसरी प्रकार के नशों से भी वञ्चित हो जाओगे और फिर स्वस्थ-चित्त होकर पिता के व्यवसाय में भाग ले सकोगे।''

पिताजी की इस चेतावनी पर बदरीप्रसाद मौन होकर विचार करने लगा। इस पर जुगलकिशोर ने कह दिया, ''मैं समझता हूं कि ओषधि की एक मात्रा पिला दी गयी है। शेष चिकित्सा और उपचार समय पर किया जायेगा। अब भोजन का समय हो गया है। चलना चाहिए।''

सदारानी उठी, तो सब उठकर खाने के कमरे की ओर चल दिये। भोजन करते हुए व्यवसाय पर हो रहे वार्तालाप में पुनः राजनीति में कुशलता और धनवान् होने में तुलना होने लगी थी।

जुगलकिशोर अपने अनुभव से समझता था कि राजनीतिक विद्वान् भी धनवानों की इच्छा के विपरीत नहीं जा सकते। इसके विपरीत बदरीप्रसाद यह समझा था कि धन की निर्माता तो राज्यसत्ता है और सत्ता प्राप्त करने के लिए राजनीति का ज्ञान होना चाहिए। मंगलमय मार्ग यही है।

बदरीप्रसाद के इंग्लैण्ड के प्रवास-काल में एक आम निर्वाचन हुए थे और उप-चुनाव तो कई हुए थे। वह बैरिस्टर बनने के साथ प्रजातन्त्र की गतिविधि का ज्ञान प्राप्त करने में लीन था। इसलिए वह लगभग सब निर्वाचन क्षेत्रों में जाकर, प्रत्याशियों के कार्यों का निरीक्षण करता था। उस निरीक्षण से वह एक धारणा बनाकर आया था और उसी के आधार पर कह रहा था कि प्रत्येक काल में राज्यसत्ता ही धन, सामर्थ्य और ऐश्वर्य का स्रोत रही है। इसकी शक्ति वर्तमान विधि-विधान से बढ़ी ही है।

जुगलकिशोर इससे उलट समझ रहा था। इस पर भी वह पुत्र के कथन का उत्तर नहीं दे सका।

बात नोरा ने बदल दी। उसने पूछ लिया, ''शकुन्तला बहिन! मैं कार्यालय का काम सीखने के लिए कल किस समय आऊं ?''

शकुन्तला ने अपना कार्यक्रम बता दिया। उसने कहा, ''मैं प्रातःकाल के अल्पाहार से पहले कार्यालय में एक घण्टा काम करती हूं। उस समय कर्मचारियों से काम करवाने वाले जमादार आते हैं और अगले दिन के लिए 'मैटीरियल' की मांग उपस्थित कर जाते हैं। मैं उसे नोट कर लेती हूं और पहले दिन की मांगों की सप्लाई के विषय में उन्हें अवगत करा देती हूं।

''यह कार्य एक घण्टा-भर करने के पश्चात् मैं अल्पाहार के लिए जाती हूं। तदनन्तर पिताजी कार्यालय में पहुंच जाते हैं, तो उनको जमादारों की मांगों के विषय में बताकर उनकी आज्ञाएं नोट कर लेती हूं। वह आज्ञाएं कार्यान्वित कराने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिन्न-भिन्न सरकारी और ग़ैर-सरकारी विभागों से टेलीफ़ोन से अथवा पत्र लिखकर प्रबन्ध करना होता है।

"मेरे कर्तव्यों में लेखाकार का कार्य भी है और उस कार्य को देखने के लिए बारह बजे से एक बजे का समय रहता है। आय-व्यय का वृत्तान्त देखती हूं और कोश का निरीक्षण करती हूं। उस समय मध्याह्न के भोजन का समय हो जाता है। उसके बाद मेरा काम सायंकाल चार से पांच बजे का होता है। प्रातःकाल जो कुछ ख़रीद मैंने टेलीफ़ोन तथा पत्र लिखकर की होती है, उसकी जांच करती हूं कि कितने पर अमल हुआ है और कितने पर नहीं हुआ। जो रह जाता है, उसके विषय में अगले दिन तामील करने के लिए कहकर मेरा काम समाप्त हो जाता है। सब काम 'रुटीन' हो गया है। इसलिए किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होता।

"आरम्भ में पिताजी मेरे काम की देख-भाल किया करते थे और उसमें भूलें निकाला करते थे। अब उनको विश्वास हो गया लगता है कि मैं कार्य की देख-भाल उतनी ही कुशलता से कर सकती हूं, जितनी किसी मनुष्य से आशा की जा सकती है।"

"परन्तु यह तो एक नीरस कार्य है।"

"इसमें रस यही है कि मैं अपने पालन-पोषण करने वाले की कृपा और स्नेह का कुछ प्रतिकार दे रही हूं। इन पांच घण्टों के कार्य के प्रतिकार में मुझे भोजन, वस्त्र, निवास तथा स्नेह और सुरक्षा मिल रही है। मैं इससे सन्तुष्ट हूं।"

नोरा विचार-मग्न बैठी रही। भोजन से उठते समय सुखिया ने अपनी लड़की से कह दिया, "आज तुम मेरे कमरे में सोना। मुझे तुमसे कुछ काम है।"

मंगला चुप रही। इसका अर्थ यही था कि वह सोने के लिए मां के कमरे में जायेगी।

:17 :

सुखिया अपने कार्य से अवकाश प्राप्त कर अपने कमरे में पहुंची, तो मंगला वहां पहले ही उपस्थित थी। सुखिया ने कमरे में पहुंचते ही पूछा, "शकुन्तला को क्या कहकर आयी हो?"

"यही कि मां मुझसे किसी आवश्यक विषय पर बात करना चाहती हैं। उसने इस पर न तो कुछ कहा है और न ही पूछा है।"

"हां, तो सोने से पहले दूध लोगी?"

"वह मैं ले आयी हूं।"

"तो बैठो!" दोनों एक ही पलंग पर बैठ गयीं। मां-बेटी को पहले भी एक ही बिस्तर पर सोने का अभ्यास था। पलंग पर्याप्त बड़ा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां ने कहा, ''जब तुम सायंकाल यहां आयी थीं, तो बदरी मुझसे बातचीत कर रहा था। वह वार्तालाप मैं तुम्हारे सामने करना नहीं चाहती थी। इसलिए जब तुम लौटीं, तो तुम्हें ठहरने के लिए नहीं कहा था। अब बताओ, तुम किसलिए आयी थीं ?''

''मैं यही कहना चाहती थी कि जब मुझे विवाह करना ही नहीं, तो किसी के मन में व्यर्थ आशाएं उत्पन्न करना उचित नहीं। इसलिए मैं तुमसे सम्मति कर माताजी से कहना चाहती हूं कि मेरे विवाह के विषय में कहीं भी चर्चा न करें। परन्तु घर में दो दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। एक तो कमल भैया की। उसे मेरे कारण ही घर से निकाला गया है और दूसरी बदरी भैया की। उससे भी किसी प्रकार की डांट-डपट हुई है।''

''हां, बहिनजी ने बताया है कि बदरी भैया को भी घर से निकाल देने की धमकी दी गयी है।''

''इसलिए अब मैं इस दिशा में विचार कर रही हूं कि मुझे ही इस घर को छोड़ देना चाहिए। न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी। न मैं यहां रहूंगी और न इस घर में विवाद रहेगा।''

''घर छोड़कर जाओगी कहां ?''

''यह मैं अभी कैसे बता सकती हूं ?''

''घर छोड़ने के दो उपाय हैं। एक तो यह कि कहीं विवाह कर लो। तब स्वाभाविक रूप से घर छूट जायेगा। दूसरा यह कि किसी स्थान पर नौकरी ढूंढ़ो। इसमें कठिनाई यह है कि आज इस देश में बिना विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त किये कोई भी नौकरी नहीं मिल सकती। प्राइवेट 'ट्यूशन' भी बिना बी. ए. अथवा ट्रेनिंग का कोर्स किये नहीं मिल सकेगी। विवाह का झंझट तो तब भी रहेगा, जब इस घर को छोड़ दोगी। जहां गुड़ की डली रखी जायेगी, वहां मक्खियां पहुंच ही जायेंगी।''

''मैं यह विचार कर रही हूं कि मुझे यह शरीर कुछ अधिक लुभायमान मिला है। इस पर मक्खियां भिनभिनाने लगी हैं। इसलिए इसका ही त्याग कर दूं।''

त्याग का अभिप्राय समझकर सुखिया कांप उठी। उसने तुरन्त कह दिया, ''यह रोग की ओषधि नहीं है। यह सुन्दर शरीर पूर्वजन्म के श्रेष्ठ कर्मों से मिला है। विरली लड़कियां ही इतना आकर्षक शरीर पाती हैं, परन्तु उन कर्मों का फल यह तो नहीं होना चाहिए कि इसे नष्ट कर दिया जाये। पहले इसका उद्देश्य पता करना चाहिए और उसके अनुरूप ही आचरण करना चाहिए।

''मैंने अभी-अभी मालकिन से कहा है कि प्रस्तावित युवक को तुम्हारे सम्पर्क में लाया जाये। शायद वह तुम्हारे मन में विवाह की इच्छा उत्पन कर सके।''

''मां ! मैं विवाह को जीवन के उद्देश्य तक पहुंचने में बाधक समझती हूं। इसका अर्थ यह है कि यह शरीर मेरे मार्ग में बाधक है। इसलिए मैं इसको मार्ग से हटा देना चाहती हूं।''

''यही तो कह रही हूं।'' मां ने गम्भीर होकर कहा, ''जिस उद्देश्य से भाग्य ने यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शरीर दिया है, उसकी पूर्ति तो उसके प्रयोग से ही होगी। तुम इस शरीर का प्रयोग एक ढंग से करना चाहती हो और अन्य लोग इसका प्रयोग दूसरे ढंग से करना चाहते हैं। दोनों में समझौता कर लिया जाये।

"उस समझौते के लिए प्रस्तावित वर को तुम्हारे सम्पर्क में लाया जाना चाहिए और तुम उससे समझौता कर लो। दोनों में मध्य का मार्ग ढूंढ़ लो। यदि एक से समझौता न हो सके, तो किसी दूसरे से सम्पर्क बना लिया जायेगा। देखो, बेटी!" सुखिया ने प्यार से लड़की के मुंह पर देखते हुए कहा, "यह संसार समझौते से चल रहा है। सब मनुष्य अपनी-अपनी मति रखते हैं। यदि हम अपने मत पर ही हठपूर्वक अड़े रहें, तो प्रत्येक नगर, गांव, महल्ले और घर-घर में महाभारत आरम्भ हो जाये। समाज में रहने और इसका संरक्षण प्राप्त करने के लिए दूसरों के साथ समझौता करना ठीक रहेगा।"

"तो फिर बदरी भैया से ही विवाह क्यों न कर लूं?"

"मैं तुम्हें मना नहीं करूंगी, परन्तु मैं उसे अब पसन्द नहीं कर सकती। आज से छह वर्ष पूर्व स्थिति दूसरी थी। उस समय मालकिन ने भी उससे तुम्हारे विवाह को आशीर्वाद देने का विचार व्यक्त किया था, परन्तु अब वह विवाहित है और विवाह में दिये अपने वचनों को भंग करने के लिए तैयार हो रहा है। वह अत्यन्त दुर्बलात्मा सिद्ध हुआ है। अब मैं उसे तुम्हारे लिए उपयुक्त पति नहीं मानती। उसका भरोसा नहीं कि वह तुमसे जीवन-भर भला व्यवहार करेगा।"

मां के मन में यह सम्भावना होने पर भी वह सन्तुष्ट थी। वह स्वयं भी कुछ इसी दिशा में विचार कर रही थी।

मंगला ने वस्त्र बदलने के लिए उठते हुए कहा, "मां! अब सोना चाहिए। मुझे प्रात: चार बजे उठना है, जिससे पांच बजे शकुन्तला बहिन से स्वाध्याय के लिए उसके कमरे में पहुंच सकूं।"

"तो अभी कुछ निर्णय नहीं कर सकीं?"

"मां! मेरे वार्तालाप समाप्त करने का अभिप्राय यह है कि मैंने आपकी सम्मति को ठीक समझ लिया है। अब आप उचित कार्यवाही कर सकती हैं।"

सुखिया इस वार्तालाप से सन्तुष्ट होकर सोने की तैयारी करने लगी। प्रात: जुगलकिशोर के घर का वातावरण बदला हुआ था। जब सुखिया सदारानी के कमरे में प्रात: की चाय लेकर गयी, तो नोरा और लालाजी वहां पहले ही पहुंचे हुए थे। सुखिया ठीक पांच बजे चाय लेकर कमरे में पहुंच जाया करती थी और इस समय तक तो वह स्नानादि से निवृत्त हो चुकी होती थी। सदारानी को वह ही जगाया करती थी और उसको चाय देकर तथा उसके लिए दिन-भर पहनने के वस्त्र ग़ुसलख़ाने में रखकर कमरे में रामायण का पाठ करने चली आया करती थी।

आज उसने द्वार खोलकर कमरे में झांककर देखा, तो नोरा और लालाजी को वहां देख, द्वार के पास खड़ी हो गयी। चाय का प्याला एक ट्रे में रखे हुए थी। सदारानी ने उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा, तो कहा, "सुखिया! तीन प्याले बनाकर ले आओ।"

सुखिया द्वार के पास से ही लौट गयी।

नोरा ने प्रातः चार बजे ही सदारानी का द्वार खटखटाया था। सदारानी का द्वार खुला रहता था। नोरा को इस बात का ज्ञान नहीं था। इस कारण वह द्वार खटखटा रही थी। द्वार का खटखटाना सुनकर सदारानी की नींद खुल गयी और उसने आवाज़ दी, "कौन है?"

द्वार के बाहर से आवाज़ आयी, "नोरा।"

"आ जाओ।" सदारानी ने उठकर पलंग पर बैठते हुए कहा। उसने पलंग के साथ लगे स्विच को दबाकर प्रकाश कर दिया था।

नोरा ने द्वार धकेला, तो खुल गया। सदारानी ने कहा, "आओ बेटी! आ जाओ। क्या बात है? इस समय किस काम से आयी हो?"

नोरा ने एक स्टूल को पलंग के समीप खींचकर उस पर बैठते हुए कहा, "मैं रात-भर सोयी नहीं। आपके सुपुत्र रात को खाना खाने के बाद जाते समय यह कहकर चल दिये कि अब वह इस घर में तब तक नहीं आयेंगे, जब तक मैं यहां हूं।"

सदारानी भौंचक पतोहू का मुख देखती रह गयी। कितनी ही देर तक वह मौन बैठी रही। फिर उसने पूछ लिया, "और तुम क्या चाहती हो?"

"मैं एक निर्धन विधुर की लड़की हूं। मेरे प्रेमी की मृत्यु युद्ध में हुई, तो मैं परेशानी अनुभव कर रही थी। जीवन एक रेस्त्रां में बेयरा का काम करने से चल रहा था। उन दिनों आपके सुपुत्र मिल गये। यह मुझसे प्रणय-निवेदन करने लगे। मैंने विवाह के लिए कहा, तो यह मान गये। इसका परिणाम आपका 'ग्रैण्ड सन' है। जब से यह भारत में आये हैं, वह आपके घर में रहने वाली गौर-वर्णीय लड़की को भी अपनी पत्नी बनाने का प्रस्ताव करने लगे हैं। मैं नहीं जानती कि उस लड़की ने क्या कहा है, परन्तु मुझे यह पसन्द नहीं। इसलिए मैं मना कर रही हूं। कल सायंकाल, जब आप और उनके पिताजी हमारे कमरे में आये थे, तो वह मुझे पीटने वाले थे। खाने के उपरान्त वह वहां से गये, तो मुझसे बोले, 'अब तुम्हारी नौकरी इस घर में लग गयी है। इस कारण तुम्हें मेरी आवश्यकता नहीं रही। मैं यहां से जा रहा हूं। तुम अपना काम चलाओ।' मैं अभी कुछ कहना ही चाहती थी कि वह चल दिये। अपने साथ केवल एक अटैचीकेस ही ले गये हैं।"

"उसमें क्या था?"

"उनकी चेकबुक और कुछ अन्य काग़ज़ थे। उनका पासपोर्ट भी उसमें था।"

"अब तुम क्या चाहती हो?"

"मैं क्या जानूं! मेरे पास तो इंग्लैण्ड जाने के लिए दाम भी नहीं हैं। वहां भी क्या कर सकती हूं, मैं नहीं जानती। साथ ही लड़का भी है। इसका क्या करूं? इसका भी तो ख़र्च वहन करना पड़ेगा।"

सदारानी ने आंख मूंदकर कुछ विचार किया और कहा, "अच्छा, ठहरो।" उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उठकर पलंग के साथ लगा घण्टी का बटन दबाया। नोरा समझी नहीं कि किसे बुलाने के लिए घण्टी बजायी गयी है। घण्टी बजाने के आधे मिनट में ही लालाजी कमरे में आ गये।

नोरा समझ गयी कि दोनों बेडरूम परस्पर सम्बन्धित हैं। सेठजी ने कमरे में प्रवेश करते ही पूछा, "नोरा बेटी! नींद नहीं आयी क्या ?"

"नहीं पापा। वह घर छोड़ गये हैं।"

"मुझे पता है। मुझे चौकीदार ने रात साढ़े दस बजे के लगभग बताया था कि छोटे बाबू गाड़ी लेकर चले गये हैं। मेरा विचार था कि यदि वह तुमसे झगड़ा करके गया है, तो तुम माताजी से बात करने आओगी, परन्तु जब तुम्हारे आने का कोई समाचार नहीं मिला, तो मैं यह समझकर सो गया कि वह तुम्हारी सम्मति से ही कहीं गया है।"

"पापा! मैं तो रात में ही आने वाली थी, परन्तु यह विचार कर कि आप और माताजी आराम कर रहे होंगे, आपकी नींद ख़राब न करने के विचार से डर रही थी।"

"अच्छा, तुम जाकर आराम करो। यहां इस कोठी में तो तुम हो ही। यहां खाने-पीने को भी पर्याप्त उपलब्ध है। मैं तुम्हें एक-दो दिन में बताऊंगा कि हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं।"

नोरा उठकर कमरे में जाने लगी थी कि सुखिया आ गयी। जब सदारानी ने कहा कि वह तीन प्याले चाय लाये, तो इसका अर्थ नोरा ने यह समझा कि उसे भी 'बेड टी' मिलेगी। अत: वह पुन: बैठ गयी।

: 18 :

नोरा तथा लालाजी को सदारानी के कमरे में देखकर सुखिया को यही समझ में आया कि बदरीप्रसाद ने किसी प्रकार का झगड़ा किया है और नोरा अपनी सास से शिकायत करने आयी है।

क्या घटना हुई है, जो इस गोष्ठी में बदरीप्रसाद नहीं है, इन्हीं विचारों में निमग्न वह रसोई में जाकर चाय बनाने लगी। चाय बनाकर ट्रे में रखकर वह ले गयी। प्याले पीने वालों के हाथ में देखकर नियमानुसार वह कमरे से निकल गयी। यह समय उसके रामायण के पाठ का था। उसने अपने कमरे में जाकर एक कोने में आसन बिछाया और अपनी पुस्तक अलमारी से निकालकर स्वरसहित पढ़ने लगी।

रामायण के पाठ में एक घण्टा व्यय कर वह नियामनुसार सदारानी से कुछ काम-धन्धा पूछने चली गयी।

इस समय सदारानी गीता का पाठ किया करती थी। आज भी वह अपने काम में लीन होने के लिए तैयार बैठी थी कि सुखिया आयी। उसने नित्य की भांति ही पूछा, "बहिनजी कुछ चाहिए ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हां, यहां बैठो।''

जब सुखिया सदारानी के आसन के समीप भूमि पर बैठी, तो सदारानी ने बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, ''आज प्रातःकाल नोरा ने मुझे जगाकर यह बताया है कि बदरी पत्नी को छोड़कर घर से भाग गया है। जब तुम आयी थीं, तो मैं इस नयी स्थिति पर नोरा और लालाजी के साथ विचार कर रही थी।

मैंने और लालाजी ने नोरा को आश्वासन दिया है कि वह कोठी में रह सकती है और अपने पति की प्रतीक्षा कर सकती है। वह इससे आश्वस्त प्रतीत होती है। उसके जाने के उपरान्त हमने मंगला के विषय में विचार किया था और इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि उसका विवाह हो ही जाना चाहिए।''

''बहिनजी।'' सुखिया ने कहा, ''आप उस युवक को घर पर आमन्त्रित कीजिये, जिससे दोनों एक-दूसरे को देख लें और अन्तिम निश्चय कर लें। मंगला विवाह न करने का हठ मन से निकाल चुकी है।''

''तब तो ठीक है। आज सायंकाल की चाय के समय यह प्रबन्ध हो जायेगा। वह लड़का इस समय केन्द्रीय सरकार के निर्माण विभाग में काम करता है। तीन सौ रुपये के लगभग वेतन पाता है। वैसे हम—मेरा अभिप्राय यह है कि लालाजी और मैं—भी उसके जीवन में उन्नति करने में सहायक होंगे।''

''ठीक है। रात मंगला मेरे कमरे में सोयी थी और मेरी उससे बात हुई है। वह मेरी और अपनी स्थिति को समझकर ही इस परिणाम पर पहुंची है कि उसे विवाह कर लेना चाहिए।''

सदारानी ने मंगला की बात सुनकर सन्तोष अनुभव करते हुए कहा, ''मेरे मन में यह लालसा थी कि मंगला इसी घर की रानी बने। यद्यपि लालाजी इस सम्बन्ध को कुछ अधिक कल्याण का सूचक नहीं समझते थे, तथापि यदि यह बात हो सकती, तो वह इसका विरोध नहीं करते। बदरी नालायक़ सिद्ध हुआ है। वासनाभिभूत होकर ही वह इस अंगरेज लड़की के साथ सम्बन्ध बना बैठा है, परन्तु मैं बदरी के इस सम्बन्ध को तोड़ने के पक्ष में नहीं हूं। मंगला का इस घर में रहना बदरी के मन में हलचल मचा रहा है। इसलिए मेरा और लालाजी का यह निश्चय है कि मंगला का विवाह शीघ्रातिशीघ्र हो जाना चाहिए।"

प्रातःकाल जब मंगला शकुन्तला के कमरे में गयी, तो उसने उसे बता दिया कि पिछली रात उसकी मां से क्या बातचीत हुई है। इस पर शकुन्तला ने हंसते हुए कहा, "तो तुम मान गयी हो ?"

"बहिनजी ! घर की भलाई के लिए यह ठीक ही प्रतीत हो रहा है कि मैं घर छोड़ जाऊं। यह घर छोड़कर पति के घर जाना ही मुझे ठीक प्रतीत हुआ है।"

शकुन्तला हंस पड़ी और बोली, "फिर मुझसे मिला भी करोगी अथवा नहीं ?"

"तो आप यह समझ रही हैं कि मैं किसी जेलख़ाने में भेजी जा रही हूं, जिसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दारोग़ा मेरे जेल से बाहर आने-जाने पर प्रतिबन्ध रखेगा।"

"सुन तो यही रखा है कि विवाहित जीवन जेलख़ाना है। यह नयी सृष्टि है।"

"तब तो जेल फांदकर स्वतन्त्रता प्राप्त करने का प्रयास करने योग्य है।"

"परन्तु जेल को तोड़कर भाग निकलने वाले बन्दियों पर गोली चलाने को उचित माना जाता है।"

"अर्थात् छोटी जेल से मुक्ति प्राप्त करने वालों को इस शरीररूपी बड़ी जेल से भी निकाल देने का यत्न किया जाता है।"

"हां, यह हो सकता है। इसलिए मैं समझती हूं कि तुम्हें इस नयी जेल से भागने का यत्न नहीं करना चाहिए।"

"मैं भागने की बात तो तब करूंगी, जब मुख्य फाटक से आने की स्वीकृति नहीं मिलेगी।"

"अच्छी बात है। देखें, तुम्हारे जेलर साहब क्या-क्या अध्यादेश जारी करते हैं।"

"अभी तो उनके दर्शन भी नहीं किये। मैं यत्न करूंगी कि वह महापुरुष घर को जेल न बनायें।"

"देखेंगे।"

इस वार्तालाप के उपरान्त स्वाध्याय आरम्भ हो गया और दिन-भर का नियमित काम चलने लगा। शकुन्तला आदि को बदरीप्रसाद के घर छोड़ जाने का पता प्रातःकाल अल्पाहार के समय लगा।

नोरा और बदरीप्रसाद दोनों अल्पाहार के लिए नहीं आये थे।

शकुन्तला ने मेज़ पर उनके स्थान ख़ाली देखकर माताजी से पूछा लिया, "भैया और भाभी नहीं आ रहे हैं क्या?"

"भैया घर पर नहीं हैं और नोरा रात को न सो सकने के कारण अभी जागी नहीं लगती।"

"भैया कहां गये हैं?"

उत्तर लालाजी ने दिया, "अपने व्यवसाय के विषय में प्रबन्ध कर रहा प्रतीत होता है।"

"तो दिल्ली में व्यवसाय नहीं करेंगे।"

"दिल्ली में अथवा दिल्ली के बाहर तो उसने बताया नहीं। हां, यह समझ आया है कि वह इस कोठी में अपना व्यवसाय करना नहीं चाहता।"

"तो एक नयी कोठी बनवायी जा सकती थी।"

"कुछ ऐसी ही योजना बनाने गया है।"

"किससे?"

"अपने पीर मुर्शद से।"

शकुन्तला को इस सूचना में कुछ सन्दिग्ध बात प्रतीत हुई, परन्तु उसने कुछ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक पूछने की आवश्यकता नहीं समझी। इस पर भी उसे नोरा से बात पता चल गयी।

इस घटना ने उसे विचार करने पर विवश कर दिया। अल्पाहार के उपरान्त उसे पुनः कार्यालय में जाना था। इसलिए इस विषय पर विचार करने के लिए समय नहीं था। कार्यालय में काम कुछ अधिक था। इसलिए उसे मध्याह्न के भोजनोपरान्त ही विचार करने का अवसर मिला। आराम करने के लिए कार्यालय से लगभग दो घण्टे का अवकाश मिल जाया करता था। मंगला इस समय शकुन्तला बहिन को आराम करने का अवसर देने के लिए अपनी मां के कमरे में चली जाया करती थी। वैसे शकुन्तला की अनुपस्थिति में वह उस कमरे का और उसके पुस्तकालय का प्रयोग किया करती थी।

कभी-कभी शकुन्तला उसे किसी विषय पर विचार-विनिमय करने के लिए अपने कमरे में रोक लिया करती थी। आज वह एकान्त में विचार करने और अपने भविष्य के विषय में निर्माण करने के लिए भोजनोपरान्त अपने कमरे में आयी, तो मंगला वहां से मां के कमरे में चल दी।

वह पलंग पर लेटी-लेटी विचार कर रही थी कि क्या लड़कियां माता-पिता के घर में जीवन-भर नहीं रह सकतीं? क्या सब पुरुष वैसे ही पशु होते हैं, जैसे कमल और बदरीप्रसाद सिद्ध हुए हैं? वह यह भी विचार कर रही थी कि लड़कों की भांति लड़कियां स्वतन्त्रता से व्यवसाय क्यों नहीं कर सकतीं और बच्चे उत्पन्न करना उनके लिए अनिवार्य क्यों है?

वह अभी विचार कर ही रही थी और इन विषयों पर मन में उभर रहे विचार और उद्‌गार का विश्लेषण ही कर रही थी कि सदारानी उसके कमरे में आयी और लड़की के पलंग के समीप खड़ी होकर, उसे छत की ओर देखते हुए लेटे देखकर पूछने लगी, "तो तुम सोयी नहीं हो?"

शकुन्तला को मां के कमरे में आने का पता नहीं चला था। जब सदारानी ने पलंग के समीप खड़े होकर शकुन्तला को जागते देखकर पुकारा, तो शकुन्तला का ध्यान भंग हुआ और वह उठकर बैठ गयी।

"आओ मां! क्या देख रही थीं?"

"यही कि तुम सो तो नहीं रहीं। मैं तुमसे एक बात कहने आयी हूं।"

शकुन्तला उसका मुंह देखती रही और सदारानी ने बात बता दी। उसने कहा, "आज सायंकाल दो मेहमान चाय पर आने वाले हैं। तुमको भी उस चाय-पार्टी में सम्मिलित होना चाहिए।"

"वे कौन हैं मां?"

"एक तो सरकारी निर्माण विभाग के मिस्टर शर्मा हैं और एक हमारे पड़ोस के लाला रघुनन्दनजी के लड़के मनोहरलाल हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उन्हें किसलिए बुलाया है ?"

"जिससे तुम दोनों लड़कियां उन्हें देख लो और फिर अपने भावी जीवन को स्थिर करने के विषय में निश्चय कर सको।"

"माताजी !" शकुन्तला ने पलंग से नीचे उतरकर कुरसी पर बैठते हुए पूछ लिया, "क्या यह एक अनिवार्य मार्ग है, जिस पर सब लड़कियों को चलना ही चाहिए ?"

"मुझे तो यह ईश्वरीय विधान प्रतीत हो रहा है।"

"उस दिन हमारे देश के महान् नेता हमारे प्रधानमन्त्री कह रहे थे कि स्त्रियों को अब जातीय अभ्युदय में सहयोग देना चाहिए। उन्होंने स्वराज्य-प्राप्ति में अपना महान् योगदान दिया है। अब स्वराज्य मिलने से उन्हें निर्माणात्मक काम करने के अवसर मिल गये हैं।"

"हां, यह तो ठीक ही है। स्वराज्य मिल जाने से जहां देश के नवयुवकों के लिए अनेक नये कार्यक्षेत्र खुल गये हैं, वहां स्त्रियों के लिए भी हैं, परन्तु इन नये अवसरों से जो कार्य हो रहे हैं, क्या वे विवाह के कार्य में बाधक हैं ?

"शकुन्तला ! तुम तो मुझसे अधिक शिक्षा प्राप्त युवती हो। यह बताओ कि तुम्हारी इच्छा पति की संगत के लिए होती है अथवा नहीं ?"

शकुन्तला इस विषय पर अपने मन के भावों और कामनाओं का विश्लेषण ही कर रही थी कि सदारानी ने स्वयं ही आगे बात चला दी। उसने कहा, "देखो, मैंअपनी बात कहती हूं। जब मैं आठ-दस वर्ष की थी, तब मैं भी विवाह की लालसा करती थी। यह इसलिए कि मैंने विवाह के समय लड़कियों को आभूषण व वस्त्र पहने देखा था और मैं भी वही सब पहनना चाहती थी। उसे पहनने से क्या होगा, मन के सन्तोष के अतिरिक्त इसका अन्य कोई लाभ समझ में नहीं आता था। एक दिन मैंने अपनी माताजी से पूछा, 'मां ! मेरा विवाह कब होगा ?'

"हम मां की सहेली की लड़की का विवाह देखकर आये थे। लड़की ज़रीदार कपड़ों और आभूषणों से लदी-फदी बहुत सुन्दर प्रतीत हुई थी। मैं वैसे ही कपड़े पहनने की लालसा करने लगी थी। मां ने मेरा प्रश्न सुनकर मुसकराते हुए मुझसे पूछा, 'किसलिए पूछ रही हो ?' मैंने बताया, 'मैं वैसे ही वस्त्र आभूषण पहनूंगी, जैसे मीना ने पहने हुए थे।' मां ने कह दिया, 'वह तो तुम बिना विवाह के भी पहन सकती हो।' 'कैसे ?' मेरा प्रश्न था। मां ने मेरी बांह पकड़ी और घर के भीतर ले गयी और अपना सन्दूक खोलकर कहा, 'इसमें से जो तुम्हें पहनने को मन करता है, पहन लो।'

"मैंने एक लहंगा, एक कुर्ती और एक चुनरी निकाल लिये। तब मां ने आभूषणों की सन्दूकची खोलकर दिखाते हुए कहा, 'इसमें से क्या पहनना चाहती हो ?' मैंने गले का हार, कानों के कर्णफूल, नाक की कील, माथे की दौनी और अंगूठियां व चूड़ियां चुन लीं और मां ने मुझे सब पहना दीं। उस दिन दो घण्टे तक मैं उन सबको पहने हुए घर में घूमती रही और मुझे देख-देख मेरे भाई-बहिन, चाचा और चाची, पिता तथा माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसते रहे। मैं दो घण्टे में ही ऊब गयी और मैंने मां से कहा, 'मां! अब इनको उतार दूं?' 'किसलिए?' मां ने पूछा। 'बस, जी भर गया है।' 'तो अब विवाह की लालसा नहीं करोगी? जब फिर लालसा जागे, तो बताना, ये सब तुम्हें पहना दूंगी।'

''उस समय मुझे वे वस्त्र-आभूषण भार प्रतीत होने लगे थे। मैंने उन्हें उतारा और सुख का सांस लिया। इसके उपरान्त मुझे विचार करने पर समझ में आ गया कि मात्र इतने के लिए तो ढोल, बाजे, बरात, डोली और सैकड़ों का खाना-पीना तथा लेना-देना नहीं होता।

''बाद में, जब मैं बड़ी होने लगी, तो मेरे मन में इच्छाएं जाग्रत होने लगीं। तब समझ आया कि विवाह उनकी पूर्ति के लिए होता है, परन्तु वह इच्छा मां से प्रकट करने में लज्जा लगती थी। सब सखियां कहती थीं कि यह बात बड़ों को नहीं बतानी चाहिए। मौन तो थी, परन्तु मन में कामना उग्र होती गयी। मां ने मेरी आंखों में कुछ देखा और पिताजी से चोरी-चोरी सम्मति करनी आरम्भ कर दी। मैं जानती थी कि मेरे विषय में बात हो रही है। जब भी माता-पिता बात करने लगते, तो मुझे कुछ बहाना बनाकर उठा देते और मैं यथासम्भव उनकी बात चोरी-चोरी सुनती थी। मुझे घर से विदा करने का षड्यन्त्र हो रहा था।

''मैं अपने मन में प्रसन्न थी। मन की कामना-पूर्ति का साधन बन रहा था। एक दिन विवाह हुआ और आठ-दस वर्ष की आयु में आभूषण पहनने की भांति अन्य इच्छाओं की पूर्ति भी बहुत भली प्रतीत हुई और मैं कई महीनों तक आभूषणें की भांति उन इच्छाओं में खोयी रही, परन्तु धीरे-धीरे आभूषणों से मन भर जाने की भांति, उनसे भी मन उब गया और समझ आया कि विवाह का उद्देश्य यह नहीं है। अब सन्तान की लालसा होने लगी। जब तुम्हारा भाई बदरी हुआ, तो वह चाह भी मिट गयी। उस समय मुझे बहुत कष्ट हुआ था। तुम्हारे उत्पन्न होने के समय कुछ अधिक कष्ट नहीं हुआ था, परन्तु और अधिक सन्तान उत्पन्न करने में रुचि नहीं रही। अब मैं विचार करती हूं कि विवाह बच्चों का पालन-पोषण कर उनको बड़ा कर लेने के लिए है।

''अब तुम दोनों सयानी हो चुकी हो और अपने-अपने मार्ग पर जाने के सर्वथा योग्य हो गयी हो, परन्तु विवाह तो हमारा अभी भी है।

''तो विवाह क्या है? यह भूषण, वसन नहीं। लेकिन यह पहने जाते हैं। यह वासना-तृप्ति भी नहीं है। यद्यपि यह भी होती है। यह बच्चे उत्पन्न करना और पालन करना भी नहीं है। यह सब करके देख चुकी हूं। इनके करने से ऊब जाने के उपरान्त भी विवाह है और लालसा है कि बना रहे। मैं वही तुम्हें बताने आयी हूं। यदि समझ में आये, तो कर लो। तुम तो दिन-रात शास्त्र पढ़ती रहती हो। मैं तो कभी-कभार गीता पढ़ लेती हूं। उसमें एक स्थान पर लिखा है—

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् योगीजन सम्पूर्ण इन्द्रियों की चेष्टाओं को तथा प्राणों के व्यापार को ज्ञान से प्रकाशित हुई परमात्मा में स्थित-रूप योगाग्नि में हवन करते रहते हैं।

''मैं अब इसी को अपने जीवन का कर्तव्य मानने लगी हूं। यह कार्य विवाह का उद्देश्य प्रतीत हो रहा है। सब इन्द्रियों तथा प्राणों के कार्य को ज्ञान से प्रकाशित कर आत्म-संयम की योग-अग्नि में हवन करती रहती हूं । तुम देखती हो कि आभूषण भी पहनती हूं, वासना-तृप्ति भी होती ही है, गृहस्थ के अन्य सुख-भोग भी होते हैं, परन्तु विवाह में वह उद्देश्य नहीं रहे। उद्देश्य रह गया है, उन सब कार्यों को—जो इन्द्रियों और प्राणों से हो रहे हैं—ज्ञान से समझकर संयम बरतना।

''विवाह इसमें सहायक हो रहा है। वह संयम में साधन बन रहा है। इन्द्रियों और प्राणों का यज्ञ-रूप में प्रयोग हो रहा है।''

शकुन्तला भी यह पढ़ चुकी थी, परन्तु व्यावहारिक ज्ञान न होने के कारण आश्चर्यवत् मां का मुंह देखती रही। मां ने भी बात समाप्त करने के लिए कहा, ''तनिक अच्छे आभूषण और वस्त्र आदि पहनकर चाय पर आना। मैं इनको पहनने का प्रयोजन अपने मन की तुष्टि मानती हूं। सन्तुष्ट मन से वहां रहोगी, तो किसी प्रकार की अव्यावहारिक बात अथवा चेष्टा नहीं करोगी।''

: 19 :

मां तो यह सूचना और सीख देकर चली गयी, परन्तु शकुन्तला गीता के उस श्लोक पर मनन करती हुई बैठी रह गयी, जो उसकी मां ने संकेत मात्र बताया था। उसमें जटिल अंश तो यह था—'जुह्वति ज्ञानदीपिते'। ज्ञान से प्रकाशित कर इन्द्रियों के कर्मों और प्राणों के व्यापार द्वारा यज्ञ करना। वह इसका अभिप्राय यह समझती थी कि कर्मों और चेष्टाओं का प्रयोजन है, ज्ञान प्राप्त कर उनका यज्ञ-रूप प्रयोग ही जीवन का लक्ष्य है, परन्तु यह कैसे हो सकेगा ? विचार के इस छोर पर पहुंचकर वह अपने को गली के बन्द किनारे पर पहुंच गया अनुभव करने लगी। उसे इसका ज्ञान नहीं था। यही तो विवाहित जीवन है। इसी का ज्ञान तुम्हारे यज्ञ में सहायक होगा।

सायंकाल की चाय के उपरान्त ही पिताजी के निर्माण-कार्यों से जमादार काम की प्रगति बताने आते थे। प्रगति तो वह लालाजी को बताते थे और अगले दिन की आवश्यकता वह शकुन्तला को बता जाते थे। तब तक शकुन्तला और मंगला अपने दिन-भर के कार्य और स्वाध्याय पर चर्चा किया करती थीं। आज तीन बजे मंगला शकुन्तला के कमरे में आयी, तो वह नित्य से उज्ज्वल और भड़कीले वस्त्र पहने हुए थी।

शकुन्तला उसे इस प्रकार के वस्त्र पहने हुए देखकर मुसकरायी। आज मंगला ने नाक में हीरा-जड़ी कील पहनी हुई थी। शकुन्तला कील की चमक देखकर चकित रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी। अनायास ही उसके मुंह से निकल गया, ''यह तो बहुत सुन्दर है।''

''हां। अभी-अभी माताजी आयी थीं और हाथ में दो-दो चूड़ियां और नाक में यह कील पहना गयी हैं। मैंने माताजी से कहा कि 'बॉरोड ग्रेटनेस' (उधार मांगा बड़प्पन) वञ्चना हो जायेगी। माताजी का कहना था कि वह उधार मांगी हुई नहीं है। मेरी मां की अर्जित है। उन्होंने अपने कमरे में कोई सुरक्षित स्थान न होने के कारण उनके आभूषणों की सन्दूकची में रखी हुई थी।''

''तुम्हारा सौन्दर्य तो दुगुना हो गया है।''

''तो माताजी से ऐसी ही एक अन्य तुम्हारे लिए मांग लेनी चाहिए।''

''वैसे तो इससे बढ़िया नग वाली मेरे पास है। मैं उसे पहनती नहीं।''

''क्यों?''

''मुझे अपनी सज-धज में रुचि नहीं।''

''परन्तु यह तो माताजी ने पहना दी है और मेरे नाक की पहली कील उन्होंने उतार ली है।''

''मां मुझे तो कह गयी है कि अच्छे वस्त्र और आभूषण पहनकर चाय पर पहुंचूं।''

''मुझे भी उन्होंने बताया है कि दो महापुरुष आने वाले हैं।''

''मैं अभी-अभी विचार कर रही थी कि जब तुम ससुराल चली जाओगी, तो मैं यहां अकेली रह जाऊंगी। तब मैं क्या किया करूंगी? इसलिए मैं भी विवाह क्यों न स्वीकार कर लूं।''

मंगला हंस पड़ी। उसने कहा, ''अब तो मन कहता है कि जो कुछ भी होना है, शीघ्र हो जाये।''

''क्या आज का यह प्रदर्शन निरर्थक नहीं है?''

''कदाचित् प्रदर्शन हमारे लिए नहीं है। यह हमारा प्रदर्शन हो रहा है।''

अब शकुन्तला भी उठी और अपना 'वार्डरोब' खोलकर उसमें से अपने मनपसन्द वस्त्र और आभूषण निकालकर पहनने लगी। पहनकर दर्पण के सामने जा खड़ी हुई। अपनी सूरत दर्पण में देखकर और एक नज़र भरकर मंगला की ओर देखकर मुसकराती हुई उसके समीप आ बैठी। उसने एक दीर्घ निःश्वास लिया और मंगला के गले में बांह डालकर बोली, ''मैं विचार कर रही हूं कि यदि मैं लड़की के स्थान पर लड़का होती, तो तुमसे विवाह कर लेती।''

मंगला हंसती हुई बोली, ''यह तो इस जन्म में सम्भव नहीं। यदि कामना करो, तो कदाचित् अगले जन्म में पूर्ण हो सके।''

साढ़े-चार बजे मंगला की मां आयी और दोनों लड़कियों को ड्राइंगरूम में ले गयी। वहां लालाजी, सदारानी और दो युवक पहले से ही बैठे थे।

हाथ जोड़कर अभिवादन हुआ और दोनों लड़कियां सदारानी के दोनों ओर बैठ गयीं। दोनों अभ्यागत लालाजी के पास बैठे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखिया ने चाय का सामान सोफ़े के सामने पड़ी मेज़ पर लगा दिया। चाय के साथ लेने के लिए मिठाई पहले ही मेज़ पर रखी थी और वे सब बैठे अपनी-अपनी प्लेट में रखकर खा रहे थे। चाय लगाकर सुखिया एक ओर हटकर खड़ी हो गयी।

अब उसने उस लड़के को भली-भांति देखा, जो मंगला के लिए बुलाया गया था। लड़का सुन्दर, सभ्य, सुशील और स्वस्थ शरीर का प्रतीत होता था। उसके मुक़ाबले में वह लड़का, जो शकुन्तला के लिए निश्चित किया गया था, गुणों में हीन लग रहा था। इसे देखकर सुखिया प्रसन्न थी।

परन्तु इस समारोह में एक दूसरी विचार-तरंग भी चल रही थी। वह विचार-तरंग शकुन्तला के लिए प्रस्तावित वर मनोहरलाल के मन में उठ रही थी। वह विचार कर रहा था कि वह स्वयं एक कारख़ाने का प्रबन्ध कर रहा है। उससे प्रत्यक्ष आय भी चार-पांच लाख प्रतिवर्ष की होती थी। वह कारख़ाना एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी की मिल्कियत में था। मनोहरलाल कम्पनी में डायरेक्टर होने के साथ-साथ मैनेजर होने के नाते दो हज़ार रुपया मासिक वेतन भी पाता था। इस प्रकार वह अपने को जुगलकिशोर से किसी प्रकार कम नहीं मानता था। वह विचार कर रहा था कि क्या धनवान् होने का यह अभिशाप है कि काली-कलूटी और मोटी रूप-रेखा वाली पत्नी का पति बना जाये ? वह शकुन्तला की अपेक्षा पर्याप्त सुन्दर उस लड़की से विवाह क्यों नहीं कर सकता ? उसके मन में क्रान्ति हो रही थी और वह यत्न करने लगा था कि मंगला के अन्य गुणों की भी परख करे।

सुखिया अभी तक खड़ी थी। लालाजी ने सुखिया को कहा, "सुखिया ! बैठो और चाय बना दो।"

सुखिया सेण्टरटेबल के समीप एक स्टूल खींचकर बैठ गयी और प्यालों में चाय बनाने लगी।

मनोहरलाल ने सुखिया को सम्बोधन कर पूछ लिया, "तो यह आपकी लड़की है?"

"हां, भैया ! मैं इस घर में सेविका हूं।"

"परन्तु आपकी लड़की तो भाग्यशालिनी प्रतीत होती है।"

"वह भी लालाजी और मालकिन की कृपा से ही है।"

"उस पर तो कोई भी कृपा कर सकता है।"

सुखिया ने बात बदलकर पूछ लिया, "आप चाय में कितनी चीनी पसन्द करते हैं?"

मंगला के प्रस्तावित वर मिस्टर शर्मा ने मंगला से पूछ लिया, "आपकी शिक्षा कहां तक हुई है ?"

मंगला ने एक क्षण तक विचार किया और कह दिया, "लालाजी के घर तक।"

शर्मा इसके अर्थ पर विचार करने के लिए लाला जुगलकिशोर के मुंह पर देखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा। मनोहरलाल यह सुनकर हंस पड़ा।

उसके हंसने से सबका ध्यान उसकी ओर चला गया। मंगला ने समझा कि सब उसके कथन पर हंस रहे हैं। इसलिए उसने अपने कथन का अर्थ समझाते हुए कहा, "मेरे कहने का अभिप्राय है कि मैं इस घर से बाहर किसी स्कूल-कॉलेज में पढ़ने नहीं गयी।"

बातों का सूत्र मनोहरलाल ने अपने हाथों में लेते हुए कहा, "तो दिल्ली में लालाजी का घर दूसरा विश्वविद्यालय है?"

"जी।" उत्तर मंगला ने ही दिया।

"और यहां का उपकुलपति कौन है?"

"वह तो लालाजी हैं। रजिस्ट्रार माताजी हैं और मेरे विषय की 'फ़ैकल्टी' की 'डीन' हैं शकुन्तला बहिनजी।"

मंगला अपने विचार से शकुन्तला और लालाजी के घर की प्रशंसा कर रही थी। मनोहरलाल ने मुसकराकर कहा, "तो गुरु-शिष्या दोनों के लिए पति ढूंढ़े जा रहे हैं?"

उत्तर लालाजी ने दिया और कहा, "इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि अपने मित्रों के सुपुत्रों के लिए पत्नियों का प्रबन्ध किया जा रहा है।"

"एक ही बात है।" मनोहरलाल ने कहा, "मैं आपके इस आयोजन के लिए आपका आभारी हूं।"

मनोहरलाल ने पुन: अर्थ-भरी दृष्टि से मंगला की ओर देखा।

सदारानी ने बातों का सूत्र अपने हाथ में ही रखते हुए कहा, "यद्यपि मंगला घर में पढ़ी है, तथापि वह अपने विषय में किसी भी विश्वविद्यालय के स्नातक से कम शिक्षित नहीं है।"

इस पर मिस्टर शर्मा ने कह दिया, "परन्तु आज के समाजवादी युग में उपाधि एक अनिवार्य गुण है।"

"हां। यदि पति की आय में पत्नी की आय भी सम्मिलित होनी हो।" लालाजी ने कह दिया, "परन्तु मंगला के पति को पत्नी की आय की आवश्यकता नहीं होगी।"

सेठजी का अभिप्राय यह था कि वह इस लड़की के विवाह पर पर्याप्त धन दे रहे हैं और इसके पति को इससे नौकरी नहीं करानी पड़ेगी।

अब सुखिया ने एक वाक्य कह दिया, "अकिंचन मां की लड़की को उसके अपने गुणों से ही तोला जाये, तो ठीक रहेगा। लड़की अंगरेजी, हिन्दी, इतिहास, पुराण, उपनिषद् और दर्शनशास्त्र पढ़ी है।"

लालाजी के इस कथन पर शर्मा चुप हो गया कि मंगला के पति को पत्नी से काम कराने की आवश्यकता नहीं होगी, परन्तु शकुन्तला को यह समझ आया कि शर्मा विश्वविद्यालय की शिक्षा की क़ीमत अधिक मानता है।

अधिकतर वार्तालाप का विषय विवाह में दिये जाने वाले दहेज पर होता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्चा थी 'हिन्दू कोड बिल' की। उसमें होने वाले सुधारों की भी चर्चा होती रही, पर किसी ने भी प्रस्तावित लड़के-लड़कियों की चर्चा नहीं की।

शेष वार्ता के लिए सदारानी ने कह दिया, "मैं आपकी माताजी से मिलूंगी।" यह बात दोनों प्रत्याशियों के लिए थी—मिस्टर शर्मा और मनोहरलाल के लिए भी।

इस चाय-पार्टी के तीसरे दिन सदारानी ने मनोहरलाल की माताजी को टेलीफ़ोन किया। मनोहरलाल के पिता रघुनन्दन गुप्त केन्द्रीय सरकार से रिटायर्ड सुपरवाइज़र थे। उनके तीन लड़के थे और तीनों उद्योग-क्षेत्र में पहुंच चुके थे। मनोहरलाल ने मथुरा रोड पर फ़ैक्ट्री लगा ली थी। दूसरे दोनों भाई मनोहरलाल से बड़े थे और एक ने फ़रीदाबाद में और दूसरे ने लुधियाना में कारख़ाने लगाये हुए थे। दोनों भाई दिल्ली से बाहर रहते थे। मनोहरलाल पिता के पास रहता था।

सदारानी का टेलीफ़ोन आया, तो मनोहरलाल के पिता ने चोंगा उठाया। सदारानी ने निर्मला बहिन से बात करनी चाही, तो रघुनन्दन ने आवाज़ पहचानकर कह दिया, "जिस विषय में आप मनोहर की माताजी से मिलना चाहती हैं, उस विषय में वह स्वयं आप से मिलेगी। आपको यहां आने का कष्ट नहीं करना पड़ेगा।"

सदारानी को यह उत्तर एक प्रकार से सम्बन्ध से इनकार प्रतीत हुआ। इससे पूर्व निर्मला स्वयं भी यह प्रस्ताव लेकर जुगलकिशोर की पत्नी से मिलने आ चुकी थी और उससे पहले दोनों परिवारों में आना-जाना भी था।

सदारानी ने यह भी विचार किया कि लेन-देन के विषय में कुछ बातचीत हो सकती है। उसने कहा, "तो बहिनजी कोठी पर नहीं हैं?"

"हैं तो! कहें, तो बुला दूं?"

"भाई साहब! बुला दीजिये।" सदारानी ने कह दिया।

दूसरी ओर से खट से चोंगा रखने का शब्द सुनाई दिया। सदारानी ने समझा कि यह मन के अस्वस्थ होने का सूचक है। इसलिए वह विस्मय कर रही थी कि यह असन्तोष किस कारण हो सकता है। इस पर भी वह उत्सुकता से निर्मला के टेलीफ़ोन पर आने की प्रतीक्षा करती रही।

निर्मला को टेलीफ़ोन पर आने में तीन-चार मिनट लग गये। सदारानी प्रतीक्षा करते-करते थक गयी थी और चोंगा रखकर टेलीफ़ोन बन्द करने ही वाली थी कि दूसरी ओर से निर्मला की आवाज़ आयी। उसने कहा, "बहिन सदारानी! मैं तो स्वयं ही आपके घर आने वाली थी, परन्तु मनोहर ने एक नयी समस्या पैदा कर दी है। उसके पिता भी उस विषय में लड़के से सहमत हैं। इसलिए मैं आ नहीं सकी। शीघ्र ही मिलने आऊंगी।"

सदारानी को अब भी यही समझ आ रहा था कि दान-दहेज के विषय में मतभेद हो सकता है। इसलिए उसने कहा, "यदि मिल लेतीं, तो कदाचित् मतभेद न रहता।"

"मैं आज ही किसी समय मिलने आऊंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदारानी अब निर्मला की प्रतीक्षा करने लगी। जुगलकिशोर को केन्द्रीय निर्माण विभाग में कुछ काम था और उसने मिस्टर शर्मा से भेंट की थी। उसने कह दिया, "आपके घर में रहने वाली लड़की कुछ अधिक पढ़ी-लिखी नहीं है। वह हमारे घर में खप नहीं सकेगी। मेरी माताजी कहती हैं कि मनुष्य में गुण की दो ही बातें हो सकती हैं—शिक्षा अथवा धन। मैं यह देख आया हूं कि लड़की में दोनों बातों का अभाव है।"

लालाजी ने पूछ लिया, "आप अपनी ससुराल से क्या आशा करते हैं ?"

मिस्टर शर्मा इस प्रश्न का उत्तर सोचने लगा। वास्तव में, वह विचार कर चुका था। अब तो वह उन विचारों को व्यक्त करने के लिए उचित शब्द ढूंढ़ रहा था।

कुछ देर तक विचारकर शर्मा ने कहा, "मैं सरकारी नौकरी से इतनी आय की कभी आशा नहीं कर सकता, जिससे आप-जितनी बड़ी कोठी में रह सकूं। इसलिए यही आशा करता था कि या तो लड़की मेरे साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाकर घर की अवस्था सुधारने में सहायता करे, अन्यथा अपनी मां के घर से इतना कुछ लाने का मार्ग खोलकर आये कि मैं एक बड़ी कोठी में रह सकूं।"

"परन्तु इच्छाएं तो किसी की भी पूर्ण नहीं होतीं।" लालाजी ने शर्मा को लोभी देखकर कह दिया।

"यह मैं समझता हूं।" शर्मा ने कहा, "और उन्हें समझकर ही कह रहा था। मैं तो आपकी लड़की से विवाह करना पसन्द करूंगा।"

लाला जुगलकिशोर किसी से भी नाराज़गी प्रकट नहीं करता था। उसने मुसकराते हुए कहा, "मैं आपके दृष्टिकोण को समझ रहा हूं, परन्तु मनुष्य अपने मन की सब बात नहीं कर सकता। दूसरों की सुख-सुविधा का भी विचार करना पड़ता है। यदि शकुन्तला और उसकी मां को आपका प्रस्ताव स्वीकार हुआ, तब ही यह कार्य हो सकेगा।"

"मैं उस दिन चाय-पार्टी पर आये उस दूसरे लड़के से अपने को किसी प्रकार भी कम नहीं मानता और मेरा निर्वाचन आपकी लड़की है।"

"अच्छी बात है। मैं लड़की से बात करूंगा। मुख्य तो वही है। उसके बाद उसकी मां है। यदि दोनों मान गयीं, तो मुझे इस सम्बन्ध में कोई आपत्ति नहीं होगी।"

लालाजी समझ रहे थे कि शर्मा का प्रस्ताव उसकी पत्नी को स्वीकार नहीं होगा। यह इसलिए नहीं कि शर्मा में किसी प्रकार की शारीरिक अथवा मानसिक कमी थी, वरन् इसलिए कि निर्मला सदारानी की सहेली थी और वह एक वर्ष से उसके घर के चक्कर काट रही थी।

: 20 :

जुगलकिशोर अपने कार्यालय से निबटकर सायंकाल की चाय के लिए घर पर आया, तो सदारानी और निर्मला ड्राइंगरूम में बैठी गम्भीर भाव में वार्तालाप कर रही थीं। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते ही पूछा, ''बहिन निर्मला को चाय नहीं पूछी ?''

''ओह!'' सदारानी ने चौंककर कहा, ''बस, आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। साथ ही निर्मला बहिन कुछ बताने लगी थीं और मैं सामान्य शिष्टाचार ही भूल गयी थी।''

सदारानी ने घण्टी का बटन दबाया, तो सुखिया आ गयी। वह आयी, तो सदारानी ने कह दिया, ''सुखिया बहिन! चाय ले आओ।''

इसी समय शकुन्तला और मंगला भी अपने कमरे से निकल आयीं। निर्मला ने सदारानी के कान में कह दिया, ''दोनों की रूप-राशि में अन्तर तो है।''

''हम इस अन्तर को धन से पूरा कर देना चाहते हैं।''

बात आगे नहीं चल सकी। लड़कियां आकर सामने बैठ गयी थीं।

चाय पर सामान्य वार्तालाप होता रहा। निर्मला ने पूछ लिया, ''आपकी पतोहू दिखाई नहीं दी ?''

''बदरी आज आया था। वह अपनी पत्नी से कुछ बात कर उसे साथ ही ले गया है। आशा थी कि दोनों चाय के समय आयेंगे। अभी तक नहीं आये।''

''और बेबी ?''

''उसके लिए आया रख दी है। वह उसे घुमाने ले गयी है।''

इस प्रकार की औपचारिक बातें होती रहीं। चाय समाप्त हुई, तो निर्मला ने मंगला की ओर देखकर सदारानी से कहा, ''अब मैंने अपनी ओर की बात बता दी है। आप अपना विचार बता देंगी, तो बात आगे चल सकेगी।'' इतना कहकर निर्मला चली गयी।

उसके चले जाने पर लालाजी ने पूछा, ''क्या कहती थी तुम्हारी सहेली ?''

''फिर बताऊंगी।''

शकुन्तला ने माताजी की बात सुन ली। वह समझी कि माताजी लड़कियों से पृथक् में बात करना चाहती हैं। इस कारण वह उठ खड़ी हुई और मंगला को साथ लेकर अपने कमरे में चली गयी।

लड़कियों के चले जाने पर सदारानी ने पति से कहा, ''मैं समझती हूं कि हमने इन मां-बेटी को अपने घर में रखकर भूल की है।''

''किन मां-बेटी को ?''

''यही सुखिया और मंगला को। ये दोनों हमारे घर पर छा गयी हैं। निर्मला के लड़के ने दोनों लड़कियों को साथ-साथ बैठे देखा, तो बस, गोरे रंग पर फ़िदा हो गया और अब मां के हाथ कहला भेजा कि यदि उससे मंगला के विवाह करने का विचार हो, तो वह बिना एक भी पैसे का दान-दहेज लिये, उसे स्वीकार कर सकता है।''

''और शकुन्तला को मिस्टर शर्मा ने पसन्द किया है।'' लालाजी ने अपनी बात बता दी। ''वह कह रहा है कि पत्नी के दोनों गुण—शिक्षा और धन—शकुन्तला में हैं। इसलिए वह शकुन्तला से विवाह करेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और आप क्या कहते हैं ?"

"यदि यह बात आज से तीस-चालीस वर्ष पहले कही जाती, तो मैं मान जाता।"

"और अब क्यों नहीं ?"

"अब लड़कियों से पूछना और उनकी स्वीकृति लेना अनिवार्य हो गया है।"

"हां। यदि वही समय होता, जब हमारी सगाई हुई थी, तो यह दोनों प्रस्ताव अस्वीकार हो जाते। बात माता-पिता के मन की ही चलती, परन्तु अब जहां लड़के-लड़कियों की सम्मति आवश्यक है, वहां माता-पिता की दृष्टि में भी अन्तर आ गया है।"

"तो तुम्हारी दृष्टि किधर जाती है ?" लालाजी ने पूछ लिया।

"मुझे तो लड़की के लिए शर्मा ठीक ही पति समझ आया है। उस दिन मैं दोनों लड़कों में तुलना कर रही थी, परन्तु निर्मला से बात इतनी दूर तक जा चुकी थी कि मैं उसे बदलने का विचार भी नहीं कर सकती थी।"

"और अब विचार बदल गया है ?"

"हां, परन्तु अब लड़कियों से पूछे बिना बात नहीं हो सकती।"

"देखो रानी ! शर्मा दामाद के रूप में मुझे भी पसन्द है। मैं उसे अपने व्यवसाय में सम्मिलित कर सकूंगा। मनोहरलाल से यह नहीं कह सकता था। रही बात शकुन्तला की, वह तुम पता करो। मैं उसका तरीक़ा बताता हूं। पहले सुखिया से कहो। वह और उसकी लड़की मान जाये, तो फिर शकुन्तला को मनाना कठिन नहीं होगा। मुझे सन्देह हो रहा है कि मंगला मनोहर को पसन्द नहीं करेगी।"

लालाजी की योजना अमल में लायी गयी और सफल हो गयी। यह इसलिए नहीं कि मंगला के मन में शर्मा के लिए अरुचि थी, अपितु इसलिए कि घर के दोनों लड़कों के व्यवहार से उचाट होकर वह घर छोड़ने का विचार कर चुकी थी। वह समझने लगी थी कि अभी तो लालाजी और माताजी उसकी मां से नाराज़ नहीं हैं, परन्तु लड़के के घर से भाग जाने की प्रतिक्रिया मां के मन पर हो सकती है और वह प्रतिक्रिया मां को घर से निकाल देने की भी हो सकती है। इसी कारण वह विवाह करने पर राज़ी हुई थी। मुख्य बात घर छोड़ने की थी।

उसी रात मंगला से सुखिया ने जब प्रस्तावित अदला-बदली की बात कही, तो मंगला ने मां से कह दिया, "मां ! विवाह में मेरी रुचि नहीं थी, परन्तु जब तुमने समझाया है कि लड़की को माता-पिता का घर छोड़ना ही चाहिए, तो फिर कहीं भी भेज दो, मुझे क्या आपत्ति होगी ? मुझे तो दोनों में कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता।"

शकुन्तला से बात इससे भी सुगम प्रतीत हुई। उसके लिए धन-दौलत का कोई प्रश्न ही नहीं था। वह शर्मा के सुन्दर शरीर और सभ्य व्यवहार पर प्रसन्न थी।

परिणाम यह हुआ कि एक ही सप्ताह में दोनों का विवाह सम्पन्न हो गया। सदारानी का विचार यह था कि दोनों का विवाह एक ही वेदी पर कर दिया जाये, परन्तु लालाजी ने यह उचित नहीं समझा। वह अपने सम्बन्धियों, मित्रों और व्यवसाय में सहयोगियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लड़की के विवाह पर खिलाना-पिलाना चाहते थे। लड़के के विवाह पर कुछ किया नहीं जा सका था। इसलिए वह वैसा ही उत्सव लड़की के विवाह पर करना चाहते थे। मंगला का विवाह शकुन्तला से दो दिन पूर्व कर दिया गया था।

विवाह पर ब्रजभूषण का पूर्ण परिवार आया हुआ था। वे लोग शकुन्तला के विवाह पर ही आमन्त्रित थे। मंगला ससुराल के लिए पहले ही विदा हो चुकी थी।

बदरीप्रसाद को मंगला के विवाह पर भी बुलाया गया था, परन्तु वह नहीं आया। उचित मकान न मिलने के कारण वह अभी तक 'मैरीना होटल' में ठहरा हुआ था। नोरा रहती, तो लालाजी के घर बारह खम्भा रोड पर ही थी, परन्तु वह अपने पति से मिलती रहती थी।

मंगला के विवाह के एक दिन पूर्व नोरा मध्याह्न के समय पति से मिलने गयी थी। जब वह सायंकाल वहां से लौटी, तो सदारानी ने पूछा था, "बदरी कल विवाह पर आ रहा है अथवा नहीं?"

"वह नहीं आ रहे।" नोरा का उत्तर था।

"क्यों?"

"वह इस लड़की पर अपना दावा मानते हैं और ऐसा अनुभव करते हैं कि उनकी सम्पत्ति कोई छीनकर लिये जा रहा है।"

सदारानी ने कहा, "तुमने उसे नहीं समझाया कि तुम उससे अधिक उज्ज्वल रंग और श्रेष्ठ रूप-रेखा की स्त्री हो?"

"बहुत समझाया है, परन्तु सफल नहीं हुई। माताजी, अब विवाह हो ही रहा है। मैं समझती हूं कि इस विवाह से परिस्थिति बदल जायेगी और समय व्यतीत होने के साथ सब ठीक हो जायेगा।"

मंगला का विवाह बिना अधिक धूम-धाम के सम्पन्न हो गया और मनोहरलाल मंगला को मोटर में बिठाकर अपने घर ले गया।

मंगला की ससुराल में उसकी एक जेठानी के अतिरिक्त अन्य सब प्रसन्न थे। मनोहरलाल के दोनों बड़े भाई और दोनों बहिनें विवाह पर आये हुए थे। बहिनों ने तो मंगला की सूरत-शक्ल देखी हुई थी। भाइयों ने उसकी सूरत-शक्ल नहीं देखी थी, अत: जब बहू कोठी में पहुंची और मंगला की सास और ननदें उसके आने का शकुन करने लगीं, तभी मनोहरलाल के भाइयों ने मंगला को देखा।

सबसे बड़ा भाई सोहनलाल इस समय तीन बच्चों का पिता था और दूसरे भाई गिरिधारीलाल की भी दो सन्तानें थीं। वे दोनों अपने घर की स्त्रियों की पृष्ठभूमि में मंगला को देखकर अति प्रसन्न थे।

जब शकुन हो चुका और भाभी पर ननदों ने अधिकार कर लिया, तो मनोहरलाल उसे बहिनों के पास छोड़कर भाइयों के पास चला आया। वह प्रसन्न था कि उसके मन की बात हो गयी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहनलाल ने मनोहर को अपनी ओर आते देखकर कह दिया, "मनोहर! बहू तो बहुत बढ़िया ढूंढ़ी है।"

"आपको पसन्द है?"

इस पर गिरिधारी बोल उठा, "घर में प्रकाशमान सूर्य आ गया प्रतीत हो रहा है।"

मनोहर ने हंसते हुए कहा, "हां, मैं समझता हूं कि अब यहां रात को लैम्प जलाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।"

इस पर दोनों बड़े भाई हंसने लगे। गिरिधारी ने पूछ लिया, "पर यह हुआ कैसे? पिताजी तो लिख रहे थे कि जुगलकिशोर की लड़की के विषय में बातचीत हो रही है।"

"हां भैया! बात लालाजी की लड़की के लिए ही चल रही थी और पिछले सप्ताह मुझे लड़की को दिखाने के लिए बुलाया गया था। वहां इसके लिए भी प्रस्तावित पति बुलाया गया था। वहीं पर बैठे हुए मेरे मन में विचार आया कि मुझे जुगलकिशोर की लड़की का क्या करना है? वैसी तो अपने घर में पहले ही हैं। कोई विलक्षण जीव लाया जाये, तो ठीक है। मुझे यह लड़की लालाजी की लड़की और अपने घर की स्त्रियों से विलक्षण प्रतीत हुई । साथ ही, जो लड़का इसके लिए नियत किया गया था, वह इससे पूछने लगा कि कितनी पढ़ी है, इसके पास कौन-सी डिग्री है? यह अनपढ़ समाज में खप नहीं सकेगी, इत्यादि। इस प्रकार के प्रश्नों से मैं समझ गया कि वह इस अनमोल रत्न को सड़क का कंकर समझ रहा है। मैंने यत्न किया और विवाह हो गया है।"

"तो यह कुछ भी पढ़ी-लिखी नहीं?"

"पढ़ी-लिखी तो है, परन्तु इसके पास विश्वविद्यालय की डिग्री नहीं है।"

पिता रघुनन्दन न तो प्रसन्न था और न नाराज़। वह बहू को लेकर आया, तो अपने कमरे में इस प्रकार चला गया, मानो लड़का अपने कमरे के लिए कोई फ़र्नीचर लेकर आया है और उसे अपने कमरे में रखने के लिए स्थान बना रहा है।

मां को दुःख था कि लालाजी की लड़की से विवाह करने पर मनोहर की सम्पत्ति दुगुनी हो जाती और ढेरों आभूषण तथा वस्त्र भी मिलते। अब यह लड़की एक सामान्य सन्दूक में अपने और अपने पति के लिए वस्त्र आदि लेकर ही आयी थी। वह भी लड़की का शकुन करके अपने पति के कमरे में चली गयी। वहां रघुनन्दन नौकर से कह रहा था कि तेज़ कॉफ़ी का एक प्याला बना कर लाये।

निर्मला आयी, तो बोली, "आप इस विवाह से प्रसन्न नहीं प्रतीत होते?"

"मैं नाराज़ नहीं। मनोहर का विवाह करने के उपरान्त मैं घर के कामों से मुक्त हो गया हूं।"

"सोहन के विवाह के समय तो इतना सामान आया था कि कोठी का बरामदा भर गया था।"

"हां। और अब इतना कुछ आया है कि उसे समेटने में मनोहर की मां को कष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करना पड़ेगा। यह तो सुख का सूचक होना चाहिए।''

''अर्थात् धन-सम्पदा को घर में समेटने में भी मुझे कष्ट होता है?''

''नहीं होता? देखो, हमारी कोठी के प्रत्येक कमरे में उचित फ़र्नीचर रखा है। यदि यह और लाती, तो कहां रखतीं? तुम्हारा कष्ट कम ही हुआ है।''

''आप अब संन्यास लेने की तैयारी कर रहे प्रतीत होते हैं।''

''वह तो मैं पिछले पांच-छह वर्ष से कर रहा हूं। बताओ, क्या मैं ग़लत कर रहा हूं?''

निर्मला विचार करने लगी। रघुनन्दन ने कहा, ''माधुरी के विवाह को पांच वर्ष से अधिक हो गये हैं। मैं तो तब से ही संन्यासी हूं। बताओ, इससे किसी प्रकार की त्रुटि अनुभव करती हो?''

''मुझे तो हानि नहीं हो रही, परन्तु यह मनोहर तो संन्यासी नहीं हुआ। इसे तो अभी बहुत कुछ चाहिए।''

''उसे जो कुछ भी चाहिए, वह जानता है। हमें उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।''

निर्मला समझ गयी कि उसका पति ठीक कह रहा है। पुत्र प्रसन्न है, तो हमें भी प्रसन्न रहना चाहिए।

:21:

मंगला को विदा कर नोरा अपने पति से मिलने के लिए होटल में गयी। वे प्राय: सायंकाल चाय के समय मिला करते थे। नोरा ने बदरीप्रसाद के कमरे में प्रवेश करते ही कहा, ''अब तो आपको उस घर में चले चलना चाहिए।''

''विचार कर रहा हूं कि चलूं, परन्तु उस घर को छोड़ना मंगला के कारण नहीं था, वरन् किसी अन्य के कारण भी था।''

''अन्य किसके?''

''मसलन तुम्हारे।''

''मैंने क्या किया है?''

''मुझसे विवाह।''

''वह तो अब टूट नहीं सकता। आपको मुझमें कुछ दोष सिद्ध करना पड़ेगा, जो मुझमें नहीं है। आपके पिता ने बताया है कि यदि मैं आपके माता-पिता के संरक्षण में रहूंगी, तो आप मुझे तलाक़ देने में सफल नहीं हो सकेंगे।''

''परन्तु मैं तुमसे पृथक् तो रह सकता हूं।''

''तो रह लीजिये। यदि आप ऐसा करने में सफल हो गये, तो मुझ अकेली को हानि नहीं होगी। हम दोनों समान रूप से हानि में रहेंगे।''

''देखो नोरा! मैंने एक पृथक् बंगला भाड़े पर ले लिया है और एक-दो दिन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें चला जाऊंगा। वह बंगला महरौली की सड़क पर है। तब तुमको मेरे पास वहां चलकर रहना होगा।''

''मैं इससे इनकार नहीं कर सकती, परन्तु वहां अकेली कैसे रह सकूंगी?''

''एक बात और है। मैं राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहता हूं। इसके लिए पिताजी से पृथक् रहना होगा। मुझे अपना व्यवहार और कथन ऐसा करना पड़ेगा, जिसका प्रयोग मैं पिताजी की कोठी में रहते हुए नहीं कर सकूंगा।''

''तो आपकी राजनीति 'प्रोलिटेरिएट्स' की-सी है।''

''हां। मैं समाजवादी बनने जा रहा हूं।''

''परन्तु कोठी कितने भाड़े पर ली है।''

''तीन सौ रुपये भाड़े पर ली है।''

''पिताजी को छोड़ देंगे, तो भाड़ा कहां से देंगे?''

''वह पिताजी से लूंगा।''

''परन्तु आप तो समाजवादी बनकर उनको गाली-गलौज देंगे। धन भी लेंगे और गाली-गलौज भी देंगे?''

''तुम देखती जाओ, मैं क्या करता हूं?''

''परन्तु मैं समझती हूं कि यह आप भूल कर रहे हैं। समाजवाद आपके लिए एक विरोधाभास होगा। आप जिसका दिया खायेंगे, उसे ही अथवा उसकी जाति-बिरादरी वालों को ही बुरा-भला भी कहेंगे।''

''यही राजनीति है। मेरे मित्र और सहयोगी एक चौधरी हरिराम हैं। वह निर्धन किसानों से हमदर्दी के पुल बांधा करते हैं और किसानों से दो पैसे गज़ पर भूमि लेकर दस से पन्द्रह रुपये गज़ पर बेच रहे हैं। इस प्रकार वह पिछले पांच-छह वर्षों में लखपति बन गये हैं। मैं उनका शिष्य बन रहा हूं।''

''परन्तु पहले कमाई करेंगे, तो पीछे धनवान् भी होंगे।''

''मैं वही बात पिताजी से करूंगा, जो चौधरीजी ने किसानों से की है। मैं पिताजी से धन लेकर पिताजी पर ही चौधराहट करना चाहता हूं।''

''आप शेख़चिल्ली बन रहे हैं। यहां अकेले में बैठे कल्पना के घोड़े दौड़ा रहे हैं। अब होटल का बिल कितना हो गया है?''

''परसों तुम पांच सौ रुपया दे गयी थीं। वह मैंने होटल में जमा करा दिया था। वैसे मेरे पास अभी कुछ रुपया है। परसों शकुन्तला के विवाह पर कोठी में जाऊंगा और पिताजी से ख़र्च मांगूंगा।''

नोरा को यह पागलपन लगा। जेब में एक पैसा नहीं और उसका पति आसमान के सितारे उतारना चाहता है! वह जानती थी कि वह पांच सौ रुपया भी माताजी ने भेजा था। वही उसे नित्य बदरी के पास भेजा करती थी। सदारानी का आशय यह था कि पत्नी और घर से सम्पर्क बना रहेगा, तो लड़का संसार-सागर में तैरता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोरा और उसकी सास ने समझा था कि मंगला के ससुराल चले जाने पर लड़का घर आ जायेगा और अपने भाग्य पर सन्तोष कर लेगा, परन्तु बदरीप्रसाद के मस्तिष्क में दूसरी ही बात थी। वह घर से पृथक् तो होना चाहता ही था, घर की सब श्रेष्ठ वस्तुओं का भोग भी करना चाहता था। पत्नी उसे नित्य स्वयं होटल में आकर मिल जाती थी। निर्वाह के लिए धन भी घर से आने लगा था। अब उसने यह कोठी भाड़े पर ले ली थी और आशा करता था कि पिताजी उसे उसमें रहने के लिए ख़र्च भी देंगे और वह वहां रहता हुआ राजनीति में उन्नति कर सकेगा। पिताजी के धन पर सवारी करता हुआ वह सरपट दौड़ लगा सकेगा।

नोरा को सदारानी ने कहा था कि पति से मिलकर वह उसे घर ले आये। लेकिन जब वह पति को अपने हितों का स्मरण कराकर घर लाने में सफल नहीं हुई, तो उसने कह दिया, ''आप शकुन्तला के विवाह पर तो घर आ जाइये।''

''मैं विवाह के अवसर पर जाऊंगा और बहिन को आशीर्वाद दे आऊंगा। उससे मिलोगी, तो उसे कह देना कि उसने लाला रघुनन्दन की पतोहू बनने के स्थान पर एक पढ़े-लिखे की पत्नी बनना स्वीकार कर ठीक ही किया है। उसने धन के लोभ को छोड़कर विद्वत्ता का आश्रय लिया है, इससे मुझे प्रसन्नता हुई है।''

जुगलकिशोर भी बदरीप्रसाद से मिलता रहता था। मंगला को विदा करने की सायं वह भी पुत्र से मिलने आया और पिता-पुत्र में बातचीत राजनीति पर हो गयी।

बदरीप्रसाद का कहना था, ''पिताजी! आज देश की राजनीति ने ऐसा मोड़ ले लिया है कि इसमें उन्नति करने के लिए नेता को जनता में विचरना पड़ता है और स्वयं को उसका एक अंश प्रकट करना पड़ता है।

''आपकी आलीशान कोठी में रहते हुए मैं बुर्जुआ श्रेणी का माना जाऊंगा और प्रजातन्त्रात्मक राज्य-पद्धति में अधिकांश मतदाता निपट निर्धन होंगे। उनकी सहानुभूति अपनी ओर करने के लिए उन-जैसा ही बनकर दिखाना होगा।''

जुगलकिशोर विचार कर रहा था कि यदि लड़का राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति करता है, तो उस उन्नति से लाभ उठाने के लिए उसकी सहायता करनी चाहिए। उसने छूटते ही पूछा, ''क्या भाड़ा देंगे कोठी का?''

''वहां मैं छह महीने की पेशगी दे आया हूं। आपने दो हज़ार दिया था, उसमें से अठारह सौ तो इसमें चला गया और यहां रहते हुए लगभग एक सौ रुपये प्रतिदिन व्यय हो रहा है। इसलिए रुपये की कमी अनुभव हो रही है।''

''तुम्हारी जेब में क्या कुछ है?''

''चार-पांच सौ रुपया है।''

''अच्छी बात है। कोठी का पता बता दो, उसका भी कुछ प्रबन्ध हो जायेगा और तुम्हें अपनी नाक पानी से बाहर रखने के लिए आश्रय भी मिल जायेगा।''

''मैं प्रत्यक्ष रूप में यह प्रकट करना चाहता हूं कि मेरे विचार सुनकर आपने मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर से बाहर निकाल दिया है।''

''तो यह ढोंग भी करना होगा?''

''हां, पिताजी! कुछ तो दिखाना ही पड़ेगा। मैंने खद्दर के कपड़े बनवा लिये हैं और अब वहां कोठी में बहुत फ़र्नीचर नहीं लगवाना चाहता। सामान्य कुर्सी और बेंचें होंगी। मेरे सोने के कमरे में चटाई और तख़्तपोश होगा। धोती, कुर्ता, सिर से नंगा, पांव में चप्पल, कन्धे पर चादर। यह मेरी पोशाक होगी।''

''देखो बदरी! मेरे पास बिना हिसाब-किताब के रुपया जमा हो रहा है। वह ऐसे कामों में ख़र्च नहीं कर सकता। घर पर ही ख़र्च कर सकता हूं, परन्तु कितना करूं? साथ ही घर का कुछ तो ख़र्च दिखाना ही पड़ेगा।

''इस कारण तुम्हें तो धन मिलता रहेगा, परन्तु बेटा। धन का काम धन से ही हो सकता है। यह गुर स्मरण रखोगे, तो जीवन में सफल होगे।''

इसके बाद पिता ने बात बदलकर पूछा लिया, ''बहिन के विवाह पर तो आओगे न?''

''हां, पिताजी!''

''उसे आशीर्वाद के रूप में भेंट देने के लिए कुछ ले आना।''

''ठीक है। मैं कल खद्दर मण्डप में गया था। वहां एक रेशमी साड़ी देख आया हूं। पांच सौ रुपये की है।''

पिता ने सौ-सौ रुपये के बीस नोट पुत्र के सामने रखी तिपाई पर रखकर कहा,''तुम कोठी में चले आओगे, तो मैं नियमित प्रबन्ध कर दूंगा।''

इसके उपरान्त इधर-उधर की बातें होती रहीं और पुत्र के षड्यन्त्र में प्रोत्साहन देता हुआ पिता चल दिया।

जुगलकिशोर अभी गया ही था कि बदरीप्रसाद से मिलने के लिए उसके साथ सन् 1942 के आन्दोलन में जेल गये दो साथी आ गये। उन्होंने कमरे के बाहर लगी घण्टी का बटन दबाया, तो भीतर से बदरीप्रसाद की आवाज़ आयी, ''आ जाओ।''

उन्होंने द्वार खोला और भीतर आये, तो बदरीप्रसाद ने बैठते ही कह दिया, ''आओ भाई महेश!'' उसने कमरे में प्रथम प्रवेश करने वाले को सम्बोधन किया, तो दूसरा साथी भी भीतर आ गया। उसे देखकर बदरीप्रसाद चहक उठा, ''ओह रमण! तुम यहां क्या कर रहे हो? कहां रहते हो भाई?''

बदरीप्रसाद उठा और रमण से गले मिलने लगा।

''महेश! इसे कहां से पकड़ लाये हो?'' बदरीप्रसाद ने पूछ लिया।

''यह आजकल कलकत्ता में रहता है।'' अब तीनों बैठ गये थे।

महेश और रमण सोफ़े पर बैठे और बदरीप्रसाद उनके समीप एक स्टूल खिसकाकर उस पर बैठ गया। बदरीप्रसाद ने पूछा, ''चाय लेंगे अथवा कॉफ़ी?''

उत्तर महेश ने दिया, ''भाई! कॉफ़ी मंगवाओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदरीप्रसाद ने 'इण्टरकॉम' से कॉफ़ी का ऑर्डर दिया और फिर रमण से पूछने लगा, "आजकल क्या कर रहे हो?"

"मैं तो कम्यूनिज़्म पर विश्वास करने लगा हूं।"

"वह तो तुम पहले भी प्रतीत होते थे। जब जेल में थे, तब भी तो तुम 'लेफ़्टिज़्म' की बातें किया करते थे।"

"हां, परन्तु उन दिनों रंग बहुत फीका था। अब गहरा लाल हो गया है।"

"ठीक है। राजनीति में स्टण्टबाज़ी से ही काम चलता है।"

"परन्तु बदरी! मैं सत्य हृदय से 'प्रोलिटेरिएट्स' के पक्ष में हो गया हूं।"

"ठीक है, ठीक है। मैं समझता हूं।"

इस समय बेयरा कॉफ़ी ले आया। बदरी ने कॉफ़ी प्यालों में डालकर रमण और महेश को पकड़ा दी और एक प्याला स्वयं लेकर पीनी आरम्भ कर दी। महेश ने भी कॉफ़ी पीते हुए कहा, "बदरीप्रसाद! रमण कलकत्ता में ट्रेड यूनियन का सेक्रेटरी है। यहां ऑल इण्डिया की एग्ज़ीक्यूटिव की बैठक में भाग लेने आया हुआ है। जब मैंने इसे बताया कि तुम लोकसभा के लिए चुनाव लड़ना चाहते हो, तो यह तुमसे मिलने चला आया है।"

"मैं यह जानने आया था कि उस समय जेलों में तो तुम बुर्जुआ मनोवृत्ति रखते थे।" रमण ने कहा, "क्या अब भी वही विचार हैं अथवा उनमें कुछ परिवर्तन हुआ है?"

"तब से अब", बदरीप्रसाद ने कहा, "मैं काले से गोरा हो गया हूं।"

"सच?" रमण ने हंसते हुए पूछ लिया।

बदरीप्रसाद मुसकराता हुआ रमण के मुंह पर देखता रहा। जब रमण हंस चुका, तो बदरीप्रसाद ने कहा, "उस समय मेरा मन काला रंगा हुआ था। उस रंग पर कोई रंग चढ़ ही नहीं सकता था। अत: मैंने यत्न से पहले अपने को 'ब्लीच' (बेरंग) करना उचित समझा। मैं समझता हूं कि मैं इसमें काफ़ी सफल हो गया हूं। अब मैं दूध के समान सफ़ेद और आकाश के समान निर्मल हो गया हूं। मैं देख रहा हूं कि कौन-सा रंग ठीक रहेगा, जिसे मैं स्वीकार करूं।"

रमण बदरीप्रसाद की बातों को समझकर बोला, "लाल रंग ठीक रहेगा। यह सुन्दर भी है और आकर्षक भी। इसे स्वीकार कर लो, तो दिग्विजय होगी।"

"परन्तु मेरे समक्ष एक अन्य प्रस्ताव है। लोग मुझे भगवा रंग में रंगना चाहते हैं।"

"कौन मूर्ख हैं वे?" रमण ने बिना विचार किये ही कह दिया।

बदरीप्रसाद ने हंसते हुए कहा, "यह महेश ही है, परन्तु यह मूर्ख है अथवा बुद्धिमान्, मैं अभी कुछ नहीं कह रहा। यह कहता है कि मुझे हिन्दू महासभा के टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़ना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमण ने प्रश्न-भरी दृष्टि से समीप बैठे महेश की ओर देखा, तो महेश ने कह दिया, ''रमण ! मैं तो 'फ़्री फ़ोरम' चाहता हूं और मुझे हिन्दू महासभा इस काम के लिए उपयुक्त समझ आयी है।''

''परन्तु यह व्यावहारिक नहीं है।'' रमण का कहना था।

''इसमें अव्यावहारिकता क्या है ?''

''मेरा अभिप्राय है कि 'फ़्री फ़ोरम' तो मेढकों की सभा होती है। सब टर्र-टर्र करते हैं और मनमानी दिशा में फुदकते रहते हैं। ये कभी किसी एक स्थान पर एकत्रित नहीं हो सकते।''

''इकट्ठे होने से अथवा एक स्वर होने से क्या होगा ? सब भेड़ों की भांति हांके जायेंगे।''

''यही तो व्यावहारिक है। इसे 'डिसिप्लिण्ड' अथवा अनुशासनशील होना कहते हैं। यह प्रगति का लक्षण है।''

''परन्तु रमण ! मुझे भेड़ बनना स्वीकार नहीं है।''

''उसके लिए दल में नेता बनने की आवश्यकता है और जब तक पहले भेड़ न बनो, तब तक नेता नहीं बन सकते। मेरा अभिप्राय यह है कि जब तक अनुशासन में रहना न सीख लो।''

बदरीप्रसाद ने अपने मन की बात नहीं बतायी। वह कांग्रेस में था और कांग्रेस में ही रहना चाहता था। उसके टिकट पर ही वह चुनाव लड़ने का विचार रखता था और उसी का टिकट लेने का यत्न कर रहा था। महेश ने कहा, ''यह मैं जेल में दो वर्ष तक रहकर सीख आया हूं, परन्तु मैं क़ैदी नहीं बन सकता। मैं जेलर बनना पसन्द करूंगा।''

''यही तो मैं कह रहा हूं। पहले स्वयं अनुशासन में रहना सीखो, दूसरों को अनुशासन में रखने का ढंग अपने आप आ जायेगा।''

''अच्छा, यह बताओ। तुम्हारा दल तो मॉस्को की आज्ञा के अधीन है न ?''

''यही तो कह रहा हूं। मेढक की भांति कोई भी मनचाही दिशा में फुदक नहीं सकता। हम रूस के विदेशी मामलों के सचिव के अधीन हैं और वह स्टालिन के अधीन है और स्टालिन पार्टी के अधीन है।''

''और पार्टी किसके अधीन है ?''

''वह पार्टी-सिद्धान्तों के अधीन है।''

''और वे सिद्धान्त क्या हैं ?''

''जो मार्क्स और लेनिन ने लिख रखे हैं।''

''और उसमें मीन-मेख नहीं निकाल सकते।''

''वह पार्टी के नेता करते रहते हैं।''

''पार्टी के नेता सिद्धान्तों में परिवर्तन नहीं कर सकते। वह उनके अर्थ समझते-समझाते रहते हैं और मैं इसे दासता मानता हूं। हिन्दू धर्म में यही गुण है कि इसमें प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति इसके मूल सिद्धान्त पर भी सन्देह और बहस कर सकता है।''

''हिन्दू मज़हब का मूल सिद्धान्त क्या है?''

''परमात्मा को मानना, परन्तु इस पर भी सन्देह, अर्थात् इससे मुनकिर होने का अधिकार सबको है। लेकिन हिन्दू तो वह तब भी रहता है।''

''यह है नहीं। कहने मात्र को ही है। बिना किसी मूल सिद्धान्त के कोई मज़हब रह ही नहीं सकता।''

''हां, परन्तु हिन्दू मज़हब नहीं है। इसीलिए इसमें यह स्वतन्त्रता है, परन्तु रमण! इस पर भी सब हिन्दू हैं।''

''फिर भी इसमें कुछ तो ऐसी बात होगी, जिससे सब हिन्दू हैं।''

''यही कि सबको सब ओर जाने की स्वतन्त्रता है।''

''परन्तु वे इकट्ठे किस काम पर होते हैं?''

''प्रत्येक विषय में नेता जो नारा लगाता है, लोग उसे सुनते हैं और फिर उस समय उस नारे के अधीन काम करने लगते हैं। यही कारण है कि हिन्दू समाज में सैकड़ों धर्म हैं। अब देखो, गांधीजी ने नारा लगाया है 'अहिंसा' और मांस खाने वाले भी गांधीजी के पीछे हो गये।''

''यही तो गांधीजी की असफलता रही है। कोई भी अहिंसात्मक नहीं है।''

इसी समय एक अन्य व्यक्ति वहां आ पहुंचा। वह दिल्ली कांग्रेस का प्रधान चौधरी हरीराम था। उसने आते ही कहा, ''बदरीप्रसाद! चलो, तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें ले चलने के लिए गाड़ी लेकर आया हूं।''

''कहां?''

''रास्ते में बताऊंगा।'' इतना कहकर चौधरी अर्थ-भरी दृष्टि से महेश आदि की ओर देखने लगा।

बदरीप्रसाद समझ गया कि वह उनके सामने बात करना नहीं चाहता। इसलिए वह उठा और तैयार होने लगा।

:22:

प्रथम मिलन की रात मनोहरलाल की मां निर्मला मंगला को उसके कमरे में छोड़ने आयी, तो मनोहरलाल कमरे में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। मां को देखकर उसने कहा, ''तो मिल गयी फ़ुरसत बहू को?''

''देखो बेटा!'' निर्मला ने कहा, ''तुम्हारे पास तो यह जीवन-भर रहने के लिए आयी है और दूसरे लोग तो अभी विदा होने लगेंगे। इसलिए उनको मिलने का अवसर देना ही चाहिए था। लो, अब यह आ गयी है। देखो, मैं कॉफ़ी भेज रही हूं।''

''इसकी क्या आवश्यकता है। पेट तो भरा है।''

Central Library
168011
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह खाये-पीये को हज़म करने के लिए होती है।"

मंगला अभी तक खड़ी थी। सास ने उसे मनोहर के पास सोफ़े पर बिठा दिया और कहा, "बेयरा कॉफ़ी ला रहा है।" इतना कहकर वह चली गयी।

सास कमरे से बाहर गयी, तो मंगला पति के चरण-स्पर्श करने के लिए झुकी। वह पति के समीप ही सोफ़े पर बैठी थी।

"अरे! अरे!! यह क्या कर रही हो? यह यहां का रिवाज नहीं है।"

मंगला नहीं रुकी। उसने चरण-स्पर्श कर हाथ माथे से लगाये और मुसकराती हुई बैठी ही थी कि निर्मला बेयरा के साथ कमरे में आ गयी। बेयरा ट्रे में दो प्याले कॉफ़ी लिये हुए था।

सास ने दोनों के सामने तिपाई रख दी और बेयरे ने ट्रे में से प्याले निकालकर तिपाई पर रखे, तो मां बेयरे को लेकर बाहर चली गयी। जाते हुए उसने कमरे का द्वार बन्द कर दिया।

मनोहरलाल अपने स्थान से उठा और भीतर से द्वार की चिटकनी चढ़ा आया। मंगला विस्मय से पति के मुंह पर देखने लगी, तो मनोहरलाल ने कहा, "मैं श्रीमतीजी से 'अन-डिस्टर्ब्ड' भेंट चाहता हूं।"

मंगला मुसकरा दी। मनोहर विमोहित-सा मंगला का मुंह देखने लगा।

आख़िर मंगला ने पूछा, "क्या देख रहे हैं?"

"अपनी ख़ुशी और सौभाग्य का अनुमान लगा रहा था।"

"तो कितनी प्रसन्नता हुई?"

मनोहरलाल ने अपनी जेब में हाथ डाला। एक डिबिया जेब से निकाली और उसे खोलकर उसमें से अंगूठी निकाली और मंगला के दायें हाथ की अंगुलि में चढ़ाकर बोला, "मेरी प्रसन्नता की यह प्रथम किस्त है।"

"परन्तु यह तो बहुत सामान्य-सी किस्त है।"

"सामान्य नहीं है रानी! इसका दाम पांच हज़ार रुपया कहीं से भी प्राप्त किया जा सकता है।"

"अच्छी बात है। कभी पता करूंगी। इस पर भी, मैं तो आपका मूल्य इससे बहुत अधिक समझती हूं, जितना मोल आप इस अंगूठी का पांच हज़ार कह रहे हैं, उससे कहीं अधिक।"

"परन्तु यह तो मैंने तुम्हारे मोल की बात कही है। उसी की पहली किस्त कह रहा हूं।"

"ओह! तब तो यह बहुत अधिक है। आप तो लुट रहे हैं।"

"तो क्या दाम समझती हो अपना?"

"है तो बहुत ही सामान्य और वह मैंने चरण-स्पर्श करके प्राप्त कर लिया है।"

मनोहरलाल को समझ आने लगा था कि वह हिन्दू-समाज के रीति-रिवाज की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात कर रही है। इसलिए उसने अपने मन की बात पुन: कह दी। उसने कहा, ''परन्तु मैंने बताया न कि हमारे घर में वह दाम नहीं चलता है। प्रत्येक घर में आदर-सत्कार का अपना-अपना सिक्का चलता है।''

मनोहर ने कॉफ़ी का प्याला उठाकर चुस्की लगाते हुए कहा, ''लो पीयो! मैं अपना मूल्य अभी बताऊंगा।''

''ओह! पहले बता रखते, तो मैं कहीं से बटोरकर लाने का यत्न करती।''

''वह मूल्य तुम्हारे पास है। उसे देखकर ही मैंने तुम्हें यहां लाने का प्रस्ताव किया था।''

''क्या देखकर प्रस्ताव किया है?''

मनोहर खिलखिलाकर हंसते हुए बोला, ''पहले कॉफ़ी पी लें। इसे पीते हुए हंसने से तो यह छलककर गिर भी सकती है।''

''ओह! तो पहले इसे समाप्त कर लें।'' वह भी चुस्कियां लगाने लगी।

''तुम जब से यहां—मेरा मतलब है—इस कमरे में आयी हो, मुसकरा ही रही हो?''

''जी। अपने भाग्य की बात स्मरण कर किसका चित्त प्रसन्न नहीं होता।''

''क्या सौभाग्य मिला है तुम्हें यहां आने पर?''

''वह वर्णनातीत है। उस दिन जब माताजी की कोठी में आपके दर्शन हुए थे, तो मैं इस सौभाग्य की लालसा करने लगी थी। इस पर भी सन्देह था कि इसे प्राप्त कर सकूंगी और आज इसे प्राप्त कर लेने पर प्रसन्न हूं।''

''परन्तु उस दिन तो तुम्हें वहां किसी अन्य को दिखाने के लिए लाया गया था?''

''हां, परन्तु वह 'सब-स्टैण्डर्ड' व्यक्ति प्रतीत हुआ था।''

''देखने में तो बहुत सुन्दर और स्वस्थ प्रतीत होता था।''

''इस पर भी मुझे पसन्द नहीं था। उसने एक ही बात कही थी और मैं समझ गयी थी कि वह निम्नकोटि का जीव है।''

''क्या कहा था उसने? मुझे बता दो, जिससे मेरे मुंह से वही बात न निकल जाये।''

''आपसे वैसी आशा नहीं कर सकती। आपको किसी दूसरे की सेवा की प्रतीति नहीं होती। जो जैसा होता है, वैसा ही दूसरों को बताने की इच्छा रखता है।''

मनोहरलाल समझा नहीं कि उसकी पत्नी मिस्टर शर्मा की किस बात को ना-पसन्द कर रही है? परन्तु इस समय उसकी लालसा किसी अन्य काम की ओर थी और कॉफ़ी समाप्त कर वह सोफ़े से उठा और उसे बैठक के कमरे से पीछे के कमरे में ले चलने के लिए मंगला से बोला, ''मेरा बेडरूम इधर है।''

''आपको नींद आ रही है? यह अभी सोने का समय नहीं है।''

''परन्तु बेडरूम में सोने के अतिरिक्त भी तो कुछ किया जाता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या ?"

"आओ, बताता हूं।"

मंगला समझ रही थी। वह हंस पड़ी और बोली, "आपसे भय लगने लगा है।"

"मैं तुम्हारी हत्या नहीं कर रहा।"

मंगला अपने स्वभावानुसार प्रातः चार बजे उठ बैठी और स्नानागार में चली गयी। मनोहरलाल की जब नींद खुली, तो उस समय तक मंगला सन्ध्योपासना से भी निवृत्त हो चुकी थी। मनोहरलाल ने उसे बैठक में विचारमग्न बैठे देखा, तो वह वहीं चला आया। मंगला उसे देखकर मुसकरा दी। मनोहरलाल समीप बैठ गया और पूछने लगा, "क्या बात है, मुसकरा क्यों रही हो ?"

"जिस बात का भय था, आपने वही किया है।"

"इस बात की लालसा तभी से कर रहा था, जब से मैंने तुम्हें देखा था। मैंने एक कल्पना की थी और मैं उसी का अनुभव करना चाहता था।"

"तो यही लालसा कर रहे थे ?" मंगला ने हंसते हुए पूछ लिया।

"हां।" मनोहरलाल ने कहा, "ये कपड़े तुम्हारी मां और मेरी मां की देन हैं। मैं तो उनके अतिरिक्त देखना चाहता था कि देवीजी क्या हैं ?"

"परन्तु जो कुछ इनके भीतर देखा है, वह भी तो मां की ही देन है। यह शरीर मां का ही निर्माण किया हुआ है।"

"और तुम कहां हो ?"

"मैं तो इसके भी भीतर हूं।"

"तो वहां तक पहुंचने का यत्न करूंगा।"

"अर्थात् इस शरीर को भी उतार फेंकना चाहेंगे ?"

इस पर दोनों हंस पड़े। मनोहरलाल ने हंसकर कहा, "तुम सच ही मंगलदायिनी हो। मैं ऐसी ही आशा करता था।"

"परन्तु शकुन्तला बहिन के पिताजी तो कहा करते थे कि केवल धन ही सर्वमंगला है।"

"वह तो कुछ हमारे पास भी है, परन्तु जानती हो, मोहिनी बहिन क्या कहती थी ?"

"क्या कहती थीं ?"

"जब मां तुम्हें ड्राइंगरूम में ले जा रही थी, तो वह कह रही थी कि अब इस कोठी में दीपक जलाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।"

"किसलिए ?"

"यह तुम उससे ही पूछ लेना। उसने तुममें कुछ तो देखा होगा, जो उसे अन्धकार दूर करता हुआ प्रतीत हुआ होगा।"

"मैं समझती हूं कि यह औपचारिक प्रशंसा है। जहां मैं रहती हुई आ रही हूं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली के बल्ब वहां भी जलाये जाते थे और यहां भी रात को जलाये ही गये थे।''

''वह तो तुमको दिखाने के लिए ही था, परन्तु यह कोठी तो तुमसे दीप्तिमान प्रतीत हो रही है।''

''तो आप भी मिथ्या ख़ुशामद करने लगे हैं ?''

मनोहरलाल हंस पड़ा। मंगला ने कह दिया, ''अब आप स्नान आदि से निबटिये। अल्पाहार का समय हो रहा है ?''

: 23 :

लाला रघुनन्दन के घर में एक व्यक्ति असन्तुष्ट भी था। वह थी, लालाजी के द्वितीय पुत्र गिरिधारीलाल की पत्नी रमा। उसका असन्तोष दहेज के विषय में नहीं था, वरन मंगला के माता-पिता की जाति के विषय में था। यह असन्तोष उसने उस दिन ही प्रकट कर दिया था, जिस दिन वह लुधियाना से अपने पति और दो बच्चों के साथ दिल्ली अपने देवर के विवाह पर आयी थी।

उसने वहां आते ही अपनी सास से कहा था,''माताजी ! मनोहर भैया की पत्नी के दर्शन तो कराइये। सुना है कि वह ब्राह्मण माता-पिता की सन्तान है।''

निर्मला ने कहा था, ''अब आयी हो, तो देखोगी ही। आज सायंकाल हम सब लड़की को देखने जा रही हैं। उसकी मेहंदी का शकुन भी करना है।''

''पर आप तो लाला जुगलकिशोर की लड़की की बात कर रही थीं और यहां आकर हम किसी अज्ञात ब्राह्मण की लड़की की बात सुन रहे हैं।''

''हां। यह अदल-बदल मनोहर ने की है। मैं तो नहीं चाहती थी, परन्तु जिसका विवाह होना है, उसकी भी तो बात सुननी थी।''

सायंकाल घर की तथा अन्य निकट सम्बन्धियों की स्त्रियां गयीं और लड़की को देखकर व शकुन डालकर तथा सेठजी के घर से चाय पीकर व मिठाई खाकर लौट आयीं, तो रमा ने गिला प्रकट करते हुए कहा, ''यह लड़की हमारे घर में खप नहीं सकेगी।''

रमा के यह कहने पर कि यह लड़की हमारे घर में खप नहीं सकेगी, बातों का सूत्र अपने हाथों में लेते हुए मनोहर ने कहा, ''भाभी ! मैं उसें यहां खपाने के लिए ला भी नहीं रहा।''

''तो किसलिए ला रहे हो ?'' रमा का प्रश्न था।

''इस घर को सुख-सुविधा का रस-भोग कराने के लिए।''

''अर्थात् भंवरे की भांति रस चूसकर उड़ जाने के लिए ?''

इस पर रमा की जेठानी सुशीला को हंसी सूझी। उसने कह दिया, ''परन्तु भंवरा तो काले रंग का होता है और यह गोरे रंग की है। साथ ही भंवरे की छह टांगें होती हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी दो हैं।''

''मेरा अभिप्राय शरीर की बनावट से नहीं है, वरन् ब्राह्मण और वैश्य की जातीय विशेषताओं से है। ब्राह्मण धन अर्जन करना नहीं जानते। वे व्यय करने वाली श्रेणी के होते हैं।''

''वह तो सब स्त्रियां होती हैं।'' रघुनन्दनलाल ने मुसकराते हुए कह दिया।

''अर्थात् सब स्त्रियां ब्राह्मणी होती हैं?'' मनोहरलाल का प्रश्न था।

''हां।'' पिता ने कहा, ''रमा बेटी द्वारा बताये गये लक्षणों से तो यही प्रतीत होता है, परन्तु मैं ऐसा नहीं मानता। मैं ब्राह्मणों को समाज का मस्तिष्क मानता हूं और मस्तिष्क हाथों को—मेरा अभिप्राय है वैश्यों को—धन-अर्जन में दिशा देने का कार्य करता है। मैं इसे भी आवश्यक और उपजाऊ कार्य ही मानता हूं।

''देखो रमा! मैं अपने को एक ब्राह्मण मानता हूं। मैं जीवन-भर मस्तिष्क के ज़ोर से क़लम चलाता रहा हूं और स्वयं कुछ अधिक अर्जन नहीं कर सका, परन्तु बुद्धि ने तुम सबको धन-उपार्जन पर लगाया है और लाभयुक्त कामों पर लगाया है। मैं समझता हूं कि मैं भी तुम सबके लाभ वाले कामों में साझीदार हूं।''

''क्यों जी!'' रमा ने अपने पति से पूछ लिया, ''क्या कारख़ाने का कार्य पिताजी की सम्मति से होता है?''

गिरिधारीलाल ने मुसकराते हुए कहा, ''वह रमादेवी की सम्मति से होता है, परन्तु रमादेवी को मेरा सलाहकार पिताजी ने बनाया है। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं हो सकती कि सलाहकार पिताजी ही हैं।''

''अर्थात् हम सब ब्राह्मण जाति के हैं?'' रमा ने युक्ति से पराजित होते हुए कहा।

मंगला की रूप-रेखा देखकर रमा प्रसन्न नहीं थी। उसका मंगला के घर में खप जाने की बात कहने का प्रयोजन यही था कि वह गौरवर्णीय है और परिवार में सब गहरे भूरे रंग के हैं। इसलिए मंगला सब घरवालों से विलक्षण प्रतीत होगी, परन्तु वह अपने गहरे रंग की बात कह नहीं सकी। इसलिए धनोपार्जन की योग्यता पर वार्तालाप होने लगा था।

अब बात पुनः रघुनन्दनलाल ने कही, ''एक वर्ष से ऊपर व्यतीत हो चुका है, लाला जुगलकिशोर की लड़की को यहां लाये जाने की चर्चा सुन रहा था, परन्तु एकाएक पिछले सप्ताह लालाजी के घर की सेविका की लड़की की बात हुई, तो मैं जुगलकिशोर से मिला और मैंने लड़की के विषय में पूछताछ की।

''लालाजी ने कहा, 'उस घर का मंगलमय प्रकाश आप के घर में जा रहा अनुभव करता हूं।'

''मैंने हंसी-हंसी में पूछ लिया, 'तो आप उसे अपने घर में ही क्यों नहीं रख लेते? मेरा अभिप्राय था कि घर के लड़के से उसका विवाह क्यों नहीं कर लिया?' इस पर लालाली बोले, 'लड़का मूर्ख है। विलायत में ही एक लड़की के चंगुल में फंस गया, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अनमोल मोती को बाहर भेजने की योजना बनने लगी। मैंने तो उसके लिए एक ब्राह्मण का घर ही विचार किया था, परन्तु वह ब्राह्मण भी बनिया सिद्ध हुआ। उसने हमारी लड़की को और उसे मिलने वाले दहेज को पसन्द किया। वह भी ठीक कहता है कि धन मंगलमय भवानी है। उसका घर में आह्वान करना शुभ है। आपके मनोहरलाल ने इस मोती को पसन्द कर अपने घर ले जाने का विचार प्रकट किया है। मैं समझता हूं कि आप भी घाटे में नहीं रहे।' ''

उस समय तो रमा चुप रही, पर जिस दिन डोली घर पर आयी और वह ड्राइंगरूम में लड़की के दर्शन कर चुकी, तो उसके मन का असन्तोष फूटकर निकलने लगा। सायंकाल की चाय के स्थान पर सबने पृथक्-पृथक् आवश्यकता के अनुसार चाय-कॉफ़ी ली थी। मध्याह्न का भोजन सब मनोहर की ससुराल से कर आये थे और सबको चाय-कॉफ़ी आवश्यकतानुसार मिल गयी थी। गिरिधारीलाल कपड़े बदलने के लिए अपने कमरे में गया, तो वहां रमा पहले ही उपस्थित थी। वह बच्चों से पूछ रही थी कि उनकी चाची कैसी है?

गिरिधारी की सबसे बड़ी बेटी प्रमिला बता रही थी, ''मुझे तो वह बहुत अच्छी लगी है।''

प्रमिला पांच वर्ष की थी। लुधियाना के एक नर्सरी स्कूल में पढ़ती थी। वह 'बहुत अच्छी' शब्द की व्याख्या भी करने लगी थी। उसने कहा, ''मुझे वह हमारे स्कूल की सिस्टर के समान ही लगी थी।''

''कौन सिस्टर?'' रमा ने पूछ लिया।

प्रमिला का उत्तर था, ''हेड सिस्टर।''

वह एक ऐंग्लो-इण्डियन कुंवारी लड़की थी। वह स्कूल में भागीदार भी थी। स्कूल को व्यापारिक दृष्टि से चलाया जा रहा था और केवल धनिकों के बच्चे ही वहां शिक्षा पा सकते थे। स्कूल की फ़ीस और अन्य व्यय सामान्य परिवारों के मान के नहीं थे।

रमा कहने लगी कि रंग से ही हेड सिस्टर के समान है न? अभी बात उसके मुख में ही थी कि गिरिधारीलाल आ गया। गिरिधारीलाल के आते ही रमा ने पति से पूछ लिया, ''क्यों जी! देखी है अपनी छोटी भाभी?''

''परन्तु रमा! यदि उसका रंग हमारे परिवार वालों के समान नहीं, तो उसमें उस बेचारी का क्या दोष है? मुझे तो बहुत ही भोली-भाली लगी है।''

इस पर रमा ने पूछ लिया, ''हम लुधियाना कब जा रहे हैं?''

''वहां हमारी अनुपस्थिति से क्या ख़राबी हो रही है?''

''लड़की की पढ़ाई में बाधा पड़ रही है और मैं अब जाते ही विनोद को भी वहां भरती करवाना चाहती हूं।''

गिरिधारीलाल समझ रहा था कि सेठजी की लड़की से मनोहर का विवाह होता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कम-से-कम एक-एक सूट पति-पत्नी को और कुछ नक़द रुपया भी मिलता। इसीलिए रमा असन्तुष्ट है।

उसने अपने मन से ही कह दिया, ''अभी कल यहां कोठी में दावत है। हमारे मित्र और बिरादरी के लोग आ रहे हैं और परसों सेठजी की लड़की के विवाह पर हम सब आमन्त्रित हैं। उसके बाद ही जाने की बात सोच सकते हैं।''

''मैं तो बच्चों के साथ आज रात की गाड़ी से ही जाना चाहती हूं।''

''तो ऐसा करो। कल प्रात: अपनी मोटरगाड़ी में चली जाओ। मध्याह्न तक पहुंच जाओगी।''

''ठीक है। यहां ठहरने से अब कोई लाभ नहीं।''

''लाभ हो भी सकता है।''

''क्या ?''

''पिताजी हमें मनोहर के विवाह के उपलक्ष्य में कुछ तो देने ही वाले हैं।''

''जब मनोहर की ससुराल से ही कुछ नहीं आया, तो वह क्यों और कहां से देंगे ?''

''वह कह रहे थे कि वहां से कुछ न मिलने की कमी वह अपने पास से पूरी कर देंगे।''

''यही तो कह रही हूं कि हमारी जेब से निकालकर हमको ही देंगे। क्या यह भी देना होता है ?''

''कहते थे कि अपने पास से देंगे।''

''उनके अपने पास कहां से आता है ?''

''उनको पेंशन मिलती है।''

''हमारे पास से गुज़र करते हैं और पेंशन जमा करते रहते हैं। यही तो कह रही हूं कि हमारी जेब से निकालकर ही हमको देने लगे हैं। मैं इस प्रकार की धोखा-धड़ी में सम्मिलित होना नहीं चाहती।''

''ठीक है, तुम कल जा सकती हो, लेकिन मैं दो दिन पीछे जाऊंगा।''

रात भोजन के समय सब खाने के कमरे में एकत्रित हुए और मेज़ के चारों ओर बैठ गये। भोजन परोसा गया और खाया जाने लगा। रघुनन्दनप्रसाद ने बात आरम्भ करते हुए कहा, ''बहू! अभी तो तुम्हें सब अपरिचित-सा लग रहा होगा।''

मंगला ने मुसकराते हुए कहा, ''नहीं पिताजी ! मुझे इस घर में कुछ भी अपरिचित प्रतीत नहीं हो रहा।''

मंगला के इस कथन पर उसके श्वसुर ने पूछ लिया, ''क्यों, क्या कोई पूर्व-जन्म का सम्बन्ध स्मरण कर रही हो ?''

''जी नहीं।'' मंगला का सतर्क उत्तर था, ''मैं मानव-स्वभाव की बात कर रही हूं। मुझे यहां माताजी तथा वहां की माताजी में कुछ अन्तर प्रतीत नहीं हो रहा। माता-माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में समानता ही दिखाई दी है। यही बात पिता-पिता में भी समझ आ रही है।''

''परन्तु,'' रघुनन्दन ने पूछ लिया, ''लाला जुगलकिशोर तो लाखों कमा रहे हैं और मैं साढ़े-चार सौ पेंशन ही पाता हूं।''

''पिताजी!'' मंगला ने कहा,'' यह माया तो बहती सरिता है, इसका क्या भरोसा है। किनारे पर खड़े व्यक्ति का कभी पांव फिसला और वह इसमें गिरा, तो भविष्य के अन्धकार में विलुप्त भी हो सकता है। मुख्य बात है, इस सरिता के किनारे पर खड़े हुओं की। पांव फिसलने पर भी वही सहायक होने वाले हैं। डूबते प्राणी को वही पुन: बचाकर सूखे किनारे पर लाने की क्षमता रखते हैं। मैं उन्हीं में मानवता की बात कर रही हूं।''

मंगला की बात सुनकर निर्मला गद्‌गद हो उठी। उसने कहा, ''चिरंजीव रहो बेटी! तुम्हारे विचार बहुत सुन्दर हैं। अब तुम भी इस किनारे पर आ खड़ी हुई हो और मैं समझती हूं कि तुम भी नदी में गिरकर बह जाने वालों की रक्षा में सहायक होगी।''

रमा को यह सब वागाडम्बर ही लगा। वह समझ रही थी कि वे नदी के किनारे नहीं खड़े हैं। वे तो नदी में स्नान करते हुए उसमें अपने पापों को धो रहे हैं। किसी रेगिस्तान से आयी यह लड़की हमें स्नान करते देख, हमसे ईर्ष्या करने लगी है। इसीलिए हमें नदी में बह जाने का भय दिखा रही है। इस पर भी वह मौन रही। गिरिधारीलाल मंगला के कथन को आंशिक रूप में ही समझ रहा था। इसलिए उसने पूछ लिया, ''परन्तु मंगला! हम तो गंगाजी में स्नान करते हुए अपने जन्म-जन्मान्तर के पाप धो रहे अनुभव करते हैं।''

''परन्तु भाईसाहब!'' मंगला का कहना था, ''लोग तो गंगाजी में भी डूबते देखे गये हैं। इसके विपरीत वे लोग भी देखे जाते हैं, जो यमुना अथवा कोसी में स्नान करते हुए भी शरीर अथवा मन को पवित्र करते रहते हैं। यह सब स्नान करने के व्यवहार पर निर्भर करता है। भाई साहब, धन महान् शक्ति का प्रतीत होता हुआ भी जड़ है। इसका प्रयोग अथवा दुरुपयोग तो करने वालों पर निर्भर करता है।''

अब रघुनन्दन ने बात बदल दी और कहा, ''लालाजी का लड़का बदरीप्रसाद अगामी निर्वाचन लड़ेगा। ऐसी घोषणा की जा रही है।''

''वह नदी के गहरे जल में तैरने जा रहे हैं।'' मंगला ने अपना विचार बता दिया।

''और नदी के पार भी जा सकता है।'' मनोहरलाल ने पहली बार वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा।

उत्तर पिता ने ही दिया, ''परन्तु क्या वह पार के किनारे को जानता भी है?''

''अवश्य जानता होगा।'' सोहनलाल ने बात आगे चलायी।

''देखने की बात यही है। मुझे तो वह अभी तक प्रवाह में निस्सहाय बहता प्रतीत हो रहा है।'' पिता ने सोहन को अपने मन की बात बता दी।

रमा इन बातों का सिर-पैर समझ नहीं पा रही थी। उसने अपने मन की बात कह दी, ''पिताजी। मैं कल लुधियाना जा रही हूं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, गिरिधारी ने बताया है। तुम्हारे भाग का विदाई का शकुन गिरिधारी के हाथ भेज दूंगा। मैंने तो उसे कहा है कि कल की दावत में रह जाती, तो ठीक होता।"

"नहीं पिताजी, बच्चों की पढ़ाई में विघ्न पड़ रहा है।"

रघुनन्दन मुसकराकर चुप हो रहा।

अगले दिन मोटर में लुधियाना की ओर जाती हुई रमा घर के वातावरण में परिवर्तन अनुभव कर रही थी। उसे लगा कि घर में एक जादूगरनी आ गयी है और वह घर-भर को विकृत मार्ग पर चला रही है। पहले जब भी वह दिल्ली जाती थी, तो घर में रुपये-पैसे और लेन-देन की चर्चा हुआ करती थी। इस नये जीव के घर में आने पर बातें पहेलियों में होने लगी थीं और वह भी धन-सम्पदा तथा व्यापार के विषय में नहीं थीं।

: 24 :

प्रातः अल्पाहार के बाद जब मनोहरलाल अपने काम पर चला गया, तो मंगला अपने कमरे में जाकर अपने नवीन जीवन के भावी कार्यक्रम पर विचार करने लगी थी कि उससे मिलने शकुन्तला, नोरा और शोभा आ पहुंचीं। निर्मला उनको साथ लेकर भीतर आयी थी। मंगला ने उठकर उनका स्वागत किया। नोरा ने मंगला को गले मिलकर अपनी प्रसन्नता प्रकट की। गले मिलते हुए उसने पूछ लिया, "प्रसन्न हो न ?"

जब मंगला और वह मिलने लगीं, तो निर्मला कमरे से बाहर निकल गयी। वह उनको पृथक में मिलने का अवसर देना चाहती थी।

उत्तर में मंगला केवल मुसकरा दी। शोभा ने कहा, "मुझे इस विवाह से हार्दिक प्रसन्नता हुई है।"

"भाभी!" मंगला ने सबको बैठाते हुए कहा, "जब से भैया बदरीप्रसाद विलायत से लौटे थे, मैं वहां अपने को कइयों के सुखमय जीवन-मार्ग में कांटा बन गयी अनुभव करने लगी थी। इसलिए उनके मार्ग से एक ओर हटकर उनके मार्ग को सुखमय बनाने का यत्न करने लगी हूं। मेरा प्रयास आज फलीभूत हो रहा प्रतीत हुआ है।"

शकुन्तला ने गम्भीर होकर कहा, "मैं भी समझने लगी हूं कि विवाह तो होना ही चाहिए था। यह सौभाग्य की बात है कि तुम कहीं दूर नहीं गयीं। कदाचित हम अपना स्वाध्याय अब भी जारी रख सकेंगी।"

"परन्तु शकुन्तला बहिन! मैं तुम्हें दूर जा रही अनुभव कर रही हूं। स्वाध्याय में तुम्हारा सहयोग और तुमसे प्राप्त होने वाले गुणों का स्त्रोत अवरुद्ध हो गया प्रतीत होता है।"

"मैं यत्न करूंगी कि हमारा सहयोग चलता रहे। पिछले तीन-चार वर्ष में हमने बहुत प्रगति की है। प्रगति की वह गति तो नहीं रह सकती। हां, यह बनी रहे, इसके लिए विचार कर रही हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभा ने एक बात पूछ ली, "तुम्हारी मां ने आते हुए तुम्हें सूटकेस में क्या दिया है?"

"वह मैंने नहीं देखा। मां ने मुझसे चोरी-चोरी उसे तैयार किया था और वहां से विदा होते समय वह मेरे हाथ में थमा दिया था। जो कुछ भी उसमें होगा, वह मैं एकान्त में बैठकर देखूंगी।"

"तो तुम्हारी सास ने वह खोलकर नहीं देखा?"

"वह अभी तक इस कमरे में नहीं आया। उनके पास ही है। चाबी मेरे पास है।"

"हमने माताजी से पूछा था कि तुम्हारी मां ने तुम्हें क्या दिया है? माताजी ने बताया है कि उनहोंने एक सूट और सेठजी ने कुछ नक़द रुपये तुम्हारी मां को तुम्हें देने के लिए दिये हैं। वह एक दिन बाज़ार गयी थीं और वहां से वह सूटकेस और न जाने क्या-क्या ख़रीदकर लायी हैं और फिर यह सूटकेस उन्होंने अपने कमरे में ही तैयार किया था।"

मंगला ने कह दिया, "मैं यहां माताजी से उसे मांगूंगी नहीं। बस, यही तो उस कोठी से लेकर आयी हूं। अन्य किसी प्रकार का दहेज इनको नहीं मिला। अभी तक तो पतिदेव तथा उनके घरवालों के मन पर इसकी प्रतिक्रिया दिखाई नहीं दी। इस पर भी जो कुछ मिला है, वह मैं उनसे मांगूंगी नहीं।"

उसी समय निर्मला मंगला की मां का दिया हुआ सूटकेस उठाये हुए कमरे में आ गयी। उसने वह सूटकेस सबके बीच सेण्टरटेबल पर रखते हुए कहा, "मैं देख रही थी कि पहले तुम अपने कमरे में टिक जाओ, तब तुम्हारा सामान वहीं पहुंचा दूंगी। यह मैं नौकर के हाथ भेजना नहीं चाहती थी। इसलिए स्वयं ही उठा लायी हूं।"

इस समय मंगला ने अपने पर्स में से चाबी लिकालकर अपनी सास की ओर करते हुए कहा, "आप इसे खोलकर देख लीजिये। यदि इसमें कुछ मेरे लिए है, तो दे दीजिये। बस, यही कुछ तो मां ने दिया है।"

"दो दिन हुए तुम्हारी मां ने यह कहा था, 'आपने एक अकिंचन की लड़की को पसन्द किया है। इसलिए आपको समझ लेना चाहिए कि मैं कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हूं।' मैंने उनसे कहा था, 'मंगला मनोहर का अपना चुनाव है और उसने यह देखते हुए कि उसकी आर्थिक स्थिति क्या है, मंगला को पत्नी बनाना स्वीकार किया है। इसलिए हम तो विवाह के दिन लड़की ही लेने आयेंगे। उसके पहनने के कपड़े भी हम यहां से लेकर ही आयेंगे।"

"देखो बेटी!" निर्मला ने आगे कहा, "इस विषय पर मनोहर की अपने पिताजी से बात हुई है। उन्होंने तो यह कहा था कि क्या मनोहर की ससुराल से बहुत लम्बा-चौड़ा दहेज आये, तो मैं आधी रोटी अधिक खाने लगूंगी? तुम्हारे यहां आने के उपरान्त भी मैंने उनसे यह कहा था कि तुम्हारे बड़े ज्येष्ठ के विवाह के समय तो इतना फ़र्नीचर आया था कि कोठी का बरामदा भर गया था। इस पर उन्होंने कह दिया कि उस फ़र्नीचर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रखने के लिए सोहन को अलग कोठी का प्रबन्ध करना पड़ा था। अब यह विवशता नहीं है। अत: अब मैं सन्तुष्ट हूं। मैंने मनोहर से पूछा था। उसने कहा है कि वह सब प्रकार से सन्तुष्ट है। वह तुमसे सर्वथा प्रसन्न है।''

नोरा और शोभा हंस पड़ीं। बात मंगला ने कही, ''मैं नहीं जानती कि मां ने इसमें क्या भर दिया है। यह कुछ भारी भी नहीं। इस पर भी मैं चाहती हूं कि आप ही इसे खोलकर देख लें। एक निर्धन मां की विदा होने वाली लड़की की भेंट भी देख लें।''

निर्मला अनिश्चित-मन बैठी रही। उसने मंगला के मुंह पर देखा, तो वह अपनी स्वाभाविक मुसकराहट से सास के मुंह पर देखती हुई चाबी देने के लिए हाथ बढ़ाये हुए थी।

निर्मला ने कहा, ''अच्छा, तुम ही खोलकर दिखाओ। मैं बैठकर देखती हूं। यदि मेरे लिए कुछ इसमें होगा, तो मैं ले लूंगी।''

इस स्वीकृति पर मंगला ने चाबी लगाकर सूटकेस खोल दिया।

नोरा और शोभा भी सूटकेस में रखी वस्तुएं देखने के लिए उत्सुक थीं। सूटकेस खुला, तो सबसे ऊपर रामचरितमानस की पुस्तक गोरखपुर गीताप्रेस की छपी और कपड़े की जिल्द वाली रखी थी। पुस्तक खोलकर शोभा ने देखा। उस पर लिखा था—'मंगला की मां की एकमात्र भेंट उसके विवाह के अवसर पर।' नीचे सुखिया के हस्ताक्षर थे।

एक रेशमी ज़रीदार साड़ी-जम्पर था। उस पर एक कार्ड पिन किया हुआ था। कार्ड पर लिखा था—'मंगला बेटी के लिए। उसकी मां तुल्य सदारानी की भेंट।'

एक पर्स था। उस पर लगे कार्ड पर लिखा था—'बेटी मंगला के लिए उसकी जीवन-यात्रा के लिए भाड़ा।' नीचे जुगलकिशोर के हस्ताक्षर थे। पर्स कुछ भारी था। निर्मला ने पर्स उठाकर मंगला की ओर करते हुए कहा, ''तनिक देखो तो! यह ठूंस कर भरा है। क्या दिया है भाईसाहब ने?''

मंगला ने पर्स खोला और उसमें एक बड़ा-सा बण्डल नोटों का था। मंगला ने नोट निर्मला की ओर बढ़ा दिये। निर्मला ने शोभा की ओर देखकर कहा, ''गिन डालो।''

शोभा उत्सुकतावश पकड़कर गिनने लगी। सब नये नोट थे। शोभा ने बण्डल के ऊपर और नीचे के नोट का नम्बर देखकर कह दिया, ''एक हज़ार नोट हैं।''

''अभिप्राय यह है कि एक लाख रुपया है।'' शोभा के मुख से निकल गया।

एक बन्द लिफ़ाफ़े में एक पत्र और सौ-सौ रुपये के पांच नोट थे। पत्र सुखिया का था। यह मंगला के पति के लिए था। लिखा था—प्रिय मनोहरलालजी! यह मेरी जीवन-भर की कमाई का अधिकांश है। जो कुछ मेरे पास एकत्रित हुआ है, उसका अधिकांश मैं आपको दे रही हूं। यह मेरी प्रथम और अन्तिम भेंट है। अब मैं भी इस कोठी को छोड़ने का विचार कर रही हूं। मैं हरिद्वार अथवा उससे भी कहीं दूर रहने का प्रबन्ध करना चाहती हूं। जाते समय मिलूंगी और शेष भी तुम्हें देती जाऊंगी। आशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती हूं कि तुम मंगला को सुखी रखोगे।'

सूटकेस में एक फ़ोटोग्राफ़ भी था। इसमें एक पांच-छह मास की बच्ची सुखिया की गोद में थी। बच्ची ने केवल कुर्ती पहनी हुई थी।

यह एक कार्ड पर चिपका हुआ था और कार्ड के पीछे लिखा था—'एक समय मेरे मन में बच्ची को पण्डों के पास देकर गंगा-प्रवाह लेने का विचार बना था और उस समय बच्ची और अपनी फ़ोटो उसे दे जाने के लिए उतरवायी थी। यह योजना सफल नहीं हो सकी और फ़ोटो रखी थी। यह लड़की को दिये जा रही हूं।'

इसके अतिरिक्त मंगला के नित्य पहनने के कपड़ों के दो सूट थे। शेष सूटकेस ख़ाली था।

इन सब वस्तुओं को देखकर मंगला के मानस-चित्रपट पर अपने होश संभालने के समय से लेकर उस दिन तक मां के वात्सल्य और स्नेह का पूर्ण वृत्तान्त चलचित्र की भांति स्फुरित होने लगा और उसकी आंखें तरल हो गयीं। शकुन्तला भी तरल नेत्रों से उन सब वस्तुओं को देख रही थी।

निर्मला ने मंगला की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "तुम्हारी मां ने तो तुम्हें बहुत कुछ दिया है। मैं आशा करती हूं कि इसमें से कुछ तो हमें और अपने पति को बांट सकोगी।"

मंगला ने समझा कि उसकी सास लालाजी से मिले रुपयों के विषय में कह रही है। इसलिए उसने नोटों का बण्डल सास को देते हुए कहा, "माताजी ! कुछ का क्या अर्थ हो सकता है ? मैं तो यह सब आपको देना चाहती हूं।"

निर्मला ने रुपया नहीं लिया। उसने कहा, "मैं इसके विषय में नहीं कह रही। मैं तो तुम्हारी माताजी की भेंट के विषय में ही कह रही थी।"

मंगला समझी कि उसकी सास हंसी कर रही है। इसलिए उसने गालों पर से आंसू पोंछते हुए कहा, "मां के पास जो कुछ था, वह उन्होंने आपके पुत्र को दे दिया है। उनके वेतन और उनसे एकत्रित इन रुपयों का मुझे ज्ञान नहीं था। मेरे साथ उन्होंने कभी इस विषय पर बात नहीं की। मैं तो यही समझा करती थी कि हम माताजी के घर में उनके किसी निर्धन सम्बन्धी की भांति रहते हैं और वह अपनी उदारता से हमें आश्रय दिये हुए हैं।"

"ठीक है।" निर्मला ने गम्भीर हो कहा, "परन्तु बेटी ! मैं इन रुपयों के विषय में नहीं कह रही। मैं तो इस भेंट के विषय में कह रही हूं।" उसने तुलसीकृत रामचरित-मानस की प्रति सूटकेस में से उठाकर उसे दिखाते हुए कहा, "मेरा अभिप्राय है कि इसमें से पढ़कर हमें भी सुनाया करोगी या नहीं ?"

मंगला ने झुककर सास के चरण-स्पर्श करते हुए कहा, "मांजी ! भला इसके भी कहने की आवश्यकता है ? यह तो गंगा की भांति बिन कहे भारत-भूमि पर बह रही है। कहा भी है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगल करनि, कलि-मल हरनि, तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति क्रूर कविता सरित की, ज्यों सरित पावन पाथ की॥

:25:

मनोहरलाल के विवाह के उपलक्ष्य में लाला रघुनन्दनलाल की ओर से एक बृहत् भोज दिया गया। उसमें लगभग पांच सौ व्यक्ति आमन्त्रित थे। आमन्त्रितों में लाला जुगलकिशोर के घरवाले भी बुलाये गये थे। मंगला की मां उस दिन आयी थी और मंगला को अपने घर पर ले गयी थी। मां ने एकान्त में बिठाकर लड़की से पूछा था, "कैसा अनुभव कर रही हो ससुराल में ?"

"मां! शकुन्तला बहिन का अभाव तो अनुभव हुआ है। अभी और कुछ नहीं कह सकती।"

"पति से एकान्त में मिली हो ?"

"हां, मां! इसकी तो आशा ही थी।

"प्रात: स्वाध्याय के समय स्वभाववश जाग पड़ी थी, परन्तु वहां न तो शकुन्तला बहिन थी और न ही मेरे स्वाध्याय की पुस्तकें।"

"अब तुम्हें अपना पुस्तकालय निर्माण करना होगा।"

"यत्न करूंगी। पुस्तकों के अभाव में आज रामचरितमानस का पाठ करने लगी थी। रामायण रसमय ग्रन्थ तो है, परन्तु जिन लोगों के लिए वह रचा गया है, मैं अपने को उनसे अलग समझती हूं। काव्य-रस के अतिरिक्त, मैं जब उनके भाव में जाना चाहती हूं, तो विरोधाभास में फंसकर रस-हीन हो जाती हूं।"

"हां, यह तो है। एक आदिकाल से चल रही शंका मनुष्य के मन में बनी रहती है। वह यह है कि पृथ्वी पर सब प्राणियों से श्रेष्ठ मनुष्य है, तो क्या मनुष्य से श्रेष्ठ भी कोई है? कुछ लोग मानते हैं कि नहीं। मनुष्य इस भूतल पर ही नहीं, वरन् ब्रह्माण्ड में भी सर्वश्रेष्ठ है। दूसरे, इसके निर्माता को इससे भी श्रेष्ठ मानते हैं। तुलसीदास इसी विचार के व्यक्ति थे। वह लिख गये हैं—

जब-जब होय धरम के हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
तब-तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

"और भगवान् श्रीकृष्ण ने भी तो अर्जुन को कहा है—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''ये दोनों एक ही श्रेणी के महापुरुष थे। इनके विचार का विरोध करने वाले भी हो चुके हैं, परन्तु वे हमारे समाज को पसन्द नहीं आये। हमारे लालाजी विरोधी विचार को ठीक समझते हैं।''

मंगला मां की बात सुनती रही, परन्तु वह जब सेठजी की बात कहने लगी, तो मंगला ने बात टोक दी और कहा, ''मां! यह सब ठीक है, परन्तु यह सब वक्तव्य मात्र है। कहने का ढंग अति सुन्दर होते हुए भी बुद्धिगम्य नहीं। बुद्धिगम्य दर्शनशास्त्र हैं और उन पर ही शकुन्तला बहिन से स्वाध्याय में वार्तालाप होता था। वह छूट गया है।

''यहां इस घर में माताजी परमात्मा पर अगाध विश्वास रखती हैं और उन्होंने ही एक दिन कहा था, 'इतना कह देने से कि भगवान् हमारी रक्षा और पालन कर रहा है, भला कौन मानेगा? आज के पढ़े-लिखे, तो हथेली पर सरसों जमाना चाहते हैं। ऐसा करके दिखाने वाले दर्शनशास्त्र हैं।'

''शकुन्तला बहिन ने पूछा था, 'क्या आपने पढ़े हैं?'

'' 'नहीं।' माताजी का कहना था, 'मेरी शिक्षा बहुत कम रही है, परन्तु मैंने सुना है कि जो हम मानते हैं, वह विद्वानों ने युक्ति से सिद्ध किया है।'

''इस पर शकुन्तला बहिन और मैं एक दिन नयी सड़क पर गयीं और वहां से दर्शनशास्त्रों के अनुवाद ले आयी थीं और तबसे हम दोनों उसको पढ़कर समझने का यत्न कर रही थीं।''

''ठीक है। अब तुमको अकेले ही स्वाध्याय जारी रखना होगा। नहीं तो जीवन नीरस हो जायेगा।''

मंगला सदारानी से भी मिली। सदारानी ने केवल इतना कहा, ''तुम्हारे जाने से घर अन्धकारमय प्रतीत होने लगा है। तुममें कुछ बात थी, जो इस घर को रसमय बनाये हुए थी। अब तो सब कुछ नीरस प्रतीत होने लगा है।''

यदि उसकी मां ने यह बताया होता कि माताजी आस्तिक विचारों की हैं, तो मंगला इस बात को औपचारिक मात्र समझती, परन्तु जीवन में पहली बार सदारानी को उसकी प्रशंसा करते सुनकर वह उनका मुंह देखती रह गयी। वह इस कथन का कारण जानना चाहती थी, परन्तु पूछ नहीं सकी। सदारानी ने भी बात बदल दी। उसने कहा, ''मैं तुम्हारे घरवाले को शकुन्तला के विवाह का निमन्त्रण देने आऊंगी, परन्तु उनके घर में हो रहे भोज के उपरान्त। तुम्हें तो बिन बुलाये आना चाहिए।''

''मेरी एक जेठानी नाराज़ होकर चली गयी हैं।''

''क्यों?''

''उन्होंने मुंह से तो कुछ नहीं कहा, परन्तु वह जाते समय मुझसे मिलने नहीं आयीं। जब वह मोटर में लुधियाना जाने के लिए बैठीं, तो मैं उनके चरण-स्पर्श करने के लिए कमरे से निकल मोटर की ओर गयी। उन्होंने मुझे आते देखा, तो ड्राइवर से कुछ कहा और गाड़ी चल दी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसके पति भी साथ गये हैं?"

"नहीं। वह अपने दोनों बच्चों को साथ ले गयी हैं।"

"इससे तो यह प्रकट होता है कि वह अपने पति से नाराज़ होकर गयी है।"

"प्रत्यक्ष में तो मैं ही कारण प्रतीत हुई हूं।"

"तुम्हारे पति तो तुमसे नाराज़ नहीं हैं?"

"अभी तक तो प्रसन्न ही प्रतीत हुए हैं।"

इस समय शकुन्तला मंगला को ढूंढ़ती हुई आ गयी। उसके आने पर सदारानी से वार्तालाप बन्द हो गया और शकुन्तला उसकी बांह-में-बांह डालकर उसे अपने कमरे में ले गयी।

"सुनाओ, कैसी बीती रात?" शकुन्तला ने मुसकराते हुए पूछा।

मंगला ने कहा, "शकुन्तला बहिन! कुछ विशेष नहीं। तुम भी तो ससुराल जा रही हो। सब पता चल जायेगा।"

"मैं वह नहीं पूछ रही, जो सब लड़कियों के साथ होता है। वह तो उपन्यासों में पढ़ा है और विचार भी किया है, परन्तु मेरा प्रश्न तो यह था कि उनका स्वभाव कैसा लगा?"

"वैसे तो उदार विचार के प्रतीत हुए हैं, परन्तु अभी सम्पर्क बहुत थोड़े समय के लिए हुआ है और इस बीच ठीक-ठीक ज्ञान होना सम्भव प्रतीत नहीं हुआ। ख़ैर, शकुन्तला बहिन! हमारे घर में भोज पर आओगी न?"

"नहीं। माताजी ने मना कर दिया है।"

"क्यों?"

"माताजी का कहना है कि इस घर के प्राणी उस दावत में नहीं जायेंगे।"

मंगला ने बात बदल दी। उसने पूछा, "भैया घर लौटे हैं अथवा नहीं?"

"नहीं। भाभी कल रात होटल में रही थीं और हम सब आशा कर रहे थे कि पति-पत्नी दोनों लौटेंगे, परन्तु भाभी अकेली आयी हैं।"

जब मंगला आयी थी, तो नोरा घर पर नहीं थी। वह पति के पास होटल में गयी हुई थी। लालाजी भी घर पर नहीं थे। वह अपने जाने के विषय में बताकर नहीं गये थे। केवल यह कह गये थे कि वह भोजन के समय नहीं आयेंगे।

मंगला भोजनोपरान्त अपनी ससुराल चली गयी।

सायंकाल नोरा आयी और सीधा अपनी सास के कमरे में चली गयी। इस समय लालाजी ऊपर की मंज़िल पर अपने कार्यालय में चले गये थे। शकुन्तला भी कार्यालय में थी। वहां लालाजी ने शकुन्तला से कहा, "बदरी ने अपने रहने के लिए पृथक् मकान दिल्ली सिविल लाइंस में ले लिया है।"

"कहां मकान लिया है?"

"मेडन होटल के पीछे श्रीराम रोड पर।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''कितने भाड़े पर लिया है ?''

''मैं वह मकान मोल लेकर उसे रहने के लिए दे दूंगा।''

''तो आपकी इच्छा से भैया पृथक् मकान ले रहे हैं ?''

''इच्छा से तो नहीं कह सकता। हां, मेरी स्वीकृति से ही उसने पृथक् रहना चाहा था और मैं मान गया हूं।''

इसमें कुछ भी कहने को नहीं था। शकुन्तला ने अपने विषय में बात करनी उचित समझी। उसने कहा, ''पिताजी ! मैंने कार्यालय के सब काग़ज़-पत्र ठीक प्रकार से फ़ाइल कर दिये हैं। आज तक का हिसाब भी लिख दिया है। अब आप इसे देख लें।''

लालाजी ने कह दिया, ''कल विवाह है और बहुत काम रह गया है। अत: मैंने सब कामों से दो दिन की छुट्टी कर दी है। कार्यालय भी दो दिन बन्द रहेगा। आशा करता हूं कि उसके उपरान्त तुम कार्यालय में काम कर सकोगी।''

''यह अभी नहीं बता सकती। इस विषय पर उनसे और उनकी माताजी से बात करनी पड़ेगी।''

''मैं समझता हूं कि शर्मा ने तुमसे विवाह की इच्छा ही इसलिए की है; क्योंकि तुम एक लाभ वाले काम पर लगी हो।''

''इस पर भी, पिताजी ! इससे अधिक लाभ वाला काम भी तो हो सकता है।''

''ठीक है। तुम उनसे सम्मति कर लेना। मैंने भी उनसे बात की है। उन्हें तुम्हारा इस कार्यालय में काम करना पसन्द नहीं।''

शकुन्तला ने अपनी मेज़ की दराज़ और अलमारी इत्यादि की चाबी पिताजी के सामने रख दी। लालाली ने चाबियों का गुच्छा उठाकर अपनी जेब में रख लिया, अर्थात् कार्यालय का चार्ज ले लिया।

अगले दिन शकुन्तला के विवाह की धूम-धाम रही। बहुत लम्बी-चौड़ी बरात आयी थी और उनका स्वागत भी अति भव्य स्तर पर किया गया था।

बरात सायं आठ बजे आयी थी। आते ही खाने-पीने का प्रबन्ध था। दस बजे विवाह आरम्भ हुआ और रात दो बजे विदाई हो गयी।

शकुन्तला के विवाह पर मंगला और मनोहरलाल उसके विदा होने तक उपस्थित रहे थे। रात के दो बजे वह अपनी कोठी में लौटे और जब सोने लगे, तो मनोहर हंस पड़ा।

मंगला विस्मय में पति का मुंह देखने लगी, तो उसने अपने हंसने का कारण बता दिया। मनोहरलाल ने कहा, ''तुम्हारी सहेली शकुन्तला का विवाह व्यापारिक काम समझ आया है और मैं समझता हूं कि लालाजी ने शर्मा को ठग लिया है।''

मंगला ने पति के मनोभावों को समझते हुए कहा, ''मैं समझती हूं कि इसमें लालाजी का इतना हाथ नहीं, जितना शकुन्तला के घरवाले का है। वह अपने आप मृगतृष्णा में फंसा मरुभूमि की ओर चल पड़ा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम्हारी सखी मरुभूमि है ?"

"वह तो पहले ही उसकी ओर जा रही थी। मेरा अभिप्राय है कि लालाजी के व्यवसाय में सक्रिय भाग ले रही थी। उसी व्यवसाय के लोभ में शर्मा ने शकुन्तला से विवाह किया है। व्यवसाय ही मरुभूमि है।"

"और मेरा व्यवसाय कैसा लगा ?" मनोहरलाल ने मुसकराते हुए पूछ लिया।

"यह मेरे जानने की बात नहीं। कारण यह है कि मेरा विवाह आपके व्यवसाय से नहीं हुआ।"

"और किससे हुआ है ?"

"आपसे, और मैं आपको मरुभूमि नहीं मानती। आप तो हरे-भरे खेतों की भांति उर्वरा भूमि हैं।"

मनोहरलाल को इस कथन से सन्तोष अनुभव हुआ था। रात देर हो चुकी थी और चार-पांच घण्टे नींद आवश्यक समझकर दोनों सोने की तैयारी करने लगे।

:26 :

शकुन्तला के घर में जीवन के विषय में विवाद विवाह के एक सप्ताह उपरान्त ही आरम्भ हो गया। एक सप्ताह-भर तो विवाह की धूम-धाम रही। शर्मा के गांव से उसके सम्बन्धी और अन्य स्थानों से उसके मित्र विवाह के अवसर पर बधाई देने और लेने आये हुए थे।

पुरुषोत्तमदेव शर्मा गढ़वाल का रहने वाला था। लखनऊ में शिक्षा प्राप्त करने के बाद उसे केन्द्रीय सचिवालय के निर्माण विभाग में काम मिल गया। काम करते हुए अभी दो वर्ष ही हुए थे कि वह अपने सचिवालय के उच्च अधिकारियों की दृष्टि में चढ़ गया और उसकी प्रशंसा सुनकर लाला जुगलकिशोर का विचार मंगला को उसके घर भेजने का हो गया।

परन्तु भाग्य कहें अथवा मनुष्य की शिक्षा-दीक्षा समझें, मंगला के स्थान पर उसके क्वार्टर में शकुन्तला आ गयी।

विवाह शनिवार और रविवार की रात्रि को हुआ था। छोटे-से क्वार्टर की बग़ल वाले क्वार्टरों में भी कमरे मंगनी पर लिये हुए थे और अपने क्वार्टर तथा बग़ल वाले क्वार्टरों में मेहमान खचाखच भरे हुए थे। परिणाम यह हुआ कि जब तक सब मेहमान चले नहीं गये, शकुन्तला और शर्मा को एकान्त में मेलजोल का अवसर नहीं मिला।

इसमें शकुन्तला को कुछ भी विचित्र प्रतीत नहीं हुआ था, परन्तु शर्मा परेशानी अनुभव करता प्रतीत होता था। कभी वह शकुन्तला के सामने होता था, तो परेशानी में उसका मुंह देखता रह जाता था।

शकुन्तला मां के घर आती-जाती थी और वह मंगला के घर भी उससे मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती थी। मंगला का पति प्रातःकाल का अल्पाहार लेते ही अपनी फ़ैक्ट्री का काम देखने चला जाता था और मंगला कोठी में प्रायः सास के साथ वार्तालाप करती अथवा घर का काम-काज देखती रहती थी।

शकुन्तला का विवाह हुए दस दिन से ऊपर हो चुके थे। शकुन्तला मां के घर आयी, तो मध्याह्नोत्तर चाय के समय मंगला से मिलने चली आयी। मंगला अपनी सास के साथ बाज़ार गयी हुई थी। घर पर सेठ रघुनन्दन ही थे। जब वह रघुनन्दनजी की कोठी के बरामदे में पहुंची, तो चपरासी ने बताया, "माताजी बहू के साथ मोटर में कहीं गयी हैं। घर पर सेठजी ही हैं।"

"माताजी कब तक लौटेंगी?"

"सेठजी को मालूम होगा।"

"पता करो।"

चपरासी सेठजी के कमरे में गया, तो गुप्ताजी स्वयं ही कमरे से बाहर निकल आये।

"आओ, शकुन्तला बेटी! कैसी हो?" रघुनन्दन ने पूछा।

"सब परमात्मा की कृपा है, पिताजी! मैं मंगला से मिलने आयी थी।"

रघुनन्दन ने हाथ पर बंधी घड़ी में समय देखकर बताया, "ड्राइंगरूम में बैठो। मैं समझता हूं कि आने ही वाली होगी। बहू कह रही थी कि उसे बाज़ार से कुछ ख़रीदना है और उसकी सास उसे साथ ले गयी है। वे कह गयी थीं कि ठीक साढ़े चार बजे चाय के लिए लौट आयेंगी।"

"मंगला मां से मिलने कब गयी थी?"

"पता नहीं। इस विषय में मनोहर की मां ही बता सकती है। बहू उसी का प्रशासन क्षेत्र है।" रघुनन्दन कहते-कहते हंसने लगा।

शकुन्तला विचार कर ही रही थी कि ठहरे अथवा लौट जाये कि उसी समय निर्मला और मंगला मोटरगाड़ी से उतरकर कोठी में प्रवेश करती दिखाई दीं।

रघुनन्दन ने भी उसे आते देखा, तो कह दिया, "लो, आ गयी तुम्हारी सहेली?"

मोटरगाड़ी में एक बड़ा-सा बण्डल पुस्तकों का लाया गया था। मंगला ने उतरते ही ड्राइवर से कहा, "चपरासी के हाथ ये पुस्तकें भीतर भेज दो।" और वह स्वयं लपककर शकुन्तला की ओर चली आयी। शकुन्तला बरामदे में खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। रघुनन्दन गुप्ता उनके समीप खड़ा अपनी पत्नी और पतोहू की ओर देख रहा था। मंगला बरामदे में ही शकुन्तला से गले मिलने लगी। रघुनन्दन अपनी पत्नी की ओर देखकर पूछने लगा, "किधर गयी थीं?"

इसी समय उसकी दृष्टि चपरासी की ओर चली गयी। वह मोटरगाड़ी में से पुस्तकों का एक बड़ा-सा बण्डल निकाल रहा था। बण्डल इतना बड़ा था कि चपरासी को गाड़ी में से निकालते और उठाते हुए कष्ट अनुभव हो रहा था। यह देखकर रघुनन्दन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने पूछ लिया, ''यह क्या ले आयी हो ?''

''बहू अपना पुस्कालय निर्माण कर रही है। लगभग नौ सौ रुपये इन पुस्तकों पर व्यय कर आयी है। लोहे की एक अलमारी का भी ऑर्डर दे आयी है और कहती है कि उसके पति ने उसे इस काम के लिए पांच हज़ार रुपया दिया है।''

रघुनन्दन मुसकराता हुआ बहू की ओर देखने लगा। वह शकुन्तला को लेकर ड्राइंगरूम की ओर जा रही थी। निर्मला पति के साथ अपने कमरे में चली गयी। निर्मला ने कहा, ''बहू कहती थी कि उस घर में एक बार शकुन्तला के पुस्कालय का मूल्यांकन किया गया था। वह पन्द्रह हज़ार रुपये के लगभग था। मनोहर ने अभी उसे इस दिशा में पांच हज़ार रुपया व्यय करने के लिए दिया है।''

''मैं समझ रहा हूं।'' रघुनन्दन ने कहा, ''हमारे घर में एक नवीन मस्तिष्क आ गया है। यह परिवार को मनुष्य की भांति नया जन्म मिला है और इस नये जन्म में मन और बुद्धि उत्कृष्ट ही मिले हैं।''

''आप भी तो दिन-रात पढ़ते रहते हैं। वह मस्तिष्क से पढ़ते हैं या पेट से ?''

दोनों लालाजी के स्टडीरूम में चले गये। स्टडीरूम के पीछे ही बेडरूम भी था और रघुनन्दन वहीं सोता था। वास्तव में, कोठी में रहने के लिए यह एक पृथक् कमरों का सेट था। इसमें सिटिंगरूम को लालाजी ने स्टडीरूम बना लिया था। बेडरूम तो केवल सोने के ही काम में आता था। इसके साथ ही बाथरूम था।

जब पत्नी ने कहा कि पढ़ते तो आप भी रहते हैं, तो उसका अभिप्राय था कि घर में मस्तिष्क तो पहले भी था। रघुनन्दन पत्नी के कथन को समझ गया और बोला, ''हां! मैंने यह कहा है कि घर को एक नया मस्तिष्क मिला है। मैं जो कुछ पढ़ता हूं, वह कूड़ा-करकट मेरे कमरे के शेल्फ़ों में भरा पड़ा है।'' उसने देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं और साप्ताहिक पत्रों की ओर संकेत कर दिया, जिनसे उसकी अलमारियों के शेल्फ़ भरे पड़े थे। ''मैं कभी-कभी विचार करता हूं कि इनको मैंने किसलिए यहां रखा है? अब यह इतना पुराना हो गया है कि इसे कोई कबाड़ी भी उठा ले जाने के लिए तैयार नहीं होता। वही इनसे भरे मस्तिष्क की बात है। उसकी भी कोई सुनता नहीं। देखो रानी! गिरिधारी को जो रुपये दिये थे, वो उसकी पत्नी ने वापस कर दिये हैं। तुम्हारे जाने के उपरान्त चेक वापस आ गया है। चेक के साथ रमा का पत्र भी है और गिरिधारीलाल का पत्र पृथक् लिफ़ाफ़े में आया है। रमा ने लिखा है कि मंगला के दहेज से कुछ नहीं मिला, इसलिए वह कुछ नहीं लेगी। इस प्रकार रुपया भेजना, तो एक जेब से निकालकर दूसरी जेब में डालने के समान है। साथ ही उसने लिखा है कि वह चाहेगी कि जो हम उचित समझें, उनको ले-देकर घर से पृथक् कर दें। तब भाइयों-भाइयों में लेन-देन करना उचित प्रतीत होगा।

''गिरिधारीलाल ने लिखा है कि जब से वह लुधियाना पहुंचा है, तब से रमा उससे रूठी हुई है और स्वतन्त्र कार्य करने के लिए कह रही है। उसका अभिप्राय है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक दृष्टि से अब आपका परिवार संयुक्त परिवार न रहे।''

''और गिरिधारीलाल ने भी अपनी कुछ इच्छा व्यक्त की है?'' निर्मला ने पूछ लिया।

''उसने अपनी इच्छा का नाम लेकर तो कुछ नहीं लिखा। हां, अपने पारिवारिक जीवन की विषमता का वर्णन किया है। इससे मुझे यह समझ में आया है कि घर की शान्ति के लिए वह स्वेच्छा से अथवा विवशता से रमा के प्रस्ताव को मेरे सम्मुख उपस्थित कर रहा है।''

''और आप क्या कहते हैं?''

''यद्यपि यह मेरी इच्छा का प्रतीक नहीं है, तथापि मैं समझता हूं कि तीनों भाइयों को पृथक्-पृथक् कर ही देना चाहिए। लड़कियों को भी इसमें से कुछ देना ही पड़ेगा।''

''दखिये जी!'' निर्मला ने कह दिया, ''आप इसमें से जो कुछ अपना समझते हैं, वह आप अपने लड़के को दे-दिलाकर अपना वसीयतनामा लिख जाइये और लड़कियों को दे जाइये। उसमें लड़कों का भाग नहीं होगा।''

''मैंने इस दिशा में भी विचार किया है। मैं यह प्रस्ताव करने वाला हूं कि तीनों भाई पत्नियों के बिना एक पृथक् कमरे में बैठ जायें और परस्पर विचार कर समझौता कर लें। उस समझौते में वह मुझे कुछ देना चाहते हैं अथवा नहीं, यह उनके विचार करने की बात है। यदि वह कुछ देंगे, तो मैं ले लूंगा। नहीं देंगे, तो मैं अपनी पेंशन पर निर्वाह करूंगा।''

''और लड़कियों को।''

''यह भी उन पर छोड़ता हूं। वह चाहें, तो अपनी बहनों को कुछ दें, न चाहें, तो कुछ न दें। अपने देहावसान के समय जो कुछ मेरे पास होगा, वह मैं उनको दे जाऊंगा।''

''वे बेचारी घाटे में रहेंगी।''

''मैं इसमें क्या कर सकता हूं?''

निर्मला ने गम्भीर होकर कुछ देर तक विचार किया और फिर स्थिर-चित्त से पति की ओर देखती हुई बोली, ''तब तो मैं कहूंगी कि बिना एक क्षण की देर किये पुत्रों को लिख दीजिये और इस कार्य के लिए काल की सीमा बांध दीजिये और कह दीजिये कि यदि वे पन्द्रह दिन में निश्चय नहीं करते, तो आप स्वयं अपनी बुद्धि से निश्चय कर देंगे।''

रघुनन्दन गम्भीर भाव से विचार कर रहा था। वह रमा द्वारा विष की बूंद से घर के दूध-रूपी मटके को विषाक्त नहीं होने देना चाहता था। उसे इसका एक उपाय समझ में आ रहा था कि संयुक्त परिवार को समाप्त कर देना चाहिए। आज के युग में वह चल नहीं सकता।

वह अपने स्थान से उठा और अपने लिखने की मेज़ के पास पहुंचकर पत्र लिखने बैठ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी ओर, शकुन्तला और मंगला ड्राइंगरूम में बैठी, एक अन्य विषय पर गम्भीरतापूर्वक वार्तालाप कर रही थीं। बातचीत करते हुए दोनों के मुंह लटक रहे थे। बातें करते हुए मंगला की आंखें तरल हो रही थीं और शकुन्तला उसे ढाढ़स बंधा रही थी।

शकुन्तला ने मंगला के साथ कोठी के ड्राइंगरूम में प्रवेश करते हुए पूछा, "मंगला! मां से कब मिलने गयी थीं?"

"आज नहीं गयी। कल तक नित्य जाती रही हूं।"

"मां ने अपने मन की बात कुछ नहीं कही?"

"क्यों, क्या हुआ है?"

"मौसी कोठी छोड़ गयी है।"

"कहां गयी हैं? मैंने एक दिन उनसे पूछा था कि वह इस कोठी में आकर रहना चाहें, तो मैं उनके रहने का प्रबन्ध कर सकती हूं।"

"यह तुमने क्यों पूछा था? तुम्हारे मन में यह विचार किसलिए आया था?"

"मां का एक पत्र उस सूटकेस में पड़ा था, जो उन्होंने मुझे घर से विदा करने के समय दिया था। उस पत्र में मां ने लिखा था कि वह अब हरिद्वार अथवा उससे भी कहीं दूर जाकर रहना चाहती हैं। इसी की प्रतिक्रिया मेरे मन पर हुई थी कि मां को अपने घर ही रख लूं।"

"और उन्होंने क्या कहा था?"

"वह कह रही थीं कि शास्त्र में लिखा है कि लड़की के घर का नहीं खाना चाहिए। उन्होंने ऐसा क्यों लिखा, सो तो नहीं जानती, परन्तु व्यवहार से यह ठीक ही प्रतीत होता है। प्राय: दामाद पत्नी के घरवालों को खिलाना पसन्द नहीं करते। मैंने यह विचार किया था कि उनसे कहूंगी कि वह मांजी को जाकर निमन्त्रण दे दें। मैंने अभी कल ही उनसे यह कहा था कि मां लालाजी के घर में रहना नहीं चाहतीं, तो उन्होंने कहा था कि वह एक-दो दिन में समय निकालकर वहां जायेंगे और मां को यहां ले आयेंगे।"

इस पर शकुन्तला ने बताया, "मैं आज पिताजी के घर गयी, तो मां ने बताया कि पिताजी के साथ दुर्घटना हो गयी है और वह अपने कमरे में लेटे हैं। मैं वहां गयी, तो पिताजी के मुख और सिर पर पट्टियां बंधी देखकर चिन्ता में पूछने लगी कि क्या हुआ है? इस पर पिताजी ने बताया कि उनकी मोटरगाड़ी की एक छकड़े से टक्कर हो गयी है। मोटरगाड़ी तो चूर-चूर हो गयी है। हां, मैं बच गया। बस, यही ग़नीमत है।

"यह कब की बात है?" मैंने पूछा, तो कहने लगे, 'रात एक बजे की बात है। मैं साढ़े ग्यारह बजे यहां से गया था और दो बजे के उपरान्त यहां लौट सका था।'

"और यह मरहम-पट्टी?

" 'यह उस बैल छकड़ेवाले ने ही अपने गांव में करा दी थी। अब मैं सायंकाल तक अपने डॉक्टर को बुलाऊंगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन-सी गाड़ी में गये थे?'

"'एक नयी गाड़ी कल ही ली थी। 'फ़िएट' थी।'

"और अब वह कहां है?

"'मैं तो उसे सड़क के किनारे छोड़ आया था। देखूंगा कि वह वहां है अथवा कोई चोर उसे ले गया है।'

"मुझे सब कुछ समझ नहीं आया, तो पुन: मां से पूछने उनके कमरे में गयी। मां उस समय गीता पढ़ रही थीं। मेरे पूछने पर उन्होंने बता दिया, 'देखो, शकुन्तला! अर्जुन ने ठीक ही कहा था कि—

चञ्चलं हि मन: कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥

अर्थात् हे कृष्ण! मन बड़ा चञ्चल और बलपूर्वक दूसरों को अपने अनुकूल करने वाला है। यह बड़ा दृढ़ और बलवान् भी है। अत: इसको वश में करना, मैं वायु के वेग को रोकने के समान दुष्कर मानता हूं।'

"'वही बात तुम्हारे पिताजी की हुई है।'

"मैं मां का अभिप्राय समझी नहीं और उनका मुंह देखने लगी।

"माताजी पुन: गीता पढ़ने लगीं, तो मैं उठकर वहां से चली आयी। तुम्हारे विषय में मौसी से पूछने गयी, तो कमरे को ख़ाली देखा। वहां तुम्हारी मां नहीं थी और अलमारी का द्वार खुला हुआ था। उसमें अब कुछ भी नहीं था। अलमारी में पढ़ने वाली रामायण भी नहीं थी।

"मैं अभी कमरे की अस्त-व्यस्त अवस्था देख ही रही थी कि मेरी दृष्टि मौसी के पलंग पर चली गयी। वहां उनकी धोती के चिथड़े पड़े थे। उनमें से कुछ रक्त से रञ्जित दिखाई दिये। इस पर मैंने कमरे को अधिक ध्यान से देखा, तो पता चला कि वहां किसी प्रकार की हाथापाई हुई है। कमरे की वस्तुएं इधर-उधर लुढ़की पड़ी थीं।

"मैंने फटी हुई धोती को एक ओर किया, तो बिस्तर पर भी रक्त के चिह्न दिखाई दिये। मैं कुछ देर तक कमरे को देखती रही और इस सब का अर्थ जानने के लिए पुन: मां के कमरे में जा पहुंची। वह अब तक भी गीता का पाठ कर रही थी। मैं मां के पास भूमि पर बैठी, तो उन्होंने मेरी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा और मैंने पूछ लिया, 'मौसी कहां हैं?'

"'उसकी एक बदमस्त ड्राइवर द्वारा चलायी जा रही गाड़ी से टक्कर हो गयी है।'

"ओह! मेरे मुख से निकल गया। मेरे मन में प्रकाश होने लगा। मन का संशय निवारण करने के लिए मैंने पूछ लिया, 'कहां टक्कर हुई है?'

"माताजी का कहना था, 'उसी के कमरे में।'

"तो वहां मोटर जा पहुंची थी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"'हां। मोटर चकनाचूर हो गयी थी, परन्तु सुखिया ने मोटर की मरहम-पट्टी कर उसे 'गैरेज' में बन्द कर दिया है।'

"अब मां द्वारा कहे गये गीता के श्लोक का अर्थ समझ आने लगा था।

"मैंने और कुछ नहीं पूछा। दीर्घ श्वास लेते हुए अपने घर की एक बात मां को नहीं बता सकी, जो मैं बताने गयी थी।"

" वह क्या है ? क्या वह मुझे भी बताने की है अथवा नहीं ?"

"उसे कब तक छिपाकर रखूंगी। प्रथम तो यह बात है कि मिस्टर शर्मा यह चाहते हैं कि मैं पिताजी के कार्यालय में काम करूं और यदि हो सके, तो वह भी पिताजी के काम में सहयोग दें। मैं इसकी सम्भावना समझती थी और इससे इनकार करना चाहती थी। मैं चाहती थी कि पिताजी इतना धन मुझे दे दें कि उसका ब्याज इतना हो, जितना मेरे काम का वेतन हो सकता है। यह हो सकता था। मुझे पिताजी की आर्थिक स्थिति का ज्ञान है। वह मेरे लिए कोई जायदाद भी ख़रीदकर दे सकते थे, जिसकी आय एक हज़ार मासिक तक होती, परन्तु घर की अवस्था देखकर मैं असमंजस में हूं कि क्या करूं ? ऐसा प्रतीत होता है कि मौसी का पिताजी से द्वन्द्व-युद्ध हुआ है और उसमें कमरे के सामान का खुलकर प्रयोग हुआ है। युद्ध के उपरान्त मौसी ने पिताजी के घावों पर पट्टी बांधी और फिर चुपचाप घर से चली गयी हैं।"

यह समाचार सुनकर मंगला शकुन्तला का मुंह देखती रह गयी।

:27 :

"मैं माताजी से मिलना चाहती हूं।" मंगला ने अपने मन की प्रतिक्रिया वर्णन कर दी।

"किसलिए ?"

"मां के विषय में और अधिक जानने के लिए।"

"मां कुछ नहीं जानतीं। मैंने पूछा था। वह कहने लगीं कि प्रातःकाल नियम से मौसी को चाय देने के लिए आना चाहिए था। जब वह छह बजे तक भी नहीं आयी, तो मां उनके कमरे में गयीं और कमरे को ख़ाली और वहां रक्त के चिह्न देखकर चकित रह गयीं। वह पिताजी को मौसी के लापता होने और उसके कमरे में मार-पीट के लक्षण बताने गयीं, तो उनको घायल और उनके मुंह-सिर पर पट्टियां बंधी देख, विस्मय में पूछने लगीं, तो उन्होंने घटना का पूरा वृत्तान्त बता दिया।

"मां ने बताया है कि एक बार पहले भी पिताजी ने मौसी के साथ बलात्कार करने का यत्न किया था, परन्तु उस समय बीच-बचाव कर दोनों में सन्धि करा दी गयी थी। तब से पिताजी ने सन्तोष कर लिया प्रतीत होता था, परन्तु वही बात है कि मन ही तो है, चञ्चल हो उठा होगा।

"जब मां ने बताया कि सुखिया लापता है, तो पिताजी ने कहा कि उन्होंने इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीयत से एक लाख रुपया मंगला को दहेज में दिया था और एक लाख सुखिया को भी देने का प्रस्ताव किया था, परन्तु इस धन ने भी उसे अनुकूल नहीं किया। वह विस्मय करते हैं कि इसका प्रभाव तुम्हारी मां के मन पर क्यों नहीं हुआ?''

मंगला मां की अवस्था पर विचार कर रही थी और उसकी निस्सहाय कदाचित् घायल अवस्था में कल्पना कर रो पड़ी थी। उसकी आंखें तरल हो उठी थीं।

शकुन्तला ने कह दिया, ''मंगला! मैं समझती हूं कि धैर्य से प्रतीक्षा करनी चाहिए। वह अवश्य तुम्हें पत्र लिखेंगी और यदि उन्होंने अपना पता लिखा, तो हम उनको सुखी रखने का यत्न करेंगी।''

मंगला ने बात बदलकर पूछ लिया, ''आप अपने विषय में क्या करना चाहती हो?''

''मैं पिताजी से बातचीत करने के बाद ही वहां की समस्या सुलझाने का प्रयास करूंगी। ऐसा प्रतीत होता है कि उस सुन्दर कलेवर में कोई मलिन मन और बुद्धि ही है।''

''तो बहुत दुखी हो?''

''मन की इस अवस्था को दुःख नहीं कहते। मैं समझती हूं कि यह एक प्रकार की असुविधा है। मैं आज ही अपनी कुछ पुस्तकें वहां ले जाना चाहती हूं और अपना ध्यान स्वाध्याय में लगाना चाहती हूं।''

''मेरा विचार है कि शकुन्तला बहिन को पिताजी को प्रेरणा देनी चाहिए कि वह जीजाजी को अपने व्यवसाय में सम्मिलित कर लें। इस प्रकार वे उस ऋण से मुक्त हो जायेंगे, जो माताजी के पिता का उनके सिर पर है। उन्होंने भी तो पिताजी को धन-वैभव के मार्ग पर आरूढ़ किया था।''

''कुछ ऐसी ही बात कहने के लिए मैं आयी थी। वैसे पतिदेव भी यही कहते हैं, परन्तु वह मुझे पिताजी के व्यवसाय में पूर्ववत् सहयोग जारी रखने के लिए कह रहे हैं और चाहते हैं कि पिताजी मुझे अपने व्यवसाय में पत्तीदार घोषित कर दें। लेकिन मेरी सास यह नहीं चाहतीं। उनका विचार है कि हम पिताजी के व्यवसाय से पृथक् रहें और पिताजी मुझे समय-समय पर 'गिफ़्ट' देते रहें।''

''यही तो हमारे देश की प्राचीन रीति है। माता-पिता तथा भाई लड़की अथवा बहिन को जीवन-भर अपनी सामर्थ्यानुसार कुछ-न-कुछ देते ही रहते हैं।''

इसी समय निर्मला मंगला और शकुन्तला को चाय पर आमन्त्रित करने चली आयी। चाय का समय हो गया था। रघुनन्दन डाइनिंगहॉल में आ गया था। उस समय घर में निर्मला, रघुनन्दन और मंगला के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था। मनोहरलाल के फ़ैक्ट्री से लौटने का समय नहीं हुआ था।

रघुनन्दन ने अपने तीनों पुत्रों को पत्र टाइप कर डाक द्वारा भेज दिये थे। उन पत्रों का उत्तर दो दिन में आया। गिरिधारीलाल ने लिखा था कि बातचीत के लिए कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविवार नियत कर दें। सोहनलाल का उत्तर था—पिताजी ! मैं आप द्वारा आयोजित इस गोष्ठी में उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं समझता। आप जो कुछ भी निश्चय करेंगे, मुझे स्वीकार होगा। यदि आप इस विषय पर गिरिधारी और मनोहर से सम्मति करना चाहते हैं, तो आपकी इच्छा है। मैं इसकी भी आवश्यकता नहीं समझता। इस पर भी आप इसके लिए स्वतन्त्र हैं।

मनोहरलाल को जब पत्र मिला, तो वह चिन्ता व्यक्त करता हुआ उस पत्र को लेकर पिताजी के कमरे में जा पहुंचा। यह उस दिन से अगले दिन की बात है, जिस दिन शकुन्तला मंगला की मां के लापता होने का समाचार दे गयी थी।

पिता का पत्र तो मनोहर को प्रातःकाल के अल्पाहार के उपरान्त फ़ैक्ट्री जाने से पूर्व मिला था। उसने फ़ैक्ट्री जाते हुए पत्र को मोटरगाड़ी में बैठकर पढ़ा था। पत्र में पिताजी ने लिखा था—

'गिरिधारीलाल ने यह विचार प्रकट किया है कि हमें अपने परिवार को संयुक्त परिवार नहीं रखना चाहिए। कदाचित् यह सम्मति उसकी पत्नी रमा की है। ऐसी अवस्था में मैं समझता हूं कि आप तीनों भाई एक दिन के लिए दिल्ली में इकट्ठे होकर इस विषय में लिखत-पढ़त कर लें। यह काम अभी अविलम्ब हो जाना चाहिए, अन्यथा परिवार में द्विविधा और वैमनस्य बढ़ेगा। मैं इसको शीघ्र समाप्त करने की इच्छा रखता हूं।'

मनोहरलाल ने पत्र को पढ़कर अपने ब्रीफ़केस में रख लिया और इस विषय में रात को पिताजी से मौखिक बात करने का निश्चय कर अपने काम में लगा रहा।

सायं छह बजे के लगभग वह घर पर आया करता था। दिन-भर के कार्य में वह पत्र का विस्मरण कर चुका था। मध्याह्नोत्तर की चाय और अल्पाहार वह फ़ैक्ट्री से ही ले आया था। उस दिन भी जब वह मंगला के साथ अपने कमरे में बैठा कॉफ़ी ले रहा था, तो उसे पिताजी के पत्र की याद आ गयी और उसने मंगला को उसके विषय में बता दिया। मंगला यह सुनकर विस्मय में एक क्षण तक पति का मुंह देखती रही। फिर उसने कहा, "आप क्या चाहते हैं ?"

"पहले तुम बताओ कि तुम्हारे मन पर क्या प्रतिक्रिया हुई है ?"

"आप कह रहे हैं कि पिताजी ने पत्र में लिखा है कि यह पत्र आपके लुधियाना वाले भाई की इच्छा पर लिखा गया है।"

"हां। और उन्होंने लिखा है कि कदाचित् यह पत्र रमा भाभी की प्रेरणा से ही लिखा गया है।"

"मैं भी यही कहने वाली थी। ऐसी अवस्था में पृथक् हो ही जाना चाहिए। इस पर भी आपको पिताजी के मनोभावों के अनुकूल ही बनकर रहना चाहिए।"

मनोहरलाल कॉफ़ी पीकर पिताजी के कमरे में चला गया। पति-पत्नी प्रायः ऐसा ही किया करते थे। आज मंगला साथ नहीं गयी। उसने कह दिया, "यदि आप पिताजी से पत्र के विषय में वार्तालाप करना चाहते हैं, तो मैं उस वार्तालाप को सुनने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना नहीं चाहती।''

''तो ऐसा करो, तुम पांच मिनट बाद आ जाना। तब तक मैं उनसे इस विषय पर बात कह दूंगा। मैं तो सब-कुछ पिताजी पर ही छोड़ देना चाहता हूं। इस पर भी वह कुछ कहेंगे, तो बात की व्याख्या अभी होने लगेगी, परन्तु मैं दो मिनट में ही बात समाप्त कर दूंगा। तुम अधिक-से-अधिक पांच मिनट बाद आ जाना।''

वास्तव में, रघुनन्दन मंगला से ही वार्तालाप किया करता था। एक रिटायर्ड व्यक्ति की भांति वह अध्यात्म विषय पर चर्चा करना पसन्द किया करता था और मंगला निरन्तर इसी विषय पर स्वाध्याय करती हुई अपने श्वसुर द्वारा पूछे जाने पर अपने ज्ञान का परिचय देती रहती थी।

इसलिए उस दिन जब मनोहरलाल पिताजी के कमरे में पहुंचा, तो उन्होंने पूछ लिया, ''बहू कहां रह गयी आज ?''

''वह अभी आ रही है।'' मनोहरलाल ने कह दिया, ''तब तक मैं आपसे प्रात:काल वाले पत्र के विषय में दो शब्द कहना चाहता हूं।''

''और यह तुम अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में कहना चाहते हो ?''

''ऐसी उसकी अपनी इच्छा है। उसका कहना है कि वह पत्र मेरे लिए था और उसका उत्तर मुझे ही देना चाहिए।''

''हां, तो बताओ। क्या कहना चाहते हो ?''

''यही कि मुझे उस गोष्ठी में रुचि नहीं है। आप वह स्वयं ही कर लें।''

''तुमने इस विषय पर मंगला से बात की है ?''

''उसे मैंने आपके पत्र के विषय में बताया है, परन्तु उसने प्रस्तावित गोष्ठी के विषय में कुछ नहीं कहा। न ही उसने इस विषय पर मुझसे बातचीत की रुचि प्रकट की है।''

''देखो मनोहर, रमा को मंगला का घर में आना रुचिकर नहीं हुआ और मैं समझता हूं कि यह प्रस्ताव उसी अरुचि का परिणाम है।''

''पिताजी! कुछ भी हो। हमारी साझेदारी भी तो केवल मौखिक अपने मन की है। आयकर विभाग के विचार से तो हम पहले ही पृथक्-पृथक् माने जाते हैं।''

''हां। यह मैं समझता हूं। मैं इसका अर्थ यह समझा हूं कि तुम भाई परस्पर एक-दूसरे पर विश्वास खो रहे हो और यह समझने लगे हो कि कदाचित् मेरे निधन के उपरान्त किसी प्रकार का झगड़ा करोगे। वास्तव में, साझेदारी की वस्तु है—यह कोठी और मेरी पेंशन। वास्तव में, विवाद की जड़ यह कोठी ही है। इसमें अधिकांश सोहनलाल की कमाई व्यय हुई है। मेरा इसमें कुछ भी नहीं है। न ही इसमें गिरिधारी का कुछ अधिक लगा हुआ है। उसने जो कुछ इसके निर्माण और इसके फ़रनिश करने के लिए दिया है, वह हिसाब-किताब से बाहर का धन था। अत: इस कोठी के विषय में ही वार्तालाप है। हां, यदि सोहनलाल यह कहे कि गिरिधारी की फ़ैक्ट्री और तुम्हारी फ़ैक्ट्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उसका रुपया लगा है, तो इस विषय पर विचार करने की आवश्यकता है।''

''मेरी फ़ैक्ट्री के विषय में भैया ने पचास हज़ार ऋण दिया है और मैं उसका ब्याज नियमित रूप में उनके नाम पर दर्ज करता रहता हूं। वह तो कभी भी मांगा जा सकता है। वह देने में कठिनाई अवश्य होगी, परन्तु वह देना असम्भव नहीं है। यदि मांगेगा, तो दे सकूंगा।''

''वैसे तो सोहनलाल का इस विषय में दावा नहीं होना चाहिए; क्योंकि उसकी फ़ैक्ट्री की पूंजी भी तो कहीं से आयी थी। इस पर गिरिधारीलाल के कारख़ाने की पूंजी भी निर्माण हुई थी और उनके पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा तथा विवाह भी हुए थे।''

''पिताजी! मुझे इस गिनती में रुचि नहीं है। इसलिए जो कुछ भी घर के बड़े निश्चय करेंगे, मुझे स्वीकार होगा। मैं तो एक बात विचार कर रहा हूं कि सब-कुछ छोड़-छाड़कर कहीं नौकरी कर लूं और उससे ही अपने अस्तिव का निर्माण करूं।''

''कहां नौकरी कर सकते हो?''

''इस कारख़ाने में भी कर सकता हूं, जिसमें अब आप मालिक हैं।''

''और यदि कारख़ाने के नये मालिक ने तुम्हें यहां नौकर न रखा, तो?''

''तो किसी अन्य फ़ैक्ट्री में काम मिल जायेगा। मैं बेकार नहीं रहूंगा। आप द्वारा दी गयी शिक्षा का यह तो परिणाम होगा ही कि मैं भूखा नहीं रह सकता।''

''भूखे मरने का प्रश्न नहीं है। अभी तो तुम्हारी बीवी के पास पर्याप्त धन होना चाहिए, परन्तु मैं उपयोगी और लाभप्रद काम पर जाने की बात कह रहा हूं।''

''पिताजी! आप चिन्ता न करें। सब हो जायेगा।''

परिणाम यह हुआ कि गिरिधारीलाल के कहने पर एक रविवार को पारिवारिक गोष्ठी दिल्ली बारह खम्भा रोड वाली कोठी में हुई।

सोहनलाल फ़रीदाबाद में रहता था। इस पर भी वह, उसकी पत्नी और बच्चे सप्ताह में एक दिन माता-पिता से मिलने अवश्य दिल्ली आया करते थे। वे प्राय: रविवार के दिन ही आया करते थे, परन्तु गोष्ठी वाले रविवार को वे नहीं आये। इसके स्थान पर चपरासी एक पत्र ले आया। उस पत्र में लिखा था—''यहां एक अत्यावश्यक कांफ्रेंस हो रही है और मैं उसमें जा रहा हूं। इसलिए पारिवारिक गोष्ठी में सम्मिलित नहीं हो सकता। मैं अपना 'प्रौक्सी' पिताजी को निश्चित करता हूं। वह मेरे स्थान पर जैसा भी निर्णय करेंगे, मैं उसे स्वीकार करूंगा।''

मनोहरलाल उस दिन शकुन्तला के पति मिस्टर शर्मा के घर आमन्त्रित था और वहां जाते समय वह भी लिखित प्रति-पत्र (प्रौक्सी) पिताजी के नाम दे गया। इस प्रकार वास्तविक वार्तालाप तो गिरिधारीलाल और रघुनन्दन में ही हुआ था। गिरिधारीलाल अपनी पत्नी रमा को साथ लेकर आया था।

वे दोनों प्रातःकाल चार बजे के चले हुए दस बजे दिल्ली पहुंचे थे और स्नानादि से निवृत्त होकर जब पिताजी के स्टडीरूम में पहुंचे, तो वहां पिताजी के अतिरिक्त अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दो भाइयों को न देख, विस्मय में पूछने लगा, ''भैया ने कब तक आने के विषय में कहा है ?''

''सोहन नहीं आ रहा। वह वहां किसी काम में व्यस्त है। उसने मेरे नाम का 'प्रौक्सी' भेज दिया है।''

''और मनोहर भी कोठी में दिखाई नहीं देता।''

''वह अपनी पत्नी की एक सहेली के यहां आमन्त्रित था। अत: वह भी मेरे नाम का 'प्रौक्सी' दे गया है।''

रमा स्वयमेव ही पति के साथ गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए आयी थी और वह पिता-पुत्र में हो रहे वार्तालाप को सुन रही थी। इस पर उसने कह दिया, ''परन्तु पिताजी! इस प्रकार निर्णय करने पर वे बाद में झगड़ा भी कर सकते हैं।''

''परन्तु उन्होंने लिखकर दे दिया है कि वह मेरे निर्णय को स्वीकार करेंगे।''

''क़ानून में वह कोई मान्यता नहीं रखता। 'प्रौक्सी' किसी मजिस्ट्रेट के सम्मुख सौगन्धपूर्वक होना चाहिए।''

रघुनन्दन हंस पड़ा और हंसते हुए बोला, ''वे दोनों भूल गये प्रतीत होते हैं कि उनकी रमा भाभी एक वकील की लड़की है और क़ानून का फूहड़ ज्ञान भी रखती है।''

''फूहड़ का मतलब ?'' रमा को कुछ ऐसा समझ आया था कि उसका श्वसुर उसके पिता के ज्ञान की हंसी उड़ा रहा है।

रघुनन्दन समझ गया कि इस शब्द ने रमा के मस्तिष्क में खुजलाहट उत्पन्न कर दी है। यद्यपि वह समझ नहीं सका था कि उसके कथन में किसी प्रकार का अपशब्द है, तथपि उसने अपनी सफ़ाई दे दी। उसने कहा, ''देखो रमा बेटी! इसीलिए कहता हूं कि तुम्हारा क़ानून का ज्ञान ऊपरी है। तुम उसके तत्त्व को समझ नहीं रहीं।''

वास्तव में, रघुनन्दन के मस्तिष्क में सामान्य वकीलों और जजों के विषय में भी यही विचार था। वे क़ानून के तत्त्व को नहीं समझते। यही कारण है कि न्याय करने के लिए पांच स्तर पर विचार होने पर भी प्राय: अन्याय ही होता है। उसका विचार था कि न तो क़ानून बनाने वाले और न ही पुलिस से लेकर सर्वोच्च न्यायलय तक कोई क़ानून के उद्देश्य को समझते हैं, परन्तु वह इस समय इस आधारभूत प्रश्न पर विवाद छेड़ने के स्थान पर सम्मुख उपस्थित समस्या पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहता था।

उसने कहा, ''क्या अदालतों में रजिस्टर्ड दस्तावेज़ों पर भी मुक़द्दमेबाज़ी होती नहीं देखी जाती ? तो मैजिस्ट्रेट के समक्ष शपथ लेने अथवा न लेने में सार ही क्या रह जाता है ?

''मैं तो गिरिधारी से पूछूंगा कि वह क्या चाहता है ?''

''मैं यह कहता हूं।'' गिरिधारीलाल ने पत्नी के हाथ से बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, ''कि जो कुछ भी निर्णय हो, वह आपके जीवन-काल में ही हो जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम पीछे सामान्य लोगों की भांति कचहरी की मिट्टी छानना नहीं चाहते।''

''तुम्हारी इस भावना का मैं आदर करता हूं, परन्तु तुम बताओ कि तुम क्या चाहते हो?''

इस पर गिरिधारीलाल ने जेब से तीन पृष्ठ का अंगरेजी में टाईप किया हुआ एक मांग-पत्र निकालकर पिता के सम्मुख रख दिया।

पिता ने पत्र को हाथ में लेकर पढ़ना आरम्भ कर दिया।

:28:

सायंकाल मनोहर और मंगला आये, तो गिरिधारीलाल और रमा पिक्चर देखने चले गये थे। मनोहरलाल और मंगला मिस्टर शर्मा के घर से ही चाय पीकर आये थे। इसलिए वे वहां आते ही पिता के कमरे में उनको वहां का समाचार बताने चले गये।

दोनों को वहां आते देख रघुनन्दन ने समझा कि वे परिवार की गोष्ठी के विषय में समाचार लेने आये हैं। उसने उनको सम्बोधन कर कहा, ''आओ मनोहर! मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि गिरिधारी और उसकी पत्नी क्या चाहते हैं।''

मनोहर ने पिता के कुछ और अधिक कहने से पहले ही कह दिया, ''पिताजी! उनकी मांग के विषय में कुछ भी जानने की मेरी इच्छा नहीं। आपने जो कुछ निर्णय किया है, वही बता दीजिये।''

''मैंने और हमारी गोष्ठी ने कुछ भी अन्तिम निर्णय अभी नहीं किया। गिरिधारी और उसकी पत्नी दोनों ने उपस्थित होकर तीन पृष्ठों में अपनी मांग उपस्थित की है। मैंने वह पत्रक पढ़ा है और उसमें उसके प्रस्तावों पर—जहां-जहां वह स्पष्ट नहीं था—स्पष्टीकरण प्राप्त किया है और कहा है कि मैं उस पर अपना विचार लिखकर उनके पास भेज दूंगा। वह यहां से प्रातःकाल अपनी गाड़ी में चले जायेंगे।''

''ठीक है। मैंने आपको निर्णय करने का अधिकार दे रखा है। आप भैया से जो कुछ भी निश्चय करेंगे, मुझे स्वीकार होगा।''

''तुम्हें उसकी मांग सुनने में भी रुचि नहीं?''

''जी नहीं। मुझे तो किसी प्रकार के निर्णय सुनने में रुचि नहीं, परन्तु वह सुनना पड़ेगा; क्योंकि उसके बिना सुने, उस पर अमल कैसे कर सकूंगा?''

''तब ठीक है। कम-से-कम तुम्हारा कारख़ाना तुम्हारे स्वामित्व में ही रहेगा, पर तुम्हें कुछ देना पड़ेगा। कारण यह है कि उसमें पूंजी लगाते समय मैंने 'कॉमन फण्ड' में से कुछ दिया था। वह उससे कुछ अधिक था, जो उसी फण्ड में से गिरिधारी के काम में लगाया गया था। सोहनलाल के कारख़ाने में जितना लगाया गया था, वह सब उसने वापस कर दिया है। तुमने वह अभी वापस नहीं किया। अतः तुमसे लेकर वह 'कॉमन फण्ड' में डालकर उसके पुनः पांच भाग कर देना चाहता हूं। तीन भाग तुम लड़कों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए और दो भाग तुम्हारी बहिनों के लिए।''

मनोहर ने बात बदल दी। उसने कहा, ''पिताजी! हम शकुन्तला और उसके घरवाले के परस्पर झगड़े के विषय में आपको बताने आये हैं।''

रघुनन्दन चुप सुनता रहा। उसने न तो उसे सुनने में रुचि प्रकट की और न ही अरुचि। पिता को चुप देखकर मनोहरलाल ने बताया, ''मिस्टर शर्मा ने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया है और अब वह श्वसुर के काम में चीफ़ के रूप में काम करेगा। उसे एक हज़ार रुपया प्रति मास वेतन मिलेगा और साथ ही एक मोटरगाड़ी सवारी के लिए तथा एक मकान रहने के लिए मिलेगा। शकुन्तला घर पर ही काम करेगी। वह पिताजी के व्यवसाय में काम नहीं करेगी। हम समझते हैं कि यह प्रबन्ध शकुन्तला के विषय में तो ठीक है, परन्तु शर्मा के विषय में ठीक नहीं है।''

''क्यों?''

''मिस्टर शर्मा की मां इसे पसन्द नहीं करती। पिछले पन्द्रह दिन से उनके घर में विवाद चल रहा था। शकुन्तला का कहना है कि उसके पिता के कार्य में अत्यधिक हेरा-फेरी की जा रही है और वह इसमें भाग नहीं लेना चाहती।''

''परन्तु तुम्हारे करख़ाने में क्या होता है?''

''हेरा-फेरी तो वहां भी होती है, परन्तु मेरे कारख़ाने की हेरा-फेरी में और लाला जुगलकिशोर के व्यवसाय में की जाने वाली हेरा-फेरी में अन्तर है। वहां झूठे अनुमानित व्यय-पत्र तैयार किये जाते हैं। टेण्डर के कागज़ बदले जाते हैं, ग़लत बिल बनाये जाते हैं और यह सब करने के लिए अधिकारियों को रिश्वत दी जाती है। मैं इस प्रकार की धोखा-धड़ी नहीं करता। मैं तो व्यय ही अधिक दिखाता हूं और उसी में इतनी गुंजायश निकाल लेता हूं, जितना कि सरकारी कर्मचारी को देने के लिए व्यय करना पड़ता है। लगभग चालीस-पचास हज़ार रुपया प्रतिवर्ष उनमें वितरण करना पड़ता है। वास्तव में, दी जाने वाली उस रिश्वत को कारख़ाने का व्यय ही मानता हूं। मेरी हेरा-फेरी केवल यह है कि वह कर्मचारियों को रिश्वत के नाम से न लिखकर किसी दूसरे मद्द में लिख देता हूं, जो मिथ्या होता है। यह झूठ तो है, परन्तु यह चोरी नहीं है।

''लाला जुगलकिशोर के व्यवसाय में तो शकुन्तला बता रही थी कि झूठ भी बोला जाता है और चोरी भी की जाती है।''

रघुनन्दन हंस पड़ा और हंसते हुए कहने लगा, ''हैं तो वे दोनों ही पाप। धर्म की व्याख्या में चोरी करना और झूठ बोलना दोनों एक समान पाप माने जाते हैं। दोनों में यह भेद तुम्हें किसने बताया है?''

''पिताजी! दोनों में अन्तर है। चोरी का धन अपने घर पर व्यय होता है और झूठ में केवल व्यय का मद्द बदला जाता है। इसमें मैं अपने तथा कारख़ाने की उन्नति के लिए निकालने के लिए कुछ भी झूठ नहीं लिखता।

''पिताजी! कर्मचारियों को रिश्वत देना अनियमित है, परन्तु इसके लिए उत्तरदायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार है। उसने रिश्वतख़ोर कर्मचारी नियुक्त किये हुए हैं। उस रक़म को ही मैं निर्मित माल पर डाल देता हूं। 'ऑडिट' करने वाले ऐसी रक़म को इस नाम से लिखना स्वीकार नहीं करते। इसलिए मैं उनको उस रूप में लिखता हूं, जिसमें वे चाहते हैं।''

''परन्तु इससे तो वस्तुओं का दाम बढ़ जाता होगा ?''

''जी। बढ़ता तो है, परन्तु उन बढ़े हुए दामों के लिए मैं उत्तरदायी नहीं हूं। यह इस लिए नहीं कि मैं मात्रा से अधिक लाभ ले रहा हूं, वरन् इसलिए कि सरकारी नियन्त्रण और अनधिकार हस्तक्षेप यह महंगाई बढ़ा रहा है।''

''परन्तु इस झूठ बोलने में तुम फंस भी सकते हो।''

''हां, परन्तु किसी अकुशल लेखाकार के कारण ही फंसूंगा, इसलिए नहीं कि मैं किसी प्रकार का अनुचित लाभ ले रहा हूं।

''सरकारी नियन्त्रण के कारण जो भी अतिरिक्त व्यय होता है, उसको नियमित व्यय बनाने में ही कुशलता है।''

''सरकार इसमें हस्तक्षेप नहीं कर रही; क्योंकि सरकारी टैक्सों में, कर्मचारियों के वेतन तथा बोनस में किसी प्रकार की कमी नहीं हो रही।''

रघुनन्दन के मन में एक विचार आया और उसने पूछा, ''लालाजी के काम पर शर्मा कब से आया करेगा ?''

''शर्मा ने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे रखा है और उसके स्वीकार होते ही और सरकारी कार्य से मुक्त होते ही वह सेठजी के कार्य में लग जायेगा। शर्मा कहता था कि यह अगले महीने की पहली तारीख़ से होने लगेगा।''

रघुनन्दन ने गम्भीर भाव से कह दिया, ''मैं समझता हूं कि दो-तीन वर्ष में जुगलकिशोर का काम ठप्प हो जायेगा।''

''यही तो एक दिन शकुन्तला ने मंगला को बताया था कि वह तो वैसे ही ठप्प होने वाला है। सेठजी के तरीक़े से उनके पास काला धन एकत्रित हो रहा है। उस धन को सफ़ेद करने के लिए नक़ली हिसाब बनाना पड़ता है। फिर भी, एक-न-एक दिन तो भेद फूटेगा ही।''

''मैं यह नहीं कह रहा। मेरी इस भविष्यवाणी का आधार यह नहीं कि काले धन के व्यय करने के तरीक़े नहीं मिलेंगे। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि दामाद चोरी करेगा और चोरी करने वालों का व्यवहार वैसा ही होता है, जैसा मीठा खाने की चटक लग जाने वाले का होता है। इससे भी चोरी अधिक और अधिक होती जाती है और एक दिन सब-कुछ ऐसे गिरेगा, जैसे ताश के पत्तों से बना महल गिर पड़ता है।''

एकाएक रघुनन्दन को मंगला को मिले एक लाख रुपये का स्मरण आ गया। उसने कहा, ''तुम्हें भी तो उस चोरी और झूठ के फल का भाग मिला है ?''

''जी! परन्तु हमने उसमें से एक पैसा भी अपनी सुख-सुविधा पर व्यय न करने का निश्चय किया हुआ है। मंगला उसे दो कार्यों में ही व्यय कर रही है। एक, दान-दक्षिणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में और दूसरे, पुस्तकें क्रय करने में।''

''परन्तु दूसरों के मुख से दानी कहे जाने तथा पुस्तकों के पढ़ने से मानसिक सन्तोष का फल तो तुम्हें मिलेगा ही।''

''हम यत्न कर रहे हैं कि इन दोनों कामों से अपनी सुख-सुविधा तथा आत्म-प्रशंसा और सम्मान से बचे रहें। हमारी कुशलता इसी बात में है कि हम इस धन से किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध न करें।

''मंगला के पुस्कालय में भी ऐसे ही ग्रन्थों का संग्रह किया जा रहा है, जिनके पढ़ने से भले ही रस न प्राप्त हो, परन्तु ज्ञान में वृद्धि हो और वह ज्ञान दूसरों के लाभ के लिए ही प्राप्त किया जाये।''

रघुनन्दन मुंह देखता रह गया। वह विचार कर रहा था कि यह अपने को धोखा देना तो नहीं?

: 29 :

सुखिया का किसी प्रकार का कोई समाचार नहीं आया। जब से लालाजी से सुखिया की हाथापाई हुई थी, मंगला लालाजी के घर नहीं गयी थी। शकुन्तला मंगला से मिलने आया करती थी। मंगला ने शकुन्तला के हाथ सदारानी को एक पत्र भेजा था, जिसमें उनसे अपने न मिलने का कारण बताया था और मिलने के लिए न आने की क्षमा भी मांग ली थी।

मंगला ने लिखा था—'यह जानकर कि पिताजी किसी प्रकार का अनाचार करने वाले हैं, मैं उन्हें अपना मुंह दिखाकर अधिक लज्जित करना नहीं चाहती। इस पर भी मैं अपने को आपके तथा पिताजी के एहसान से दबा हुआ पाती हूं। इसलिए आपके प्रति अपने को अतिअनुगृहीत समझती हूं।'

इस पत्र के उत्तर में एक दिन सदारानी स्वयं मंगला से मिलने आयी। उसने मंगला से मिलकर उसके उनकी कोठी में न जाने के विचार की सराहना की थी। यह लालाजी के लज्जा अनुभव करने अथवा किसी अन्य प्रकार की असुविधा के कारण नहीं थी। सदारानी का मंगला के कार्य को ठीक समझना इसलिए था कि उसे अपने पति की बुद्धि पर विश्वास नहीं रहा था। वह समझने लगी थी कि उसके पति में दो दुर्बलताएं बड़ी प्रबल हैं। एक, धन-लोलुपता और दूसरी, स्त्री-भोग। वह मंगला के प्रति भी उनकी बुरी भावना का सन्देह करने लगी थी।

जब वह आयी, तो मंगला ने सदारानी को ड्राइंगरूम में बिठाकर पिताजी के घावों इत्यादि के ठीक हो जाने के विषय में पूछ लिया।

सदारानी ने बताया, ''ऐसा प्रतीत होता है कि सुखिया ने किसी प्रकार के लोहे अथवा धातु की किसी वस्तु से उन पर वार किया था। वह वस्तु क्या थी, पता नहीं चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सका। वह उसके कमरे में से नहीं मिली। यह घाव तो उनके सिर पर लगा था। इसके अतिरिक्त उसने दांतों और नाख़ूनों से भी सेठजी को बहुत घायल किया है। मेरा अनुमान है कि सुखिया के पलंग पर ही मुख्य संघर्ष हुआ है; क्योंकि रक्त के चिह्न पलंग पर ही अधिक थे। फ़र्श पर रक्त के चिह्न नहीं थे। हां, ग़ुसलख़ाने में 'शैंक' पर रक्त के कुछ चिह्न मिले हैं। सम्भवत: सुखिया ने अपने पैर का रक्त धोया होगा। तुम्हारी मां को तुम्हारे विवाह के अवसर पर मैंने दो श्वेत साड़ियां दी थीं। उनमें से एक को फाड़कर सेठजी की मरहम-पट्टी की गयी थी। यह उसने ही की प्रतीत होती है।''

''अब पिताजी की अवस्था कैसी है?''

''अब तो वह काम पर जा रहे हैं। इस पर भी कभी-कभी सिर में जहां घाव था, वहां पीड़ा अनुभव होती है।''

''मां का कोई समाचार नहीं मिला? मैं समझती हूं कि वह हरिद्वार चली गयी होंगी, परन्तु वहां से डाक आने में कितना समय लगता है?''

''हां! उसे घर छोड़े पन्द्रह दिन से अधिक हो चुके हैं। मुझे तो भय है कि उसने गंगा-प्रवाह न ले लिया हो। एक बार पहले भी वह गंगाजी में डूब मरने का यत्न करती-करती बच गयी थी। उस समय तुम बहुत छोटी थीं। पांच-छह मास की रही होगी।''

''आत्महत्या करने वाली वह नहीं लगती थी।'' मंगला ने कहा, ''अपने मन की पहली अवस्था का वर्णन उन्होंने मेरे सामने भी किया था, परन्तु अब तो उनका जीवन परमात्मा की भक्ति में लीन रहता था। मैं समझती हूं कि परमात्मा पर विश्वास रखने वाला व्यक्ति आत्महत्या नहीं कर सकता। वह न तो कभी निराश होता है और न ही उसे अपने भावी जीवन की उज्ज्वलता पर सन्देह होता है। ऐसा व्यक्ति कृत्रिम मनोद्‌गार से प्रभावित होकर मानव-जीवन को नष्ट नहीं कर सकता।''

''तुम बताओ कि कैसी हो?'' सदारानी ने बात बदलकर पूछ लिया।

''मैं सर्वथा स्वस्थ और प्रसन्न हूं। मुझे शकुन्तला बहिन के विषय में अवश्य चिन्ता रहती है। वह सुखी प्रतीत नहीं होती। दो दिन हुए वह आयी थी और उसकी बातों से कुछ ऐसा अनुभव हो रहा था कि वह मन में दुखी है।''

सदारानी शकुन्तला के विषय में बात होने पर गम्भीर हो गयी थी। मंगला ने बात जारी रखी। उसने कहा, ''धन को सर्वोपरि कल्याणकारी समझना सेठजी की भूल का मुख्य कारण है। इसीलिए शकुन्तला के साथ दुर्घटना घट रही है।''

''हां।'' आख़िर सदारानी ने मुंह खोला, ''लालाजी ने भी लक्ष्मी को सर्वमंगला समझ रखा है। बदरी राजनीति को सर्वमंगला मानता है और साधना का लड़का कमल सुन्दर स्त्री को सर्वहितकारी मानता है।''

''और ये तीनों ही ग़लत हैं।'' मंगला का कहना था, ''वास्तव में ये तीनों महान् शक्तियां हैं। इनका सदुपयोग कल्याण कर सकता है, लेकिन इन्हीं का दुरुपयोग दु:ख और क्लेश का साधन भी हो सकता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदारानी ने मुसकराते हुए कहा, ''कमल को तो इसका फल यह मिला है कि जो पत्नी उसको मिली थी, वह भी छिन गयी प्रतीत होती है। सुना है कि उसने अपने पति को जूतों से पीटकर अपने बेडरूम से निकाल दिया है। अब वे पृथक्-पृथक् कमरों में सोते हैं।''

''परमात्मा उनका भला करे।'' मंगला के मुंह से अकस्मात् निकल गया।

मंगला को मिलकर जाते हुए सदारानी ने कह दिया, ''मैं समझती हूं कि तुम्हें अब उस कोठी में नहीं आना चाहिए। मैं कभी-कभी बीच में मिलती रहा करूंगी। यदि तुम्हारा अनुमान ठीक हुआ और तुम्हारी मां ने आत्महत्या नहीं की, तो वह एक-न-एक दिन तुम्हें मिलने आयेगी अथवा तुम्हें पत्र लिखेगी। मैं उसे अब भी चाहती हूं।''

''मैं तो आपकी जन्म-जन्मान्तर तक कृतज्ञ रहूंगी। विशेष रूप में शकुन्तला बहिन की। आपने इस शरीर का पालन किया है और बहिनजी ने मेरे मन और बुद्धि के हाथ में ज्ञान-रूपी छाता पकड़ा दिया है। इससे ही मैं तीव्र धूप और वर्षा में भी सुरक्षित रहने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकी हूं।''

समय व्यतीत होने लगा। मंगला के गर्भ ठहर चुका था और वह शकुन्तला के विषय में चिन्तित रहती थी। उसके इस मार्ग पर चलने के लक्षण अभी दिखाई नहीं दिये थे।

मिस्टर पुरुषोत्तमदेव शर्मा अब लालाजी के व्यवसाय की देख-रेख करते थे। लालाजी कार्यालय में बैठे हुए अपने पूरे व्यवसाय पर नियन्त्रण रखे हुए थे।

बदरीप्रसाद को रोहतक क्षेत्र से लोकसभा की सदस्यता के लिए लड़ने का टिकट मिल गया। उसका मुक़ाबला ज़मींदार दल के एक जाट से था। जाट-बनिया का प्रश्न उत्पन्न होने पर बदरीप्रसाद न केवल असफल हुआ, अपितु उसकी ज़मानत भी ज़ब्त हो गयी।

बदरीप्रसाद ने अपनी क़ानून की योग्यता और अपने पिता के धन का भरपूर प्रदर्शन किया था, परन्तु विजय जाट प्रत्याशी की ही हुई।

कमल पत्नी के व्यवहार से दुखी होकर इंग्लैण्ड चला गया और वहां व्यापार करने लगा था।

मंगला इस समय सातवें मास में थी।

सदारानी ने ऋषिकेश में एक मकान बनाकर वहां रहना आरम्भ कर दिया था। उसका भी सुखिया की दुर्घटना के कारणअपने पति से मन-मुटाव हो गया था। यह मानसिक वैमनस्य बढ़ता ही गया। उस घटना के दो मास उपरान्त एक दिन लालाजी ने सदारानी के कमरे में सोने की इच्छा प्रकट की, तो सदारानी ने कह दिया, ''मेरी इच्छा नहीं होती।''

''क्यों ?''

''आपकी मलिन बुद्धि के कारण। क्या जाने कहीं आपका शरीर भी मलिन हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुका हो ?''

''क्या मतलब ?''

''आपने परस्त्रीगमन किया है या नहीं ?''

लालाजी ने मुसकराते हुए कहा, ''जब मैं किसी स्त्री की संगत में होता हूं, तो मैं उसे परायी नहीं समझता। मैं उसे अपनी ही समझकर अपनाता हूं।''

''मैं तो सुखिया के विषय में ही पूछ रही थी, पर आप तो घर को सराए आम बना रहे प्रतीत होते हैं।''

''यह तो तब से ही हो रहा है, जब से तुमने अपना कमरा मुझसे पृथक् किया है।''

''परन्तु कमरे का द्वार कभी बन्द नहीं किया था। हां, अब इसका खुला रखना विचारणीय हो गया है।''

''तब तुम्हारे यहां रहने का प्रयोजन ही क्या है ?''

''तो कहां जाऊं ?''

''जहां तुम्हारे सींग समायें।'' लालाजी ने क्रोध में कह दिया।

इस वार्तालाप के उपरान्त ही सदारानी ने घर छोड़कर किसी तीर्थस्थान पर जाकर रहने का विचार बनाया था। उसने यत्न किया और ऋषिकेश में एक मकान लेकर वहां रहना आरम्भ कर दिया।

मंगला और शकुन्तला को सदारानी के पत्र आते रहते थे। शकुन्तला एक दिन मंगला को मध्याह्नोत्तर के समय मिलने आयी। वह उसे यह समाचार देने आयी थी कि वह पिताजी की कोठी में रहने आ गयी है।

''और मिस्टर शर्मा ?'' मंगला ने पूछ लिया।

''वह भी अब यहीं रहेंगे। उनकी माताजी ने इस कोठी में आकर रहना स्वीकार नहीं किया।''

''क्यों ?''

''वह हमारा भी यहां आकर रहना पसन्द नहीं करतीं, परन्तु पिताजी आग्रह कर रहे हैं। उनका कहना है कि माताजी के मन में वैराग्य उत्पन्न होने के कारण वह अकेला-अकेला अनुभव करते हैं। अत: हम आज अपना नित्य के प्रयोग का सामान लेकर यहां आ गये हैं। मैं विचार कर रही हूं कि अपने पुस्तकालय को यहीं ले आऊं अथवा नहीं।''

इस समाचार से दो मास उपरान्त की बात है कि शकुन्तला उससे मिलने आयी, तो मंगला ने उसे एक समाचार दिया। उसने बताया, ''ऋषिकेश से माताजी का पत्र आया है और उन्होंने लिखा है कि मां वहां हैं। वह संन्यासिन हो गयी हैं और चाहती हैं कि मैं कभी-कभी उनसे मिल जाया करूं।''

इस पर शकुन्तला हंस पड़ी। हंसते हुए बोली , ''तो संन्यास दिल्ली से लिया है। मन की कामनाओं से नहीं।''

''देखो, मैं तुम्हें माताजी का पत्र सुनाती हूं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कहकर वह अपने कमरे में गयी और पत्र ले आयी।

शकुन्तला के समीप बैठकर उसने पत्र सुनाना आरम्भ कर दिया—"तुम्हारी मां कई दिन से दिखाई दे रही थीं। वह दुर्बल हो रही हैं और जब-जब भी दिखाई देती थीं, तो मुंह दूसरी ओर करके ऐसे निकल जाती थीं, मानो वह मेरी परिचित नहीं हों। मुझे सन्देह हो जाता था कि मैं पहचानने में भूल कर रही हूं। इसलिए चुप रहती थी, परन्तु मैंने निश्चय कर लिया था कि इस स्त्री से परिचय प्राप्त करके इसके आगे-पीछे का पता लगाने का यत्न करूंगी।

"वह मुझे कैलास आश्रम के समीप मिला करती थीं। अत: मैं प्रात: उस आश्रम के आस-पास चक्कर काटने लगी। सौभाग्य से वह आश्रम से ही निकलती दिखाई दीं। मुझे देखकर वैसे ही बिना मेरी ओर ध्यान दिये, शिवानन्द आश्रम की ओर चल पड़ीं। मैंने उनके साथ-साथ चलते हुए पूछ लिया, 'माताजी! आप कैलास आश्रम में रहती हैं?'

"तुम तो जानती हो कि संन्यास धारण की हुई स्त्रियों को माताजी कहकर सम्बोधन किया जाता है। मेरे ऐसा कहने पर वह गम्भीर भाव बनाकर मुझसे पूछने लगीं, 'बेटी! तुम कहां ठहरी हो?'

" 'देहरादून की सड़क पर माहेश्वरी भवन में।'

" 'मैं उधर कभी नहीं गयी।' उन्होंने कहा और एक प्रकार से बात समाप्त कर वह चल पड़ीं। उनकी इतनी बात से मैं सुखिया की आवाज़ पहचान गयी थी। मुझे लगभग विश्वास हो गया था कि वह सुखिया ही है। इस पर भी रहा-सहा सन्देह मिटाने के लिए मैंने कहा, 'परन्तु सुखिया बहिन! भोजन-व्यवस्था ठीक नहीं है क्या, जो इतनी दुर्बल हो रही हो अथवा लड़की का वियोग तुम्हें दुर्बल कर रहा है?'

"इस पर वह चलती-चलती खड़ी हो गयी और मेरे मुंह पर देखकर पूछने लगी, 'किस बहिन को याद कर रही हो।'

" 'मंगला की मां सुखिया बहिन को।'

"वह बिना उत्तर दिये चुपचाप चलने लगी। मैं समझी कि तुम्हारे नाम ने उसके मन पर चोट पहुंचायी है। मैं अपने इस कथन की प्रतिक्रिया उसके मुंह से सुनना चाहती थी। उसके गम्भीर मुंह से तो मैं यही समझी थी कि वह तुम्हारे विषय में चिन्तन कर रही है। चलते-चलते हम शिवानन्द आश्रम के समीप नाले के पुल पर पहुंच गये थे। ऐसा प्रतीत हुआ था कि वह अपने व्यवहार का निश्चय कर चुकी थी।

"अत: उसने चलते-चलते ही दृष्टि मेरी ओर घुमाकर कहा, 'तो लालाजी भी साथ हैं?'

"मेरी हंसी निकल गयी। हंसते हुए मैंने कहा, 'ईश्वर का धन्यवाद है कि बहिन के मन की बर्फ़ पिघलने लगी है।'

"इस पर वह मुसकरायी। मैंने उसके प्रश्न का उत्तर दिया, 'नहीं। लालाजी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये। मैं अकेली हूं और चाहूंगी कि तुम मेरे साथ माहेश्वरी भवन में चलो।'

'मुझे वहां जाने पर भय लगता है।'

" 'क्यों?'

" 'फिर वही बात हो सकती है।'

" 'उस रात क्या हुआ था?' मैंने पूछ लिया।

"वह पुनः गम्भीर हो गयी और चलती गयी। हम गंगा-किनारे शिवानन्द आश्रम पहुंच गये थे। किनारे पर घाट की अन्तिम सीढ़ी के पास पहुंचकर उसने अपने थैले में से एक कुशासन निकाला और सीढ़ी पर बिछाकर मुझे उस पर बैठने के लिए कहने लगी। मैं वैसे ही भूमि पर बैठ गयी। सुखिया कुशासन पर बैठते हुए कहने लगी, 'कुशासन पक्के फ़र्श की सर्दी-गरमी शरीर में जाने से रोकता है।' मैंने कुछ नहीं कहा। इस पर वह उस रात की बात सुनाने लगी। उसने कहा—

" 'जब मुझे मंगला ने बताया कि सेठजी ने उसे नक़द एक लाख रुपया विदाई के समय दिया है, तो मैं समझ गयी कि वह उनकी अनियमित आय का धन है। इसलिए मैंने मंगला से कहा था कि सेठजी ने बड़ी उदारता से यह धन उसे दिया है, परन्तु यह अनियमित आय का है। इसलिए इसे प्रयोग करने में सावधानी करना।

" 'मंगला ने बताया था कि इस विषय पर उसकी अपने पति से बातचीत हो चुकी है और उन्होंने यह निश्चय किया है कि इसका प्रयोग वे पुस्तकालय-निर्माण करने में और दान-दक्षिणा के कार्यों में करेंगे। मंगला का कहना था कि यदि पुस्तकालय अच्छा बन गया, तो उसे भी वह किसी संस्था को दान दे जायेंगे।

" 'इस पर भी मुझे सन्देह था कि सेठजी ने यह धन मंगला के प्रति स्नेहवश नहीं दिया, वरन् मेरे प्रति प्रेम के कारण दिया है। इसलिए मैं सतर्क थी।

" 'वैसे तो मैं अपने पास एक पीतल की सलाख तब से ही रखती थी, जब से चांदनी चौक वाले मकान में सेठजी ने मुझ पर बलात्कार करने का यत्न किया था। यह दो फ़ीट लम्बी पीतल की सलाख थी। उन दिनों मुझे यह आपके मकान में पड़ी मिल गयी थी। पीतल की यह सलाख सदा मेरे तकिये के नीचे रहती थी।

" 'आख़िर वही हुआ। उस दिन मैं अभी वस्त्र बदलकर लेटने की तैयारी में थी कि सेठजी दबे-पांव मेरे कमरे में आ गये। भीतर आकर उन्होंने द्वार बन्द कर दिया। मेरी पीठ द्वार की ओर थी, इसलिए मुझे चटख़नी बन्द करते समय ही पता चला। मैं घूमकर देखने लगी, तो वह मुसकराकर कहने लगे कि वह मुझसे एक बात कहने आये हैं। मैं सुनने के लिए खड़ी रही, परन्तु उन्होंने एकाएक मेरे मुंह पर हाथ रखकर और मुझे बलपूर्वक पलंग पर धकेलकर रूमाल मेरे मुंह में ठूंस दिया।

" 'यह इतना अकस्मात् था कि मैं कुछ बोल भी नहीं सकी। मैं इस सबका प्रतिकार हाथों के मुक्कों और नाख़ूनों से ही करती रही। इससे वह अपना पशु-कर्म करने से नहीं रुके। जब तक वह कर्म करते रहे, मैं विरोध करती रही। इस समय तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके मुंह, गालों और गले को मैंने बहुत नोचा था, परन्तु बैल का पशु-बल एक गाय के प्रतिकार से प्रबल सिद्ध हुआ। उनकी पकड़ ढीली होते ही मैं लपककर उठी। मुझे उन्हें अपने नाख़ूनों से नोचने मात्र से सन्तोष नहीं हुआ। इस समय मुझे पीतल की सलाख का स्मरण हो आया। मैंने सलाख अपने तकिये के नीचे से निकाली और इसके पूर्व कि वह समझ सकें कि मैं क्या कर रही हूं, मेरा वार उनके सिर पर पड़ा। इस पर वह चिचिया उठे, परन्तु चक्कर खाकर पुनः पलंग पर लेट गये। एक मिनट तक मैं उनको तड़पता देखती रही। उनके सिर से रक्त बह रहा था। सलाख से चोट मारते समय मैं उनकी हत्या कर देना चाहती थी,परन्तु एक स्त्री की शक्ति इतनी प्रबल सिद्ध नहीं हुई कि एक ही चोट से उनका काम तमाम कर सकती।

" 'मेरा हाथ दूसरी चोट करने के लिए उठा,परन्तु उनको तड़पता देखकर मेरा हाथ रुक गया। मैं लगभग एक मिनट तक उनका रक्त बहते और उन्हें बिस्तर पर छटपटाते देखती रही। इस समय मुझे समझ में आया कि हत्या करना व्यर्थ है। उनके पन्द्रह-सोलह वर्ष तक अपने और लड़की के पालन तथा रक्षा करने की बात स्मरण हो आयी। मैं अलमारी में से कपड़ा निकालकर उनका रक्त बन्द करने का यत्न करने लगी। मरकरी क्रोम लेकर मैंने उनकी पट्टी कर दी। घावों पर मरकरी क्रोम लगवाते समय और पट्टी बंधवाते समय वह कहने लगे—मैंने तुम्हारी लड़की को एक लाख रुपया दिया है और इतना ही तुम्हारे लिए रखा हुआ है। इतनी बड़ी धनराशि के बदले में मैंने तुम्हें प्यार ही किया है। यदि तुम मेरी पत्नी बन रहना चाहोगी, तो ऐसी अनेक राशियां और भी दे सकूंगा। मैं अपने कमरे में जा रहा हूं, और प्रातःकाल तुम्हारे चुप रहने तथा हल्ला न करने का प्रतिकार दूंगा और भविष्य में भी देता रहूंगा।

" 'मैं पट्टी करते हुए मन में विचार कर रही थी कि इस कार्य के पश्चात् वहां रहना नहीं चाहिए और चुपचाप वहां से चल देना चाहिए।

"जो कुछ हुआ था, मैं उस सबमें अपने को निर्दोष नहीं समझती थी। मंगला के विवाह के उपरान्त मुझे उस घर में एक क्षण भी नहीं रहना चाहिए था।

" 'अतः पट्टी के उपरान्त लालाजी के कमरे से निकलते ही मैंने वहां से भागने की योजना बना ली। मैंने वह पीतल की सलाख और दो जोड़ी कपड़े थैले में लिये और वहां से चल पड़ी। चौकीदार सो रहा था, इसलिए मेरे वहां से आने का किसी को पता नहीं चला।

" 'वह सलाख़ मैंने हरिद्वार में आकर गंगाजी को अर्पण की और तदन्तर यहां आकर अपने मन से इस दुर्घटना का प्रभाव मिटाने का यत्न करती रही हूं।'

:30:

"मंगला बेटी! तुम्हारी मां की इस कहानी में कुछ अस्वाभाविकता समझ आयी थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु मैंने उसे बीच में नहीं टोका। जब वह कह चुकी, तो मैंने उनके मन का संशय निवारण करने के लिए कह दिया, 'सुखिया! तुमने उस समय मुझे बताया होता, तो मैं तुम्हारे भागने में न केवल सहायक होती, वरन् स्वयं भी तुम्हारे साथ आ जाती।'

" 'जहां तक मेरे हल्ला न करने का प्रश्न है, पहले तो मैं आवाज़ नहीं कर सकी। उन्होंने मेरे मुंह में रूमाल ठूंसकर मुझे चुप करा रखा था। दूसरे, मैं अपनी पतित अवस्था की घोषणा कर हंसी का पात्र नहीं बनना चाहती थी। उनके कुकृत्य करते समय तो मैं उनकी हत्या करने का विचार बना चुकी थी और नहीं चाहती थी कि उसके पहले कोई कमरे के बाहर से आकर मेरे प्रतिकार में बाधक हो सके।

" 'लेकिन उनको चिल्लाते और छटपटाते देख, मेरे मन में दयाभाव उमड़ पड़ा। मेरा हाथ दूसरा वार करते-करते रुक गया। इतने वर्ष तक उस घर का अन्न-अनाज खाने के प्रतिकार में लालाजी का जीवन बचाने को मैं तैयार हो गयी। तुरन्त अलमारी में से कपड़ा और दवाई निकालकर उपचार करने लगी। पट्टी करते-करते मैंने वहां से भागने की योजना बना ली थी और लालाजी के वहां से जाते ही मैं चल दी।'

" 'परन्तु सुखिया बहिन! तुमने यहां आकर न तो मुझे, न अपनी लड़की को लिखा। मैं तो यह समझ रही थी कि तुमने गंगाजी में प्रवाह ले लिया है। सोलह वर्ष का तुम्हारा पागलपन तुम्हें नरक कुण्ड में ले जाने में सफल हो गया है। यद्यपि मंगला को विश्वास था कि तुम आत्महत्या नहीं करोगी, तथापि मेरा मन बार-बार यही कहता था कि अब तक तुम्हारे मांस को मछलियां खा-पी चुकी होंगी।'

" 'मैंने मंगला को सूचना इसलिए नहीं भेजी कि वह आती और मुझे पुनः घसीट कर दिल्ली ले चलने का यत्न करती।'

"इस पर मैंने मुसकराते हुए कहा, 'परन्तु अब तो तुम्हारा चोरी-चोरी रहना पकड़ा गया है। अब क्या करोगी?'

" 'भाग तो अब भी सकती हूं, परन्तु अब समझ में आ रहा है कि चोरी-चोरी रहने में कुछ भी तत्त्व नहीं। मुझे यहां आश्रय मिल गया है। एक अन्य भक्तिनी है, मैं उसके साथ रहती हूं।'

"मैंने उसे बताया कि मैं दिल्ली छोड़ आयी हूं और लालाजी ने मेरे यहां रहने के लिए एक मकान मोल लेकर उसे मेरे रहने योग्य बना दिया है। साथ ही मेरे भाई मुझे निर्वाह योग्य पर्याप्त भेज रहे हैं।

"मैं कैलास आश्रम में उसके साथ ही गयी थी और उसकी संरक्षिका से मिली हूं। वहां से सुखिया मेरे साथ मेरे निवासस्थान तक आयी और मैंने उसे कहा कि मैं यह सब वृत्तान्त मंगला को लिख रही हूं।

"इस पर उसने कहा कि मैं तुम्हें लिखूं कि सुविधा होने पर तुम उससे मिल लो।"

शकुन्तला ने पत्र सुना, तो स्तब्ध रह गयी। वह कुछ इसी प्रकार की दुर्घटना की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशंका कर रही थी। मंगला ने कहा, "मैं आज रात उनसे कहूंगी कि मुझे लेकर मां से मिला लायें।"

"इच्छा तो मेरी भी वहां जाने की हो रही है, परन्तु यह कदाचित् कल नहीं हो सकेगा।"

शकुन्तला सुखिया के लम्बे वृत्तान्त को माताजी के पत्र में सुनकर गम्भीर विचार में मग्न अपनी कोठी में आयी, तो चाय का समय हो रहा था। घर पर नोरा और बदरीप्रसाद आये हुए थे। बदरीप्रसाद रोहतक से निर्वाचन में अपनी पराजय का समाचार सुनकर ही आया था। वैसे तो मतदान के दिन का दृश्य देखकर ही वह अपने सफल होने की आशा छोड़ बैठा था, परन्तु उसे इतने कम मत मिलेंगे कि उसकी ज़मानत भी ज़ब्त हो जायेगी, इसकी उसे आशा नहीं थी।

परिणाम घोषित होते ही वह नोरा के साथ दिल्ली को भागा। यहां कोठी में वह अपने कमरे में पहुंचा, तो मिस्टर शर्मा उसके आने का समाचार पाते ही उसे मिलने के लिए चला आया। शर्मा के यह पूछने पर कि चुनावों का क्या परिणाम हुआ है, बदरीप्रसाद ने कह दिया, "'ईवनिंग न्यूज़' में प्रकाशित हो गया है। पढ़ लीजियेगा।"

इतना कहकर वह अपने कमरे में चला गया और उसने भीतर से द्वार बन्द कर लिया। नोरा भी बाहर रह गयी थी। शर्मा ने प्रश्न-भरी दृष्टि से नोरा की ओर देखा, तो उसने बताया, "इनको इतने कम मत प्राप्त हुए हैं कि ज़मानत भी ज़ब्त हो गयी है।"

शर्मा मन-ही मन प्रसन्न था, परन्तु ऊपर से शोकमुद्रा बनाये हुए उसने कहा, "मैं यह आशा नहीं करता था।"

"यह तो हो चुका है।" नोरा ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "शकुन्तला बहिन कहां है?"

"अपनी सहेली मंगला से मिलने गयी है।"

नोरा ड्राइंगरूम में बैठ गयी थी। तभी शकुन्तला मंगला से मिलकर लौट आयी। उसने भाई की गाड़ी कोठी में खड़ी देखी थी और अब नोरा को ड्राइंगरूम में बैठी देखकर वह भी वहां पहुंचकर व हाथ जोड़कर नमस्ते करके चुनाव के परिणाम के विषय में पूछने लगी।

नोरा ने बता दिया, "असफलता तो निश्चित ही थी और हो गयी। उन्हें ग़लत निर्वाचन-क्षेत्र से खड़ा किया गया था। साथ ही आपके मामाजी ने भी अपने भानजे का जी भरकर विरोध किया था।"

शकुन्तला ने अपने मन की बात कह दी, "मेरे विचार से यह ठीक ही हुआ है। भैया को अब राजनीति की गन्दगी से बाहर चले आने की प्रेरणा मिलेगी।"

"बहुत कठिन है। राजनीति का नशा इस प्रकार कम नहीं होता। नशा टूटने पर और अधिक पीने की इच्छा होने लगती है।"

"यह तो दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम सुनाओ," नोरा ने बात बदल दी और पूछ लिया, "माताजी का कोई पत्र आया है?"

"मुझे तो नहीं आया। हां, मंगला को एक पत्र मिला है।"

"कैसी हैं?"

"उस पत्र से तो यही समझ आया है कि वह स्वस्थ हैं।"

"मैं भी उनसे मिलने की इच्छा करती हूं। यदि वह आज यहां होतीं, तो कदाचित् अपने पुत्र को सन्मार्ग दिखा सकतीं।"

"भैया माताजी का कहना नहीं मानते।"

"हां, यह तो मैं देख ही रही हूं, परन्तु इस समय ठीक सम्मति दी जाती, तो इनके मान जाने की अधिक सम्भावना थी।"

"पिताजी से कहूंगी कि वह भैया को किसी उपार्जन-कार्य पर लगा दें।"

"उन्होंने ही तो यह सब कुछ किया है। जब वह घर से भागकर मरीना होटल में ठहरे हुए थे, तब से धन और सम्पत्ति से पिताजी ही उनको निर्वाचन लड़ने के लिए तैयार कर रहे थे।

"मैं समझती हूं कि चुनाव के उपरान्त पुत्र पिता की योजनानुसार ही दिल्ली आकर इसी प्रकार का कोई अन्य काम करना चाहते हैं।"

"इसी प्रकार का अन्य काम करने से क्या मतलब है?"

"मुझे बताते नहीं। मुझे तो वह केवल एक काम के योग्य समझते हैं और उसमें वह मेरी भरपूर सेवा लेते रहते हैं।"

शकुन्तला मुसकराकर चुप कर रही। शर्मा अपनी मोटरगाड़ी में किसी कार्य पर जा चुका था। सेवक नोरा और उसके पति का सामान मोटर से निकालकर बदरीप्रसाद के कमरे में ले जाना चाहता था, परन्तु कमरा भीतर से बन्द था। इसलिए उसने सामान कमरे के द्वार के पास रखकर नोरा से आकर पूछा, "सामान कहां रखूं?"

"रहने दो। हम स्वयं रख लेंगे।"

शकुन्तला ने सेवक को चाय बनाने के लिए कह दिया। नोरा ने कुछ बात करने के लिए पूछ लिया, "मंगला का स्वास्थ्य कैसा है?"

"प्रत्यक्ष रूप में तो वह स्वस्थ और प्रसन्न प्रतीत होती है।" उसने नोरा को मंगला के ऋषिकेश जाने के विषय में नहीं बताया। मंगला ने कहा था कि उसकी मां के ऋषिकेश में मिल जाने की सूचना पिताजी को नहीं देनी चाहिए। वह स्वयं भी सुखिया से मिलने के लिए जाना चाहती थी, परन्तु वह अपने पति से इसका प्रयोजन नहीं बताना चाहती थी।

इसलिए वह मन-ही-मन विचार कर रही थी कि किस प्रकार पति से हरिद्वार और फिर ऋषिकेश जाने की स्वीकृति मांगे। अपनी माताजी से मिलने जाने की बात पहले हो चुकी थी और उस विषय पर शर्मा ने उसे रोक दिया था। उसका कहना था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जो स्त्री अपने पति को छोड़कर चली गयी हो, वह मेलजोल रखने योग्य नहीं है।

वास्तव में, सदारानी और शर्मा में कभी नहीं बनी। जब वह अभी कोठी में रहने के लिए नहीं आया था, तब भी वह शकुन्तला को कहा करता था कि शकुन्तला की मां का व्यवहार उसे पसन्द नहीं। सदारानी को भी उसमें किसी प्रकार की रुचि नहीं थी।

रात के समय शर्मा से शकुन्तला ने कहा, ''मंगला हरिद्वार जा रही है।''

''किसलिए ?''

''वह चाहती है कि प्रसूति-गृह में जाने से पूर्व वह गंगास्नान कर आये।''

''इससे क्या होगा ? उसे कुछ कष्ट है ?''

''कष्ट होता, तो वह जाती ही नहीं। कष्ट न होने से ही उसकी जाने की इच्छा हो रही है।''

''परन्तु वहां क्या है, जो व्यर्थ में अपने को और होने वाले बच्चे को ख़तरे में डाल रही है ?''

''मैंने उसे यह बात कही थी। इसका उत्तर उसने यह दिया है कि वह अपनी मोटरगाड़ी में जायेगी और उसके पति धीरे-धीरे चलाते हुए ले जायेंगे। चार घण्टे की यात्रा वह छह घण्टे में तय करेंगे।''

''यहां इस घर में एक-से-एक बढ़कर मूर्ख हैं। तुम्हारी मां है, तो वह तुम्हारे पिता से घृणा करती है। तुम्हारे पिता हैं, तो वह अपने पुत्र के अतिरिक्त अन्य किसी को पसन्द नहीं करते। तुम्हारी सहेली है, तो वह भी इसी घर की उपज है। कभी यहां किसी से मिलने नहीं आती। एक तुम भी हो, जो बिना बुलाये उसके घर के चक्कर काटा करती हो। अब वह गर्भ-भार को लिये गंगास्नान को चल पड़ी है। मुझे तो यह घर एक पागलख़ाना ही समझ आ रहा है।

शकुन्तला अपने पति के व्यवहार की तुलना मंगला के पति के व्यवहार से करती, तो अपने विवाह पर पश्चात्ताप करने लगती। वह देख रही थी कि मंगला का पति अपनी पत्नी और उसकी सहेली का कितना आदर करता है। मंगला का श्वसुर भी अपनी पतोहू और उसकी सहेली से सदा सद्व्यवहार ही रखता है। सबसे विचित्र बात उसे यह अनुभव हुई थी कि मंगला का श्वसुर पतोहू से शास्त्राध्ययन करने लगा था और वह भी मंगला से प्रेरणा पाकर।

मंगला ने शकुन्तला को बताया था कि उसकी एक जेठानी उससे नाराज़ है। क्यों ? वह समझ नहीं सकी। इसलिए उसने श्वसुर की सम्पत्ति में बंटवारे की मांग की, तो श्वसुर ने उसकी वे सब बातें मान लीं, जिनसे किसी दूसरे को हानि न हो और अपने उस लड़के को सम्पत्ति से पृथक् कर दिया। इस पर भी श्वसुर पतोहू से नाराज़ नहीं, जबकि पतोहू श्वसुर और उसकी छोटी पतोहू से मिलना पसन्द नहीं करती।

इसके विपरीत शकुन्तला को अपने पति के व्यवहार की विलक्षणता स्पष्ट दिखाई देती थी। श्वसुर के घर में रहते हुए शर्मा अपनी मां से मिलने भी नहीं जाता था। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखी होकर उसकी मां अपने गांव चली गयी थी और वहीं रहने लगी थी। शर्मा ने अपनी मां को ख़र्च देना भी बन्द कर दिया था।

एक दिन शकुन्तला को पता चला कि उसकी सास ने पुत्र को ख़र्च के लिए लिखा था और पुत्र ने कुछ भी भेजने के स्थान पर उसे दिल्ली चले आने के विषय में लिख दिया है। इस पर उसने अपने पास से अपनी सास को एक सौ रुपया भेजना आरम्भ कर दिया था।

मनीऑर्डर फ़ार्म पर उसने अपने पति का नाम ही लिखा था। मनीऑर्डर की रसीद आयी, तो वह शर्मा के हाथ लग गयी। पहले तो वह समझ ही नहीं सका कि उसने यह मनीऑर्डर कब किया है, परन्तु लिखावट पर ध्यान देने पर वह समझ गया कि लिखावट शकुन्तला की है। इस पर पति-पत्नी में झगड़ा हो गया। शर्मा का कहना था, "तुमने माताजी को एक सौ रुपया भेजा है ?"

"जी।"

"क्यों ?"

"मुझे अनुभव हुआ था कि उनको धनाभाव के कारण कष्ट है।"

"तुम्हें यह किसने बताया है ?"

शकुन्तला ने अपनी सास का पत्र पति की मेज़ पर पड़ा देखकर पढ़ लिया था। इसलिए उसने बात बना दी। उसने कहा, "आपने ही तो बताया था।"

"मैंने ? मुझे याद नहीं आता कि मैंने अपनी माताजी के विषय में तुमसे कुछ भी कहा हो।"

शकुन्तला ने कह दिया, "आपने अपने मुंह से तो नहीं कहा, परन्तु आपने माताजी का पत्र यहां मेज़ पर खुला रखा था और मैं समझी थी कि आपने मुझे दिखाने के लिए रखा है। अत: मैंने माताजी को यह राशि भेज दी और अब प्रतिमास भेजती रहूंगी।"

"मैं यह नहीं चाहता। वह मेरी माताजी हैं। मैं चाहे कुछ भेजूं, चाहे न भेजूं। तुम्हें इस विषय में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।"

शकुन्तला ने भी कह दिया, "ठीक है। वह आपकी माताजी हैं। मैंने उन पर किसी प्रकार का दावा मुख़ालिफ़ाना नहीं किया, परन्तु यह रुपया मेरा है। मैं इसे जिसे चाहूं दूं और जिसे चाहूं न दूं। आपको इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।"

"तुम मेरी पत्नी हो ? इस नाते मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि माताजी को भविष्य में कुछ मत भेजा करो।"

"परन्तु मैं आपके अधीन कर्मचारी नहीं हूं। इसलिए आपके हुक्म की पाबन्द नहीं हूं।"

"तब ठीक है। तुम मेरे कमरे में मत सोया करो। यहां सोने से तो तुम पत्नी ही रहोगी और पत्नी का पति के अधीन रहने का ही विधान है।"

"कहां का विधान है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रकृति का। सब जीवों में ऐसा ही होता है।"

शकुन्तला ने कह दिया, "ठीक है। मैं आपके ऊपर अफ़सर बनना नहीं चाहती। हां, आपके अधीन भी अपने को नहीं मान सकती।"

इस पर भी दोनों पृथक्-पृथक् कमरों में सो नहीं सके, परन्तु शकुन्तला के मन में विष-बीज पड़ गया था कि इस सुन्दर युवक से विवाह करना उसकी भूल थी।

जिस दिन मंगला के हरिद्वार जाने की बात हो रही थी, शकुन्तला के मन में इस झगड़े की बात उभर आयी थी। वह करवट बदलकर सोने का यत्न करने लगी।

:31 :

शकुन्तला रात-भर सो नहीं सकी। वह पलंग पर करवटें बदलती लेटी-लेटी जब सो नहीं सकी, तो उठी और गुसलख़ाने में स्नानादि के लिए चली गयी। जनवरी के दिन थे। दिल्ली में यह अति शीत की ऋतु होती है। इसलिए उसने गीज़र में पानी गरम करने के समय यह विचार किया कि इस भद्र पुरुष के पीछे वह किसलिए पड़ी है? विवाह तो पहले भी नहीं करना चाहती थी और परिस्थितियों से धकेली जाती हुई वह इसके जीवन में आ पहुंची है।

वह विचार कर रही थी कि नदी के किनारे खड़े-खड़े फिसल जाने के कारण वह नदी में गिर पड़ी है और अब बहाव में बहती जा रही है। क्या उसे इस नदी के बहाव से बाहर निकलने का यत्न नहीं करना चाहिए? क्यों नहीं करना चाहिए?

इस विचार के आते ही वह समझ गयी कि इस बहाव से निकल सकना कठिन क्यों है?

उसने अपने मन में एक संकल्प बनाया और वह उठकर स्नान करने लगी।

पानी अभी पर्याप्त गरम नहीं हुआ था, परन्तु मन में एक दृढ़ संकल्प बन जाने के कारण उसका ध्यान संकल्प पूरा करने में लग गया था। उसे अब सर्दी नहीं लग रही थी। उसने स्नान किया और वस्त्र पहनकर अपने सोने के कमरे में आयी। उसका पति अभी गहरी नींद सो रहा था। प्रातः के तीन बजे थे।

शकुन्तला ने एक क्षण तक पति के मुंह पर देखा और उसके रूप तथा विचारों में अन्तर का अनुमान लगाकर उसने अपना वार्डरोब खोला। उसने बाहर जाने योग्य वस्त्र पहने और वार्डरोब में ही लगे सेफ़ को खोलकर उसमें से बैंक की पासबुक, चेकबुक और जो कुछ नक़द वहां था, वह सब निकालकर अपने पर्स में रख लिया।

तदनन्तर, वह सोने के कमरे से बाहर निकल आयी। फिर पूजा के कमरे में गयी और वहां ध्यानावस्थित होने का यत्न करने लगी। एक घण्टे के व्यर्थ के प्रयत्न पर भी जब वह मन को एकाग्र नहीं कर सकी, तो घड़ी में समय देखकर और अनुमान लगाकर कि मंगला पूजा पर बैठने के लिए तैयार हो रही होगी, वह ड्राइंगरूम से लालाजी के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलीफ़ोन करने लगी। मंगला की सास निर्मला ने टेलीफ़ोन का चोंगा उठाकर पूछा, "कहां से बोल रहे हैं?"

शकुन्तला ने निर्मला की आवाज़ पहचानकर कहा, "माताजी! शकुन्तला बोल रही हूं।"

"हां, क्या बात है?"

"मंगला बहिन से कुछ पूछना था। वह जाग पड़ी होगी।"

निर्मला ने उत्तर में कहा, "वह पति के साथ ऋषिकेश जा रही है। मैं समझती हूं कि दस-पन्द्रह मिनट में चल देगी।"

"मैं उससे मिलने आ रही हूं।"

"किसलिए?"

परन्तु शकुन्तला ने टेलीफ़ोन बन्द कर दिया था। उसका विचार था कि शायद मंगला अभी एक-दो दिन बाद जाये, लेकिन वह तो उसी दिन टैक्सी से जाने का विचार कर रही थी। अब मंगला को जाने के लिए तैयार देखकर उसके मन में विचार आया कि उनकी मोटरगाड़ी में स्थान है, तो वह उन्हीं के साथ क्यों न चल दे? अत: वह जैसे बैठी थी, वैसे ही अपना पर्स उठाकर लाला रघुनन्दन गुप्त की कोठी को चल दी।

चौकीदार ने पूछा, "बहिनजी कहां जा रही हैं?"

"मंगला से मिलने।" इतना कहकर वह कोठी से निकल गयी।

मंगला और मनोहरलाल के लिए कोठी में बरामदे के बाहर मोटर खड़ी थी। सामान पीछे डिग्गी में और कुछ ऊपर गाड़ी की छत पर रखा था। मनोहरलाल गाड़ी के समीप खड़ा पत्नी की प्रतीक्षा कर रहा था। शकुन्तला ने नमस्ते कर पूछ लिया, "मंगला कहां है?"

"वह और माताजी चाय इत्यादि ले रही हैं।"

"और आप ले चुके हैं?"

"मैं लेट-लतीफ़ नहीं। मैंने सबसे पहले ली थी और गाड़ी में सामान देखने आया था।"

शकुन्तला कोठी के भीतर डाइनिंगहॉल में चली गयी। मंगला चाय के प्याले में से अन्तिम घूंट पी रही थी। निर्मला खा-पीकर उठ खड़ी हुई थी।

शकुन्तला को देखकर मंगला ने कहा, "रात एकाएक यह विचार बन गया कि यदि जाना है, तो तुरन्त जाना चाहिए। माताजी का कहना है कि प्रसव जितना समीप आता जायेगा, उतना ही घूमना-फिरना कठिन होता जायेगा। माताजी भी साथ चल रही हैं। वह मुझे अकेली नहीं जाने देना चाहतीं।"

"तो माताजी भी जा रही हैं?"

"हां।"

"और कोई?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''माताजी के सुपुत्र गाड़ी चलायेंगे।''

''क्या मैं भी साथ चल सकती हूं?''

''परन्तु तुम तैयार तो हो नहीं ?''

''बिल्कुल तैयार हूं।'' शकुन्तला ने पर्स दिखाते हुए कहा।

''और पहनने के कपड़े ?''

''वह माताजी के पास वहां हैं।''

''घरवाले से पूछकर आयी हो ?'' निर्मला ने पूछ लिया।

''उससे तो रात को ही बात हो गयी थी। मैं टैक्सी में जाना चाहती थी, परन्तु पता लगा कि आप भी चल रहे हैं, तो मैं इस आशा में यहां आयी हूं कि आप की गाड़ी में स्थान मिल जायेगा।''

''स्थान तो है।'' मंगला ने उत्तर दिया।

''तो चलिये। मैं आ गयी हूं।''

तीनों स्त्रियां बाहर आ गयीं। मनोहरलाल ने पूछा, ''शकुन्तलाजी! सूटकेस कोठी से लाना होगा?''

''मेरा सूटकेस ऋषिकेश में माताजी के पास रखा है।''

निर्मला को शकुन्तला को इस प्रकार एकाएक चलने के लिए तैयार होते देख विस्मय हुआ था, परन्तु उसने बात आगे नहीं चलायी।

मार्ग में सामान्य राजनीति पर बात होती रही।

बदरीप्रसाद के निर्वाचनों में असफल होने पर और कांग्रेस की चारों ओर विजय होने की चर्चा होती रही। शकुन्तला का कहना था, ''राजनीति में मेरी रुचि नहीं है और मुझे भैया के असफल होने से न तो अचम्भा हुआ है और न ही किसी प्रकार का दु:ख।''

शकुन्तला अपने मन के भावों को बताती रही। उसकी पूर्ण युक्ति का आधार यह था कि देश और देश का हिन्दू नैतिक दृष्टि से घोर पतन को प्राप्त हो चुका है। ऐसी स्थिति में प्रजातन्त्रात्मक राज्य-पद्धति पतन को तीव्र ही करेगी।

ये लोग दिल्ली से सवा चार बजे चले थे और आठ बजे हरिद्वार तथा साढ़े आठ बजे ऋषिकेश पहुंच गये। मनोहरलाल का विचार शिवानन्द आश्रम में ठहरने का था, परन्तु जब ये देहरादून मार्ग पर सदारानी के मकान पर पहुंचे, तो उसने इनको अपने ही मकान पर ठहरा लिया।

सदारानी शकुन्तला के आने की आशा नहीं करती थी। उसने मंगला को लिखा भी था कि सुखिया के वहां होने की बात किसी को पता न लगे। इसलिए जब मनोहरलाल इत्यादि स्नान कर रहे थे, तो सदारानी ने शकुन्तला से पूछ लिया, ''तुम कैसे आ गयी हो?''

शकुन्तला ने मुसकराते हुए कहा, ''चोरी-चोरी भागकर।''

सदारानी ने यह नहीं पूछा था। वह सुखिया के विषय में सूचना की बात पूछ रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। इस समाचार से सदारानी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछा, "इसकी क्या आवश्यकता थी?"

"मैं मिस्टर शर्मा से प्रसन्न नहीं।"

"क्या ख़राबी है उसमें?"

"मां! वह मूर्ख है।"

"परन्तु वह तुम्हारा ही तो निर्वाचन है।"

"हां मां! भूल हो गयी। मैंने उसका शरीरिक सौन्दर्य ही देखा था। यह कहावत सुन रखी थी कि चेहरा मन का दर्पण होता है। यह किंवदन्ती मिथ्या सिद्ध हुई है।"

"पिताजी को बताकर आयी हो अथवा नहीं?"

"नहीं।"

"तो वे सब तुम्हें ढूंढ़ते हुए यहां आ जायेंगे।"

"तो फिर क्या होगा? अब मैं दिल्ली नहीं जाऊंगी।"

सदारानी परेशान होने लगी थी। उसे विश्वास था कि शकुन्तला का पिता और शायद उसका पति भी उसे ढूंढ़ते हुए यहां आ जायेंगे और तब न केवल शकुन्तला के विषय में तकरार होगी, वरन् सुखिया का भेद भी खुल जायेगा और वह ऋषिकेश छोड़कर कहीं अन्यत्र भाग जायेगी।

सदारानी ने सुखिया को बताया था कि उसने उसका समाचार लड़की को लिखा है। साथ ही यह भी लिखा है कि उसे मां का समाचार लालाजी तक नहीं पहुंचाना चाहिए।

परन्तु अब शकुन्तला के आने और वह भी भागकर आने से वह आशा करने लगी थी कि उसका पीछा करते हुए लालाजी तथा शर्मा किसी भी समय आ सकते हैं।

इसलिए मंगला और मनोहरलाल के स्नानादि से निवृत्त होने पर भोजन करते हुए सदारानी ने कहा, "मंगला की मां के यहां आने का समय हो गया है। वह आश्रम से भोजन करके ही यहां आया करती है, परन्तु तुम्हारे यहां आने पर तुम्हारे पिता के यहां आने की सम्भावना से वह यहां से पुनः विलुप्त भी हो सकती है।"

इस समाचार से मंगला को भय लग गया। उसने पूछा, "क्या मां का यहां होना पिताजी से छिपाकर नहीं रखा जा सकता?"

"रखा तो जा सकता है, परन्तु तुम्हारी मां इतने से आश्वस्त नहीं होगी।"

"तो ऐसा करें कि मैं अभी उनसे मिलने उनके आश्रम पर चली जाती हूं और उन्हें पाप से भागने के स्थान पर पाप की आंखों में देखने की प्रेरणा देना चाहती हूं। साथ ही हम इस कोठी को छोड़कर शिवानन्द आश्रम में चले जाते हैं।"

मंगला की योजना ठीक समझी गयी। सबने जल्दी-जल्दी भोजन किया और मंगला पति के साथ शिवानन्द आश्रम को चल दी।

शकुन्तला भी उनके साथ जाना चाहती थी, परन्तु सदारानी ने उसे रोक लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कहा, ''मैं किसी भी समय तुम्हारे पिता के यहां पहुंचने की आशा कर रही हूं। पहले तुम अपने विषय में उनसे निश्चय कर लो, बाद में सुखिया से मिलने के विषय में विचार कर लेंगे।''

निर्मला, मनोहर और मंगला शिवानन्द आश्रम में रहने चले गये, लेकिन शकुन्तला मन मसोसकर मां के पास ही रह गयी। वह विचार कर रही थी कि मां ठीक ही कहती है कि मंगला और उसकी मां को लालाजी और उसकी मां से पृथक् ही रखना चाहिए।

मनोहरलाल और मंगला गये, तो फिर नहीं लौटे।

:32:

स्वभावानुसार शर्मा की नींद दिन के सात बजे खुली। उस समय शकुन्तला अपने पूजागृह और स्टडीरूम में होती थी। इसलिए शर्मा को शकुन्तला के बेडरूम में न होने पर विस्मय नहीं हुआ। उसने घण्टी बजायी, तो सेवक चाय का एक प्याला ले आया। यह नित्यप्रति के अनुसार ही था।

शर्मा ने चाय ली और स्नान आदि में लग गया। जब तक वह अल्पाहार के लिए तैयार होता, शकुन्तला भी अपने स्टडीरूम से तीन घण्टे के स्वाध्याय के उपरान्त आ जाया करती थी और दोनों इकट्ठे अल्पाहार लिया करते थे।

लालाजी तो प्रात: सात बजे ही कार्यालय में चले जाया करते थे और काम पर मैटीरियल पहुंचने की सूचना लिया करते थे।

शर्मा ने खाना खाने की मेज़ पर बैठते ही अनुभव किया कि शकुन्तला अभी नहीं आयी। बेयरा आया, तो उसने पूछ लिया, ''मालकिन कहां हैं?''

बेयरा नहीं जानता था। इसलिए उसने कह दिया, ''पण्डितजी! वह अपने पूजा के कमरे में होंगी।''

''देखो, और उन्हें कहो कि अल्पाहार का समय हो गया है।''

बेयरा प्लेटें लगा रहा था, वह शकुन्तला को बुलाने चला गया। वह दो मिनट में लौटा और कहने लगा, ''वह पूजागृह में नहीं हैं।''

''तो कहां हैं?''

''हजूर! मैं नहीं जानता।''

''देखो, लालाजी ने दफ़्तर में बुलाया होगा। उनसे कहो कि मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं।''

बेयरा के साथ सेठजी भी आये और शर्मा से कहने लगो, ''मुझे चौकीदार ने बताया है कि शकुन्तला प्रात: चार बजे अपनी सहेली के घर गयी थी और अभी तक नहीं लौटी।''

''वहां क्यों गयी है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह मैं तुमसे पूछता हूं। तुम भी ख़ूब आदमी हो, जो अपनी पत्नी का भी ज्ञान नहीं रखते कि वह कहां है और कहां नहीं है।"

शर्मा ने बेयरा से कहा, "देखो, रघुनन्दनजी के घर चले जाओ और उसे आने को कहो।"

लालाजी को शर्मा की अन्य भी कई बातें अव्यावहारिक प्रतीत होती थीं। उसमें यह भी एक थी। उन्होंने कुछ डांट के भाव में कहा, "बेयरा को भेजने की क्या अवश्यकता है? स्वयं फ़ोन क्यों नहीं करते?"

शर्मा उठा और ड्राइंगरूम में टेलीफ़ोन पर जा पहुंचा। फ़ोन पर रघुनन्दन ने स्वयं बताया, "मंगला, उसका पति और उसकी सास हरिद्वार गये हैं और शकुन्तला उनके साथ ही अपनी मां से मिलने गयी है।"

"परन्तु वह यहां किसी को बताकर तो नहीं गयी।" शर्मा ने कहा।

"वह कहती थी कि उसने आपको रात में ही बता दिया था।"

"नहीं साहब! उसने अपने जाने के विषय में नहीं बताया था। यह तो 'इलोपमेण्ट' का केस है।"

रघुनन्दन के हंसने का शब्द टेलीफ़ोन पर सुनाई दिया और टेलीफ़ोन खट से बन्द हो गया।

'इलोपमेण्ट' का शब्द समीप खड़ा लाला जुगलकिशोर भी सुन रहा था। जब शर्मा ने चोंगा रखा, तो उसने पूछ लिया, "किसका 'इलोपमैण्ट' हुआ है?"

"मेरी पत्नी का, और रघुनन्दन के पुत्र मनोहरलाल द्वारा।"

इस पर जुगलकिशोर हंस पड़ा और पूछने लगा, "लाला रघुनन्दन ने क्या कहा है।"

दोनों वहां से ड्राइंगरूम की ओर आ रहे थे। शर्मा ने क्रोध में कहा, "इस लड़की ने नाक में दम कर रखा है।"

जुगलकिशोर ने मुसकराते हुए कहा, "यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है।"

इस पर शर्मा ने कहा, "रात शकुन्तला ने कहा था कि उसकी सहेली मंगला अपने पति के साथ हरिद्वार जा रही है। वह सात महीने की 'प्रेगनेंसी' में है। मैंने शकुन्तला से कहा था कि वह महामूर्ख है, जो इस अवस्था में जाना चाहती है। बस, रात यही बात हुई थी। प्रातः मैं जागा, तो नित्य की भांति शकुन्तला कमरे में नहीं थी। मैंने समझा पूजागृह में होगी। अब वह अल्पाहार के लिए नहीं आयी, तो मैंने उसे बुलवाया था और अब यह पता चला है।"

जुगलकिशोर ने मुसकराते हुए कहा, "यही तो पूछ रहा हूं कि क्या ज्ञात हुआ है? तुम पढ़े-लिखे बेमतलब की बातें बहुत करते हो।"

"लाला रघुनन्दन ने बताया है कि उनका लड़का मनोहर आज अपनी पत्नी और मां के साथ हरिद्वार गया है और शकुन्तला उनके साथ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो इसे तुम 'इलोपमेण्ट' कहते हो ?"

"जी। मंगला द्वारा शकुन्तला का।"

"देखो शर्मा! भोजन करो और काम पर चले जाओ। पुराने सेक्रेटेरियेट में मरम्मत का काम हो रहा है। उसे शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करना है।"

"मुझे भय है कि शकुन्तला लौटेगी नहीं।"

"वह अपनी मां से मिलने गयी है। आ जायेगी।"

मध्याह्नोत्तर जुगलकिशोर ने शकुन्तला को सदारानी के पते पर तार दे दिया। उस तार में उसने पूछा कि कब लौट रही है, सूचना दे। तार का उत्तर अगले दिन आया– "अभी विचार नहीं किया। आने से पहले सूचना दे दूंगी।"

रात के समय जुगलकिशोर ने शर्मा को बताया, "शकुन्तला वहां रहेगी। उसका तार आया है कि आने से पहले वह सूचना दे देगी।"

शर्मा ने इसमें किसी प्रकार की रुचि प्रकट नहीं की, तो जुगलकिशोर ने भी बात बदल दी। व्यवसाय सम्बन्धी बात होने लगी।

तीसरे दिन मनोहरलाल इत्यादि ऋषिकेश से लौटे, तो मनोहरलाल ने नौकर के हाथ जुगलकिशोर को शकुन्तला का पत्र भेज दिया।

जुगलकिशोर अब प्राय: कोठी में ही रहता था। वह कभी-कभी उन सरकारी अधिकारियों को मिलने जाया करता था, जिनका उसके व्यवसाय से सम्बन्ध होता था।

लालाजी का मित्र, जो पहले अंगरेजी राज्यकाल में निर्माण मन्त्री था, अब मन्त्रि-मण्डल में नहीं था। अन्तरिम स्वराज्य सरकार में तो वह मन्त्री था, परन्तु वह बाद में न तो संसद में निर्वाचित हो सका और न ही मन्त्री हो सकता था। उसके स्थान पर नये लोग आ गये थे और जुगलकिशोर को कठिनाई अनुभव होने लगी थी।

शर्मा निर्माण-कार्य को देखता था। उसे लालाजी ने एक मोटरगाड़ी दी हुई थी और वही काम पर जाता था। जहां युद्धकाल में लालाजी के छह स्थानों पर निर्माण-कार्य चल रहे थे, वहां अन्तरिम सरकार के काल में तीन स्थान पर रह गये थे और अब नये निर्वाचनों के उपरान्त तो केवल एक स्थान पर ही कार्य था। अब वह प्राइवेट काम लेने में रुचि लेने लगे थे। फ़रीदाबाद में एक बहुत बड़ी फ़ैक्ट्री का ठेका लिया जा रहा था। उसी की चिन्ता में वह भाग-दौड़ कर रहे थे।

जब शकुन्तला का पत्र आया, तो जुगलकिशोर घर पर ही था। लिफ़ाफ़े में दो पत्र थे। एक उनके नाम था और दूसरा शर्मा के नाम।

पिता के पत्र में शकुन्तला ने लिखा था–"पूज्य पिताजी! मैं माताजी के पास सदा के लिए रहने आयी हूं। मेरी रुचि विवाह में पहले भी नहीं थी और अब एक वर्ष के अनुभव के उपरान्त मेरी अरुचि में वृद्धि ही हुई है। इसलिए अपने निर्वाचित और स्वीकार किये पति को अपनी भूल समझकर छोड़ आयी हूं और एक पत्र मैं उनको लिख रही हूं। आप उनको दे दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं चाहती हूं कि आप मेरा 'एलाउंस' यहां भेजते रहें। यदि आपने अभी अथवा कभी इसे बन्द करने का विचार किया, तो लिख दीजियेगा। तब मैं जीविकोपार्जन का साधन कहीं निर्माण करने का यत्न करूंगी। आपने मेरे हित के लिए ही उपाय किया था, परन्तु मैंने भूल की है कि मिस्टर पी. डी. शर्मा को जीवन-साथी स्वीकार किया था। यह अनुभव विहीनता के कारण था।

"माताजी ने आपके लिए नमस्कार लिखने को कहा है। कृपया साथ वाला पत्र मिस्टर शर्मा को दे दें।

—आपकी पुत्री शकुन्तला।"

मिस्टर शर्मा के पत्र में लिखा था—

"श्रीमान् शर्माजी! नमस्ते।

"मैंने आपको छोड़ दिया है। मैं अब अपने को आपकी पत्नी नहीं समझती। इसमें कारण तो कई हैं, परन्तु प्रमुख कारण यह है कि मैं आपसे अपना विवाह एक मृगतृष्णा मात्र मानने लगी हूं। इसलिए मैं यह चाहती हूं कि आप मुझे भूल जायें।

यदि आप मुझे वापस ले जाने के लिए यहां आयेंगे, तो आपको निराशा होगी। मैं अब दिल्ली नहीं आऊंगी।

—शकुन्तला।"

इस पत्र को जुगलकिशोर ने भी पढ़ा। वह पढ़कर चकित रह गया। उसे कुछ ऐसा समझ आया कि उसका जीवन बरबाद हो गया है। इसका कारण उसे सुखिया और मंगला ही समझ आये। सुखिया के सम्मोहन में वह सोलह वर्ष तक मूर्ख बना हुआ इन मां-बेटी का पालन-पोषण करता रहा था। उसे इन्हें घर से तब ही निकाल देना चाहिए था, जब कटरा नील में उसने सुखिया से आलिंगन करने का यत्न किया था। जब उस गंवार स्त्री ने उसके प्रणय को अस्वीकार कर दिया था, तो उसे इस घर में रहने का भी अधिकार नहीं था।

उसके उपरान्त, जहां सुखिया अपने आकर्षण से उसे मूर्ख बनाती रही थी, उसकी लड़की ने घर के दो युवकों के जीवन में विष घोल दिया था।

इस पत्र के मिलने से पूर्व जुगलकिशोर की बातचीत बदरीप्रसाद से हो चुकी थी। पिता ने बदरीप्रसाद से पूछा था, "निर्वाचन कार्य पर कितना रुपया व्यय किया है?"

"आपने मुझे कितना दिया है?"

जुगलकिशोर ने जेब से पाकेट-बुक निकालकर उसमें से देखकर बता दिया— "पांच लाख तीन सौ पचहत्तर रुपये।"

"मेरे पास इस समय उसमें से दो हज़ार दस रुपये तथा कुछ रेजगारी है। शेष सब इस हवन में आहुति हो गया।"

"अब क्या करना चाहते हो?"

"मैं अपने नेता से मिला हूं और उन्होंने मुझे एक सुझाव दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किस नेता से मिले हो ?"

"अपने प्रधानमन्त्रीजी से।"

"उन्होंने क्या सुझाव दिया है ?"

"वह बताने की स्वीकृति नहीं। जब मैं स्वीकार कर लूंगा और वहां से आज्ञा मिल जायेगी, तो आपको स्वयं ही पता चल जायेगा।"

"तो कब तक स्वीकार कर लोगे ?"

"मैंने एक प्रस्ताव अपनी ओर से उपस्थित किया है। उसके विषय में प्रधानमन्त्री ने कुछ दिन में उत्तर देने का वचन दिया है।"

"और अब ?"

"अब मैं अवकाश पर हूं । एक बार तो मेरे मन में विचार आया था कि मैं मंगला का अपहरण कर लूं। यह बहुत आसान था, परन्तु नोरा ने मुझे एक बात बतायी है। इससे डर गया हूं।"

"क्या बतायी है ?"

"वह यह कि आपने मंगला की मां की ओर हाथ बढ़ाया था और वह आपकी हत्या कर देने वाली थी।"

"नोरा को यह समाचार किसने दिया है ?"

"मैंने पूछा नहीं।"

जुगलकिशोर मुंह देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर कहने लगा, "मैं शर्मा को इस काम से निकाल देने वाला हूं।"

"और वह शकुन्तला को घर से निकाल देगा।"

"शकुन्तला पहले ही उसका घर छोड़कर मां के पास चली गयी है।"

बदरीप्रसाद पिता का मुंह देखता रह गया। पिता ने कहा, "यदि तुम अब भी चाहो, तो मैं तुम्हें शर्मा के स्थान पर काम में लगा सकता हूं।"

"अभी मेरे प्रधानमन्त्री के सम्मुख रखे प्रस्तावों का निर्णय होना है। उसके उपरान्त ही मैं विचार करूंगा।"

शकुन्तला का पत्र शर्मा को दे दिया गया। जब शर्मा ने पत्र पढ़ लिया, तो जुगलकिशोर ने पूछा, "शर्मा साहब ! शकुन्तला का पत्र पढ़ा है ?"

"जी, पढ़ा है।"

"फिर क्या विचार किया है ?"

"मैंने अपने कमरे का द्वार उसके लिए बन्द नहीं किया है और मैं उसे गाय का बछड़ा नहीं समझता, जो उसके गले में रस्सा डालकर उसे खूंटे से बांध सकूं।"

"तो फिर ?"

"जब उसके मन में पति की संगत के लिए इच्छा होगी, तो आ जायेगी।"

"और आपको पत्नी की संगत की इच्छा नहीं है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इच्छा तो होती है। यदि वह नहीं आयी, तो विचार करूंगा। अभी तो उसे गये बहुत समय नहीं हुआ।"

इस दिशा में जुगलकिशोर ने एक चेतावनी शर्मा को दे दी। उसने कहा, "इस पर भी एक बात आपको स्मरण रहे कि मैंने अपने व्यापार में आपकी नियुक्ति शकुन्तला का पति होने के कारण की है।"

"पति तो मैं हूं।"

"तो उसे मनाकर दिल्ली लाकर अपने कमरे में रखना होगा। मैं चाहता हूं कि उसके एक लड़का हो जाये।"

"मैं यत्न करूंगा।"

"हां, अन्यथा मुझे कुछ अन्य प्रबन्ध करना पड़ेगा।"

"तो लड़की का दूसरा विवाह करेंगे?"

"यह तो लड़की की रुचि की बात है। मेरा मतलब है कि अपने व्यापार में किसी अन्य को सहायक बनाना होगा।"

"वह तो मैं भी हूं। किसी अन्य से तो मैं अधिक समीप रहूंगा।"

जुगलकिशोर ने चेतावनी दोहरा दी। उसने कहा, "शकुन्तला का पति होने पर वेतन एक हज़ार रुपया, मकान, भोजन और वस्त्र साथ में ऊपर से। किसी अन्य के रूप में पांच सौ रुपया वेतन होगा और कुछ नहीं।"

"मैं यत्न करूंगा कि वर्तमान स्केल पर ही मेरा वेतन तथा भत्ता बना रहे।"

जुगलकिशोर मनोहरलाल से मिलकर शकुन्तला के विषय में जानना चाहता था। उसी सायंकाल वह रघुनन्दनजी से मिलने चला गया। यह अप्रत्याशित था। जीवन में पहली बार वह इस कोठी में पहुंचा था। रघुनन्दन ने लालाजी को आते देखा, तो अपने कमरे से निकल आया और प्रसन्नता प्रकट करते हुए बोला, "अहोभाग्य है, जो आज आपके दर्शन हुए।"

"मैं मंगला से मिलने आया हूं।"

"वह और उसकी सास इस समय चाय के लिए आने वाली हैं। आइये, बैठिये।" रघुनन्दन सेठजी को अपनी कोठी के ड्राइंगरूम में ले गया। रघुनन्दन ने घण्टी बजायी, तो सेवक आ गया। रघुनन्दन ने उसको कहा, "महावीर! चाय ले आओ और माताजी तथा बहू को कहो कि लाला जुगलकिशोरजी आये हैं।"

मनोहरलाल चार दिन की अनुपस्थिति के उपरान्त फ़ैक्ट्री में गया था और उसके लौटने का समय नहीं हुआ था।

सेवक ने जब निर्मला को लालाजी के आने का समाचार दिया, तो वह समझ गयी कि वह शकुन्तला के विषय में समाचार लेने आये हैं। वह मंगला के कमरे में उसे बताने चली गयी। मंगला असमंजस में पड़ गयी। वह विचार करने लगी थी कि किस विषय में कहां तक बताये। वैसे उसे विदित था कि शकुन्तला ने अपने पिताजी को और अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति को क्या लिखा है। उसके सामने ही शकुन्तला ने पत्र लिखे थे और लिफ़ाफ़े में बन्द करने से पूर्व मंगला को पढ़ने के लिए दिये थे।

मंगला को विचार करने में एक क्षण लगा। उसने विचार किया कि बिना पूछे वह कुछ नहीं बतायेगी और पूछी गयी बात को सच-सच बता देगी।

इतना विचारकर वह उठी। उसने बाहर जाने योग्य वस्त्र पहने और अपनी सास के साथ ड्राइंगरूम में चली आयी। रघुनन्दन लालाजी से व्यवसाय सम्बन्धी बातें ही कर रहा था।

जब तक मंगला और उसकी सास आयीं, नौकर चाय बनाकर ले आया था। बिस्कुट और चाय ही थी। जुगलकिशोर ने मंगला को आकर नमस्ते करते देखकर पूछ लिया, ''मंगला! तुम कभी मिलने भी नहीं आयीं? मैं समझता हूं कि तुम्हें उस कोठी में आये एक वर्ष से अधिक हो गया है।''

''जी। मन तो करता था कि उस घर के दर्शन किया करूं, जहां मैं एक अबोध बच्ची से सज्ञान हुई थी, परन्तु माताजी ने वहां आने से मना कर दिया है।''

''किसलिए मना किया था?''

''उन्होंने कुछ ऐसी बात बतायी थी, जो उस घर के लिए शोभनीय नहीं थी।''

''शकुन्तला की मां का दिमाग़ खराब हो गया है। तभी तो वह बारह खम्भा रोड वाली एयर कण्डीशण्ड कोठी छोड़कर ऋषिकेश चली गयी है।''

''मैं वहां माताजी से मिलने गयी थी। उन्होंने अपने कमरे में एयर कण्डीशनर लगवाया हुआ है।''

''ओह!'' लाला जुगलकिशोर भौंचक रह गया। फिर बात बदलकर पूछने लगा, ''शकुन्तला वहां क्यों रह गयी?''

''उसने आपको तथा मिस्टर शर्मा को पत्र लिखे हैं। वे पत्र उसने मुझे दिखाये थे। मैं समझती हूं, जो कुछ उसने लिखा है, उससे अधिक मैं कुछ नहीं जानती।''

''तो उसने तुम्हें कुछ नहीं बताया?''

''पिताजी! बताया तो बहुत कुछ है, परन्तु वह कहने-सुनने से मेरी जानकारी नहीं हो सकती। वह 'फर्स्ट हैण्ड इनफ़ॉरमेशन' नहीं है।''

''तुम प्रसव के इतने समीप होने पर भी इतनी दूर की यात्रा पर गयी थीं, क्या यह मूर्खता नहीं थी?''

''मेरा अनुमान था कि इस यात्रा से लाभ होगा और अब अनुभव से अनुमान ठीक ही सिद्ध हुआ है।''

''वहां जाने से क्या लाभ हुआ है?''

''उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इतना ही कह सकती हूं कि मन को सन्तोष हुआ है।''

जुगलकिशोर को किसी प्रकार की नयी सूचना यहां से नहीं मिली। इसलिए वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाय लेकर और किसी प्रकार से भी अधिक ज्ञान प्राप्त किये बिना ही अपनी कोठी को लौट गया।

जुगलकिशोर के चले जाने के उपरान्त रघुनन्दन ने मंगला से पूछा, "लालाजी के यहां आने का और इस तरह पूछताछ करने का क्या मतलब था?"

"पिताजी!" मंगला ने कहा, "इनके घर में विस्फोट हो रहा है। लड़का और पिता यह समझते हैं कि धन ही सर्वमंगला है, अर्थात् सब कार्य सिद्ध करने में समर्थ है। लड़का धन का उपयोग राजनीति में सफलता प्राप्त करने में समझता था। धन उसे सफलता नहीं दिला सका। पिता धन के आश्रय से अपनी वासनाओं की पूर्ति करना चाहता था। जहां तक मेरा ज्ञान है, धन उसमें भी सहायक नहीं हुआ। लालाजी की पत्नी और लड़की धन को किसी अन्य बात का साधन समझती हैं और वह उसकी सिद्धि के लिए ऋषिकेश जा पहुंची हैं।"

"क्या सिद्ध करना चाहती हैं?"

"अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहती हैं। आप तो जानते ही हैं कि भगवद्गीता में लिखा है—'अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।' अब अक्षर के स्वभाव का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न कर रही हैं।"

"तो क्या वह बारह खम्भा रोड वाली कोठी में नहीं हो सकता था?"

"वहां के स्वामी इस ज्ञान-प्राप्ति में बाधक होने लगे, तो वे मां-बेटी इस कोठी को छोड़कर चली गयी हैं।"

: 33 :

जुगलकिशोर देख रहा था कि उसके पांव के नीचे से मिट्टी खिसक रही है। जब से मिस्टर पी. डी. शर्मा उसके व्यवसाय में सम्मिलित हुआ था, व्यवसाय मन्दा होता जा रहा था। पहले तो वह यह समझ रहा था कि सरकारी काम कम हो रहा है, इसलिए उसके व्यवसाय में मन्दी आ गयी है, परन्तु पिछले छह महीने से कोई नया काम नहीं मिला था। इसका कारण वह नहीं समझ सका था। पहले तो यह होता था कि काम इतना आता था कि उसे लाभ देने वाले कई काम अस्वीकार करने पड़ते थे।

वह कार्यालय में बैठकर ही काम की देख-रेख किया करता था और शर्मा नित्य काम देखने जाता था। इस परेशानी के साथ जुगलकिशोर को अपनी पत्नी और लड़की का अभाव अखरने लगा। दो मास की प्रतीक्षा के उपरान्त एक दिन उसने अपनी मोटरगाड़ी निकलवायी और ऋषिकेश को चल पड़ा।

वह मध्याह्नोत्तर दो बजे के लगभग ऋषिकेश पहुंचा। माहेश्वरी भवन के सामने गाड़ी खड़ी करके वह बिना सूचना दिये कोठी में जा पहुंचा, तो सेविका ने पूछ लिया, "किससे मिलने आये हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेविका एक पंजाबी स्त्री थी। नाम था मोहिनी। उसे सदारानी ने ऋषिकेश में पहुँचते ही अपनी सेवा के लिये रखा था। वह लालाजी को नहीं जानती थी।

जुगलकिशोर को हँसी सूझी। उसने कहा, ''यहाँ एक सिद्धि-प्राप्त साधुनी रहती हैं। मैं उनके दर्शनों के लिये आया हूँ।''

''कहाँ से आये हैं और क्या नाम है?''

जुगलकिशोर ने अपनी जेब से 'विजिटिंग कार्ड' निकाल कर दे दिया, ''यह भीतर दे दो।'' जुगलकिशोर ने कहा।

मोहिनी ने कार्ड लिया और लालाजी को बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठने के लिये कह भीतर चली गयी। बाहर आयी शकुन्तला। शकुन्तला ने हाथ जोड़कर नमस्ते कर कहा, ''पिताजी! आपने आने की सूचना नहीं भेजी। कैसे आये हैं?''

''तुम्हे वापस दिल्ली ले चलने के लिये आया हूँ।''

''आइये। आराम करिये। इस समय कोठी में सत्संग हो रहा है। और कुछ बाहर की स्त्रियाँ आयी हुई हैं। माताजी वहीं बैठी हैं।''

''ओह!'' जुगलकिशोर मुख देखता रह गया। वह उठा और बोला, ''तो कहाँ आराम करूँ?''

''आइये।'' शकुन्तला पिताजी को एक कमरे में ले गयी और वहाँ उनको बैठा पूछने लगी, ''आप चाय लेंगे अथवा कॉफी?''

''तो यहाँ कॉफी भी पी जाती है?''

''जी''

''और शराब भी?''

''तो कॉफी और शराब एक-समान है?''

''मुझे तो कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता।''

''तभी तो मैंने आपके घर में रहना उचित नहीं समझा।''

''क्यों? क्या उस घर में शराब की गंध आने लगी थी?''

''जी नहीं। आपका समान मोटर में से निकाल भीतर ले आऊँ?'' शकुन्तला ने बात बदल दी।

''हाँ। अब रात तो मैं यहाँ रहूँगा ही। मेरा बिस्तर और सूटकेस ड्राईवर से कह कर यहाँ ले आओ।

इसके उपरान्त शकुन्तला तब ही लालाजी के कमरे में आयी जब सत्संग समाप्त हो गया और आयी हुई स्त्रियाँ चली गयी। सत्संग में सुखिया रामायण पढ़ा करती थी और शकुन्तला उसकी व्याख्या किया करती थी। शकुन्तला उपनिषदादि शास्त्र पढ़ी थी। अत: उसकी विवेचना शास्त्रानुसार होती रहती थी।

सेविका ने लालाजी का कार्ड भीतर लाकर शकुन्तला को ही दिया था और शकुन्तला कार्ड पर सेठजी का नाम पढ़ कर बाहर चली गयी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संत्संग के उपरान्त शकुन्तला ने माँ को बताया कि कौन आया है। प्रश्न सुखिया के लिये उपस्थित हुआ कि वह लालाजी को अपना मुख दिखाये अथवा न? सदारानी का कहना था। कि उसे आश्रम में चला जाना चाहिये। वह वहीं रहती थी। केवल सत्संग के लिये यहाँ आती थी। सत्संग के उपरान्त वह प्राय: चाय और मध्यान्होत्तर का अल्पाहार यहाँ लिया करती थी। आज वह चाच न लेने का निश्चय कर जाने लगी तो ज्यों ही वह बरामदे में निकली सामने लालाजी खड़े दिखायी दिये।

जुगलकिशोर सुखिय को देख उसका मार्ग रोक खड़ा हो गया। सुखिया ने कहा, ''मार्ग छोड़ दीजिये।''

''मैं तुमसे ही बात करने आया हूँ।''

''परन्तु मैं आपसे बात करना नही चाहती।''

''देखो सुखिया! उस रात की घटना के उपरान्त मुझे तुमसे दिल खोलकर बात करने का अवसर नहीं मिला। मैं चाहता हूँ कि मेरी बात सुन लो और तब जाओ।''

''परन्तु......।'' सुखिया आगे कह नहीं सकी। शकुन्तला सदारानी बरामदे में दोनों को वार्तालाप करते सुन बाहर आ गयी थी।

शकुन्तला ने आते ही कहा, ''मौसी! आप जिनसे छुपकर भागना चाहती थीं, उन्होने आपको देख ही लिया है। इस कारण अब चाय लेकर ही जायें।''

''ठीक है। लालाजी कुछ मुझे बताना चाहते हैं। विचार था। कि इनसे बात करने में कोई प्रयोजन नहीं, परन्तु सोलह वर्ष तक अन्न खाया है; इस कारण मैं समझती हूँ कि सुन ही लूँ तो ठीक है। चलिये, चाय पीते हुए उनकी बात सुन लेती हूँ।''

वह शकुन्तला और सदारानी के साथ वहाँ आ गयी जहाँ सेविका ने उनके लिये चाय का प्रबन्ध किया हुआ था। भूमि पर दरी बिछी थी और उस पर चाय पीने का प्रबन्ध था। बहुत बढ़िया क्रॉकरी में चाय पीने का प्रबन्ध देख लाला जी हँस पड़े।

उनके हँसने की और ध्यान न देते हुए सदारानी ने उनको अपने और शकुन्तला के बीच में बिठा लिया और सुखिया को सामने बैठने को कह दिया।

सुखिया बैठी ही थी कि जुगलकिशोर ने व्यंग किया, ''साधुनी जी के लिये क्रॉकरी तो बहुत बढ़िया ला रखी है।

''जी!'' उत्तर सदारानी ने दिया।

''और मेज कुर्सी के लिये पैसे नहीं रहे थे''

''पैसे तो क्रॉकरी के लिये भी नहीं थे। दो महीने हुए भैया ब्रजभूषण आये थे। आने से पहले उन्होंने पत्र द्वारा पूछा था। कि कुछ चाहिये? इस पर मैंने उनको लिखा था कि कुछ अच्छी-सी क्रॉकरी लेते आयें। वह यह ले आये थे।

''वैसे उन्होंने मकान ठीक करवाते हुए ही उसमें एयर कंडीशनर और फ्रिज लगावा दिया था औ दोनों भली-भाँति काम करते हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऐसा साधु-जीवन तो मैं भी स्वीकार कर लूंगा।"

"मना किसने किया है?"

"तो मैं यहां इस मकान में आ जाऊं?"

"इस मकान को ख़रीदने के लिए आपने चालीस हज़ार रुपये दिये थे। ब्रजभूषण ने इस पर तीस हज़ार रुपये व्यय किये हैं। आप उसे इतना रुपया ले-देकर फ़ैसला कर सकते हैं। यदि यह मकान आपका हो जायेगा, तो मैं इसे छोड़ दूंगी और आप यहां आ सकते हैं।"

"परन्तु मैं तुम्हारे मकान में आकर रहना चाहता हूं।"

"परन्तु मैंने आपका मकान छोड़ा हुआ है।"

"तो फिर आ सकती हो।"

"इस विषय पर आप भैया से बात करें। क्या वह मेरा पुनः आपसे विवाह करना पसन्द करेंगे? पिताजी तो हैं नहीं। उनके स्थान पर भैया ब्रजभूषण हैं, मेरे इस नवीन विवाह के विषय में वही निश्चय करेंगे।"

"और पहले विवाह का क्या हुआ?"

"उसका सम्बन्ध-विच्छेद हो चुका है।"

"कब हुआ था?"

सुखिया ने चाय बना दी थी और चारों व्यक्ति पीने लगे थे। सदारानी ने एक घूंट पीते हुए कहा, "तलाक़ तो मैंने दिया था। तलाक़ देकर ही मैं दिल्ली से यहां आयी थी। यह मकान और एक वर्ष तक का व्यय आप देते रहे हैं। वह तलाक़ की शर्तों में था और मैं समझती हूं कि 'ऐलिमनी' के रूप में था। अब दो महीने से आपने ख़र्च देना बन्द कर दिया है और भैया ख़र्च भेज रहे हैं। शकुन्तला यहां नौकरी करने का विचार कर रही है। लड़कियों का एक स्कूल यहां है। इसने उसमें प्रार्थना-पत्र दे रखा है। उस पर अभी निर्णय नहीं हुआ। वहां से इसे दो सौ रुपया मिलेगा।"

"परन्तु मैं 'ऐलिमनी' नहीं दे रहा था।"

"आपने तो तलाक़ भी नहीं दिया था। वह मैंने दिया था और मिलने वाले ख़र्च को यह नाम भी मैंने ही दिया है। अब मैं समझती हूं कि आपने ख़र्च भेजना बन्द किया, तो इसके लिए दावा करना पड़ेगा।"

"ओह! किस अदालत में दावा करोगी?"

"जिस अदालत ने तलाक़ स्वीकार करवाया था। मेरा मतलब है कि परमात्मा की अदालत में। उसी अदालत में तो हमारा विवाह हुआ था।"

"तो ठीक है। तुम उस अदालत का द्वार खटखटा सकती हो। बताओ, मकान कब तक ख़ाली करोगी?"

"कम-से-कम एक महीने का नोटिस मिलना चाहिए।"

"तो मेरा आज से नोटिस समझो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुगलकिशोर चाय पी चुका था। वह समझ रहा था कि समय व्यर्थ गंवा रहा है। उसे अगले दिन प्रात:काल ही दिल्ली लौट जाना था। वह जिस मतलब के लिए आया था, उस पर तो बात आरम्भ भी नहीं हुई थी।

''तुम बताओ, सुखिया!'' जुगलकिशोर ने अब उससे पूछ लिया, ''अब भी तुम दिल्ली चलो, तो मैं तुम्हें सिंहासन पर बिठा सकता हूं।''

''मैंने तो सुना है कि आपका सिंहासन विलीन हो रहा है।''

''किससे सुना है?''

''परमात्मा ही मुझे कभी-कभी कान में आकर बताया करते हैं कि लाला जुगलकिशोर का दिवाला पिटने वाला है। एक मुक़द्दमा उस पर तैयार किया जा रहा है। यदि उसमें वह बच गया, तो बदरी भैया के प्रयत्नों से हो जायेगा।''

''ओह! ऐसा प्रतीत होता है कि साध्वीजी के भक्त दिल्ली सरकार में भी पहुंच रखते हैं।''

''भक्त नहीं, भैया! यहां तो सीधे परमात्मा के दरबार से ही समाचार आते हैं। मैं तो वहां प्रार्थना ही करती रहती हूं कि आप पर दया करें, परन्तु दया की प्रार्थना अपराधी की ओर से आनी चाहिए।''

''मुझे तो उस अदालत का द्वार दिखाई नहीं देता, तो दया की प्रार्थना कहां करूं?''

''द्वार तो आपके हृदय में ही है। वहीं दया की प्रार्थना कीजिये। वह दयालु है, अवश्य सुनेगा। हां, प्रार्थना के समय प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप करना होगा।''

''सब बकवास है।'' जुगलकिशोर के मुंह से अनायास ही निकल गया। ''लक्ष्मी तो भगवान् पर भी राज्य करती है और यदि किसी ने कुछ गड़बड़ की, तो मैं चांदी के जूते से उसको सन्मार्ग दिखा दूंगा।''

''ठीक है, कीजिये। परमात्मा आपका भला करे। मैं तो उस घर में सिंहासनारूढ़ थी। बहिन सदारानी ने सदा मुझे विधवा बहिन के रूप में आश्रय दिया था, परन्तु वहां एक पिशाच ने मुझे उस आसन से धकेल दिया और मैं यहां आ गयी। दो मास से कुछ ऊपर हुए, यह मुझे एक दिन मिल गयीं और इन्होंने पुन: मुझे उच्चासन पर बिठाने का प्रबन्ध कर दिया है।''

''और शकुन्तला! तुम बताओ, तुम क्या चाहती हो?''

''मेरी स्थिति भी कुछ वैसी ही है, जैसी मां की है। मैंने भी पतिदेव को तलाक़ दे रखा है। मुझे 'ऐलिमनी' नहीं मिल रही। इसलिए मुझे यहां नौकरी के लिए यत्न करना पड़ रहा है।''

''तुम जानो और शर्मा जाने। मैं तो यह कहने आया हूं कि यदि तुमको और शर्मा को किसी प्रकार की सुलह-सफ़ाई के लिए मेरी सेवाएं चाहिए, तो मैं यत्न कर सकता हूं।''

''मेरा उनसे झगड़ा नहीं हुआ। इसलिए आवश्यकता नहीं। मैंने कुछ मूर्खता की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी और जब मुझे उसका ज्ञान हुआ, तो मैंने की हुई मूर्खता से पृथक् होने का यत्न किया है। हां, आप यदि चाहें, तो इतनी सहायता कर सकते हैं कि वह मेरे चित्त की शान्ति को यहां आकर भंग न करें।''

''वह भी कुछ बाग़ी हुआ प्रतीत होता है।''

''तो अपने चांदी के जूते का प्रयोग वहां भी कीजिये।''

''तो तुम दिल्ली नहीं जाना चाहतीं ?''

''आपने तो अपने यहां से विदा कर दिया था। इसलिए आपका वापस चलने के लिए कहना अर्थहीन है। शर्माजी के लिए मैंने तलाक़ की याचिका दी हुई है।''

''मुझे विदित नहीं था कि जो विष-बीज बारह खम्भा रोड वाली कोठी में विद्यमान था, वह यहां भी पहुंचा हुआ है। मेरे घर का सर्वनाश उसी विष-बीज ने किया है।''

''देखो भैया!'' सुखिया ने कहा, ''तुम...।''

जुगलकिशोर ने बात को बीच में ही काटकर कहा, ''तुम मुझे भैया किसलिए कहती हो ? मेरी भावना तुम्हारे पति की है। यह तुम जानती हो।''

''आप अपने मन में जो चाहे, समझें, आपको अधिकार है, परन्तु मेरे मन की भावना यही है। इसी ने उस दिन आपकी जान बचा ली थी, अन्यथा एक वार और पर्याप्त होता, परन्तु बहिन मूर्ख भाई की हत्या नहीं कर सकी। देखिये, अब मैं जा रही हूं। तब आऊंगी, जब भैया यहां से चले जायेंगे।''

सुखिया उठी और हाथ जोड़कर व सबको नमस्ते कहकर कोठी से निकल गयी। जुगलकिशोर लालसा-भरी दृष्टि से देखता रह गया।

सदारानी ने लालाजी का ध्यान भंग करने के लिए कहा, ''अब आपका क्या कार्यक्रम है ?''

''मैं कल प्रातःकाल यहां से जाऊंगा। विचार था कि तुम धनाभाव के कारण आतुर होगी और तुम्हें वापस दिल्ली में ले जाने में सफल हो सकूंगा। कुछ मास हुए, तुम्हें ख़र्च भेजना भूल गया था और तुमने क्रोध से भरा पत्र लिख दिया था। इस बार भी मैं समझता था कि तुम मुझसे झगड़ा करने के लिए तैयार होगी और मैं तुम्हें रुपया दिखाकर समझा सकूंगा कि रुपया दिल्ली में मिलता है। यहां क्या है ?''

''तो भ्रम-निवारण हो गया न कि देने वाला कोई और है। आप व्यर्थ ही बीच में आ खड़े हुए थे। वही यहां भी सहायता भेज रहा है।''

''कौन सहायक मिल गया है ?''

''वह भी एक बहिन है। सुखिया के गुणों को उन्होंने पहचाना है और उसके नाते समय-कुसमय हमारी भी सहायता करती रहती हैं। उन्हीं के प्रयत्न से शकुन्तला को काम मिल जाने की पूर्ण आशा है।''

अगले दिन जुगलकिशोर मुंह लटकाये दिल्ली लौट आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 34 :

ऋषिकेश में जीवन समान्य रूप से चलने लगा। सुखिया सन्तनी विख्यात होने लगी थी। राम-कथा की धूम मचने लगी थी।

समय व्यतीत होते देर नहीं लगती। ऋषिकेश में इस कार्य को चलते हुए तीन वर्ष हो चुके थे। इस बीच जुगलकिशोर ने अपनी पत्नी तथा पुत्री को किसी प्रकार की सहायता नहीं भेजी। सदारानी का भाई ब्रजभूषण ही प्राय: सहायतार्थ धन भेजा करता था। मंगला भी समय-समय पर अपनी मां को धन अथवा अन्य आवश्यकताओं के लिए सामान भेजती रहती थी। माहेश्वरी भवन का निर्माण उस धन से किया गया था, जिसकी लालाजी की किताबों में लिखत-पढ़त नहीं थी और लालाजी ने इस भवन का विचार भी अपने मस्तिष्क से ऐसे निकाल दिया था, जैसे वह अन्य स्थानों पर व्यय किये हुए ऐसे धन का विचार छोड़ देते थे।

सदारानी मन में समझ बैठी थी कि उसका अपने पति से स्थायी रूप में सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है। शकुन्तला एक सरकारी स्कूल में मुख्याध्यापिका के रूप में कार्य करती हुई अपने मन में सन्तोष अनुभव कर रही थी। सुखिया इन दोनों से भी अधिक विरक्त थी। वह इन मां-बेटी के सम्पर्क में आती रहती थी। इस पर भी वह अपने आपको इन दोनों से अलिप्त रखती थी। वह कैलास आश्रम में रहती थी और केवल राम-कथा करने के लिए ही माहेश्वरी भवन में आती थी।

जैसे-जैसे राम-कथा की महिमा विस्तार पाती जाती थी, कथा सुनने वालों की संख्या में वृद्धि होती जाती थी। एक दिन कथा हो रही थी। शकुन्तला नियमानुसार कथा की चौपाइयों और दोहों पर विवेचना सुना रही थी कि उसकी दृष्टि एक वृद्धा स्त्री पर जा पड़ी। ज्योंही उसे समझ आया कि वह स्त्री उसके पति शर्मा की मां है, वह रुकी, परन्तु तुरन्त ही अपने ऊपर नियन्त्रण रखते हुए उसने विवेचना आरम्भ कर दी। इस पर भी उसकी विवेचना में वह स्पष्टता और सरसता नहीं आ सकी, जो पहले आ रही थी।

कथा समाप्त हुई और जब वह वृद्धा कथा-स्थल से उठकर बाहर जाने लगी, तो शकुन्तला ने आगे बढ़कर और हाथ जोड़कर उसे नमस्कार किया। उस वृद्धा ने ध्यान से देखा और शकुन्तला से पूछा, "बेटी! तुम कौन हो? मेरी आंखों में तो पानी उतर आया है। मैं तुम्हें पहचान नहीं सकी।"

शकुन्तला ने शर्मा की मां की आंखों की ओर देखा और उनमें गंदलापन देखकर समझ गयी कि वह सत्य ही कहती है और उसको पहचान नहीं सकी।

शकुन्तला ने उस वृद्धा का हाथ पकड़कर उसे सदारानी के पास ले जाकर बिठा दिया और कहा, "मां! यह शर्माजी की माताजी हैं।"

सदारानी भी उन्हें पहचान गयी और उनसे पूछने लगी, "यहां कब आयी हैं?"

"मुझे आये कई महीने हो गये हैं। काली कमली वाले के क्षेत्र में रहती हूं। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टोह लेती हुई इस स्थान पर पहुंची थी। सुना था कि यहां बड़े रसमय ढंग से कथा की जाती है। कथा सुनकर सुनी हुई बात का प्रमाण मिल गया है। यह कौन है, जो स्वरसहित चौपाई गाती है ?''

इस पर शकुन्तला ने अपना परिचय दे दिया। शकुन्तला का नाम सुनकर वृद्धा गम्भीर हो गयी। फिर पूछने लगी, ''दिल्ली का कुछ समाचार जानती हो ?''

''नहीं माताजी ! मैंने वहां से अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया है।''

''और यहां क्या करती हो ?''

''एक स्कूल में अध्यापन-कार्य करती हूं। कुछ महीने हुए मंगला बहिन का एक पत्र आया था, जिसमें लिखा था कि आपके पुत्र पिताजी का पूर्ण व्यवसाय चलाते हैं।''

''और क्या उसने यह भी लिखा था कि लालाजी क्या करते हैं ?''

''हमने मंगला बहिन को कह रखा है कि हमें पिताजी के विषय में कुछ भी न लिखा करें। इसलिए वह अपने पत्रों में उनके विषय में कुछ नहीं लिखतीं।''

''बेटी ! लालाजी का देहान्त हो गया है। लालाजी के लड़के बदरीप्रसाद ने पुलिस में रिपोर्ट लिखवायी थी कि तुम्हारे पति ने उनको विष दे दिया है। तुम्हारा पति पकड़ा गया था, परन्तु कैसे, कहा नहीं जा सकता, मुक़द्दमा नहीं चला।

''तुम्हारा भाई बदरीप्रसाद विदेश चला गया है और सुना है कि वह वहां पर राजदूत बन गया है। तुम्हारा पति अब अपने नाम से सारा व्यवसाय करता है और लालाजी के व्यवसाय का दिवाला निकल चुका है।''

''पर माताजी ! आपको यह सब किसने बताया है ? आप तो अपने गांव में रहती थीं।''

''जब तुम्हारे पति ने ख़र्च भेजना बन्द कर दिया और गांव की सारी सम्पत्ति बेचकर मैं खा गयी, तो यहां चली आयी और तब से यहीं हूं। लगभग एक मास हुआ, तुम्हारा पति मुझे ढूंढ़ता हुआ यहां आया था और मुझे वापस दिल्ली ले जाना चाहता था, परन्तु मैं नहीं गयी। तब उसने ही यह सब कथा सुनायी थी।''

शकुन्तला ने अपनी सेविका को शर्माजी की माताजी के साथ काली कमली वाले क्षेत्र में भेज दिया और स्वयं पूर्ण वृत्तान्त जानने के लिए मंगला को एक लम्बा पत्र लिखने बैठ गयी।

पत्र का उत्तर वापसी डाक से आया। उसमें लालाजी और उनके दामाद के वैमनस्य का पूर्ण वृत्तान्त लिखा हुआ था। उसमें बताया गया था कि शर्मा ने अपना पृथक् व्यवसाय तब से ही आरम्भ कर दिया था, जब शकुन्तला दिल्ली में ही रहती थी। जब लालाजी को यह पता चला, तो दोनों में बहुत झगड़ा हुआ और अगले दिन लालाजी का शव उनके बेडरूम में पाया गया।

जब लालाजी की सम्पत्ति का मूल्यांकन किया गया, तो ज्ञात हुआ कि उन्होंने अपनी सम्पत्ति से अधिक ऋण लिया हुआ है। इसलिए उनका दिवाला पिट गया, लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्मा इतना धनवान् हो गया कि उसने लालाजी की बारह खम्भा रोड वाली कोठी सरकारी नीलाम में ख़रीद ली। अन्त में लिखा था—"शकुन्तला बहिन! यह सम्पूर्ण कहानी इतनी दु:खद है कि मैं निश्चय नहीं कर सकी थी कि आपको लिखकर दुखी करूं या नहीं, परन्तु जब आपको समाचार मिल ही गया है, तो यह सब लिख रही हूं।

"भूल यह हुई है कि पिताजी और उनके सुपुत्र एक मिथ्या वस्तु को सर्वमंगला मान रहे थे। वास्तव में, मंगलदायिनी है—आस्तिक बुद्धि।

"शर्मा का अन्त भी अब समीप ही प्रतीत होता है। आपके जीजाजी कहते हैं कि उसके पुण्यकर्म भी समाप्त हो गये प्रतीत होते हैं। उसका कच्चा चिट्ठा संसद में चर्चा का विषय बन चुका है।"

शकुन्तला ने पत्र के विषय में मां को कुछ नहीं बताया और पत्र को जला दिया।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के सर्वाधिक चर्चित उपन्यास

स्वाधीनता के पथ पर (स्वाधीनता आन्दोलन 1930 से 35 का काल)
पथिक (स्वाधीनता आन्दोलन 1935 से 40 का काल)
स्वराज्यदान (स्वाधीनता आन्दोलन 1940 से 46 का काल)
विश्वासघात (स्वाधीनता आन्दोलन 1946 से 47 का काल)
देश की हत्या (स्वाधीनता आन्दोलन 1947 से 48 का काल)
दासता के नए रुप (1948 से 49 का काल)
सदावत्सले मातृभूमे (1949-.... का काल

श्री गुरुदत्त की समाजिक रचनाएं

अमानत
अनदेखे वन्धन
आवरण
अन्तरिक्ष में
आकाश पाताल
इवलीस
कला
घर की वात
आशा निराशा
अपने पराए
कामना
गुंठन
चंचरीक
ज़िन्दगी
जीवन ज्वार
न्यायाधिकरण
नए विचार नई वातें
नगर परिमोहन
नास्तिक
पंकज
परिमल
परिवर्तन
पड़ोसी
प्रवंचना
प्रतिशोध
प्रारव्ध और पुरुपार्थ
प्रेयसी
वन्धन शादी का
भगवान भरोसे
भाग्य का सम्वल
भूल
भूत और भविष्य
ममता
मायाजाल
मै न मानूँ
यह संसार
यात्रा का अंत
लालसा
विकार
विलोम गति
विकृत छाया
स्वार्थ
सव एक रंग
सभ्यता की ओर
स्नेह का मूल्य
संस्कार
सफलता के चरण
सर्वमंगला
साहित्यकार
सुमति

www.hindisahityasadan.com
2 वी डी चैम्वर्स,10/54 डी वी गुप्ता रोड,करोल वाग पुलीस स्टेशन के पास,नई दिल्ली-05
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की ऐतिहासिक पुस्तकें

परित्राणाय साधूनाम (महाभारत पर आधारित सम्पूर्ण उपन्यास)
वैशाली विलय (बहती रेता)
अस्ताचल की ओर (3 भाग)
खण्डहर बोल रहे हैं (3 भाग)
अमृत मन्थन (राम कथा-1)
परम्परा (राम कथा-2)
अग्नि परीक्षा (राम कथा-3)
जमाना बदल गया (4 भाग)
दो लहरों की टक्कर (2 भाग)
विक्रमादित्य साहसांक
युद्ध और शान्ति
कुमकुम
पत्रलता
दिग्विजय
वाम मार्ग
लुढ़कते पत्थर
गंगा की धारा
सागर तरंग
मेघवाहन
भैरवी चक्र
महाकाल
अवतरण

Central Library
168011
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

श्री गुरुदत्त की राजनीतिक रचनाएं

वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान ..... हिन्दू राष्ट्र
राष्ट्र राज्य और संविधान
हिन्दुत्व की यात्रा
धर्म संस्कृति और राज्य
मनुष्य और समाज
भारत में राष्ट्र
भगनाश
प्रजातंत्र अथवा वर्णाश्रम व्यवस्था
भारत गांधी नेहरु की छाया में
धर्म तथा समाजवाद
बुद्धि बनाम बहुमत
स्व अस्तित्व की रक्षा (2 भाग)
मैं हिन्दू हूँ (राजनैतिक संस्मरण)
भाव और भावना (संस्मरण)
भाग्यचक्र (संस्मरण)

081
168011

www.hindisahityasadan.com
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-S आगत संख्या 168011

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

8 दिसम्बर, 1894
से
8 अप्रैल, 1989
शिक्षा : एम. एस सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

विज्ञान की पृष्ठिभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

श्रीमद्भगवद् गीता, वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक की कुछ अन्य रचनाऐं

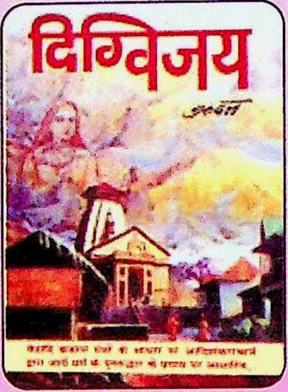

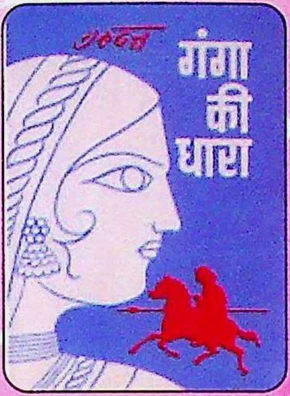

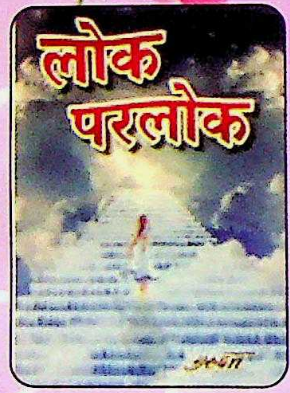

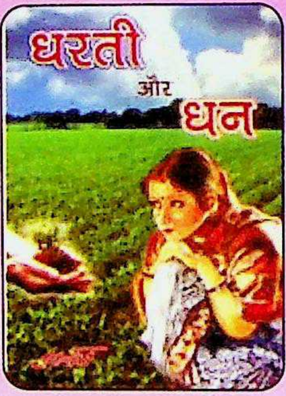

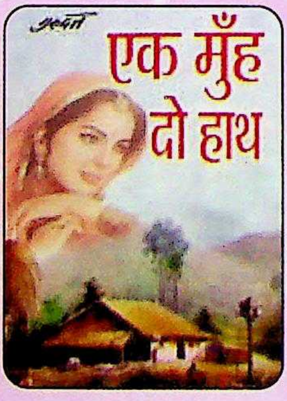

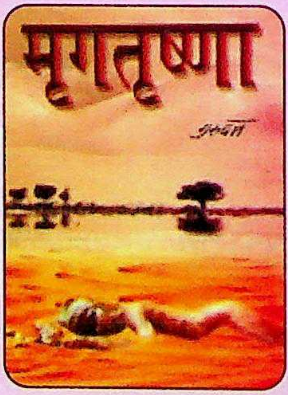

हिन्दी साहित्य सदन
www.hindisahityasadan.com
E-maill : hindisahityasadan@gmail.com
2 बी.डी. चैम्बर, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 23553624, 23551344

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar